Table of Contents

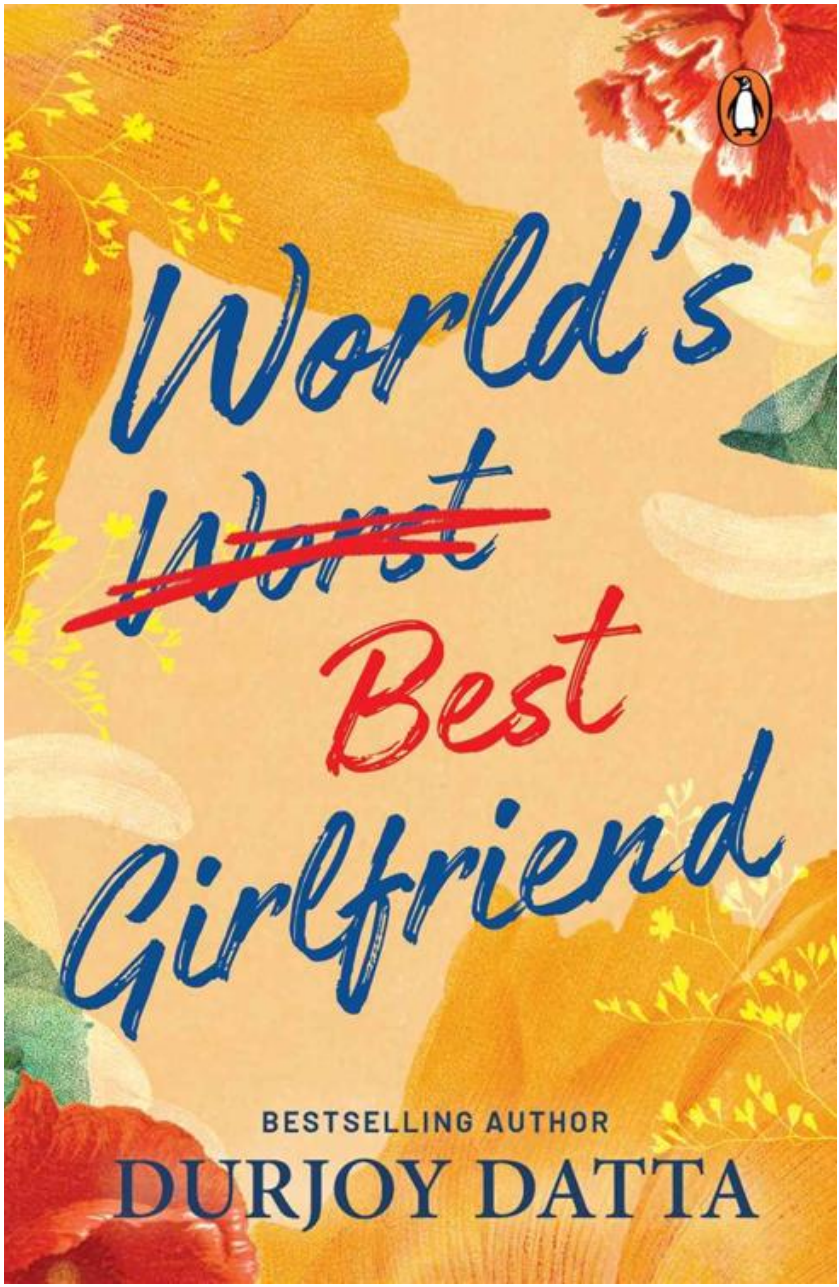

OceanofPDF.com

दुर्जोय दत्ता

दुनिया की सबसे बुरी प्रेमिका

पेंगुइन बुक्स

OceanofPDF.com

अंतर्वस्तु

भाग ---- पहला
भाग 2: चार साल बाद
भाग 3: तीन साल बाद
पेंगुइन का अनुसरण करें

कॉपीराइट

OceanofPDF.com

पेंगुइन मेट्रो रीड्स

दुनिया की सबसे बुरी सबसे अच्छी गर्लफ्रेंड

दुर्जोय दत्ता का जन्म नई दिल्ली में हुआ था और उन्होंने लेखन के क्षेत्र में कदम रखने से पहले इंजीनियरिंग और बिजनेस मैनेजमेंट में डिग्री हासिल की। उनकी पहली किताब, 'ऑफ कोर्स आई लव यू...', इक्कीस साल की उम्र में प्रकाशित हुई और तुरंत बेस्टसेलर बन गई। उनके बाद के उपन्यासों में 'टिल द लास्ट ब्रेथ', 'होल्ड माय हैंड', 'व्हेन ओनली लव रिमेन्स', 'वर्ल्ड्स वर्स्ट बेस्ट बॉयफ्रेंड', 'द गर्ल ऑफ माय ड्रीम्स', 'द बॉय हू लव्ड', 'द बॉय विद अ ब्रोकन हार्ट' और अन्य शामिल हैं।
'द परफेक्ट अस' ने कई बेस्टसेलर सूचियों में भी प्रमुख स्थान हासिल किया है, जिससे वे भारत के सबसे अधिक बिकने वाले लेखकों में से एक बन गए हैं। दुर्जॉय के नाम ग्यारह टेलीविजन शो भी हैं, जिनके लिए उन्होंने 1000 से अधिक एपिसोड लिखे हैं। अधिक अपडेट के लिए, आप उन्हें इंस्टाग्राम पर फॉलो कर सकते हैं। (www.instagram.com/durjoydatta)

OceanofPDF.com

इसी लेखक की अन्य पुस्तकें

मे तुमरे साथ कब हूँ
शाश्वतता का एक स्पर्श
काश मैं आपको बता पाता
हम एकदम सही हैं
जब केवल प्रेम ही शेष रहता है
टूटे दिल वाला लड़का
वह लड़का जिसने प्यार किया
मेरे सपनों की लड़की
हमारा असंभव प्यार
दुनिया का सबसे बुरा सबसे अच्छा प्रेमी
मेरे हाथ पकड़ें
समवन लाइक यू (निकिता सिंह के साथ)
अगर यह हमेशा के लिए नहीं है... तो यह प्यार नहीं है।

(निकिता सिंह के साथ)
अब जब आप अमीर हो गए हैं... चलिए प्यार में पड़ते हैं! (मानवी आहूजा के साथ)
आखिरी सांस तक...
तुम मेरी क्रश थी... जब तक तुमने मुझसे प्यार का इजहार नहीं किया!
(ओरवाना घई के साथ)
जी हां, मैं सिंगल हूं! और मेरी गर्लफ्रेंड भी सिंगल है! (नीति रुस्तगी के साथ)
उसने ब्रेकअप कर लिया, मैंने नहीं! मैंने तो किसी और को किस कर लिया! बेशक मैं तुमसे प्यार करता हूँ... जब तक मुझे कोई बेहतर नहीं मिल जाता।
(with Maanvi Ahuja)

OceanofPDF.com

खुद से, जो सबसे प्यारे, सबसे ध्यान भटकाने वाले बटनों के बावजूद लिखने में कामयाब हो जाता है।

पूरे समय का

OceanofPDF.com

OceanofPDF.com

भाग ---- पहला

OceanofPDF.com

1.

Aanchal Madan

‘ये लोग इतने गुस्से में क्यों हैं?’ माँ ने होटल की लॉबी में जोर-जोर से बातें कर रहे लोगों के समूह की ओर इशारा करते हुए पूछा। ‘बस कुछ ही घंटे और लगेंगे।’
‘माँ, वे ऐसा क्यों नहीं चाहेंगे? उन्होंने इस छुट्टी के लिए पैसे दिए हैं,’ मैंने उनसे कहा।

‘वे चाहते हैं कि सब कुछ एकदम सही हो।’
‘हम जैसे मुफ्तखोरों के विपरीत, दीदी,’ मेरे घबराए हुए भाई गौरव ने शिकायत करते हुए कहा।
‘यह सच नहीं है,’ मैंने तर्क दिया। ‘हम भी यहाँ रहने के लायक हैं, ठीक है? हमने लॉटरी ईमानदारी से जीती है।’
फिर भी, मुझे अजीब लग रहा है। हम इस सात सितारा, 40,000 रुपये प्रति रात वाले रिसॉर्ट में, सभी खर्चों सहित मुफ्त छुट्टी पर सिर्फ इसलिए हैं क्योंकि जीवन में पहली बार हम भाग्यशाली रहे हैं।
तभी, महिंद्रा वेकेशंस का एक तेज-तर्रार, लंबा और सलीकेदार प्रतिनिधि, लगभग बीस थके-हारे, अधीर और बड़बड़ाते हुए अधेड़ उम्र के लोगों की भीड़ की ओर बढ़ा। हममें से अधिकतर लोग सुबह सात बजे से ही होटल की लॉबी में अपने कमरे मिलने का इंतज़ार कर रहे थे। हर तीस मिनट पर, प्रतिनिधि हमसे तीस मिनट और इंतज़ार करने को कहता था।
अन्य परिवार कुप्रबंधन से नाराज़ हैं, लेकिन हम नहीं। हमें तीन बार स्वागत पेय मिल चुका है। हमने पूल के पास, समुद्र तट पर और लॉबी में अलग-अलग जगहों पर तस्वीरें खींची हैं। हम अपने चचेरे भाइयों और बहनों को भी तस्वीरें भेज रहे हैं, जिन्हें हमारी किस्मत पर यकीन नहीं हो रहा है।
प्रतिनिधि ने सभी को उत्साहपूर्वक संबोधित करते हुए कहा, ‘वेस्टलाइफ, अंडमान में आपका स्वागत है! चेक-इन 12 बजे है, लेकिन हम कोशिश कर रहे हैं कि आप सभी सुबह 11 बजे तक अपने खूबसूरत कमरों में पहुंच जाएं!’ उन्होंने अपनी घड़ी देखी। ‘अभी 9:30 बज रहे हैं। इसलिए, हम चाहते हैं कि आप सभी लॉबी में कुछ घंटों के लिए रुकें, स्वागत पेय का आनंद लें, और जब तक हाउसकीपिंग स्टाफ आपके कमरों को पूरी तरह से तैयार कर रहा है, तब तक आँगन में मौसम का लुत्फ़ उठाएं! आपके धैर्य के लिए धन्यवाद।’
भीड़ हताशा में अपने हाथ उठाती है और दबी आवाज में बड़बड़ाती है।
‘पैसा यही करता है,’ पापा धीरे से हमारे कान में फुसफुसाते हैं। ‘यह हमें एहसानफरामोश बना देता है। उस महिंद्रा वाले को देखो, कितनी विनम्रता से बात कर रहा है और लोग उसकी बात नहीं सुन रहे।’ पापा मेरी तरफ मुड़कर देखते हैं। ‘बताओ, अगर तुमने मॉल में उस महिंद्रा वाले की बात न मानी होती, तो क्या हम यहाँ होते?’
तीन महीने पहले, बिग बाजार में महिंद्रा वेकेशंस के एक कर्मचारी ने मुझे एक प्रतियोगिता का फॉर्म भरने के लिए बार-बार परेशान किया था:

एक भाग्यशाली विजेता को पूरी तरह से भुगतान की गई छुट्टी मिलेगी।
अंडमान!

हम मदन परिवार के लोग कभी प्रतियोगिता के फॉर्म नहीं भरते, क्योंकि हमारी किस्मत बिल्कुल ही खराब है। हम जिस भी चीज को छूते हैं, वह राख हो जाती है।

ऐसा लगता है मानो भगवान ने हमें पत्ते बाँटने से पहले उन्हें मिलाया ही नहीं। हमें तो बस अपमान, हताशा, निराशा और भूख के पत्ते ही मिले हैं।
मेरे जन्म के एक साल बाद, पापा की नई दुकान—आंचल स्टेशनरी—बंद हो गई। कुछ महीनों बाद, एक पेड़ उनके स्कूटर पर गिर गया।
जब मैं तीन साल का था, तब मां मुझे नहलाते समय गिर गई थीं और उस घटना की याद दिलाने के लिए उनके पैर की तीन उंगलियां टेढ़ी हो गई हैं और उनकी चाल थोड़ी असंतुलित है।
मेरे छोटे भाई के जन्म से हालात बदलने की उम्मीद थी। लेकिन वह भी नाकाम रहा। जब मैं चार साल का था, तो मैंने अपने भाई के हाथ पर पैर रख दिया और उसकी दो उंगलियां टूट गईं। अगले कुछ महीनों में वह बार-बार बीमार पड़ने लगा और एंटीबायोटिक्स, इंजेक्शन और इमरजेंसी वार्ड के चक्करों में पैसे खर्च होते रहे, जिससे हालत और बिगड़ गई।
जब मैं आठ साल का था, तब पापा की दूसरी दुकान—जिसका नाम अब गौरव स्टेशनरी है—बंद हो गई।
हमारा परिवार धर्म की शरण में चला गया। पंडितों ने कहा, "गृह भरे हैं, जब सितारे अनुकूल हो जाएँगे, तब हम दूध से स्नान करेंगे और रेशम के वस्त्र पहनकर सोएँगे।" पूजा-अर्चना, हवन, उंगलियों में अंगूठियाँ, गले में लॉकेट, इन सब से भी हमारा भाग्य नहीं बदला।
जब धर्म से कोई मदद नहीं मिली, तो हमने पढ़ाई का सहारा लिया। यही हमारा आखिरी सहारा था: गणित, विज्ञान और भूगोल की निश्चितता से शायद हमारी किस्मत बदल सकती थी। छह साल तक मैं कक्षा में दूसरे स्थान पर रहा और स्कूल की छात्रवृत्ति से वंचित रह गया। शिक्षा का खर्च उठाना—गौरव हमेशा तीसरे स्थान पर आता था, इसलिए उसे भी छात्रवृत्ति नहीं मिलती थी—मतलब कम खाना, फीके कपड़े, और हम दुबले-पतले और बीमार होकर बड़े हुए। हम जो दवाइयाँ खरीद सकते थे, वो पड़ोसियों से उधार ली गई छोटी होम्योपैथी की बोतलों में आती थीं।
मां के सिलाई के व्यवसाय में घाटा हुआ।
पापा की पिटाई हुई क्योंकि उनके ट्यूशन के छात्र फेल हो गए थे।
बैंक घोटाले में हमारी सारी जमा पूंजी डूब गई।
हमारे हाथों से मोबाइल छीन लिए गए।
हमने प्रतियोगिता में या स्क्रैच कार्ड पर कभी कुछ नहीं जीता।
कभी-कभी हमारी किस्मत पलट जाती थी, लेकिन कुछ ही समय बाद, ब्रह्मांड हमारे पानी की टंकी में दरार डालकर या हमारे स्कूटर के इंजन को बंद करके इसे संतुलित कर देता था।
जब तक कि यह महिंद्रा वेकेशंस की छुट्टी नहीं आ जाती।
सिर्फ इसलिए क्योंकि मैंने वह फॉर्म भरा था। मैंने पैम्फलेट में रिसॉर्ट देखा था। मैंने तस्वीरों में लोगों को देखा था। यह सब कुछ वैसा ही था जैसा मैं चाहती थी।
एक व्यक्ति की दमदार और बुलंद आवाज से हमारी बातचीत अचानक रुक जाती है।

‘अमित, मैं दक्ष हूँ। महिंद्रा वेकेशंस के साथ यह मेरा पहला अनुभव है, और मुझे कहना होगा कि मैं सचमुच... क्या कहूँ... आपकी चिंता और आपके प्रयासों को देखकर बहुत प्रभावित हुआ हूँ। यह इतना दिल को छूने वाला है कि ऐसा लगता है जैसे आप अब मेरे सबसे अच्छे दोस्त हैं,’ वह अपनी कर्कश, खुरदरी आवाज़ में मज़ाक करते हुए कहता है। ‘वैसे, हमारे पास कुछ कमज़ोर बुज़ुर्ग लोग हैं जो कम रक्त शर्करा के कारण बेहोश होने की कगार पर हैं। मेरी अपनी बहन बहुत छोटी है और इतने लंबे समय तक इंतज़ार नहीं कर सकती।’
उसकी आवाज़ गहरी है, मानो किसी गुफा के अंदर से आ रही हो। वह मुझसे दस गज की दूरी पर ही है, फिर भी उसकी आवाज़ मेरी पसलियों तक गूंज रही है। मैं उसे ध्यान से देखने के लिए अपने पंजों पर खड़ी हो जाती हूँ, लेकिन मुझे केवल उसके लहराते बाल ही दिखाई देते हैं।
'मैं समझता हूँ-'
‘मुझे यकीन नहीं है कि तुम ऐसा कर पाओगे, अमित,’ उसकी आवाज़ अब और गहरी हो जाती है, उसमें गड़गड़ाहट लगभग डरावनी लगती है। ‘वरना, तुम्हारा शुरुआती अनुमान ज़्यादा सटीक होता। अब हमारे पास दो संभावित स्थितियाँ हैं। एक, जब तक तुम कमरे की समस्या सुलझाते हो, हम आराम से मुफ़्त नाश्ता कर लें। या फिर हम सब मिलकर महिंद्रा वेकेशंस के साथ हुए अपने बुरे अनुभव की एक दुखद तस्वीर ऑनलाइन पेश करेंगे, जिसमें हमारे बुज़ुर्ग सदस्यों की ज़मीन पर तड़पती, आँखें घुमाती हुई दिल दहला देने वाली तस्वीरें होंगी। मुझे यकीन है कि हमें यहाँ कुछ अच्छे अभिनेता मिल जाएँगे। मैं अपनी बहन को भी यहाँ औंधे मुँह लिटा दूँगा। चुनाव तुम्हारा है, अमित, क्योंकि तुम्हारा नाम उन सभी समीक्षाओं में जाएगा।’
भ्रमित भीड़ सहमति में बुदबुदाती है।
अमित की मुस्कान धीरे-धीरे गायब हो जाती है और उसकी जगह एक गहरी, भयभीत भौंहें तन जाती हैं।
‘मैं... मैं...’ अमित हकलाते हुए बोला। ‘सच में ऐसा करने की कोई जरूरत नहीं है।’
तो फिर हमारे पास यहाँ क्या विकल्प हैं?
घबराया हुआ और पसीने से तर अमित कहता है कि वह मैनेजमेंट से बात करके पंद्रह मिनट में हमें वापस बताएगा। उसे इतना समय नहीं लगता।
अमित ने नीरस स्वर में, उत्साह से रहित होकर हमें बताया, “रेस्टोरेंट सीधे आगे है और फिर दाईं ओर। महिंद्रा वेकेशंस हमेशा आपकी छुट्टियों को बेहतरीन बनाने के लिए प्रयासरत है।”
‘बेशक वे हैं,’ मैंने उस आदमी को कहते सुना।
मुफ्त नाश्ता।
मां ने उत्साह से मेरी बांह को दबाया।
‘वह लड़का तो चालाक है,’ माँ फुसफुसाती है।
‘चालाक नहीं,’ मैंने जवाब दिया। ‘बस अमीर हैं। अगर मैंने इस छुट्टी का खर्च उठाया होता, तो मैं भी लड़ता।’

‘आपने अभी कहा था कि हम यहां रहने के लायक हैं, दीदी,’ गौरव ताना मारता है। ‘आपके पास लड़ने का मौका था, लेकिन इसके बजाय आप बड़े चाव से स्वागत पेय का आनंद ले रही थीं।’
'चुप रहो।'
पापा ने खुशी से कहा, 'शायद हमारी किस्मत बदल रही है।'
मैं उसे आगाह करने के लिए अपना सिर हिलाता हूँ। हम चारों में पापा ही इकलौते आशावादी हैं, हालाँकि मदन परिवार की कुख्यात बदकिस्मती का सबसे ज़्यादा असर उन्हीं पर पड़ा है। उन्हें किसी और से बेहतर पता होना चाहिए कि जब भी सब कुछ हमारे पक्ष में होता हुआ लगता है, कुछ न कुछ गड़बड़ हो जाती है। सालों से हमने यह सीख लिया है कि ज़्यादा हँसना नहीं चाहिए, और न ही खुद को बहुत खुश होने देना चाहिए। औसत का नियम हमारे खिलाफ काम करता है।
हम होटल के कर्मचारियों के पीछे-पीछे रेस्टोरेंट तक गए। तभी मेरी नज़र उस लड़के पर पड़ी। उसने ढीली काली टी-शर्ट और काले शॉर्ट्स पहने थे। उसके बाल करीने से बिखरे हुए थे, कानों पर गिरे हुए थे। उसका रंग गीली रेत जैसा था, उसका जबड़ा नुकीला था और उसका माथा ऊंचा था। जब वह मुड़ा, तो मैंने देखा कि वह उस तरह से आकर्षक था जैसे लड़के जवानी में कदम रख रहे हों। उसकी आवाज़ उसके बचकानेपन को झुठला रही थी। वह मेरी उम्र का लग रहा था, लेकिन उसकी आवाज़ सुनकर मुझे लगा कि वह मुझसे कहीं ज़्यादा उम्र का होगा। समूह के बाकी लोगों ने उसे धन्यवाद दिया। जो लोग उससे काफ़ी बड़े थे, उनके पैर छूने के लिए वह झुका; जो लोग उससे थोड़े ही बड़े थे, उन्हें उसने गर्मजोशी से मुस्कुराकर कुछ ऐसा कहा जिससे वे हंस पड़े। पल भर में ही वह अपने डरावने, धमकी भरे अंदाज़ से बाहर आ गया था।
हम नाश्ते वाले हिस्से में दाखिल हुए। वेटर हमें हमारी सीटों तक ले जा रहा था तभी मैंने उसे फिर से देखा, उसके साथ शायद उसका परिवार भी था।
पहले तो मुझे लगा कि उसने अपने कंधे पर एक थैला टांग रखा है। फिर मैंने देखा कि वह एक छोटी बच्ची है—उसकी बहन। उसने उसे एक बोरी की तरह उठा रखा है, और वह उसकी पकड़ में खुशी से उछल-कूद कर रही है, खिलखिला रही है और चहक रही है। वह उसे ऐसे उठाए हुए है जैसे उसका कोई वज़न ही न हो। जब उसने मुड़कर देखा, तो मैंने उसकी आँखें देखीं। उनमें आत्मविश्वास, खतरे का भाव, अधिकार का भाव और निश्चित रूप से अहंकार झलक रहा था।

OceanofPDF.com

2.

Aanchal Madan

वेटर हमें होटल के पूल के ठीक बगल में बिठाता है, जहाँ से समुद्र में विलीन होते हुए पूल का शानदार नज़ारा दिखता है। मेरी उम्र के लड़के-लड़कियाँ स्विमसूट पहने बीच पर मस्ती कर रहे हैं। उनके शरीर का बड़ा हिस्सा धूप में खुला है। वे पानी में छपछपा रहे हैं, चिलचिलाती धूप में बिना रंग बदलने के डर के धक्का-मुक्की कर रहे हैं। माँ ने मुझे कभी चाय या कॉफ़ी नहीं पीने दी, क्योंकि उन्हें लगता है कि हर कप के साथ मेरी त्वचा बेजान और काली होती जाएगी, जैसे ग्लो एंड लवली शेड कार्ड का उल्टा रंग। हमारे आसपास की मेजों पर बूढ़े और जवान सभी एक जैसे कपड़े पहने हुए हैं—बीच शर्ट और शॉर्ट्स, और फूलों वाली ड्रेस।

गौरव घबराकर मेरी ओर झुकता है। 'सब लोग हमें देख रहे हैं। हम... अलग दिखते हैं।' वो सही कह रहा है, हम अलग दिख रहे हैं। माँ ने नई साड़ी पहनी है और गले में भारी सोने का हार। पापा ने एकदम साफ सफेद आधी बाजू की कमीज, पतलून और ऑफिस के जूते पहने हैं। गौरव ने पापा की पुरानी कमीज पहनी है, जिसे उसके नाप के हिसाब से सिलवाया गया है। मैं पारिवारिक समारोह के लिए खरीदी गई मोटी काली फॉर्मल ड्रेस में पसीने से भीग रही हूँ। हम शादी के लिए तैयार हुए हैं, बीच पर जाने के लिए नहीं। लेकिन ये हमारे सबसे अच्छे कपड़े हैं।

‘हमारी शक्ल-सूरत से क्या फर्क पड़ता है? हम शायद यहाँ मौजूद हर किसी से ज़्यादा होशियार हैं। अगर आप उनकी और हमारी उत्तर पुस्तिकाओं को एक साथ रख दें, तो हम उन्हें सीधे-सीधे हरा देंगे, ठीक है?’ मैंने उससे कहा, यह हौसला बढ़ाने वाली बात मैंने कुछ हद तक खुद के लिए भी कही।

गौरव ने आंखें घुमाईं। 'सभी अमीर लोग बेवकूफ नहीं होते।'

‘अरे, हमारी आर्थिक स्थिति हमारी गलती नहीं है, ठीक है?’ मैंने उसे याद दिलाया।

‘हमारी गरीबी हमारी पसंद नहीं है। हम इसमें पैदा हुए हैं और इससे बाहर निकलने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। बस यही मायने रखता है।’

गौरव को यकीन नहीं हुआ।

मैं सीधे बुफे काउंटर की ओर दौड़ता हूँ। एक प्लेट उठाता हूँ और उसमें से वो सब खाना निकालने लगता हूँ जो मैं आम तौर पर कभी खरीद नहीं पाता: सैल्मन, क्रोइसैन, दही, वफ़ल, पास्ता। गौरव काउंटर के पास घबराकर इधर-उधर घूमता रहता है। लोग लाइन तोड़कर उसके आगे निकल जाते हैं। गौरव को इतना दब्बू होना बंद करना होगा। अमीर और कामयाब लोगों का रास्ता उसी जैसे लोगों से भरा होता है, मेरे माता-पिता जैसे लोगों से, जिन्हें कुचल दिया गया।

मैं एक और प्लेट उठाती हूँ और उसमें वो खाना भरती हूँ जो मुझे पता है गौरव को पसंद आएगा— कपकेक, फ्रेंच टोस्ट और तीन अलग-अलग फ्लेवर की आइसक्रीम। उसे आजकल चीनी की लत लग गई है। और वीडियो गेम्स की भी। वो किसी चीज़ में मग्न हो जाता है और फिर उसमें खो जाता है।

‘हे!’ एक आवाज सुनाई देती है।

मुझे लगा जैसे रेस्टोरेंट का मैनेजर मुझसे खाना वापस रखने को कह रहा हो। मैं

मुड़कर सोचने लगी कि मैं उससे क्या कहूँगी, 'सिर्फ़ इसलिए कि हम एक खास तरह से दिखते हैं, आप भेदभाव नहीं कर सकते', 'हमें भी यहाँ रहने का अधिकार है', 'हमने यह छुट्टी जीती है, हमारे वाउचर चेक करो, यह व्यवहार बर्दाश्त नहीं किया जा सकता!' वह मैनेजर नहीं है।
मैंने उसके बाल तुरंत पहचान लिए। रिसेप्शन पर बैठा वो घमंडी आदमी।
दक्ष। वह मेरी तरफ मुस्कुरा रहा है, उसके एकदम सफेद दांत चमक रहे हैं। वह मुझसे कुछ कदम दूर है, लेकिन मैं उसकी खुशबू महसूस कर सकती हूँ। उसकी खुशबू... अमीरी भरी है। किसी आलीशान शोरूम जैसी खुशबू, किसी अच्छे रेस्टोरेंट जैसी खुशबू। समुद्र, फूल, सुकून और धन की खुशबू।
‘स्ट्रॉबेरी फ्लेवर वाली ये आखिरी बची है,’ उसने मेरी प्लेट में रखे स्ट्रॉबेरी आइसक्रीम के कप की ओर इशारा करते हुए कहा। ‘क्या मेरी बहन इसे ले सकती है? वो यहीं है। आप जानते ही हैं कि बच्चे कैसे होते हैं, नखरे करने में कितने माहिर होते हैं।’
फिर वह हमसे थोड़ी दूरी पर एक ऊँची कुर्सी पर बैठी एक छोटी बच्ची की ओर इशारा करता है।
'उसका नाम वास्तव में रब्बू, रब्बानी है।'
'अजीब नाम।'
‘मैं सहमत हूँ,’ वह कहता है।
मुझे बच्चे पसंद नहीं हैं।
‘मैं भी पहले यही कहता था।’
‘वे कुछ नहीं करते, निकम्मे हैं और फिर भी हर कोई उन्हें सब कुछ देता है,’ मैंने आइसक्रीम उसे देते हुए कहा। ‘हमें उन्हें बिगाड़ना नहीं चाहिए।’
‘मैं सहमत हूँ। अधिकतर बच्चे केवल अपने माता-पिता को ही प्यारे लगते हैं, वे पृथ्वी पर एक पर्यावरणीय बोझ हैं, संसाधनों की बर्बादी हैं।’
वह आइसक्रीम को देखता है और फिर मुझे देखता है।
लेकिन इन सब के बावजूद, आप इनका इस्तेमाल अपनी मनचाही चीज़ें हासिल करने के लिए कर सकते हैं।
तो, तुम्हें आइसक्रीम चाहिए, वो नहीं?
‘हम दोनों में यह है। यह हमारे डीएनए में अंकित है। हमारी डबल हेलिक्स संरचना आइसक्रीम कोन जैसी दिखती है। हमारे कोविड टेस्ट में दूध के लिए पॉजिटिव रिजल्ट आया है।’
वो लड़का मज़ेदार है, लेकिन मैं नहीं चाहती कि माँ मुझे किसी लड़के के साथ हँसते हुए देख ले।
मैंने उसके हाथ में पकड़े आइसक्रीम के कप की ओर इशारा करते हुए कहा, 'तुम इसे रख लो।' 'वैसे, माँ ने आज सुबह तुमने जो किया उसके लिए तुम्हें होशियार कहा। लेकिन... उम्म...'
‘वह आदमी बहुत परेशान करने वाला था।’
'जब आप नाश्ता कर सकते हैं तो धमकी क्यों देनी? अगर मेरे पास पैसे होते तो मैं

सीधे अंदर चला जाता।'
वह मुस्कुराता है। 'वह सीधे-सीधे कह सकता था, "हमसे गलती हो गई, दोस्तों, और हम इसे सुधारने की कोशिश कर रहे हैं।" इसके बजाय, वह मुस्कुरा रहा था और हद से ज़्यादा विनम्रता दिखा रहा था। और सच कहूँ तो, हमें नाश्ता मिलना ही चाहिए था। कोई भी छुट्टी की शुरुआत इस तरह नहीं करता। खैर, मैं दक्ष हूँ। आप कहाँ से हैं?'
'जहां से मैं हूं, वहां आपसे ज्यादा देर तक बात करना मना है। मां देख रही होंगी। इसलिए, मैं ऐसे मुंह बनाऊंगी जैसे हमारी कोई अनबन हुई हो और फिर वहां से चली जाऊंगी। लेकिन इस नाश्ते के लिए धन्यवाद। यह... हमारे लिए बहुत ज्यादा है।'
क्या मुझे भी भौंहें चढ़ानी चाहिए, ताकि तुम्हारी माँ इस कहानी पर पूरी तरह विश्वास कर ले?
मैं उससे मुंह फेरकर अपनी मेज की ओर चल पड़ी। जैसा कि उम्मीद थी, मां ने मुझे चेतावनी दी, 'उससे बात मत करना। तुम जानती हो कि उसके जैसे लड़के कैसे होते हैं!'
'माँ, हम बस इस बात पर बहस कर रहे थे कि आइसक्रीम किसे खानी चाहिए,' मैंने जवाब दिया। 'और "उसके जैसे लड़कों" से तुम्हारा क्या मतलब है?'
'अमीर लड़के।'
'बेचारे लोग ठीक हैं?'
मुझसे बहस मत करो।
मैं तिरछी नज़र से उसे देखता हूँ। वह अपनी बहन से बड़े उत्साह से बातें कर रहा है, जो खिलखिलाकर हंस रही है और उसे गले लगा रही है। कप से आइसक्रीम निकालते समय दोनों की शक्लें अजीब तरह से एक जैसी दिखती हैं।
उसके माता-पिता मेज पर बैठे हैं, छोटी-छोटी एस्प्रेसो प्यालियों में कॉफी की चुस्कियां ले रहे हैं। उसकी तरह वे भी पतले, लंबे और आकर्षक हैं। वे तरोताज़ा, शांत और तनावमुक्त दिखते हैं। मेरे माता-पिता से बिलकुल अलग। माँ-पापा के चेहरे पर मुस्कान तो है, लेकिन अगर गौर से देखा जाए तो पता चलेगा कि उनके चेहरे की हर छोटी झुर्री असफलता और अपमान की कहानी बयां करती है। उन्होंने अपना पूरा जीवन किराए, हमारी फीस, फिक्स्ड डिपॉजिट, खराब फ्रिज, टूटे टीवी और हमारे भविष्य की चिंता में बिताया है। माँ-पापा ने हमारे लिए हर संभव कोशिश की है, फिर भी वह काफी नहीं रहा। हमारी किस्मत हमें गले से पकड़कर पानी में घसीट लेती है।
जब मैं उसके माता-पिता और अपने आस-पास के लोगों को देखता हूँ, तो मुझे एहसास होता है कि अमीर होना बड़ा घर, गाड़ी, अच्छे कपड़े या बड़ा टीवी होना नहीं है। अमीर होना एक मानसिक अवस्था है। यह वैसा ही है जैसे कोई ट्रेन गंदे शहर से निकलकर सूरजमुखी के खुले मैदान और हल्की हवा में पहुँच जाए। ऐसा लगता है जैसे आखिरकार आपको शांति मिल गई हो। अमीर होना एक ऐसी ध्यानमग्न अवस्था है जहाँ भविष्य की चिंताएँ, रोज़मर्रा की ज़रूरतों की चिंताएँ, सब गायब हो जाती हैं। यह बैंक में जमा पैसों की संख्या नहीं है। यह वह पल है जब भविष्य के बोझ से सारी चिंताएँ कंधों से उतर जाती हैं। यह वह हँसी है जिसमें ज़रा भी तनाव नहीं होता।

मुझे उसके चेहरे पर यही दिख रहा है। दक्ष के चेहरे पर।

OceanofPDF.com

3.

Aanchal Madan

हमारे दो सटे हुए कमरे हैं जिनमें एक साझा दरवाजा है—एक मेरे माता-पिता के लिए, दूसरा मेरे भाई और मेरे लिए। बिस्तर लगा हुआ है, पर्दे हटा दिए गए हैं ताकि सूरज की रोशनी कमरे में भर जाए। कमरे में गुलाबों की खुशबू फैली हुई है। मेज पर फलों का एक छोटा कटोरा रखा है। बाथरूम में दो सिंक, एक बाथटब और एक शॉवर है, शैम्पू और कंडीशनर की छोटी-छोटी बोतलें हैं, और इलेक्ट्रॉनिक ब्लाइंड्स हैं ताकि नहाते समय आप समुद्र देख सकें। मैं खिड़की के पास बैठकर बाहर देखता हूँ। लहरें किनारे से टकरा रही हैं। मुझे इस नज़ारे का आनंद लेना चाहिए, लेकिन यह मुझे बार-बार उन चीजों की याद दिलाता है जो हमारे पास नहीं हैं और जिन्हें हम खरीद नहीं सकते।
दुनिया की खूबसूरती की भी एक कीमत होती है।
और मुझे बस इतना पैसा चाहिए जिससे मैं वह कीमत चुका सकूं।
मैंने अक्सर अमीरों के सपने देखे हैं। मैं बड़े-बड़े घरों के सामने रुककर सोचती रही हूँ कि वे कैसे रहते होंगे। मैंने हवाई अड्डों के बाहर लोगों को महंगे सूटकेस घसीटते हुए देखा है और उनकी यात्राओं के बारे में कल्पना की है। आज पहली बार मैं दूसरी तरफ हूँ। इस तरफ की घास हरी नहीं दिखती। दूसरी तरफ की घास ज़्यादा हरी है। दूसरे लोग ऐसे रहते हैं। और मैं भी ऐसा ही चाहती हूँ।
मां-पापा सूटकेस को कमरे तक ले जाते हैं और सामान खोलना शुरू कर देते हैं।
मैं बाथरूम जाती हूँ। मैं पर्दे गिरा देती हूँ और विक्की को कॉल करती हूँ—जिसका नाम मेरे कॉन्टैक्ट्स में नेहा के नाम से सेव है—जिसके कॉल मैंने मिस किए हैं।
'हेलो?' मैंने फोन पर फुसफुसाते हुए कहा।
'जान, तुम कहाँ हो?'
मैं बाथरूम में छिप रही हूँ, जो कि हमारे घर के आकार का है। और मुझे तुम्हारी बहुत याद आ रही है। तुम्हें यहाँ होना चाहिए था। यह... बहुत सुंदर है।'
वह नरम आवाज़ में जवाब देता है, जैसे गर्म कंबल में लिपटी आवाज़, 'मैंने तुम्हारे कमरे की तस्वीरें ऑनलाइन देखीं। जब हम बड़े हो जाएंगे, तो हम हर महीने ऐसी छुट्टियां मनाने जाएंगे। मैं तुमसे वादा करता हूँ, आँचल।'
'हमें करना ही होगा, विक्की, यह कोई विकल्प नहीं है,' मैंने दृढ़ता से कहा। 'हम यही चाहते हैं, अपने लिए। हमें अमीर बनना ही होगा। ये लोग... एक अलग ही तरह की

जिंदगी जीते हैं।'
मैं गहरी सांस लेती हूं और खुली आंखों से सपने देखने लगती हूं। विक्की, मेरे माता-पिता, गौरव और यह खुशहाल और विलासितापूर्ण जीवन।
और जैसे ही मेरा दिल उस सपने की कल्पना करने लगता है, मेरा मन उस सपने को चकनाचूर कर देता है। मन दिल को सपने देखने नहीं देता। मन हमें डर और असफलता की याद दिलाता है। भूख, धूल, राख, अपमान की।
'मैं घबरा रही हूँ, विक्की। अगर ऐसा हुआ तो—'
वह मुझे उसी तरह टोकता है जैसे उसने पहले भी कई बार किया है। 'अपनी छुट्टियां खराब मत करो, जान। अभी एक हफ्ता बाकी है। नतीजे घोषित होने में पूरा एक हफ्ता बाकी है।'
दरवाजे पर दस्तक होती है। माँ है।
'बहुत ज्यादा खा लिया! दो मिनट!' मैं चिल्लाता हूँ।
मैं मां के जाने का इंतजार करता हूं। हमारे बीच कुछ पल की खामोशी छा जाती है।
'मैं तुमसे प्यार करता हूँ, विक्की,' मैं कबूल करता हूँ। पिछले दो सालों से मैं ये शब्द दोहराता आ रहा हूँ। ये शब्द आज भी मुझे अंदर से खुशी देते हैं। लेकिन पिछले दो महीनों से, इनके साथ अपराधबोध का गहरा एहसास भी जुड़ा हुआ है। 'मैं तुमसे बहुत, बहुत प्यार करता हूँ।'
'मैं भी तुमसे प्यार करता हूँ, जान,' वह जवाब देता है। 'आशा है आज रात तुम्हें अच्छी नींद आएगी।'
बारहवीं की बोर्ड परीक्षा खत्म होने के बाद से मैं दो घंटे से ज्यादा नहीं सोया हूँ। SRCC में दाखिला पाने के लिए पर्याप्त अंक न मिलने के बुरे सपने मुझे जगाए रखते हैं।
लेकिन एक बुरा सपना मुझे बाकी सभी से ज्यादा परेशान करता था।
उस बुरे सपने में, विक्की एसआरसीसी के गेट के अंदर है, और गेट मेरे सामने बंद हो जाते हैं। मैं अपनी मार्कशीट को पकड़े वहीं खड़ी रहती हूँ, मेरा भविष्य चकनाचूर हो चुका है।
यह इतना वास्तविक लग रहा था कि मैंने भगवान के साथ एक सौदा कर लिया। मैंने अपनी हथेली पर गहरे लाल रंग से एक छोटा सा स्वास्तिक बनाया। मैंने वादा किया कि परिणाम घोषित होने तक मैं इसे मिटने नहीं दूंगी। लेकिन बदले में एक छोटी सी बात माननी थी। अगर हम दोनों में से किसी एक को एसआरसीसी में दाखिला मिलना था, तो वो मैं होनी चाहिए, विक्की नहीं।
विक्की को बेशक इस बात का पता नहीं है।
'मैं सोने की कोशिश करूंगी,' मैंने विक्की से कहा। 'तुम मेरी जान हो, तुम मेरी सब कुछ हो। मुझे अब जाना होगा, जान। सब लोग इंतजार कर रहे हैं।'
'नहीं।'
उसके शब्दों का मुझ पर ऐसा गहरा प्रभाव है। वह जानता है कि अगर वह मुझे रुकने के लिए कहेगा, तो मैं रुक जाऊंगी। मेरा शरीर, मेरा हृदय, उसकी इच्छा के आगे

आत्मसमर्पण कर देते हैं। लेकिन हर बार जब मैं उससे बात करती हूँ, तो मुझे आश्चर्य होता है कि क्या ईश्वर मेरे पक्ष में परिणाम तय करेगा। या क्या मेरी प्रार्थनाएँ सुनकर वह कुछ ऐसा कर बैठेगा जिसके बारे में उसने पहले कभी सोचा भी नहीं था। हर बार जब मैं अपने हाथ में स्वास्तिक को गहरा करती हूँ, तो मुझे लगता है कि मैं दुनिया की सबसे बुरी प्रेमिका हूँ।
'तुम जा सकते हो,' उसने मुझे अनुमति दी।
'शुक्रिया, जान। मैं तुमसे प्यार करता हूँ।'
'सेम, जान, सेम।'
वह कॉल काट देता है। फिर मैं कॉल रिकॉर्ड डिलीट कर देता हूँ।
बाद में, हमने दो बार पुष्टि करने के बाद रूम सर्विस मंगवाई कि यह मुफ़्त है। दो पिज़्ज़ा, दो बिरयानी, दो चिकन बर्गर और एक दाल-खिचड़ी। हमने बड़े फ्लैट-स्क्रीन टीवी पर एक फ़िल्म देखना शुरू किया—एक ऐसी फ़िल्म जिसे हमने पहले भी देखा था, लेकिन इस कमरे में, शांत एयर कंडीशनर की ठंडी हवा के साथ, फ़िल्म देखने का अनुभव अलग ही था। गौरव ने झटपट मिठाई, पॉपकॉर्न और ठंडे पेय मंगवाए। पापा ने गौरव को चेतावनी दी, "अश्लील मत बनो," लेकिन फिर भी उन्होंने गुलाब जामुन का एक और सर्विंग मंगवा लिया। माँ ने दिन भर में खींची गई तस्वीरें अपने पड़ोस के दोस्तों को भेजीं। पापा ने फिर से ज़्यादा खा लिया था, इसलिए उन्हें बीच-बीच में डकार आ रही थी। हमारी सारी चिंताएँ दूर हो गईं। ऐसे कई मौके आए हैं जब मैं सचमुच खुश थी, लेकिन इस पल की खुशी के आगे कोई भी पल फीका नहीं पड़ा। काश हमारी हर दोपहर ऐसी ही बीतती? मुलायम बिस्तर पर, टीवी चालू हो, और मेरे माता-पिता के चेहरे पर मुस्कान हो?
मैं सब कुछ दे दूंगा। मैं इसके लिए अपना सब कुछ कुर्बान कर दूंगा।

OceanofPDF.com

4.

Daksh Dey

मैं इस एक मील लंबे समुद्र तट पर अकेला हूँ, जिसे रिसॉर्ट ने अपने लिए बनाया है। मैं कई बार समुद्र तट पर ऊपर-नीचे चक्कर लगा चुका हूँ, अपने फोन को घूरता हुआ समीक्ष के संदेश का इंतज़ार कर रहा हूँ। नेटवर्क चार बार है, लेकिन फिर भी मैं बीच-बीच में अपना फोन हवा में लहराता रहता हूँ, शायद कोई संदेश आ जाए। मैं उसे फिर से कॉल करता हूँ। कोई जवाब नहीं। मेरे अंगूठे कीबोर्ड पर अटके रहते हैं, लेकिन उसे छूते नहीं, मानो एक बार टाइप करना शुरू कर दिया तो रुक ही नहीं पाऊँगा और उसे कुछ बेवकूफी भरा और बेताब संदेश भेज दूँगा, जैसे 'तुम्हारे बिना मैं मर जाऊँगा,

प्लीज़ मुझे जवाब दे दो'। मैं फोन जेब में रख लेता हूँ। समुद्र का पानी मेरे पैरों तक आ रहा है। सुबह यह गर्म और सुकून देने वाला था, लेकिन अब अंधेरे में, ठंडा, गड़गड़ाता समुद्र डरावना लग रहा है।
मुझे पानी में पैरों की छप-छप की आवाज़ और एक लड़के के झगड़ने की आवाज़ सुनाई दी। मैंने मुड़कर देखा और तुरंत उनके चेहरे पहचान लिए। ये वही लड़की और उसका भाई थे जो सुबह मिले थे।
महिंद्रा वेकेशंस के उस आदमी के गैर-पेशेवर रवैये के बावजूद लॉबी में वे दोनों ही हंस-हंसकर खिलखिला रही थीं। नाश्ते के बाद, मैंने उन्हें सेलुलर जेल जाने वाली बस में देखा, जो हमारे यात्रा कार्यक्रम का पहला पड़ाव था। उसकी माँ ने बस में ही सौ से ज़्यादा तस्वीरें खींच ली होंगी। लड़की और उसका भाई आपस में बहस करते रहे और मैं सोच रही थी कि अगर हमारी उम्र में सोलह साल का अंतर न होता तो क्या हम रब्बानी भी ऐसे ही होते। अब रब्बानी मुझे भगवान के समान समझेगी, एक बड़े भाई की तरह जो दुनियादारी जानता है। मुझे यही अच्छा लगता है। थोड़ी देर बाद, लड़की अपनी हथेली पर बने स्वास्तिक को और गहरा करने लगी। लड़के के पिता ने उसे अपना फोन दे दिया और वह बाकी रास्ते चुप रहा।
फिर मैंने एक छोटी सी कोठरी में उस महिला को देखा, जो टूर गाइड की बातें सुन रही थी, उसकी आँखों में क्रोध और दया दोनों झलक रहे थे। उसने समूह को रोक रखा था, टूर गाइड से लगातार सवाल पूछ रही थी, और आँखों में क्रोध, थूक के छींटे और हाथों के फड़फड़ाने के बावजूद, वह बेहद खूबसूरत लग रही थी। जब मैंने उसे पहली बार नाश्ते के समय देखा था, तो मैंने उसकी सुंदरता को नज़रअंदाज़ कर दिया था, यह सोचकर कि समीशा की अनुपस्थिति ही मुझे सुंदर चेहरों की तलाश करने पर मजबूर कर रही है, और खुद को यह कहकर दिलासा दिया था कि अगर वह चली भी जाती है, तो दुनिया में सुंदरता की कोई कमी नहीं है। लेकिन जिस क्षण कोठरी की छोटी सी खिड़की से उस पर रोशनी पड़ी, उसी क्षण मुझे पता चल गया कि मैं उसका चेहरा कभी नहीं भूल पाऊँगी। उसने कढ़ाई वाला सफेद सलवार सूट पहना था, और मुझे आश्चर्य होता है कि मुझे याद है कि उसने दोपहर में क्या पहना था, और वह दमक रही थी। उसका चेहरा मुझे एक लेख की याद दिलाता है जो मैंने कभी पढ़ा था, जिसमें लिखा था कि सही अनुपात, कोण और गणित ही सुंदर लोगों को सुंदर बनाते हैं। मैंने कल्पना की कि उसका ईश्वर और सृष्टिकर्ता अपनी कला में मग्न होकर उसकी हड्डियों को तराश रहे हैं, उसकी त्वचा को काट रहे हैं। उसकी पैलेट खून से सने स्केलपेल, फटी हुई नसों और त्वचा के रेखाचित्रों से भरी हुई थी; उसका दिमाग उन अनुपातों को सही करने के जुनून में इस कदर डूबा हुआ था कि वह पागलपन की हद तक पहुंच गया था। उसके चेहरे को पूर्णता तक पहुंचाने के लिए काटा और सिला गया था। वह लगभग 5'6" लंबी, पतली और दिल के आकार के चेहरे वाली है जो एक नुकीली ठोड़ी पर समाप्त होती है। उसके चेहरे पर मुहांसों की हल्की सी छाया उसकी सुंदरता को और भी बढ़ा देती है। उसके होंठ भरे हुए और फटे हुए हैं।
और जब भी मैंने उसे देखा है, वो उन्हें छूकर और भी बदतर बना देती है। ठीक उसी

पल मुझे समझ आ गया कि पेट में उठने वाली ये गर्म, चिपचिपी सी अनुभूति क्या होती है। ये वो एहसास है जब मन करता है कि बस उस चेहरे पर ही ध्यान केंद्रित कर लूँ। एक आकर्षण। किसी के रूप-रंग पर आधारित दिल का एक व्यर्थ सा उछाल। लेकिन किसी का रूप-रंग कोई मामूली बात नहीं है। अभी वो फटी हुई टी-शर्ट और पजामा पहने है, और मुझे हैरानी होती है कि वो अब भी कैसे सज-धज कर दिख रही है।

'अरे।'

वे मेरी बात नहीं सुनते और चलते रहते हैं।

महिंद्रा वेकेशंस ग्रुप में हम तीनों ही एक ही उम्र के हैं। बाकी सब या तो बहुत बूढ़े हैं या बहुत जवान। बूढ़े माता-पिता, नए माता-पिता: यही हॉलिडे पैकेज का लक्षित वर्ग है। मैंने इतने हॉलिडे पैकेज किए हैं कि मुझे पता है कि आखिर में माता-पिता आपस में मिल जाते हैं और युवा लोग एक साथ रहते हैं। अगर मैं उनसे दोस्ती नहीं कर पाई, तो ये हफ्ता बहुत लंबा लगने वाला है।

'हे!' मैं उनके साथ-साथ चलते हुए कहता हूँ। 'हाय। मैं आप लोगों से सुबह मिला था। मैं वो लड़का था जो आइसक्रीम लेकर आया था। दक्ष। क्या आप लोग कल कयाकिंग करने जा रहे हैं?'

भाई रुकता है और मुझे ठंडी निगाहों से देखता है। 'उसका एक बॉयफ्रेंड है। विक्की।' मैंने उससे कहा, 'मुझे उम्मीद है कि वह तुम्हारे साथ अच्छा व्यवहार कर रहा होगा।'

उसकी निगाहें मुझसे मिलती हैं और मैं उसके चेहरे के भावों को समझ नहीं पाता, जो जिज्ञासा और संदेह का मिश्रण हैं।

'मैं आँचल हूँ,' वह कहती है। 'और हाँ, विक्की सबसे अच्छा है। उसके जैसा कोई नहीं है।'

यह कुछ हद तक अति-प्रतिपूरण है, लेकिन मैं इस ओर ध्यान नहीं दिलाता।

'बहुत खूब। मैं भी एक बॉयफ्रेंड हूँ, लेकिन दुर्भाग्य से, मैं अपने बारे में ऐसा नहीं कह सकता। कि दुनिया के सभी बॉयफ्रेंड में से मैं सबसे अच्छा हूँ।'

'मैं अपने बारे में ऐसा नहीं कह सकती। मैं एक औसत दर्जे की प्रेमिका हूं।'

आँचल। मैं मन ही मन यह नाम ज़ोर से बोलती हूँ।

अच्छा नाम है, लेकिन उसके लिए बहुत साधारण है।

उससे नज़रें हटाना मुश्किल है। चाँदी जैसी चाँदनी उसके चेहरे पर इस तरह से पड़ती है कि मुझे स्टेज की रोशनी और स्पॉटलाइट्स की व्यवस्था याद आ जाती है, जो कला को निखारने के लिए ही होती हैं। मेरी नज़र आँचल की आँखों पर पड़ती है—हल्के भूरे रंग की, जिसे समीशा पहचानती होगी। समीशा के मेकअप किट में भूरा रंग तो है, लेकिन वो भूरा नहीं है, हमेशा कुछ अलग ही होता है—बादाम जैसा, जला हुआ अंगारा, कॉफी, टैन—और वो मुझे बड़े चाव से बताती है कि 'ये भूरा नहीं है, ठीक है!' मैं सोचती हूँ कि अगर मैं समीशा को अपने नए क्रश के बारे में मैसेज करूँ तो वो क्या कहेगी। तीन महीने से हम साथ हैं, और समीशा ने तीन लड़कों के लिए 'क्यूट' शब्द का इस्तेमाल किया है—दो उसके कॉलेज के, एक बॉलीवुड स्टार—और मैंने मन ही

मन उन सबको बुरी तरह से कोसते हुए, उनकी आँखें निकालकर टुकड़े-टुकड़े कर दिए हैं।
मैंने गौरव की ओर मुड़कर कहा, 'और तुम्हारा नाम क्या है? मेरी बहन रब्बानी जानना चाहती थी कि किसने उसके लिए अपनी आइसक्रीम छोड़ी।'
'गौरव,' भाई ने रूखेपन से जवाब दिया।
'जेल का दृश्य दिल दहला देने वाला था, है ना? मैंने आप लोगों को वहां देखा था।'
'यह उबाऊ था,' वह अधीरता से जवाब देता है।
यह बहुत प्यारा है कि गौरव को लगता है कि मुझे उसकी राय में दिलचस्पी है।
आँचल ने सिर हिलाया। उसने जवाब दिया, 'मुझे बहुत गुस्सा आया।'
'तुम उससे क्यों बात कर रहे हो?' गौरव ने विरोध जताया।
'तुम्हारी माँ यहाँ नहीं है, इसलिए हम बातें कर सकते हैं और बोर नहीं होंगे,' मैंने गौरव को जवाब दिया। मैं उसकी ओर मुड़ी। 'गुस्से में? तुम्हें इतना गुस्सा क्यों आया?'
वह अपने पैर की उंगलियों को रेत में गाड़ती है और अपनी निगाहें उस ओर घुमाती है। 'यह सब कितना... व्यर्थ लगता था। आजादी के लिए इतना दर्द और तकलीफ। और किसलिए? किसी भी भारतीय के लिए सबसे अच्छी स्थिति यही है कि वह उस देश में बस जाए जिसने हम पर शासन किया। ऐसा लगता है जैसे हमने वे सारी जिंदगियां बर्बाद कर दीं।'
'खुशी चुनाव की स्वतंत्रता से भी आती है। अब हम गोरों के देश जाने के लिए स्वतंत्र हैं, चाहे अवैध नावों से ही क्यों न जाना पड़े। क्या आप भी यही करने की योजना बना रहे हैं? विदेश में बसने की?'
वह और उसका भाई एक-दूसरे को देखते हैं और धीरे से हंसते हैं। वह मेरी तरफ मुड़ती है। 'हम इसे वहन नहीं कर सकते,' वह स्वीकार करती है। 'हम इस रिसॉर्ट का खर्च भी नहीं उठा सकते। हम यहाँ सिर्फ इसलिए हैं क्योंकि हमने एक लकी ड्रॉ जीता है।'
'हमें चलना चाहिए, दीदी,' गौरव अपनी बहन का हाथ खींचते हुए आग्रह करता है।
गौरव, आधा डरा हुआ, आधा गुस्से में, रिसॉर्ट की इमारत की ओर ऐसे देखता है जैसे किसी ने दूरबीन से हम पर नज़र रखी हो। फिर वह एक डरावनी मुस्कान के साथ मेरी ओर देखता है और कहता है, 'अगर तुम रुकना चाहती हो, तो मुझे अपना फोन दे दो।'
'नहीं,' आंचल ने गौरव को चेतावनी दी। 'तुम बहुत खेल खेल चुके हो।'
'आप किसी अनजान व्यक्ति से बात कर सकते हैं जो आपसे छेड़छाड़ करने की कोशिश कर रहा हो, लेकिन मैं एक गेम भी नहीं खेल सकती? ये कैसा है—'
मैंने उसे बीच में ही रोक दिया। 'गौरव, मैं तुम्हारी बहन पर लाइन मारने की कोशिश नहीं कर रहा हूँ।'
'बेशक आप यही कहेंगे!'
'दुबई में मेरी एक गर्लफ्रेंड है। मतलब, इस ट्रिप पर आने से पहले थी। अब मुझे ठीक से पता नहीं कि हमारा रिश्ता किस मोड़ पर है,' मैंने जवाब दिया और उसे चिढ़ाने के लिए, मैंने गंभीरता से कहा, 'तुम्हें पता होगा ना, रिश्ते कितने पेचीदा होते हैं? तुम तो

थोड़े... प्लेबॉय जैसे लगते हो?'
आंचल मेरी तरफ मुड़ती है। 'आप दुबई में रहते हैं?'
'किसे परवाह है!' गौरव गिड़गिड़ाते हुए बोला। उसने दीदी का हाथ खींचते हुए कहा, 'दीदी, प्लीज़, क्या मैं आपका फ़ोन ले सकता हूँ? अगर मज़ा ही न आए तो छुट्टी का क्या फ़ायदा? मैं बस एक गेम खेलूँगा और आपको वापस दे दूँगा!'
मैंने जवाब दिया, 'छुट्टियों का एक मकसद नए लोगों से मिलना भी होता है। क्या आप लोगों ने गौर किया कि हमारे ग्रुप में हम तीनों के अलावा कोई भी युवा नहीं है?'
गौरव मुझे खाली निगाहों से देखता है। 'नए लोग कॉल ऑफ ड्यूटी से ज्यादा दिलचस्प नहीं होते।'
'आप पूरी तरह गलत नहीं हैं,' मैं सहमत हूँ। 'नए संस्करण में बंदूकें बढ़िया हैं। हालाँकि, नए कैमो स्किन थोड़े महंगे हैं।'
आँचल अपना फोन गौरव को देती है। 'पाँच मिनट,' वह उसे चेतावनी देती है। 'और फोन को अपनी आँखों के बहुत पास मत रखना। और ब्राइटनेस भी 100 प्रतिशत पर मत रखना, ठीक है?'
वह फोन उठाता है, खुशी-खुशी पास के सनबेड की ओर जाता है और बैठ जाता है। मुझे कॉल ऑफ ड्यूटी: मोबाइल की हल्की-हल्की आवाज़ सुनाई देती है।
'युवाओं के बारे में आप सही कह रही हैं... सब बूढ़े हो गए हैं,' आंचल कहती हैं।
'तुम्हारा भाई लड़कों की तरह थोड़ा चिढ़ाने वाला तो है, लेकिन प्यारा ज़रूर है। वैसे तो मुझे कभी भाई चाहिए ही नहीं था,' मैंने झूठ बोला।
उसका भाई प्यारा नहीं है। वो दुबला-पतला, चीखने-चिल्लाने वाला और घबराया हुआ है, और जिस तरह से उसने फोन पर झपट्टा मारा, मुझे गोलम की याद आ गई। लेकिन नए कॉल ऑफ ड्यूटी गेम ने हर उम्र के लड़कों को ऐसा ही व्यवहार करने पर मजबूर कर दिया है।
मैंने आगे कहा, 'सच कहूँ तो, मुझे कभी बहन नहीं चाहिए थी। लेकिन अब अच्छा लग रहा है। तो, तुम्हें यहाँ अच्छा लग रहा है?'
'मैंने ऐसी जगह पहले कभी नहीं देखी,' वह कहती हैं। 'जब मैंने सेलुलर जेल के बारे में पढ़ा था, तो मैंने कभी नहीं सोचा था कि एक दिन मुझे इसे देखने का मौका मिलेगा। यह सब मेरे लिए नया है... रोमांचक है। और मैं निश्चित रूप से दुबई में रहने वाले किसी से नहीं मिली हूँ।'
'क्या आप नारियल पानी पीना चाहेंगे? उनके पास मलाई वाला नारियल पानी भी है।'
'नहीं।'
मैं नारियल पानी की ठेली रोककर दो नारियल मंगवाती हूँ। जब मैं उसे बताती हूँ कि ये मुफ़्त है, तो वो एक अपने लिए और एक अपने भाई के लिए ले लेती है।
'ऐसी जगहों की यही खासियत होती है। एक बार यहाँ आ जाने के बाद, अगली बार आप उतने उत्साहित नहीं होंगे। सभी रिसॉर्ट एक जैसे दिखते हैं।'
वह कहती हैं, 'मुझे नहीं लगता कि मैं कभी मुफ्त में नारियल पाकर यह कहूँगी कि नहीं, इससे मुझे खुशी नहीं मिलती।' 'तुम्हारे और तुम्हारी प्रेमिका के साथ क्या हुआ?'

‘तुम्हें पता है, ये तो शुरुआती दिक्कतें हैं। हमने अभी-अभी डेटिंग शुरू की थी,’ मैंने आँचल को समझाया। ‘तुम्हें पता है ना, नए रिश्तों की शुरुआत कैसी होती है? जैसे कोई बारूदी सुरंग हो। हर मैसेज, हर स्पर्श, हर फोन कॉल, हम जो कुछ भी कहते या नहीं कहते, उससे सब कुछ बिगड़ सकता है। मैं बस यही सोच रहा हूँ कि मैंने क्या गलती की। लेकिन मैं उसे मैसेज करके ऐसा नहीं दिखाना चाहता कि मैं . . . बेताब हूँ।’
वह भौंहें चढ़ाती है। 'प्यार कोई खेल नहीं है। तुम्हें अपनी प्रेमिका को मैसेज करके अपने दिल की बात कहनी चाहिए। तुम्हें अपने मन की बात कहने में सक्षम होना चाहिए।'
अगर ऐसा है, तो सच कहूँ तो, मुझे उससे पूछने का मन कर रहा है कि जब हम दोनों एक-दूसरे के साथ इतने अच्छे हैं, तो वो इतना बुरा बर्ताव क्यों कर रही है। वो मुझे बिना बताए ही छुट्टियों के लिए हैदराबाद में अपनी नानी के घर चली गई। एकदम से गायब हो गई। मेरे मैसेज का जवाब नहीं दिया, कुछ भी नहीं। खैर, मुझे नहीं पता कि मैंने उसके बारे में शिकायत करना क्यों शुरू कर दिया। तो, आप दिल्ली से हैं, है ना? मैं तेरह साल की उम्र तक दिल्ली में थी, फिर हम दुबई चले गए। आप दिल्ली में कहाँ से हैं?
हम नारियल खाकर उन्हें कूड़ेदान में फेंक देते हैं।
‘पश्चिम विहार। मैंने अभी-अभी बोर्ड परीक्षा दी है,’ वह कहती हैं।
'वाह, बढ़िया। नतीजे कब आएंगे?'
‘अगले हफ्ते। मेरा इरादा एसआरसीसी जाने का है।’
‘एसआरसीसी?! क्या एसआरसीसी के लिए चारों मैचों में 100 प्रतिशत अंक ज़रूरी नहीं होते? यह तो नामुमकिन है।’
वह कंधे उचकाती है। 'हर साल SRCC में दाखिला पाने वाले सभी लोगों के लिए यह असंभव नहीं है। खैर, मुझे तो यह करना ही है। दिल्ली विश्वविद्यालय में यहाँ सबसे अच्छे प्लेसमेंट होते हैं।'
'हां, मैंने सुना है। लेकिन मुझे एक बात बताओ। 100 प्रतिशत बेस्ट ऑफ फोर का मतलब है कि आप चारों विषयों में मिलाकर एक भी प्रश्न गलत नहीं कर सकते, है ना?'
वह सिर हिलाती है। 'मुझे सिर्फ अंग्रेजी को लेकर घबराहट हो रही है। गणित, लेखांकन और व्यवसाय में तो मैं पूरे नंबर लाऊंगी। इस छुट्टी में बस नतीजे ही कुछ ऐसे हैं जो... ठीक नहीं हैं। आप किस कॉलेज से हैं?'
‘बहुत बुरा, बहुत बुरा, इससे तो मैं एक हारा हुआ इंसान लगूंगा,’ मैंने हंसते हुए उससे कहा। ‘बीआईटीएस, पिलानी, प्रथम वर्ष, पर्यावरण इंजीनियरिंग, दुबई कैंपस।’
लेकिन फिर तो आप अमीर हैं। आपको पढ़ाई में बहुत अच्छा होने की जरूरत नहीं है।
‘उम्म... ठीक है। लेकिन, आप जानते हैं, कॉलेज सिर्फ एक प्लेसमेंट एजेंसी नहीं है। आप दोस्त बनाते हैं, नेटवर्क बनाते हैं, पाठ्येतर गतिविधियाँ होती हैं, त्यौहार होते हैं और भी बहुत कुछ। जैसे मैं अपने कॉलेज की पत्रिका का प्रबंधन करती हूँ और यह

बहुत मज़ेदार है। मुझे पढ़ना पसंद है इसलिए मैंने सोचा कि यह एक मज़ेदार काम होगा।'
वह आश्वस्त नहीं दिखती। 'अगर आपकी अंग्रेजी अच्छी है, तो आपको जीमैट या कैट की कोशिश करनी चाहिए।'
'आपने हजारों वर्षों के लेखन और पठन के पूरे इतिहास को एमबीए प्रवेश परीक्षा को पास करने के एक उपकरण में बदल दिया है।'
तो, आप एमबीए नहीं करना चाहते?
'मेरे लिए अभी फैसला करना बहुत जल्दबाजी होगी,' मैंने जवाब दिया। 'तुम्हें पता है कैसा लगता है? जैसे मैं मेज पर जकड़ा हुआ मेंढक हूँ और तुम हाई स्कूल के छात्र हो जो मेरे फैसलों का विश्लेषण कर रहे हो। लेकिन अब मेरी बारी है—तुम विकी नाम के किसी व्यक्ति को डेट कर रहे हो? क्या यही उसका असली नाम है?'
'बहुत से लोगों का नाम विक्की है।'
'मेरा मतलब है... ज़रूर।' जिज्ञासावश मैंने पूछा, 'क्या आपके पास विक्की की कोई तस्वीर है?'
आप इसे क्यों देखना चाहते हैं?
मैं देखना चाहता हूं कि किसने तुम्हारे जैसी किसी को डेट पर जाने के लिए पूछने की हिम्मत जुटाई।
वह चलना बंद कर देती है। मेरी ओर मुड़ती है, उसकी बड़ी-बड़ी भूरी आँखें झिलमिलाती हैं। मैं अंदाज़ा लगाने की कोशिश करता हूँ कि वह गुस्से में है या सदमे में। फिर, वह मुस्कुराती है और पहले से भी ज़्यादा सुंदर लगती है। मैंने सोचा भी नहीं था कि ऐसा भी हो सकता है।
वह कहती है, 'तुम अभी मेरे भाई से कह रहे थे कि तुम मुझ पर लाइन नहीं मार रहे थे।'
'हाँ, यह सच है, और मैं तुम पर लाइन नहीं मार रहा,' मैंने समझाया। इन यात्राओं में किसी से भी बात करने का सबसे अच्छा पहलू यही है कि जो कुछ भी होता है, यहीं होता है और आप उसे अपनी सामान्य ज़िंदगी में नहीं ले जाते। इसलिए मैंने बात जारी रखी। 'मैं तुम्हें बता रहा हूँ कि मुझे तुम पर क्रश है। मेरा क्रश तुम्हारे रूप-रंग पर आधारित है, और रूप-रंग तो एक आनुवंशिक लॉटरी है, पासे का खेल है, कोई उपलब्धि नहीं। तुम एक बुरे इंसान हो सकते हो, मैं यह नहीं कह रहा कि तुम हो... लेकिन हो सकते हो। पर हाँ, तुम्हारा चेहरा ऐसा लगता है जैसे किसी ने तराजू लेकर उसे एकदम सही अनुपात में बनाया हो। यह अजीब है। क्या लोग तुम्हें यह नहीं कहते?'
'नहीं, और अगर आप पहले से ही किसी से प्यार करते हैं तो आप किसी और पर क्रश नहीं रख सकते,' वह कहती है। 'वैसे भी, मेरे पास विक्की की कोई तस्वीर नहीं है। मुझे पता है कि अगर मैंने एक भी तस्वीर रखी तो मेरे माता-पिता उसे ढूंढ लेंगे। मेरी किस्मत बहुत खराब है। मैं अपने जान-पहचान की सबसे बदनसीब लड़की हूँ।'
'सबसे बदकिस्मत? यह तो अतिशयोक्ति लग रही है।'

‘पंडितों का कहना है कि मेरी कुंडली में खून-खराबा लिखा है। मेरी बदकिस्मती चार साल और चलेगी। इसीलिए मैंने यह अंगूठी पहनी है। मेरे माता-पिता... हम... हम थोड़े अंधविश्वासी हैं।’
‘एक भी तस्वीर नहीं? यहां तक कि छिपे हुए फोल्डरों में भी नहीं? या सोशल मीडिया पर भी नहीं?’
वह सिर हिलाती है। 'हम सोशल मीडिया पर समय बर्बाद नहीं कर सकते। यह ध्यान भटकाने वाली चीज है। हम एसआरसीसी पहुँचने के बाद ही अपनी प्रोफाइल बनाएंगे।'
‘प्रोफाइल बनाने के लिए यह सबसे अजीब शर्त है। क्या आपका लड़का भी एसआरसीसी में प्रवेश पाने की कोशिश कर रहा है? चारों विषयों में 100 प्रतिशत अंक?’
वह सिर हिलाती है, उसकी आँखों में चमक आ जाती है। 'वह मुझसे ज़्यादा इसे चाहता है। आपको अंदाज़ा भी नहीं है कि मैं लेखांकन में कितनी कमज़ोर थी। उसने मुझे सब कुछ सिखाया। उसके बिना, मैं इस कॉलेज में दाखिला लेने का सपना भी नहीं देख सकती थी।'
और अगर आप ऐसा नहीं करते हैं तो? आपकी प्लान बी क्या है?
उसकी आँखों में एक झिलमिलाहट दिखाई देती है। मुझे उसकी आँखों में भय नज़र आता है। 'यह कोई विकल्प नहीं है। दूसरा सबसे अच्छा कॉलेज हमारे लिए पर्याप्त नहीं है। अगर हम यह जीवन जीना चाहते हैं... जैसा कि तुम जी रही हो, तो दूसरा सबसे अच्छा कॉलेज हमारे लिए काफी नहीं होगा।'
लेकिन कुछ लोग यह तर्क देंगे कि अमीर होना खुशी का जवाब नहीं है।
'यह बात अमीर और बेहद गरीब दोनों कहते हैं। हम बीच में हैं। मैं एक अमीर, दुखी लड़की बनूंगी, जिसकी शादी एक अमीर, दुखी लड़के से होगी, और हम उन लोगों से ईर्ष्या करेंगे जिन्होंने बंगले खरीदे हैं और इस बात की चिंता करेंगे कि कहीं हमारे आयातित वाहनों को ड्राइवर खरोंच न दें।'
मैंने पूछा, 'क्या आपको लगता है कि अमीर लोग ऐसा करते हैं?' उसने जवाब दिया, 'वैसे, मैं अमीर नहीं हूँ। मैं उच्च मध्यम वर्ग से हूँ।'
'अमीरों की कही एक और बात।'
तभी गौरव दौड़ता हुआ हमारे पास आया और फोन लहराने लगा।
‘दीदी!’ वह चिल्लाता है। ‘माँ बुला रही हैं!’

OceanofPDF.com

5.

Daksh Dey

समीक्ष की तरफ से कोई संदेश नहीं आया है। ये कितना अन्याय है कि समीक्ष के

लिए मेरी तड़प एक शारीरिक पीड़ा बन गई है—मैं इसे अपने सीने में महसूस कर सकता हूँ। पूरी सुबह मैं हमारे भेजे हुए संदेशों को पढ़ता रहा। हमारे रिश्ते के पहले चार हफ्ते शुद्ध जुनून और प्यार से भरे थे। हम एक-दूसरे से दूर नहीं रह पाते थे। वो मज़ाक में कहती थी कि मेरा उसके स्तनों से और उसका मेरे लिंग से गहरा रिश्ता है। ऐसा लगता था जैसे हमारा रिश्ता चरम पर है, हम एक-एक पड़ाव पार कर रहे हैं। हम दूसरे जोड़ों को देखते और सोचते, बेचारे, उन्हें पता ही नहीं कि रिश्ता कैसा होता है।
मैंने अपना फोन वापस जेब में रख लिया और रब्बानी की ओर मुड़ गई। वह अपने खिलौनों से गीली रेत में कुछ खोद रही थी।
‘और गहराई तक खोदो, रब्बू। कौन जाने, शायद तुम्हें डायनासोर की हड्डियाँ मिल जाएँ,’ मैंने उससे कहा।
एक चीख हवा में गूंज उठी। 'मेरा छोटा बच्चा!'
मैंने मुड़कर देखा तो मम्मी हमारी तरफ आ रही थीं। रब्बानी भी मुड़ी और अपने प्यारे, लड़खड़ाते कदमों से मम्मी की तरफ दौड़ पड़ी। वह मम्मी से ऐसे चिपक गई जैसे कोई छोटी चिंपैंजी हो।
मुझे अपने दिल में ईर्ष्या की एक कसक महसूस होती है।
मैं अब माँ का लाडला नहीं रहा, क्योंकि मैं अब बच्चा नहीं रहा, और मुझे वो निःशर्त, असीम प्यार नहीं मिलता जो रब्बानी को माँ से मिलता है। जब मैं सत्रह साल का था और माँ रब्बानी के गर्भ में थीं, तो मुझसे लगभग तुरंत ही एक ज़िम्मेदार बड़े भाई की भूमिका निभाने की उम्मीद की गई। मुझे रब्बानी का भाई होने पर गर्व है, लेकिन अगर मैं बच्चा बना रहता तो अच्छा होता। बाबा के साथ कुछ नहीं बदला। हमारा रिश्ता हमेशा से तीन चरणों वाला रहा है। 1. बाबा सुझाव देते हैं। 2. मैं सुझाव स्वीकार/अस्वीकार करता हूँ। 3. बाबा गर्व/निराश होते हैं।
मम्मी मेरी तरफ मुड़ती हैं। 'आज तुम क्या करने का सोच रही हो? तुम कह रही थी कि कयाकिंग करने जाओगी—क्या तुम सच में जाओगी?'
वह उस गतिविधि के लिए समुद्र तट पर एकत्रित लोगों की ओर इशारा करती है।
मैं इस बारे में सोच रहा हूँ।
'किसी लड़की की वजह से अपनी छुट्टियां बर्बाद मत करो।'
‘मम्मा, यार—’
शायद यह अच्छा ही हुआ कि यह खत्म हो गया।
‘यह खत्म नहीं हुआ है।’
हमने आपको पहले ही बता दिया था। वैसे भी, वह इसे अपने माता-पिता से कब तक छिपा सकती थी? देर-सवेर तो ऐसा होना ही था। मुझे बस इस बात पर हैरानी है कि यह तीन महीने तक चला।
समीक्षा वह पहली लड़की थी जिसके बारे में मैंने मम्मी को बताया था। मुझे लगा जैसे आखिरकार मुझे कुछ मिल गया हो, जैसे वही मेरी जीवनसाथी हो। अब मुझे पता है कि उन्हें बताना एक गलती थी।
मां को एहसास हो जाता है कि यह बातचीत व्यर्थ है।

‘दक्ष?’ वह दूर की ओर इशारा करती है। ‘क्या यह वही लड़की नहीं है जिससे तुम कल सुबह बात कर रहे थे?’
समुद्र तट पर लंबी कतार में खड़े होकर, मैं आँचल और गौरव को लाइफ जैकेट पहने हुए, कयाकिंग के लिए तैयार होते हुए देखता हूँ।
‘लड़की बहुत सुंदर है,’ माँ ने कहा।
‘मम्मा, यार।’
‘क्या? वो तो खूबसूरत है, उसका चेहरा देखो!’
‘माँ, हर चीज़ का मतलब सुंदरता नहीं होता।’
'अगर सब कुछ दिखावे के बारे में नहीं है, तो आपने समीक्षा में क्या देखा?'
मैंने मम्मी से कहा, 'वह एक अच्छी इंसान है।'
‘अगर वो इतनी अच्छी होती, तो अपने माता-पिता को बता देती, तुम्हें छुपाती नहीं,’ मम्मी कहती हैं। ‘वो दिन भर सोशल मीडिया पर मेकअप के वीडियो शेयर कर सकती है, लेकिन तुम्हारी एक भी तस्वीर नहीं। क्यों?’
‘मम्मा, यार... मैं जा रहा हूँ!’ मैं उठ खड़ा हुआ।
मैंने माँ को बड़बड़ाते सुना कि समीशा शुरू से ही एक गलती थी, एक धूर्त औरत, एक मोहिनी जिसने अपने बड़े स्तनों से उनके बेटे को फंसा लिया। मैं झूठ नहीं बोलूंगी: उसके बड़े स्तन भी इसमें एक अहम भूमिका निभाते थे। मैं अब उन लोगों की कतार की ओर दौड़ती हूँ जिन्हें उनकी कश्तियों की ओर ले जाया जा रहा है। गौरव और आँचल एक-दूसरे की तस्वीरें खींच रहे हैं।
‘हे गौरव!’ मैंने पुकारा। ‘मुझे फोन दो। मैं तुम दोनों की एक साथ तस्वीर खींच लूंगा।’ वह आँचल से अनुमति लेने के लिए उसकी ओर देखता है और जब वह सिर हिलाती है, तो वह फोन मुझे दे देता है। मैं पानी के बैकग्राउंड में उनकी तस्वीर खींचता हूँ।
‘दोस्तों, कुछ तो करो। जिस कश्ती के साथ आप लोग पोज दे रहे हैं, वह किसी लाश जैसी लग रही है। कुछ मजेदार करो।’
'ऐसे?' आंचल ने वी का निशान बनाते हुए पूछा।
कुछ और मज़ेदार करते हैं। ठीक है, तो आँचल, तुम ऐसा दिखावा करो कि तुम उसे चप्पू से मार रही हो, और गौरव, तुम पीछे की ओर ऐसे कूदो जैसे भागने की कोशिश कर रहे हो। मैं कोशिश करूँगा कि जब तुम हवा में हो तब उसे कैमरे में कैद कर लूँ।
'नहीं,' उदास गौरव कराहता है।
‘करो!’ आँचल उत्साह से चिल्लाती है। उसकी चमकीली आँखें और खिलखिलाती मुस्कान गर्मी से भी ज़्यादा सुहावनी हैं। जब मैं उसे फ़ोन की स्क्रीन पर देखती हूँ तो मुझे उसके लिए दुख होता है क्योंकि कोई भी कैमरा उसकी आँखों की गहराई, उसकी पलकों के मोहक झुकाव और उसकी कोमल हरकतों को कैद नहीं कर पाएगा।
गौरव शुरुआत में बिल्कुल अकड़ा हुआ होता है, लेकिन धीरे-धीरे वह सहज हो जाता है और बेहतर प्रदर्शन करने लगता है।
‘एक बार और,’ मैंने उसे प्रोत्साहित किया। ‘तुम बहुत अच्छा कर रहे हो। एक बार और, बस एहतियात के तौर पर। अरे, तुम्हारी आँखें बंद हैं। बहुत बढ़िया, एक वीडियो

भी। हाँ, हाँ, हो गया। ये लो।'
मेरे काम खत्म होने के बाद, आँचल तस्वीरों को स्क्रॉल करती है। वह कहती है, 'धन्यवाद... और मेरे भाई के चेहरे पर खुशी लाने के लिए भी धन्यवाद। क्या आप हमारे साथ शामिल हो रहे हैं?'
'युवाओं को एकजुट रहना चाहिए, है ना?' मैंने कहा और एक चप्पू उठा लिया।
प्रशिक्षक ने मुझे चेतावनी देते हुए कहा, 'लाइफ जैकेट पहन लो!'
'मैं तैर सकता हूं।'
'तुम मरने वाले पहले तैराक नहीं होगे,' आंचल कहती है।
'सही बात है,' मैंने कहा और अपनी लाइफ जैकेट पहन ली।
प्रशिक्षक और उनके सहायक हमें बिठाते हैं और हमारी कश्तियों को पानी में धकेलते हैं। गौरव पूरी ताकत से चप्पू चला रहा है और समूह का नेतृत्व कर रहा है। उसे लगता है जैसे यह कोई प्रतियोगिता हो। कितना प्यारा! मैं और आँचल पीछे रह जाते हैं।
मैंने कहा, 'मैंने मालदीव में एक बार ऐसा किया था, लेकिन वहां की कयाकें पारदर्शी थीं और पानी इतना साफ था कि आप सचमुच समुद्र तल को देख सकते थे।'
वह बनावटी गुस्से से मेरी तरफ देखती है। 'जब तक हम यहाँ से मालदीव तक नाव से नहीं जा सकते, तब तक तुम दिखावा कर रहे हो। यह मेरे जीवन का सबसे अच्छा दिन है, इसलिए इसे खराब मत करो।'
मैंने पूछा, 'क्या आप चाहती हैं कि मैं आपके वीडियो बनाऊं?' 'रोशनी एकदम सही है और वीडियो न बनाना अच्छी रोशनी का दुरुपयोग होगा।'
'क्या आप इन्हें अपने फोन से ले सकते हैं? मेरा फोन ठीक से काम नहीं करता।'
अगले पंद्रह मिनट तक वह चप्पू चलाती रही और मैं उसके वीडियो और तस्वीरें खींचता रहा। मैंग्रोव की शाखाओं की परछाइयाँ उसके चेहरे पर नाचती रहीं, मानो उसके चेहरे के अलग-अलग पहलुओं के साथ लुका-छिपी खेल रही हों। और हर बार जब मैं उसकी खींची हुई तस्वीर देखता, तो कैमरे और उसकी एक परफेक्ट तस्वीर न ले पाने की अपनी अक्षमता से निराश हो जाता।
'धन्यवाद,' वह शर्माते हुए कहती है। 'विकी को मेरी तस्वीरें खींचना बिल्कुल पसंद नहीं है, वह बार-बार कहता है कि लोग देख रहे हैं, लोग देख रहे हैं। मैं उसे बार-बार समझाती हूं कि आप कुछ भी करो, लोग तो आपको परखेंगे ही। लेकिन वह समझता ही नहीं। क्या आप चाहते हैं कि मैं आपकी तस्वीर खींच दूं?'
'मैं अच्छा हूँ।'
'बेशक, आप ऐसा क्यों करेंगे? आपके पास मालदीव की तस्वीरें हैं।'
'जब तक आप एसआरसीसी परीक्षा पास करके कहीं किसी प्रतिष्ठित सी-सूट अधिकारी नहीं बन जाते, तब तक इंतजार कीजिए। तब हर जगह आपकी तस्वीरें होंगी।'
आँचल अपनी गति धीमी कर देती है। बाकी सभी लोग—यहाँ तक कि दो लोगों वाली कश्ती में बैठे बहुत बुजुर्ग भी—हमें पीछे छोड़ देते हैं। वह मैंग्रोव की झाड़ियों की ओर चप्पू चलाती है। प्रशिक्षक ने हमें ऐसा न करने की चेतावनी दी थी। वह मेरी ओर

मुड़कर देखती है।
'मालदीव जैसी जगहों पर आपको शायद हर साल ऐसे मौके मिलते हों, मुझे नहीं। मुझे अपनी छुट्टी का खर्च खुद उठाना होगा और इसमें समय लगेगा,' वह स्पष्टीकरण देते हुए कहती हैं।
आह!
वह चप्पू चलाना बंद कर देती है। 'मुझे आप लोगों से बहुत ईर्ष्या होती है। आप लोगों के पास सब कुछ है।'
मेरे कॉलेज में मुझसे कहीं ज़्यादा अमीर लोग हैं—जिनके पास तीन कारें, दो नौकर और रहने के लिए एक विला है। वे सब यहाँ नहीं, यूरोप में छुट्टियाँ मना रहे हैं। मैं यह कहकर बदतमीज़ नहीं दिखना चाहता कि तीन कमरों का घर, एक कार और साल में एक बार किसी रिसॉर्ट में छुट्टी मनाने की क्षमता होना ही अमीरी की सही परिभाषा नहीं है।
‘यह मेरे लिए है,’ वह कहती है। ‘मुझे बताओ तुम्हारे पिता क्या काम करते हैं और तुम्हारे पास कितना पैसा है, तब मैं तुम्हें बताऊंगी कि तुम अमीर हो या नहीं।’
‘उम्म... बाबा एक इंजीनियर हैं। हमारे पास जरूरत की चीजें हैं, और मुश्किल समय में काम चलाने के लिए हमारे पास बचत भी है।’
‘तो, अगर आपके बाबा काम करना बंद कर दें, तो आपके पास उसी जीवनशैली को बनाए रखने के लिए कितने वर्षों की बचत है, इससे पहले कि आपके पास बिल्कुल भी पैसे न हों?’
मैंने कभी इस बारे में इस तरह नहीं सोचा था। 'शायद दस साल।'
‘यह तो बहुत ही अजीब बात है,’ वह कहती है।
उसकी कश्ती लटकती झाड़ियों के बेहद करीब पहुँच जाती है। और, किसी पंथ के अनुयायी की तरह, मैं भी उसके पीछे-पीछे चलता हूँ। वह हाथ बढ़ाकर दो छोटी शाखाएँ तोड़ती है और उन्हें अपनी कश्ती में रख लेती है। जब वह मेरे पास से गुजरती है तो मुझे भी एक शाखा देती है।
समीक्ष के लिए, जो यहां उपस्थित नहीं हो सकी।
मैंने शाखा की ओर देखा। 'वह अभी भी लापता है।'
'आपने क्या किया?'
‘आप ऐसा क्यों मान रहे हैं कि मैंने कुछ किया है?’
वह हंसती है। और दर्द के बावजूद, उसकी हंसी मुझे खुशी से भर देती है। यह मेरे दिल के दर्द पर मरहम भी नहीं है। मरहम तो बेअसर होता है। उसकी हंसी मानो दिल की सर्जरी हो, मानो पेसमेकर लगाया गया हो, जैसे मेरा दर्द गायब हो गया हो, मानो बस एक याद बनकर रह गया हो। उसकी हंसी मुझे उस सवाल की याद दिलाती है जो मुझसे अक्सर उन लोगों ने पूछा है जो फिक्शन नहीं पढ़ते, कि मैं इसमें अपना समय क्यों बर्बाद करती हूँ? क्योंकि वे पढ़ते नहीं, मैं चाहती हूँ कि वे आँचल से मिलें और कला की शक्ति को समझें। क्या मैं उसे सिर्फ़ अपनी नज़रों के दायरे में रखकर देख रही हूँ, जो मुझे सुंदर और कलात्मक लगती है? हाँ। लेकिन क्या मुझे इसकी परवाह

है? नहीं। मैं बस उसे देखती रहना चाहती हूँ।
वह कहती है, 'बात बस इतनी सी है कि जब भी मैं किसी अमीर आदमी के बारे में सोचती हूँ, तो मुझे लगता है कि वे सही नहीं हो सकते। अच्छा, उसने क्या किया होगा?'
'वह में था।'
'इसे जानता था।'
मैंने समझाया, 'वह हमारे रिश्ते को अपने माता-पिता से छिपा रही थी। बिल्कुल तुम्हारी तरह। लेकिन एक दिन, मुझे लगता है कि मुझे उससे बहुत प्यार हो गया, और मैंने हमारी एक तस्वीर ऑनलाइन पोस्ट कर दी। वह बुरी तरह भड़क उठी। और फिर, उसने मुझसे बात करना बंद कर दिया। अपनी सफाई में, मैं कहना चाहूँगी कि यह सिर्फ़ कुछ मिनटों के लिए था और फिर मैंने तस्वीर हटा दी। उसमें कोई कैप्शन भी नहीं था।'
वह मेरी तरफ देखती है।
अरे यार! ये तो बस कुछ मिनटों की बात थी! ठीक है, जो भी हो। अब हम इस बारे में और बात नहीं करेंगे। मुझे यकीन है वो मान जाएगी। किसी ने वो तस्वीर नहीं देखी। उसे इसे इतना बड़ा मुद्दा नहीं बनाना चाहिए।
प्रशिक्षक दूर से हमें हाथ हिलाकर इशारा करता है और धीरे चलने को कहता है—यह एक मुश्किल रास्ता है। मैं अपना ध्यान कहीं और लगाए हुए आगे बढ़ता हूँ।
‘Daksh?’ she says.
‘क्या यह बुरा था?’
'क्या?'
‘जब तुम्हारी माँ गर्भवती हुई थी? स्कूल में तुम्हारा प्रदर्शन कैसा था? तुम्हारी उम्र सोलह-सत्रह के आसपास रही होगी?’
वह पहली व्यक्ति हैं जिन्होंने मुझसे यह सवाल पूछा है। ज्यादातर लोग इस बात को पचा नहीं पाते कि मेरे माता-पिता ने चालीस की उम्र के आसपास बच्चा पैदा किया। उनके चुटकुलों की विविधता वाकई प्रभावशाली थी। सचमुच क्रूर और दुखदायी बातें। मुझे शर्म आती थी जब तक मुझे यह एहसास नहीं हुआ कि मेरे माता-पिता अलग थे, लेकिन अच्छे अर्थों में।
‘आपने इस बदमाशी का सामना कैसे किया?’
'वह हिस्सा आसान था। मैंने उन लड़कों से कहा कि उनकी माताओं को उनके पिताओं ने छुआ तक नहीं था, उनकी योनि धीरे-धीरे सूख रही थी और उनके पास एकमात्र सहारा प्रसव कर्मी थे जो उनके पिताओं के काम पर जाने के दौरान उनकी माताओं के साथ सीढ़ियों में यौन संबंध बनाते थे।'
'मेरे स्कूल में तो वे हॉकी स्टिक से तुम्हारी खोपड़ी फोड़ देते।'
मैं अपनी बाहें फैलाकर उसे दाहिनी ओर तेरह और बाईं ओर सात टांके दिखाती हूँ।
‘क्या तुम अपने माता-पिता से नाराज नहीं थे?’ वह पूछती है।
हमारी कश्तियाँ धीरे-धीरे तैर रही हैं और मैंग्रोव के घने पेड़ों के नीचे एक-दूसरे से

टकरा रही हैं। मैं स्कूल से, अपने कॉलेज से और यहाँ तक कि रब्बानी से भी मीलों दूर हूँ। कोई नहीं जान सकता कि मैं यहाँ उससे क्या कह रही हूँ। एक ऐसी बात जो मैंने खुद को भी बताने की हिम्मत नहीं की है।
'क्या मुझे आपको वो सब बताना चाहिए जो मैं आपको बताना चाहता हूँ?'
वह जवाब नहीं देती। यही सबसे सुरक्षित जगह है जहाँ मैं यह बात साझा कर सकती हूँ। उसका मेरी दुनिया से कोई लेना-देना नहीं है।
'उन नौ महीनों तक जब माँ ने उसे गर्भ में रखा, मैंने प्रार्थना की कि माँ का गर्भपात हो जाए। मैंने उनकी मृत्यु की कामना की,' मैंने स्वीकार किया।
'ठीक है।'
'जब मेरी माँ ने उसे जन्म दिया तब वह पहले से ही बूढ़ी थीं, इसलिए यह एक वास्तविक संभावना थी। और सिर्फ़ तब नहीं जब वह गर्भ में थी, अल्ट्रासाउंड में बस एक नन्ही सी हिलती-डुलती बच्ची, बल्कि अंतिम कुछ हफ्तों में भी—जब वह एक पूरी बच्ची थी, जिसके हाथ-पैर थे, धड़कता हुआ दिल था, हरकतें थीं, गुस्सा था, भूख थी—मैं चाहती थी कि वह मर जाए। उसके जन्म के क्षण तक, मैं चाहती थी कि मेरी माँ की गर्भनाल ही उसका गला घोंट दे।'
मेरी सांस भारी हो जाती है, जैसे मेरी श्वास नली में कोई गाढ़ा तरल पदार्थ फंसा हो। धीमी आवाज़ में, मैं बोलना जारी रखती हूँ। 'इन शब्दों को ज़ोर से कहने पर ऐसा लगता है जैसे किसी ने अपना हाथ मेरे गले में डाल दिया हो और मेरा दिल कुचल रहा हो।'
'वह तुम्हारे भविष्य का हिस्सा नहीं थी। ऐसा महसूस करना स्वाभाविक था,' वह सहज भाव से कहती है। 'यह कब बदल गया? अब तो तुम उसके साथ काफी घुलमिल गए लगते हो।'
'यह एक घिसी-पिटी बात है। वो सारे काले, पागलपन भरे विचार गायब हो गए, धूल में मिल गए जब मैंने पहली बार रब्बानी को मम्मी की गोद में छटपटाते देखा। तब वो बिल्कुल भी प्यारी नहीं थी। वो बिल्कुल चूहे जैसी थी, उसके छोटे-छोटे पंजे जैसे हाथ थे और माथे पर बाल ही बाल थे। मुझे उससे नफरत होने ही वाली थी। वो किसी प्यारी नवजात बच्ची जैसी नहीं थी, वो गुस्से से भरी, चिड़चिड़ी नवजात बच्ची थी। लेकिन मैंने खुद को प्यार के केंद्र में पाया। मैंने उसे देखा और सोचा, मुझे तुमसे नफरत करनी चाहिए, लेकिन मैंने बस इतना किया कि उसे मम्मी से ले लिया और उससे ऐसे प्यार से बातें की जैसे मैं कोई दाई हूँ। उस रात मुझे नींद नहीं आई। किसी अजीब इंसान की तरह, मैं उसके पालने के पास खड़ी रही और उसे घूरती रही।'
'प्यार की वजह से? या फिर आपको डर था कि भगवान आपकी बात सुन लेंगे और उसे आपसे छीन लेंगे?'
'दोनों। मैं उसकी छाती को घूरता रहता था, उसे ऊपर-नीचे होते देखता रहता था, यह सुनिश्चित करता रहता था कि वह सांस ले रही है या नहीं। उसके बाद कई महीनों तक मैं अपना गद्दा घसीटकर अपने माता-पिता के कमरे में ले जाता और ज़मीन पर सोता था। मैं तब तक नहीं सोता था जब तक बाबा या मम्मी सो नहीं जाते थे। ऐसा लगता

था जैसे अगर मैं अपनी आँखें बंद कर लूँ, तो वह मुझसे दूर चली जाएगी। अगर मैं उसे अकेला छोड़ दूँ, तो वह हमें छोड़कर चली जाएगी, मर जाएगी।'
'हालात कब बेहतर हुए?'
हालात कभी बेहतर नहीं हुए।
'हम सभी अपने कठिन समय में ईश्वर से प्रार्थना करते हैं,' वह अनिश्चितता से कहती है और चुप हो जाती है। '...यह हमारी असलियत नहीं है।'
'क्या पूछा था तुमने?'
उसकी नज़र हथेली पर बने धुंधले से स्वास्तिक पर पड़ती है। वह अपना सिर हिलाती है और मन ही मन कहती है, 'कुछ नहीं।' ज़ाहिर है, यह कुछ नहीं है, और मैं सोचता हूँ कि इसका उसकी हथेली पर बने स्वास्तिक से क्या संबंध है।
बाकी के कयाकिंग समूह के लोग नज़र आने लगते हैं। उनकी कयाकें किनारे की ओर खींची जा रही हैं। कुछ लोग अपनी लाइफ जैकेट उतार रहे हैं।
मैंने पूछा, 'क्या आप पहले सच में बच्चों को नापसंद करते थे?'
वह सिर हिलाती है। 'जब गौरव छोटा था, तो मैं उसे घर के कामों के लिए प्रतिद्वंद्वी समझती थी। या तो उसकी नई स्कूल यूनिफॉर्म होती या मेरी। उसके जूते होते या मेरे। अपने माता-पिता के साथ न्याय करते हुए कहूँ तो, उन्होंने कभी भेदभाव नहीं किया। हम दोनों बराबर वंचित थे। मुझे अपने भाई से तभी लगाव होने लगा जब वह स्कूल में अच्छा प्रदर्शन करने लगा। मुझे उससे सच्चा प्यार तब हुआ जब उसने एक प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता जीती और एक हजार रुपये का इनाम जीता।'
'मुझे लग रहा है कि तुम्हारे लिए मेरा आकर्षण धीरे-धीरे खत्म हो रहा है। लेकिन... तीन साल पहले, हम बच्चों के प्रति अपनी सामूहिक नापसंदगी के कारण एक-दूसरे के करीब आ सकते थे। मैं रब्बानी से कहती रहती हूँ कि उसे बहुत बुद्धिमान होना चाहिए क्योंकि मैं बाबा के एफडी को उसके साथ नहीं बाँटने वाली।'
'कम से कम आपके पास एफडी तो हैं।' वह हंसती है और उसका चेहरा खिल उठता है।
मैं गौरव की डोंगी की ओर चप्पू चलाते हुए बढ़ा और उसे अपनी चप्पू से धक्का दिया। 'तेरी बहन सोचती है कि तुम एक नाली हो।'
'दीदी? माँ-पापा,' वह उनकी ओर इशारा करते हुए कहता है। 'उनसे कहिए कि वे हमसे बात न करें।'
उनके माता-पिता समुद्र तट पर उनका इंतजार कर रहे हैं। वे कहीं और देख रहे हैं।
'हमसे बात मत करो,' आंचल मुझसे आगे बढ़ते हुए कहती है और अपने भाई के पास चली जाती है।
हम फिर से अजनबी हो जाएंगे।
वह कहती हैं, 'हम अब अजनबी नहीं रहे।'
प्रशिक्षक हमारी कयाकों को समुद्र तट से दूर ले जाते हैं।
OceanofPDF.com

6.

Aanchal Madan

मैंने महाभारत पहली बार आठवीं कक्षा में देखी थी। यह एक बेहद चौंकाने वाला अनुभव था। एक शानदार कहानी, लेकिन उसमें एक बेहद अजीब पल था। पाँच पुरुष, जो इंसानों से भी ज़्यादा देवताओं के समान थे, जुए के खेल में अपनी पत्नियों को दांव पर लगा देते हैं। मुझे याद है कि मैं सोच रहा था कि क्या यह कोई सपना है। क्या ये देवता समान पुरुष जागेंगे और इस लोक में जीवन भर के लिए जुआ खेलना छोड़ देंगे। लेकिन ऐसा नहीं था।
लेकिन अब, यह बात समझ में आती है।
जो खेल पांडवों के लिए पासे का खेल हुआ करता था, वही आज के लड़कों के लिए फीफा है: ध्यान भटकाने वाला एक सम्मोहक, रिश्तों को नष्ट करने वाला विशालकाय खेल।
गौरव रिज़ॉर्ट के टीवी रूम में दक्ष के प्लेस्टेशन पर फीफा खेल रहा है, जो टीवी से जुड़ा हुआ है। उसकी आँखें स्क्रीन पर टिकी हुई हैं। उसकी उंगलियाँ धीरे-धीरे कंट्रोलर के प्लास्टिक में समा रही हैं और जल्द ही खेल और उसके बीच कोई अंतर नहीं रह जाएगा। वह अपनी ही दुनिया में खोया हुआ है। मुझे आश्चर्य होता है कि अगर मैं गौरव को बताऊँ कि दक्ष ने मुझसे अपने प्यार का इज़हार किया है, तो क्या वह खेलने से मना कर देगा। मुझे लगता है कि भगवान जैसे मर्दों की तरह, वह भी फीफा ही चुनेगा।
जब हमारे माता-पिता खाना पकाने की क्लास के लिए गए थे, तब दक्ष हमसे बात करने आया। मुझे बहाना बना लेना चाहिए था, बजाय इसके कि मैं उस लड़के को बढ़ावा दूं जिसने अभी-अभी मुझसे कहा था कि वह मुझे पसंद करता है। लेकिन उसकी ईमानदारी भरी बातों को सुनकर मेरा संकोच टूट गया, उसने कहा, 'मैं बोर हो रहा हूँ। क्या तुम मेरे साथ घूमना चाहोगी?'
और जब दक्ष ने गौरव को अपने साथ ले जा रहे पुलिस गार्ड के बारे में बताया, तो ऐसा लगा जैसे गौरव दक्ष पर मोहित हो गया हो। वह शरमा रहा था। और सिर्फ़ वही नहीं, दक्ष लोगों से आसानी से घुलमिल जाता है। मैंने देखा कि चाचा-चाची भी उसके आसपास बेफिक्री से बातें करते और हँसते थे। मैंने इस बात को नज़रअंदाज़ करने की कोशिश की है, इसके बारे में न सोचने की कोशिश की है, और इसे नकारने की कोशिश की है। लेकिन वह आकर्षक है, और सिर्फ़ मुझे ही नहीं। मैंने उस बीच पर यह महसूस किया था जहाँ वह सही था—मैं उसे बारीकी से परख रही थी—लेकिन उसकी बेबाकी इतनी लुभावनी थी। और फिर कयाकिंग के दौरान, उसके साथ रहना कितना सहज था।
इस यात्रा से पहले, मेरा सबसे बड़ा डर यही था कि मैं खुद को अलग-थलग महसूस करूंगी। मैंने मन ही मन हर उस व्यक्ति के लिए तीखे जवाब तैयार कर रखे थे जो ज़रा

सा भी इशारा करता कि हम यहाँ के नहीं हैं। लेकिन उस रात समुद्र तट पर, ऐसा लगा जैसे उसने मेरे चारों ओर बनाई सारी काल्पनिक दीवारें तोड़ दीं। मैंने सोचा था कि सब लोग हमारे साथ बुरा बर्ताव करेंगे, लेकिन वह वहाँ मुस्कुरा रहा था, हमारे साथ समय बिताना चाहता था, यहाँ तक कि मेरे चिड़चिड़े भाई को भी बर्दाश्त कर रहा था।
अब दक्ष मेरे बगल में बीनबैग पर बैठा है और गौरव ने जिस जल्दी से खेल सीख लिया है, उससे वह प्रभावित है।
'शुरुआती लोगों को ये ट्रिक्स इतनी आसानी से समझ नहीं आतीं। आपने देखा गौरव ने वहां क्या किया? ये इलास्टिको है, इसके लिए बहुत तेज प्रतिक्रिया की जरूरत होती है,' दक्ष ने मुझे बताया।
'मेरा भाई बेवकूफ है। वह जो भी करता है, मैं उसका उतना ही कम सम्मान करता हूं।'
'अरे,' दक्ष विरोध करते हुए कहता है। 'ई-स्पोर्ट्स के इर्द-गिर्द एक पूरा उद्योग खड़ा हो रहा है। पश्चिम में कई सत्रह वर्षीय युवाओं ने गेम खेलकर खूब पैसा कमाया है। भारत में भी आने वाले वर्षों में यह बहुत बड़ा होने वाला है।'
मैंने जवाब दिया, 'मेरे माता-पिता उसे वीडियो गेम खेलने देने से पहले उसकी आंखें निकाल देंगे। हम दोनों का काम चूहा दौड़ में मोटे चूहे बनकर रह जाना है। वैकल्पिक करियर और शौक हमारे लिए नहीं हैं।'
और क्या एसआरसीसी इस चूहा-दौड़ में पहली बाधा है?
'बिल्कुल सही,' मैंने जवाब दिया। 'प्लेसमेंट से यह सुनिश्चित हो जाएगा कि हमें फिर कभी पैसों की समस्या नहीं होगी। अगर तुलना करें तो एसआरसीसी में औसत प्लेसमेंट किसी भी अन्य कॉलेज के अच्छे प्लेसमेंट से कहीं बेहतर है। अगर विक्की और मैं एसआरसीसी में दाखिला नहीं ले पाए, तो अगली बाधा पार करने के लिए हमें तीन साल और कड़ी मेहनत करनी पड़ेगी। संघर्ष जारी रहेगा।'
वह सिर हिलाता है, लेकिन मुझे नहीं लगता कि उसे बात समझ आई है। मुझे नहीं लगता कि जो व्यक्ति वीडियो गेम खेलना एक वैध करियर विकल्प समझता है, उसे यह पता होगा कि सही कॉलेज हम जैसे लोगों के जीवन में कितना बड़ा बदलाव ला सकता है।
दक्ष अपना फोन चेक करता है—पिछले बीस मिनट में तीसरी बार। मैं ऐसी दुनिया में रहना चाहूँगा जहाँ मेरी सबसे बड़ी चिंता यह हो कि मेरी गर्लफ्रेंड मुझे मैसेज का जवाब नहीं दे रही है, मेरी बहन को आइसक्रीम का सही फ्लेवर नहीं मिल रहा है और मेरे माता-पिता को सेक्स करने के लिए मज़ाक उड़ाया जा रहा है। लेकिन इन सब के बावजूद, मुझे दक्ष से कोई शिकायत नहीं है। बल्कि इसके बिल्कुल उलट है। मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि कोई मुझसे कहेगा कि उसे मुझ पर क्रश है और मुझे यह अजीब नहीं लगेगा। मैं सोचता रहता हूँ कि क्या यह इसलिए है क्योंकि वह हैंडसम है... या इसलिए कि उसकी एक बहन है जिसे वह बहुत प्यार करता है... या इसलिए कि वह अच्छा इंसान है। मैं समझ नहीं पा रहा हूँ कि ऐसा क्यों है।
पिछले कुछ सालों में, मुझे अपने बैग में प्यार के इज़हार लिखे हुए पर्चे मिले हैं, मुझे

क्रश के बारे में बताया गया है, लड़कों के वॉशरूम में मेरा नाम दूसरी लड़कियों के नामों के साथ लिखा हुआ मिला है... लेकिन किसी ने भी मुझसे सीधे मुंह पर इतनी इज़्ज़त से नहीं कहा कि उन्हें मुझ पर क्रश है, जितना दक्ष ने कहा।
वो बिलकुल भी घिनौना नहीं है। जब वो मुझे देखता है, तो ऐसा लगता है जैसे मैं समुद्र किनारे खड़ी हूँ और सुबह की धूप की गर्माहट धीरे-धीरे मुझ पर पड़ रही हो। वो अमीर है, पर घमंडी नहीं, बिल्कुल वैसा ही अमीर जैसा मैं बनना चाहती हूँ। और कभी-कभी मेरा मन उसकी तीखी नाक, उसके सधे हुए जबड़े या उसकी आँखों की कोमलता को याद कर लेता है। और फिर कभी-कभी मैं मन ही मन दक्ष के अपने क्रश के इज़हार को दोहराती हूँ। इससे मुझे अंदर से सुकून मिलता है। उसके बात करने का तरीका ऐसा है कि मुझे ऐसा लगता है जैसे मुझे कोई देख रहा हो, जैसे मैं महत्वपूर्ण हूँ, जैसे मेरा कोई महत्व है। ये वही रोशनी है जो वो मुझ पर डालता है। और इससे मुझे बहुत बुरा लगता है। ये मुझे विक्की की उन बातों की याद दिलाता है जो वो हमारे स्कूल की दूसरी लड़कियों के बारे में कहता था। छोटी स्कर्ट पहनने वाली लड़कियाँ। वो लड़कियाँ जो वॉशरूम के पास लड़कों के साथ घूमती रहती थीं।
उस तरह की लड़की।
‘अभी तक कोई मैसेज नहीं आया?’ मैंने उससे पूछा, यह सोचते हुए कि समीक्ष को कैसा लग रहा होगा अगर वो मुझे, एक अनजान अजनबी को, इतना पसंद कर सकता है। और फिर मैंने सोचा कि अगर विक्की किसी लड़की को बता दे कि उसे उस पर क्रश है, तो मुझे कैसा लगेगा। बिल्कुल अच्छा नहीं लगेगा।
वह अपना सिर हिलाता है। 'वह करेगी... देर-सवेर।'
‘क्या वह कॉलेज में है?’
'पहले साल में दर्शनशास्त्र में ऑनर्स कर रही है। लेकिन वह अंग्रेजी की पढ़ाई करने के लिए ब्रिटेन जाना चाहती है। वह कोशिश कर रही है, देखते हैं क्या होता है।'
'यह कितना प्यारा है कि आप लोग अंग्रेजी और दर्शन जैसे पाठ्यक्रम बिना इस बात की चिंता किए कर सकते हैं कि पाठ्यक्रम पूरा करने के बाद आपको कैसी नौकरी मिलेगी।'
वह भौंहें चढ़ा लेता है। मुझे चिंता होती है कि कहीं उसकी अमीरी के बारे में मेरी लगातार बातें उसे परेशान न कर दें।
वह कहता है, 'यार, मैं क्या कहूँ? यह सच है कि एक सवाल गलत होने से हमारी भविष्य की योजनाएँ धराशायी नहीं हो जाएँगी। कॉलेज में दाखिला पाने के लिए चारों विषयों में 100 प्रतिशत अंक लाना... यह तो सरासर . . . पागलपन है... यह एक घटिया शिक्षा प्रणाली है।'
‘वैसे, मैं आपको दोष नहीं दे रहा हूँ,’ मैंने स्पष्ट किया। ‘यह अजीब बात है कि हमारे जीवन का अधिकांश हिस्सा महज़ संयोग पर निर्भर करता है। यह भाग्य की बात है। वैसे, दुबई में रहना मज़ेदार होगा।’
वह हंसता है, उसके चेहरे पर थोड़ी रौनक लौट आती है। 'उम्म... मैं कहने ही वाला था कि ठीक है, कोई खास बात नहीं है, लेकिन आप लोग मुझे गलत समझेंगे, तो चलिए

मैं अपनी बात सुधार लेता हूँ। उम्म... तो... भारत के मुकाबले तो यह कमाल का है। कम ट्रैफिक, रिश्वतखोरी नहीं, सब कुछ सुचारू रूप से चलता है, कोई धोखा नहीं देता, हर जगह एयर कंडीशनिंग है, एकदम सुरक्षित है। यह एक शॉपिंग मॉल जैसा है। शॉपिंग मॉल में तो शायद ही कभी कोई शिकायत होती है।'
'लेकिन?'
मैंने कभी नहीं कहा कि इसमें कोई 'लेकिन' है।
'ऐसा लगा जैसे कोई 'लेकिन' था...'
वह मान जाता है। 'लेकिन मम्मी कहती हैं कि यहाँ कोई संस्कृति नहीं है। सब कुछ मानव निर्मित, कृत्रिम है।'
मैं अपनी आँखें घुमाती हूँ। 'मुझे संस्कृति से ज़्यादा आराम चाहिए। वैसे भी, सब कुछ इंसान का बनाया हुआ है, कृत्रिम है। भारत के सबसे पुराने मंदिर और मस्जिदें भी इंसान की बनाई हुई हैं। दो सौ साल बाद, लोग बुर्ज खलीफ़ा को स्मारक कहेंगे। यह तो बस समय की बात है।'
वह फिर से अपना फोन देखता है।
'मुझे जल्दी से बाजार जाना है,' वह कहता है। 'क्या तुम आना चाहोगी?'
मैं उसके साथ हर जगह जाना चाहती हूँ। यह बिल्कुल गलत है। मेरा एक हिस्सा कहता है कि छुट्टियों का मकसद ही यही है: नई-नई चीजों का अनुभव करना। अगर अनुभव सिर्फ उस आकर्षक लड़के की संगति में रहना है जो गेमिंग को कूल समझता है, फिलॉसफी ऑनर्स को एक वैध करियर मानता है और शिक्षा प्रणालियों के निष्पक्ष होने की बात करता है, तो क्या हुआ? लेकिन मेरा दूसरा हिस्सा मुझे इस खतरनाक रास्ते की याद दिलाता है। विक्की को दक्ष के बारे में कुछ पता नहीं है। ऐसा नहीं है कि उसे बताने जैसा कुछ है। मैंने उससे झूठ नहीं बोला है, खुलकर नहीं, बस उसे बताया नहीं है। लेकिन उसे बताना समझदारी नहीं है। विक्की को मेरा दूसरे लड़कों से बात करना पसंद नहीं है, जैसे मुझे उसका दूसरी लड़कियों से बात करना पसंद नहीं है। और यह किसी छोटी सी बात पर झगड़ा करने का सबसे बुरा समय है। दक्ष मुझे पसंद करता है, मैं उसे नहीं। मेरे लिए... वह... दक्ष के शब्दों में, एक मेंढक है जिसे चीर-फाड़ के लिए मेज पर रखा गया है। बस फर्क इतना है कि वो मेंढक नहीं, बल्कि राजकुमार है, एक भोला-भाला राजकुमार जो देखने में बेहद खूबसूरत है और छुट्टियों के माहौल को और भी खुशनुमा बना देता है। मेरे मन में चल रही बातें मुझे... मेरे स्वभाव से अलग कर देती हैं।
उस तरह की लड़की।
'मैं तुम्हारे साथ नहीं आ सकती, दक्ष,' मैंने मना कर दिया।
'आपके माता-पिता खाना पकाने की कार्यशाला में हैं। वे अगले कम से कम एक घंटे तक खाली नहीं होंगे।'
'मुझे पता है, लेकिन यह एक और झूठ होगा जो मुझे विक्की से बोलना पड़ेगा। झूठों की सूची लंबी होती जा रही है और मुझे यह पसंद नहीं है।'
'इसे बाजार में उतारा जा रहा है, यह कोई तारीख तय नहीं है।'

‘बाजार में अकेले उस लड़के के साथ जाना जिसने मुझसे कहा है कि वह मुझे पसंद करता है। इसमें काफी फर्क है,’ मैंने उसे टोकते हुए कहा। ‘मैं उसे यह भी नहीं बता सकती कि मैं तुमसे मिली थी।’
वह भौंहें चढ़ाता है।
'जब मैं दूसरे लड़कों से बात करती हूं तो उसे अच्छा नहीं लगता,' मैंने समझाया।
‘जब तुमने उससे एक झूठ बोल ही दिया है तो एक और झूठ बोलने में क्या हर्ज है? चलो, तुम्हारे बिना मैं ऊब जाऊंगी।’
पंद्रह मिनट बाद, मैं उसके किराए के स्कूटर पर पास के बाज़ार जा रही थी। हर कुछ मिनटों में कुछ पलों के लिए, वह खुद को संभालने के लिए मेरा हाथ अपनी कमर पर रख लेता था। मैं विक्की को धोखा नहीं दे रही थी, लेकिन वह इसे धोखा ही कहता। अपराधबोध की छोटी-छोटी लहरें मुझ पर छा जाती थीं। यह तब और बढ़ जाता था जब मेरी नज़र उसके चेहरे पर हल्की दाढ़ी, उसकी ठुड्डी और गर्दन के कोण, उसकी घनी भौहों पर टिक जाती थी।
उस तरह की लड़की।
हम एक दवा की दुकान पर रुके, और उसने लेंस सॉल्यूशन, डायपर का एक पैकेट, फ्लेक्सन की एक पट्टी और दो कॉर्नेटो आइसक्रीम कोन मंगवाए। हमने अपने कॉर्नेटो खाए और उसने मुझसे पूछा कि विक्की और मैं कैसे मिले थे।
'हमारी मुलाकात किसी पार्टी में यूं ही नहीं हुई थी जहां हमारी सोच मिलती-जुलती हो।'
‘मुझे तुम्हारी आवाज़ में थोड़ी सी व्यंग्यात्मकता महसूस हो रही है,’ वह मुस्कुराते हुए कहता है। ‘लेकिन बोलो।’
‘हम ग्यारहवीं कक्षा में थे। मैंने उसे उप-प्रधानाचार्य के कार्यालय के बाहर गुस्से से आग बबूला, बेहद क्रोधित पाया। कुछ लोगों ने परीक्षा में नकल की थी। उन्हें उससे ज्यादा अंक मिलते। वह शिकायत करने आया था।’
मुझे लगता है मैं अंदाजा लगा सकता हूं कि आपके स्कूल में सबसे अलोकप्रिय बच्चा कौन था।
‘मैं भी उसी कारण से वहां था,’ मैंने दक्ष को बताया।
'अब मैं अंदाजा लगा सकता हूं कि सबसे अलोकप्रिय दो बच्चे कौन थे,' वह हंसते हुए कहता है।
जैसे-जैसे मैं उसे विक्की के बारे में और वह मुझे समीशा के बारे में बताता है, हमारे बीच का अंतर मुझे स्पष्ट होता जाता है। उसका रिश्ता प्यार में पड़े एक पिल्ले जैसा है, दो लोगों का एक अनियोजित रिश्ता जो साथ में अच्छी चीजें करना चाहते हैं, जैसे फिल्में देखना और पार्टियों में जाना— हानिरहित लेकिन कुल मिलाकर खोखला। मेरा रिश्ता वैसा है जैसा होना चाहिए—दोनों के विकास का मार्ग, एक ऐसा भविष्य जिसे मिलकर बनाया जा सके। एक ऐसा रिश्ता जो किसी अनजान लड़के के प्यार के इज़हार को भी आसानी से झेल सके।
‘मैं आखिरकार विक्की को तुम्हारे बारे में बता ही दूंगी... बस सही समय का इंतजार

है।'
'बताने के लिए कुछ नहीं है,' वह कहता है।
मैंने आइसक्रीम का एक टुकड़ा खाया। 'मैं ऐसा पहली बार कर रहा हूँ।'
'छुट्टियों का सबसे पहला नियम यही है। आप वो सब करते हैं जो आपने पहले कभी नहीं किया। सामान्य नियम लागू नहीं होते। हम बस मौज-मस्ती कर रहे हैं। और कुछ महीनों बाद आपको ये छुट्टी या मैं याद भी नहीं रहूँगी। तो आराम करो।'
वह मुझे थपथपाता है। उसका स्पर्श इतना सहज है। बेशक, इसका कोई मतलब नहीं है। लेकिन यह उन बातों की मेरी सूची में शामिल हो जाता है जो मैं विक्की को नहीं बता सकती। उन बातों की सूची जो यह दर्शाती हैं कि हमारा कोई रिश्ता नहीं था।
'मैं एकदम शांत हूँ। पिछले दो महीनों में मैं इतना शांत कभी नहीं रहा। नतीजों का तनाव...' मैंने कहा। 'ऐसा लग रहा था जैसे मैंने एक गहरी साँस ली हो और नतीजे घोषित होने तक उसे छोड़ ही नहीं पा रहा था। लेकिन इस छुट्टी ने... मुझे थोड़ी राहत दी है। यह एक अच्छा ध्यान भटकाने वाला है।'
'इस मनोरंजक गतिविधि का हिस्सा बनकर अच्छा लग रहा है,' वह गर्मजोशी भरी मुस्कान के साथ कहते हैं।
मैंने कहा, 'मुझे विश्वास नहीं हो रहा कि गौरव ने मुझे तुम्हारे साथ जाने से नहीं रोका।'
'फीफा—'
मेरे फोन की घंटी बजने से उसकी बातचीत में खलल पड़ा। यह विक्की का फोन था। अपराधबोध से मेरा पेट मचलने लगा। मैंने खुद को संभाला और फोन उठाया।
'सुप्रभात, जान।'
'एकीकरण का सवाल, आखिरी वाला,' वह हकलाते हुए बोला। 'तुम्हारा जवाब क्या था?'
'क्यों?'
'मैंने उत्तर कुंजी देखी। आँचल, उत्तर क्या था?' वह चिल्लाता है।
हमने चाबियों की जांच न करने का फैसला किया था। हमने इस भरोसे के साथ जीने का फैसला किया था कि हमसे कोई गलती नहीं होगी।
'Aanchal?' he grumbles.
मुझे वह सवाल याद है। वह कोई कठिन सवाल नहीं था। यह उन पांच सवालों में से एक था जिनका मैंने पहले तीस मिनट में सामना किया था। '42।'
'नहीं,' वह कहता है।
उसके शब्द किसी थप्पड़ की तरह चुभते हैं। मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगता है।
'नहीं?' मैं बुदबुदाती हूँ। 'लेकिन मैंने संशोधन किया था...'
'यह 42 है,' वह अटकते हुए बोला। '42 ही उत्तर है। सभी उत्तर कुंजियों में 42 ही उत्तर है। लेकिन यह 42 कैसे हो सकता है?'
मेरे पूरे शरीर में राहत की लहर दौड़ गई।
'यह छह अंकों का प्रश्न था,' वह अपनी बात जारी रखते हैं, उनकी आवाज जितनी दूर से आ रही है उससे कहीं अधिक दूर महसूस हो रही है।

मुझे हवा का रुख बदलते हुए महसूस हो रहा है।
‘विकी?’
मुझे फोन पर उसकी भारी साँसें सुनाई दे रही हैं।
'उत्तर 42 है,' वह टूटे हुए इंसान की आवाज में कहता है।
‘तो हमने सही अनुमान लगाया था?’ मैं यह जानते हुए पूछता हूं कि यह झूठ है।
‘21, मुझे 21 मिले... आँचल। छह अंक...’
उसकी आवाज धीमी पड़ जाती है।
वह फिर से बोलता है, इस बार उसकी आवाज में गुस्सा था, 'एसआरसीसी का तो सवाल ही नहीं उठता। मैं सफल नहीं हो पाऊंगा...'
‘जान—’
'। । । आप करेंगे।'
वह कॉल काट देता है।
मैं वहीं खड़ी रही, अपने हाथ में पकड़े फोन को देखती रही। मैंने उसे वापस कॉल किया। उसका फोन बंद था।
‘अति आत्मविश्वास,’ मैंने दक्ष से कहा। मेरा सिर चकरा रहा था।
मैं सोफे पर बैठकर खुद को शांत करने की कोशिश करती हूँ। मेरा खून खौल रहा है। मुझे डर था कि विक्की यही करेगा। मैं उसे बार-बार कह रही थी कि आराम से काम लो, बेवकूफी भरी गलतियाँ मत करो, और उसने ठीक वही किया है। मैं लगभग कल्पना कर सकती हूँ कि वह सवाल की सरलता पर मुस्कुरा रहा होगा और फिर आखिरी दो कदम छोड़ देगा। यहीं उसने गलती की है। मेरा सिर भारी हो रहा है।
मेरी आवाज़ गुस्से से भर उठी, 'हमने ऐसे ही सवाल सैकड़ों बार किए थे। सैकड़ों बार! उसे गलती नहीं करनी चाहिए थी। वह सवाल तो हल कर लेता था, लेकिन उसमें मान नहीं डालता था। क्यों? "यह तो बहुत आसान है!" वह कहता था। फिर वह मुझे ऐसे देखता था जैसे मैं कोई नासमझ छोटी बच्ची हूँ। मैंने उसे कितनी बार चेतावनी दी थी, कितनी बार दी थी। मैं बार-बार कहती रही, "विकी, जवाब पूरा करो, विकी, जवाब पूरा करो," लेकिन नहीं, उसने मेरी बात नहीं सुनी।'
‘यह सिर्फ एक सवाल है, आँचल।’
‘एक सवाल?’ मैंने ताना मारा। ‘इससे विक्की और मेरा क्या होगा? अगर मैं कामयाब हो जाऊं और वो...’
‘क्या वे दोनों एक ही विश्वविद्यालय में पढ़ते हैं? क्या वे अभी भी रिश्ते में हैं?’
‘तुम नहीं समझोगे। तुम तो बस दुबई के बच्चे हो,’ मैंने गुस्से से कहा। ‘मैं तुमसे इस बारे में बात क्यों कर रही हूँ?’
वह आत्मसमर्पण करते हुए हाथ ऊपर उठाता है और शांत स्वर में बोलता है, 'देखो, मुझे पता है कि तुम गुस्से में हो। लेकिन तुममें से किसी एक के पास अभी भी आगे बढ़ने का मौका है। अगर नहीं, तो अगली बाधा के लिए तुम सब साथ रहोगे।'
‘बस... इसके बारे में बात मत करो।’
क्या तुम उससे नाराज़ हो? या अपने परिणाम को लेकर डरे हुए हो?

‘क्या मैं दोनों नहीं हो सकती?’ मैं गुस्से से बोली। ‘अगर वो एसआरसीसी में होता, तो मैं अगले साल अपने माता-पिता को उसके बारे में बता सकती थी। वो अपने माता-पिता को मेरे बारे में बता सकता था। तुम्हें क्या लगता है, जब मुझे उसके बेटे से बेहतर रैंक मिलेगी तो उसकी माँ का क्या रिएक्शन होगा? वो इकलौता बेटा है। आंटी को उससे बहुत लगाव है।’
और मुझे लगता है कि अगर आप लोग उनके माता-पिता को समझाने की कोशिश भी करेंगे तो भी वे नहीं समझेंगे?
‘तुम्हें लगता है विक्की खुद समझेगा? उसकी वजह से ही मुझे एसआरसीसी में दाखिला मिलने का मौका मिला है। उसने ही मुझे पढ़ाया है...’ मेरी सांसें थम सी गई हैं। अब अगर मुझे दाखिला मिल गया और उसे नहीं... तो... चलो होटल वापस चलते हैं।’
मैं वापस आते समय अपने आंसुओं को रोकने की पूरी कोशिश करती रही।
आठ साल तक एक ही स्कूल में पढ़ने के दौरान विक्की ने मुझसे कम अंक केवल दो बार प्राप्त किए; एक बार गणित में, एक बार अर्थशास्त्र में। पहली बार उसने मुझसे हारने को 'बेहद शर्मनाक' बताया। दूसरी बार उसने हमारे अर्थशास्त्र शिक्षक को विकृत मानसिकता वाला व्यक्ति कहा जो मुझसे ज़्यादा उसका पक्ष लेता था। दोनों बार वह खुद पर और मुझ पर बहुत गुस्सा था।
उसके बाद, जब भी हमारी उत्तर पुस्तिकाएँ बाँटी जातीं, मैं यही कामना करता कि उसे भी उतने ही अंक मिलें जितने मुझे, ताकि बाद में होने वाली अप्रिय स्थिति से बचा जा सके। हमारे नाम के अनुसार, मेरा रोल नंबर हमेशा पहला होता था और उसका आखिरी। मेरी उत्तर पुस्तिका सबसे पहले बाँटी जाती, उसकी सबसे आखिरी में। इसका यह भी मतलब था कि अगर मुझे 99 अंक मिलते, तो मैं अपनी साँस रोककर तब तक प्रार्थना करता जब तक उसका रोल नंबर नहीं आ जाता, कि उसे भी कम से कम 99 अंक मिलें।
विकी को मुझसे हारना पसंद नहीं था—मैं उसका छात्र था। और मैं भी नहीं चाहता था कि वह मुझसे हारे। एक तो इसलिए कि मुझे डर था कि वह कैसा व्यवहार करेगा। और दूसरा इसलिए कि उसके पिता उसके साथ क्या करेंगे। माँ-पापा हमसे और गौरव से अच्छे की उम्मीद करते हैं; वे हमें डांटते हैं, प्यार नहीं देते, लेकिन कभी हाथ नहीं उठाते। लेकिन विकी के पिता—जो गणित के शिक्षक हैं—हर कम नंबर पर उसे नंगा करके पीठ पर बेंत मारते हैं। चाचा तब तक नहीं रुकते जब तक खून न निकल जाए। कभी-कभी विकी स्कूल की कमीज़ से खून रिसता हुआ आता था। यह सोचकर ही रोंगटे खड़े हो जाते हैं कि अगर वह गणित में एक सवाल से SRCC परीक्षा में पास होने से चूक जाए तो उसके पिता क्या करेंगे।
टीवी रूम में वापस आकर, गौरव अभी भी प्लेस्टेशन पर खेल रहा है।
‘गौरव, चलो चलते हैं,’ मैंने उसे पुकारा।
‘पांच मिनट, दीदी।’
‘मैं इसे दोबारा नहीं कहूंगा, चलो चलते हैं,’ मैंने उसे चेतावनी दी।

वह मेरी बात नहीं सुनता। मैं तार खींचकर निकाल देता हूँ। स्क्रीन खाली हो जाती है।
‘दीदी!’ वह चिल्लाता है।
“अगर तुमने एक बार और चिल्लाया तो मैं तुम्हें थप्पड़ मार दूंगी। और अगर मैंने तुम्हें एक बार फिर वीडियो गेम खेलते हुए देखा, तो देखना मैं क्या करूंगी,” मैंने उसे चेतावनी दी। “माँ-पापा हमारे लिए इतना कुछ करते हैं और तुम बस गेम खेलते रहते हो। एक थप्पड़ और तुम्हें समझ आ जाएगा।”
वह बहस करने ही वाला था, लेकिन मेरे चेहरे को देखकर उसने अपना इरादा बदल दिया। हम चुपचाप अपने कमरे में चले गए। वह चिढ़ गया था, लेकिन मुझसे कुछ कहने की हिम्मत नहीं कर पाया। मेरा गुस्सा धीरे-धीरे कम होने लगा।
मैंने गौरव से कहा, 'विक्की ने एक सवाल का गलत जवाब दिया। वह कट-ऑफ पार नहीं कर पाएगा।'
पहले तो वह मुझे अनदेखा करने के लिए कंधे उचका देता है। दो कदम आगे बढ़ने पर वह फुफकारता है, 'जैसे कि तुम्हें परवाह हो, दीदी।'
'इसका क्या मतलब है?'
‘तुम्हें सिर्फ अपनी ही परवाह है। विक्की का क्या होता है, इससे किसे मतलब है?’
‘गौरव, तुम्हारा क्या मतलब है? मैं नहीं—’
वो मेरी बात काटते हुए बोला, ‘गीतिका और कनिका याद हैं? दसवीं कक्षा तक तो वो तुम्हारी दोस्त थीं। लेकिन जैसे ही तुम विक्की से मिलीं और तुम्हें एहसास हुआ कि तुम दोनों एसआरसीसी या किसी और संस्थान में दाखिला ले सकती हो, तुम उन्हें भूल गईं। विक्की के साथ भी ऐसा ही होगा। तुम्हें कोई और मिल जाएगा। वो पीछे छूट जाएगा। चिंता मत करो।’
मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मेरा शरीर आग से जल रहा हो। मेरा भाई मेरे बारे में ऐसा कैसे कह सकता है?
‘क्या मतलब, मुझे तुम्हारी परवाह नहीं है? माँ-पापा की? तुम ऐसा कैसे कह सकते हो? क्या मैं तुम्हारे लिए कुछ नहीं करता?’
गौरव मुस्कुराता है। ‘दीदी,’ वह धीरे से कहता है। ‘आप हमारी, अपने परिवार की परवाह करती हैं...’ वह मेरी तरफ देखता है। ‘...लेकिन किसी और की नहीं। चाहे विक्की हो या कोई और।’
'चुप रहो, गौरव।'
‘तुम यह भी जानती हो कि तुम दुनिया की सबसे ख्याल रखने वाली गर्लफ्रेंड नहीं हो। तुम सबसे बुरी हो—’
'आप गलत हैं।'
अरे दीदी, आप तो पहले से ही इस लड़के से बात कर रही हैं। मुझे यकीन है कि आप उसे पसंद करती हैं!
‘ओये!’
‘तो फिर तुम्हारे हाथ पर यह क्या है?’ वह इशारा करते हुए कहता है। ‘अगर एक व्यक्ति को यह पार करना है, तो क्या वह तुम नहीं होने चाहिए?’

मैं अपने हाथ को देखता हूँ।
'जो भी हो, दीदी,' वह कहता है।

OceanofPDF.com

7.

Daksh Dey

Hi Daksh

तुम कहाँ थे? क्या तुम मुझे भेज नहीं सकते थे?
क्या इतने समय से सिर्फ एक ही मैसेज आ रहा था?
सोच रहा था...

आपको बेवजह चक्कर लगाने की जरूरत नहीं है।
मुझे पता है, तुम दोनों का ब्रेकअप हो रहा है। तुम कर सकते थे।
उन्होंने मुझे जाने के बजाय अभी बताया है
एक हफ्ते से लापता।
दक्ष, सोचना पड़ा। नहीं।
मैंने यह निर्णय आसानी से ले लिया है।

आप मुझे मैसेज करके बता सकते थे कि आप...
हम अपने रिश्ते के बारे में सोच रहे हैं।
हमने इस बारे में चर्चा कर ली है। क्या यह बहुत ज्यादा काम है?
अगर मैंने कुछ कहा होता, तो तुम
इससे मेरे पर प्रभाव पड़ता
फ़ैसला।

हम साथ थे। मैं कैसे नहीं हो सकता?
क्या वे हमारे बारे में निर्णय को प्रभावित कर सकते हैं?
यह मेरे बारे में है
क्या मैं आपको कॉल कर सकता हूँ?
नहीं

तो हम अलग हो रहे हैं और मुझे तो पता भी नहीं।
आपको कॉल करने का मौका मिले? बढ़िया।
तुम मेरा मन बदल दोगे।
टेक्स्ट मैसेज के जरिए करना कहीं ज्यादा आसान है।
किसके लिए आसान?
मुझे खेद है दक्ष।

क्या मुझे कोई कारण बताया जाएगा? या आप कुछ और जानना चाहते हैं?

क्या इससे आपके लिए और भी आसान हो जाएगा?
लंदन जा रहा हूँ। मुझे मिल गया
प्रवेश। मुझे यह खबर कल मिली।
सप्ताह
बधाई हो!
व्यंग्यात्मक?
कदापि नहीं।
धन्यवाद

तो आप लंबा समय नहीं चाहते थे-
दूर का रिश्ता। क्या यही वजह है कि हम हैं?

तोड़ना?
अन्य बातों के अलावा

चीज़ें? यह जानकर अच्छा लगा कि एक सूची है।
मुझमें जो कमियां हैं।

ऐसा मत बनो

जैसे क्या? चोट? मैंने लगभग
हर पल तुम्हारे बारे में सोचता रहता हूँ

और मुझे चोट नहीं लगनी चाहिए?
मुझे खेद है। मुझे ऐसा नहीं कहना चाहिए था।
मुझे भी दर्द हो रहा है।

लंदन जाना आपके लिए बहुत कष्टदायक होगा।
और वहां एक रोमांचक नए जीवन की शुरुआत करें।

Daksh

माफ़ कीजिए, मैं बहुत गुस्से में हूँ। बाकी क्या हैं?

सूची में कौन-कौन सी चीजें हैं?
पिछले कुछ महीने बहुत अच्छे रहे।
दक्ष। मैं इसे खत्म नहीं करना चाहता।
आपको इस तरह की बातें बताकर
मुझे जानने का अधिकार है।
आप बहुत अच्छे हैं

किसी ने भी मुझ पर कभी आरोप नहीं लगाया है

अच्छा।
आप ऐसा व्यवहार करने की कोशिश करते हैं जैसे आप एक
चालाक, हरामी लड़के, लेकिन तुम
बहुत अच्छा। ज़रूरत से ज़्यादा अच्छा।

यह एक बहुत ही अजीब कारण है

फेंक दिया।

लेकिन मुझे इससे कुछ अधिक चाहिए
मेरा साथी
क्या अधिक?
महत्वाकांक्षा दक्ष। तुम नहीं चाहते
कुछ भी करने के लिए। आपने बस पढ़ा।
किताबें, खेल, गेम और वीडियो देखें
दिखाता है। यह थोड़ा... दुखद है।
हर किसी को अपने जीवन का ढांचा तैयार कर लेना चाहिए।
क्या वे 19 साल की उम्र तक बाहर निकल जाएंगे?
उन्हें कम से कम कोशिश तो करनी चाहिए। मैं नहीं करता।
यू में इसे देखें
इसलिए मेरे पेशेवर विकल्पों ने मुझे आगे बढ़ाया
आपसे दूर। यह थोड़ा अजीब है।
आपने मेरे साथ समय बिताया
क्या यह बुरी बात है?
इसका चिपचिपा
बहुत खूब।
मैं तुम्हारी सब कुछ नहीं हो सकती।
तुमने वो तस्वीर पोस्ट की थी, मुझे पता था
हमें अलग होना पड़ा
यह सोचना मूर्खतापूर्ण है कि तुम मेरे थे
सब कुछ। तुम बहुत कुछ थे, लेकिन नहीं।
हर चीज़। अपनी क्षमता को ज़रूरत से ज़्यादा मत आंकिए।
महत्व। मुझे बस तुम्हारे स्तन पसंद आए।
Daksh.
यह एक मजाक था।
मुझे माफ करना बच्चे
मुझे नहीं पता कि मैं आपसे क्या कहूँ।
यह बेवकूफी भरा लगता है। यह तो बस एक तस्वीर थी।
तस्वीर नहीं, बल्कि कुछ और बात थी।
यह दर्शाता है। काश मेरे पास और होता।
कहने के लिए
आपने हमारे बारे में लोगों को क्यों नहीं बताया?
मुझे हमारे बारे में यकीन नहीं था
आपने अपने कॉलेज में प्रवेश पाने के लिए इंतजार किया।
अगर आपको प्रवेश नहीं मिलता, तो क्या हम अभी भी
एक साथ होना?

आप मुझसे ये सवाल क्यों पूछ रहे हैं?
सवाल? उनका मतलब नहीं है
अब और कुछ भी नहीं
आपने मुझे इतने लंबे समय तक लटकाए क्यों रखा?
तुम्हें जाने देना मुश्किल है
ज़ोर-ज़ोर से हंसना।
मैं गंभीर हूं
ऐसा लगता तो नहीं है।
दक्ष, तुम एक लत हो।
यह कठिन है, मेरा विश्वास करो।
जो भी हो। यह सब बकवास है।
जो है सो है
बकवास।
Sorry Daksh
क्या मैं आपको कॉल कर सकता हूँ?
आप हमसे वापस आने के लिए कहेंगे और आप
मुझे मना लेगा। मैं नहीं चाहता
ऐसा होने के लिए
मैं नहीं करूँगा।
तो फिर आप बात क्यों करना चाहते हैं?
क्योंकि मुझे आपकी आवाज बहुत पसंद है।
Daksh. Dnt do that
यह बिल्कुल वास्तविक लग रहा था।
यह सच था
अगर ऐसा होता, तो मुझे नहीं लगता कि हम होते
इस तरह बात करना।
काश तुम बिल्कुल वैसे ही होते जैसे
लोगों ने मुझसे कहा था कि तुम ऐसे होगे
यह क्या है?
इश्कबाज़ी करना
मैं वही हूँ।
नहीं, तुम नहीं हो। तुम एक पिट बुल हो, एक
बाहर से रॉटवीलर जैसा दिखता है, लेकिन
एक पुराने की वफादारी के साथ
लैब्राडोर
यह जानकर अच्छा लगा कि मैं एक कुत्ता हूँ।
सच कहूँ तो, मुझे लगा था कि तुम ऐसा करोगे।

चले जाओ। वरना मुझे पता चल जाएगा कि तुम कुछ और लड़कियों के साथ मुझे धोखा दे रहे हो।
औरत
सबूतों से यही पता चलता है कि मुझे छोड़ दिया जाता है।
ऐसा मत बनो
मैं कैसा हूं, इससे आपको कोई लेना-देना नहीं है।
क्षमा मांगना
जो है सो है।
Daksh
?
Daksh?
कोई बात नहीं। अपना ख्याल रखना।
अंडमान कैसा है?
मेरी जिंदगी में दिलचस्पी मत लो। अगर ऐसा नहीं है तो।
प्यार, हमारे लिए इसका कोई महत्व नहीं है।
Daksh yaar
मुझे किसी पर क्रश है।
उसे लगता है कि मैं भी दुबई का एक बेवकूफ बच्चा हूँ।
मैं कुछ इसी तरह के दौर से गुजर रहा हूँ।
उम्मीद है उसके साथ सब ठीक हो जाएगा
वो डेटिंग कर रही है। खैर, मुझे जाना होगा।
अलविदा। मुझे खेद है।
मुझे इस बात का भी अफसोस है कि मैं आपके लिए पर्याप्त नहीं हूं।
तुम्हें। तुम्हें कभी भी उस लड़की पर भरोसा नहीं करना चाहिए था।
वह अपने वाक्यों का अंत पूर्ण विराम से नहीं करती है।
थोड़ी बहुत अंग्रेजी सीख लो।

OceanofPDF.com

8.

Aanchal Madan

'क्या आपको चर्च पसंद है?' मां ने फोन पर पूछा।
'यह बहुत उबाऊ है। मुझे तुम्हारे साथ आना चाहिए था,' मैंने जवाब दिया।
'कोई बात नहीं, आँचल। शुक्रगुजार रहो। और समूह से अलग मत होना, ठीक है? जो

टोपी उन्होंने तुम्हें दी है, उसे पहने रहना। हम तुम्हें रेस्टोरेंट में मिलेंगे। और बस ध्यान रखना कि गौरव ज्यादा उछल-कूद न करे।'
मम्मी-पापा ने रॉस आइलैंड टूर में न जाने का फैसला किया और इसके बजाय ग्रुप के बाकी लोगों के साथ फ्ली मार्केट घूमने चले गए। वे हर पांच मिनट में हमें फोन करके हमारा हालचाल पूछते रहते हैं।
'ठीक है माँ, अलविदा।'
कृतज्ञ बनो।
पिछले कुछ वर्षों में, हमारी स्टेशनरी की दुकान में एक खास तरह की चीज़ की बिक्री में बढ़ोतरी हुई है: कृतज्ञता डायरी। यह लोगों को उन चीज़ों की याद दिलाती है जिनके लिए उन्हें आभारी होना चाहिए। कृतज्ञता डायरी के लिए हमारे पास कभी भी दोबारा ग्राहक नहीं आते। क्योंकि हम चीज़ों को हल्के में लेते हैं। आप कितने दिनों तक डायरी में लिखते रह सकते हैं, 'मैं अपने स्वास्थ्य के लिए आभारी हूँ? अभी, मुझे इस निराशाजनक रॉस द्वीप यात्रा के लिए कृतज्ञता महसूस करना मुश्किल लग रहा है। गाइड हमें एक जर्जर चर्च दिखा रहा है। खंडहर किसी भी अन्य खंडहर की तरह ही हैं। काई से ढकी ईंटें ज़मीन पर पड़ी हैं। कोई कल्पना भी नहीं कर सकता कि असली चर्च कैसा दिखता होगा। क्या मुझे इस बात के लिए आभारी होना चाहिए कि दूसरे लोग इस अवास्तविक अनुभव को नहीं झेल सकते?
'तुमने ऐसा क्यों कहा कि मुझे विक्की की परवाह नहीं है?' मैंने गौरव से शिकायत की।
गौरव की लापरवाही भरी टिप्पणी ने मुझे पूरी रात जगाए रखा। मुझे लगता है कि मैं एक घटिया इंसान हूँ क्योंकि मुझे इस बात का शुक्र और राहत महसूस हो रही है कि यह विक्की के साथ हुआ, मेरे साथ नहीं।
'ऐसी बातें मत कहो,' मैंने गौरव को चेतावनी दी, लेकिन उसे कोई फर्क नहीं पड़ा।
विक्की अभी भी मुझे जवाब नहीं दे रहा है। कुछ घंटों के अंतराल पर वह मुझे एक मैसेज भेजता है और फिर अपना फोन बंद कर देता है।
विक्की, कृपया मुझसे बात करो।
समय चाहिए।
यह तो किसी के भी साथ घटित हो सकता है।
पता नहीं मुझसे गलती कैसे हो गई
विकी, कृपया एक बार उठा लो।
Dun cal me.
मुझे तुमसे प्यार है।
मेरे साथ ऐसा नहीं होना चाहिए था
हमारे पास अन्य विकल्प भी होंगे।
मुझे नहीं पता मैं क्या करूँगी। मुझे कॉल करना बंद करो।
क्या तुमने अंकल को बताया?
नहीं

मुझे उसकी याद आती है, लेकिन उससे भी ज्यादा, जब भी मैं उसका संदेश पढ़ती हूं, मेरे अंदर से एक छोटी सी आवाज फुसफुसाती है, शुक्र है कि यह तुम नहीं हो।
कुछ दूरी पर मुझे रब्बानी और दक्ष दिखाई देते हैं।
आज रब्बानी ने सींगों वाली प्यारी सी डायनासोर वाली वनपीस ड्रेस पहनी है। दक्ष ने काली स्लीवलेस टी-शर्ट और शॉर्ट्स पहने हैं। उसके हाथों की गठीली मांसपेशियों से पसीना टपक रहा है और वह पहले से ज़्यादा सांवला लग रहा है। दक्ष हाथ में कैमरा लिए रब्बानी के पीछे-पीछे दौड़ रहा है। बहन और भाई दोनों हँसना बंद नहीं कर पा रहे हैं। मुझे उनके भोलेपन और सादगी से ईर्ष्या हो रही है। दक्ष का रिश्ता भी बस ऐसा ही है। भोला-भाला, सीधा-सादा प्यार। तीन महीने हो गए हैं और वह समीशा के साथ अपने रिश्ते को प्यार कह रहा है।
फिर रब्बानी मुड़कर मेरी तरफ देखती है। वह मेरी तरफ दौड़ने लगती है। मैं पीछे मुड़कर देखता हूँ कि कहीं मेरे पीछे कोई ऐसी चीज तो नहीं है जिसके लिए वह भाग रही है। वह मेरे ठीक सामने रुकती है और एक छोटा, चमकदार पत्थर उठा लेती है।
'हे,' दक्ष कहता है। 'रब्बू, आँचल आंटी को मेरा नमस्कार कहना, वो मेरी इस छुट्टी की क्रश हैं। कितनी सुंदर हैं ना?'
'ऐसा मत कहो!' मैंने विरोध किया।
'उसे यह बात समझ नहीं आती,' वह हंसते हुए कहता है।
मेरी टिप्पणी रब्बानी के लिए नहीं बल्कि दक्ष के लिए थी। उन्हें मुझे सुंदर नहीं कहना चाहिए। उन्हें ऐसा बिल्कुल नहीं कहना चाहिए।
'और मैं किसी की आंटी नहीं हूँ,' मैंने विरोध किया।
रब्बानी अपनी चट्टान में इतनी मग्न है कि मेरी तरफ देखने की भी जहमत नहीं उठा रही।
दक्ष हंसता है। 'यह चर्च तो सरासर धोखा है, है ना? यहाँ कुछ भी नहीं है। मैं कहीं से भी निर्माण ईंटें लाकर उन्हें ऐतिहासिक खंडहर कह सकता हूँ।'
लेकिन ये सब आप जैसे अप्रवासी भारतीयों को ध्यान में रखकर बनाया गया है। वे इतिहास और संस्कृति के नाम पर आपको कुछ भी बेच देंगे। और आप लोग इसके लिए भुगतान करेंगे।
वह हंसता है। 'क्या तुम्हारे माता-पिता कबाड़ बाजार में हैं?'
मैं मंजूरी।
'गौरव कहाँ है? अरे, वहाँ... गौरव!' वह चिल्लाता है और गौरव को पास आने का इशारा करता है। फिर मेरी तरफ मुड़ता है। 'मेरे पास उसके लिए कुछ है। और उसकी आँखें मत निकाल लेना, ठीक है?'
'क्या?' गौरव कहता है।
दक्ष ने अपनी जेब से एक गेमिंग डिवाइस जैसा दिखने वाला उपकरण निकाला और गौरव को दे दिया। 'यह नया निंटेंडो है। तुम खेल सकते हो। खेल खत्म होने पर वापस दे देना।'

गौरव मेरी तरफ देखता है और फिर उसकी तरफ। 'क्या यह कोई मज़ाक है?'
‘यह शरारत क्यों होगी?’
मैंने दक्ष से पूछा, 'तुम ऐसा क्यों कर रहे हो?'
क्योंकि वही मेरी मदद कर सकता है। मैंने दुबई में अपने दोस्त को चुनौती दी थी कि मैं मारियो कार्ट में उसका स्कोर हरा दूंगा। जाहिर है, मैं ऐसा नहीं कर सकता, लेकिन वह इसमें माहिर है।
‘नहीं,’ मैंने इनकार कर दिया। ‘वह कोई खेल नहीं खेल रहा है।’
‘दीदी!’ गौरव ने विरोध किया।
‘गौरव, नहीं,’ मैं इनकार करता हूँ।
‘दीदी, ये तो बहुत उबाऊ है। मेरे पास करने को कुछ नहीं है!’
‘गौरव—’
‘उसे करने दो, ये तो बस छुट्टियों के लिए है,’ दक्ष ने बीच में टोकते हुए कहा। ‘और ये उसके लिए नहीं है, वो तो बस मेरी मदद कर रहा है।’
‘ठीक है, जो भी हो,’ मैंने मान लिया।
Gaurav takes the Nintendo from Daksh. ‘Thank you, Bhaiya!’
‘नहीं, धन्यवाद। और स्कोर को बेहतर करो, ठीक है? बाकी खेलों पर समय बर्बाद मत करो,’ दक्ष ने उसे चेतावनी दी।
गौरव दौड़कर एक कोने में चला जाता है। मैंने उसे इतना खुश पहले कभी नहीं देखा।
'क्या?'
'तुम अजीब हो, दक्ष।'
‘मुझे पता है। समीशा के अनुसार, मैं भी चिपचिपाहट वाला, हारा हुआ, ऐसा व्यक्ति हूँ जिसका जीवन में कोई लक्ष्य नहीं है और जिसने कुछ भी नहीं समझा है। ज़ाहिर है, मैंने कुछ भी नहीं समझा है, वरना मैं सोलह साल की बच्ची को अपना वीडियो गेम क्यों देता ताकि मैं अपने दोस्त का स्कोर हरा सकूँ।’
‘क्या उसका ब्रेकअप हो गया?’
दक्ष अपने पैरों की ओर देखता है, उदास मुस्कान के साथ सिर हिलाता है। उसके चेहरे पर छाए दुख का साया उसके रिश्ते की अवधि से कहीं कम है। वह अपनी उदास, झुकी हुई आँखों से मेरी ओर देखता है और कहता है, 'किसी व्यक्ति की महत्वाकांक्षा रिश्ते को कैसे बेहतर बना सकती है? यह कहना कितना अजीब है। मैं अब तुमसे प्यार नहीं करता क्योंकि तुम्हारा करियर तुम्हारे लिए महत्वपूर्ण नहीं है। यह बहुत ही घटिया बात है।'
यह सोचने के बाद कि मुझे यह कहना चाहिए या नहीं, मैंने फैसला किया कि उसे सच जानने का हक है। 'ऐसा नहीं है, दक्ष। मुझे ब्रेक-अप का अफसोस है, लेकिन शायद वह किसी ऐसे व्यक्ति को चाहती है जिसके साथ वह एक निश्चित भविष्य की कल्पना कर सके।'
रब्बानी उसे एक और पत्थर दिखाती है। वह उसे देखकर मुस्कुराता है।
‘ऐसा नहीं होता,’ वह तर्क देते हैं। ‘लोग बदलते हैं, परिस्थितियाँ बदलती हैं। आप इस

पर नियंत्रण कैसे रख सकते हैं? प्यार गणित नहीं है जिसे आप सही कर सकें। इसमें कोई कुंजी नहीं होती, कोई उत्तर पुस्तिका नहीं होती।'
उसे अचानक कुछ याद आ गया और उसने मेरी तरफ देखा। 'विकी? क्या उसकी तबीयत अब बेहतर है?'
मैंने अपना सिर हिलाया। 'वह मुझे दोषी ठहरा रहा है।'
'वह आपको क्यों दोषी ठहराएगा?'
मुझे नहीं पता। वह मुझसे बात नहीं कर रहा है, बल्कि सबसे बात कर रहा है। मुझे ऐसा लग रहा है जैसे वह मुझे सजा दे रहा है।
'मुझे माफ़ करें।'
'याद है वो रात जब हम मिले थे? तुमने कहा था कि तुम्हें मुझ पर क्रश है, शायद मेरे जेनेटिक लॉटरी की वजह से? लेकिन मैं एक बुरा इंसान भी हो सकता हूँ? क्या तुम अब भी यही सोचती हो?'
'क्या तुम एक बुरे इंसान हो?' वह पूछता है। 'नहीं, बिल्कुल नहीं।'
'आप ऐसा क्यों कह रहे हैं?'
'क्या आप तारीफें बटोरने की कोशिश कर रहे हैं? क्योंकि ऐसा ही लग रहा है।'
मैं खुद को लेकर अच्छा महसूस करने की कोशिश कर रही हूं क्योंकि मैंने पिछली रात यह महसूस करते हुए बिताई कि मुझे सिर्फ अपनी ही परवाह है।
मैंने तुम्हें अपने भाई की परवाह करते देखा है; मैंने तुम्हें यह सुनिश्चित करते देखा है कि तुम्हारे माता-पिता यहाँ सहज महसूस करें, और तुमने मेरी बहन के प्रति अपनी नफरत के बारे में ईमानदारी से बात की है—'
मैं चौंक गई। 'मैं उससे नफरत नहीं करती!'
'मैं मजाक कर रहा था,' वह मुस्कुराते हुए कहता है। 'तुम अच्छी हो, आँचल। तुम बुरी नहीं हो। और वैसे भी, हर किसी को थोड़ा-बहुत बुरा होने की छूट है।'
तभी टूर गाइड ने दूर से हाथ हिलाया। बस की ओर लौटते हुए मैं मन ही मन सोचती रही कि मैं बुरी नहीं हूँ। मैंने अपने मन से विक्की के पिता द्वारा उसके साथ किए जाने वाले व्यवहार के विचार निकाल दिए। मैंने खुद को समझाने की कोशिश की कि मैंने भगवान से मुझे बचाने की प्रार्थना की, न कि उसे, और यह ठीक था।
'तुम ठीक हो?' दक्ष पूछता है।
मैं मंजूरी।

OceanofPDF.com

9.

Aanchal Madan

मैं कमरे में अकेला हूँ। गौरव गेम रूम में दक्ष के गेमिंग कंसोल पर उच्चतम स्कोर को बेहतर बनाने की कोशिश कर रहा है।
माँ-पापा द्वीप के खाने-पीने के दौरे पर गए हैं। दिन बीतने के साथ-साथ वे और भी ज़्यादा आज़ादी से आनंद ले रहे हैं। मुझे उन्हें रोज़मर्रा के बोझ से मुक्त देखना सबसे ज़्यादा अच्छा लगता है। ऐसा लगता है जैसे इस छुट्टी ने उन्हें बीस साल जवान कर दिया हो। गौरव और मुझे बस कुछ और साल मेहनत करनी है और हम उन्हें यह अनुभव बार-बार दे सकते हैं।
मैं अपने खुले हुए सूटकेस को घूर रही हूँ। उसमें एक काला स्विमिंग सूट है। इस यात्रा के लिए कपड़े खरीदते समय, माँ ने मुझसे पूछा था कि क्या मुझे स्विमिंग सूट चाहिए क्योंकि होटल में तीन स्विमिंग पूल थे। मैंने उन्हें वही कहा जो मैंने विक्की को कहा था: 'मुझे तैरना नहीं आता।'
‘होटल के स्विमिंग पूल में तैरने नहीं जाते, समय बिताने जाते हैं। ये उथले पूल होते हैं,’ विकी ने बाद में मुझे एक पैकेट देते हुए कहा। ‘आपको ये पहनना है।’
उसने मेरे लिए एक काला स्विमिंग सूट लाया था, एकदम स्टाइलिश, तैराकों वाला, जिसमें उनकी जांघें दिखती हैं, न कि वो फ्रॉक जैसा जो मैंने कई महिलाओं को पहने देखा है। मैंने मना कर दिया था। और फिर भी, मैं यहाँ हूँ, विकी द्वारा उपहार में दिया गया स्विमिंग सूट अपने सूटकेस के एक छोटे से हिस्से में छिपाकर रखे हुए।
लेकिन शुक्र है मैंने इसे पैक कर लिया। अब विक्की मेरे मैसेज का जवाब इसी स्विमिंग कॉस्ट्यूम से देगी।
मैंने इसे पहन लिया। और भले ही मैं कमरे में अकेली हूँ, मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मैं असुरक्षित हूँ, नग्न हूँ। मैंने इसके ऊपर बाथरोब पहन लिया।
मैंने विक्की को मैसेज किया।
मैंने पोशाक पहन रखी है, क्या आप इसे देखना चाहेंगे? मैं आपको एक तस्वीर भेज सकता हूँ।
वह ऑनलाइन तो है लेकिन जवाब नहीं देता।
विक्की?

परवाह नहीं

Aanchal.

विकी, प्लीज़, तुम चाहती थी कि मैं इसे पहनूँ, और मैं चाहती हूँ कि तुम इसे देखो।
वह ऑफलाइन हो जाता है।
तीस मिनट तक, मैं अपने कमरे की खिड़की के पास, स्विमिंग सूट के ऊपर बाथरोब पहने हुए, उसके संदेश का इंतजार करती रही, और पूल में हर उम्र, आकार और कद के लोगों को देखती रही।
वह दोबारा ऑनलाइन आता है।
विक्की, मैं इसे सिर्फ तुम्हारे लिए पहनूंगी, अगर तुम इसे नहीं देखोगे तो पहनने का क्या फायदा?

कृपया आप जो चाहें करें

मन कर रहा है।

मेहमान अपने शर्ट और शॉर्ट्स या ड्रेस में पूल बैग लिए पूल की ओर चल रहे हैं। फिर वे अपनी शर्ट और ड्रेस उतारते हैं और धीरे से पूल में उतरते हैं। वे बिना तैरे इधर-उधर घूमते हैं। कुछ लोग ड्रिंक्स ऑर्डर करते हैं। तभी मेरी नज़र पूल के किनारे दक्ष पर पड़ती है। वह रब्बानी के चेहरे और बांहों पर सनस्क्रीन लगा रहा है। रब्बानी बच्चों के पूल के कम गहरे हिस्से की ओर दौड़ती है और पानी उछालने लगती है।
मैंने विक्की को मैसेज किया।
आपने पूल के बारे में सही कहा था, वहां कोई तैरता नहीं है।
वह पढ़ता तो है लेकिन जवाब नहीं देता।
मुझे तुम्हारी परवाह है, विक्की।

मुझे एक तस्वीर भेजो।

उनके संदेश को पढ़कर मेरा दिल उछल पड़ता है।
विकी और मैंने एक-दूसरे को चूमा है। हमने दो फिल्में देखी हैं जिनमें हमने एक-दूसरे को छुआ है, और कभी-कभी गंदी बातें भी की हैं। लेकिन बाकी सब हमने सोचा था कि बोर्ड का काम खत्म होने के बाद करेंगे। उसने मुझे इस तरह कभी नहीं देखा, और न ही मैंने उसे।
क्या आपको यकीन है?
जो कुछ भी।
मैं बाथरोब उतारकर आईने में खुद को देखती हूँ। एक तस्वीर खींचती हूँ। वह अजीब सी आती है। मुझे लगता है कि वह सेक्सी भी है और अपूर्ण भी, और परिपूर्ण भी; गलत भी है और एकदम सही भी। मैं कुछ और तस्वीरें खींचती हूँ। जैसे-जैसे मेरी गैलरी भरती जाती है, मुझे तस्वीरें और भी प्यारी लगने लगती हैं।
मेरे फोन पर घंटी बजी। यह विक्की का फोन है।
क्या आप भेज रहे हैं?
हाँ।
चेहरा लाल हो गया, दिल ज़ोर से धड़क रहा था, मैंने उसे एक तस्वीर भेजी। कुछ सेकंड का इंतज़ार घंटों जैसा लगा।

न्यूयॉर्क। मुझे एक और भेज दो।

क्या आपको यकीन है?
कृपया।
मुझे थोड़ा जोखिम भरा महसूस हो रहा है। इस बार मैंने एक स्ट्रैप नीचे खींच ली। मुझे यह तस्वीर बहुत पसंद आई।
वाह, और भी?
इस बार मैंने दोनों पट्टियों को इतना नीचे खींच लिया कि थोड़ा सा क्लीवेज दिखने लगा। मैंने पहले कभी इतना सेक्सी महसूस नहीं किया।
न्यूयॉर्क

मैं कल्पना कर सकती हूँ कि विक्की का चेहरा खुशी से खिल उठेगा। यह सोचकर मुझे बहुत अच्छा लगता है कि मेरा शरीर उसे खुश करता है। मैं उसे और तस्वीरें भेजती हूँ, स्विमसूट की पट्टियों के साथ शरारत करती हूँ, जिसमें शरीर का अलग-अलग हिस्सा दिखाई देता है। और भेजो?

बाद में माँ आ रही हैं। धन्यवाद।

मुझे तुमसे प्यार है।

मैं खुश हूँ, मेरा चेहरा लाल हो गया है। मेरा शरीर जैसे आग से जल रहा है।

मैं चैन से बैठ नहीं सकती। मैं बहुत खुश हूँ। अगर मैं यह कर सकती हूँ, तो मैं पूल में जाकर बाकी लोगों की तरह क्यों नहीं कर सकती? बिल्कुल कर सकती हूँ। मैं विक्की को और तस्वीरें भेजूँगी। मैं पूल की ओर चल पड़ती हूँ। मेरा दिल शुक्रवार की सुबह स्कूल के मार्च ड्रम की तरह धड़क रहा है।

पूल के पास पहुँचकर मैंने आत्मविश्वास से अपने स्विमसूट के ऊपर पहनी हुई नाइटसूट की पायजामा उतार दी। मैंने सोचा था कि सब मुझे देखेंगे और मुझे शर्म आएगी, लेकिन सब अपनी-अपनी दुनिया में मग्न हैं, मजे कर रहे हैं। पानी मुझे अपनी ओर खींच रहा है। मैं उसे अपने पैरों की उंगलियों से छूती हूँ और फिर धीरे से अपना पैर पानी में डालती हूँ। मुझे हल्कापन महसूस होता है।

मुझे खुशी महसूस हो रही है। मैं मन ही मन विक्की के संदेशों को दोहराती रहती हूँ। और हर बार मेरा दिल खुशी से उछल पड़ता है।

मैं पूल के दूसरी तरफ पानी में चलकर जाती हूँ। और बाकी सब लोगों की तरह, मैं भी एक ड्रिंक माँगती हूँ। बारटेंडर मुझे बर्फ से भरे एक लंबे गिलास में पेप्सी देता है। मुझे भी ऐसा ही महसूस होता है, जैसे पूल में मौजूद बाकी सब लोगों को। मैं पूल के एक कोने में बैठ जाती हूँ, किनारे के पास एक तौलिये पर अपना फोन रखकर। मैं विक्की को और तस्वीरें भेजने के लिए बेताब हूँ। मुझे इस रिश्ते के आगे बढ़ने की संभावनाएँ अच्छी लगती हैं।

अगर मुझे पता होता कि विक्की को इसकी जरूरत है, तो मैं इसे कल ही कर देता!

मेरी तल्लीनता तब भंग हो गई जब मैंने एक व्यक्ति को तेज़ गति से पानी में तैरते हुए देखा। वह पूल के दूसरे छोर पर पहुँचा, एक कलाबाज़ी की और मेरी ओर तैरने लगा। उसके हाथ बड़ी खूबसूरती और ताकत से हिल रहे थे। उसका चेहरा पानी की सतह से ऊपर उठा। वह मेरे बगल में आ गया।

Daksh.

मैं हमेशा उसे फुर्तीला लेकिन दुबला-पतला समझता था। लेकिन जब वह सामने आया, तो मैंने देखा कि वह वाकई फुर्तीला है, उसकी छाती की मांसपेशियां एकदम उभरी हुई हैं। उसकी बांहों की नसें साफ दिखाई दे रही हैं और उसके बाइसेप्स तपे हुए लग रहे हैं। जब उसने अपने चेहरे से पानी झाड़ा, तो वह उसकी छाती पर टपकने लगा, जिससे मुझे नज़रें हटानी पड़ीं।

उस तरह की लड़की।

उसकी नग्नता मुझे अपनी नग्नता का एहसास कराती है। वह बहुत करीब है, फिर भी

नहीं। जब उसकी निगाहें मेरे नंगे कंधे पर टिकती हैं, तो मुझे ऐसा लगता है जैसे पानी अचानक ठंडा हो गया हो। मैं ऐसा महसूस नहीं करना चाहती, पर करती हूँ। मुझे इस बात का एहसास होता है कि मेरी निगाहें उसके शरीर के अलग-अलग हिस्सों पर टिक रही हैं। मैं नज़रें हटाना चाहती हूँ, उसकी आँखों में देखना चाहती हूँ या कुछ और, लेकिन मैं ऐसा नहीं कर पाती। मेरी निगाहें उसके शरीर पर ऐसे घूमती हैं जैसे मैं सड़क किनारे बैठी कोई आवारा औरत हूँ।

'क्या विक्की ने फोन उठाया?' वह पूछता है और फिर मेरी ओर देखता है। वह थोड़ी देर रुकता है और फिर कहता है, 'तुम्हारे चेहरे से तो ऐसा ही लग रहा है कि उसने उठाया। है ना?'

मैं मंजूरी।

'क्या तुमने उसे अपनी स्विमसूट वाली तस्वीर भेजी?' वह मेरी तरफ देखते हुए पूछता है। उसकी निगाहें मेरे शरीर पर घूमती हैं और फिर वापस मेरी आँखों पर टिक जाती हैं। उस थोड़े से पल में, मेरे पेट में एक अजीब सी उत्तेजना सी उठती है।

'आपको कैसे पता चला?'

'...मैंने अनुमान लगाया था। लेकिन अच्छा कदम है। मुझे नहीं लगता कि वह अब कहीं जा रहा है। अगर मैं उसकी जगह होता तो मैं भी नहीं जाता।'

उसका मतलब क्या है? वो ऐसा क्यों कहेगा? मुझे उसके मुझे वस्तु की तरह देखने पर गुस्सा आना चाहिए, लेकिन... मुझे ये अच्छा लग रहा है। मैं बात बदलना चाहती हूँ। उसका मुझे इस तरह देखना मुझे बहुत असहज कर रहा है, और मैं ऐसा महसूस नहीं करना चाहती, इसलिए मैं उससे पूछती हूँ, 'समीक्षा?'

वह हंसता है। 'वह इतिहास है, प्राचीन इतिहास। जैसे कि वह कभी अस्तित्व में ही नहीं थी।'

लेकिन उसकी हंसी उदास है, वैसी हंसी मैंने उसे रब्बानी के साथ हंसते हुए कभी नहीं देखी। अभी सिर्फ पांच दिन ही हुए हैं और मुझे ऐसा लगता है जैसे मैं उसकी नाक की सिकुड़न, उसकी छोटी-छोटी हरकतें, उसके चेहरे के हाव-भाव को पहचानती हूँ, जब वह खुश होता है और जब वह सिर्फ दिखावा कर रहा होता है, तब उसके चेहरे के हाव-भाव अलग होते हैं।

मैंने उससे कहा, 'तुम मुझसे बेहतर इंसान के हकदार हो।'

'ये तो बस लोगों की कही बातें हैं। मुझे नहीं लगता कि बेहतर इंसान पाने की चाहत में कोई समस्या है। उसने जो कहा वो सच है। जितना मैं इसके बारे में सोचती हूँ, उतना ही सच लगता है।'

'तब आपको कोई ऐसा व्यक्ति मिल जाएगा जो आपको वैसे ही पसंद करेगा जैसे आप हैं।'

इसके लिए मुझे यह पता लगाना होगा कि मैं असल में कौन हूं। तुम्हें देखो, या विक्की को, या समीशा को भी। तुम लोगों ने तो सब कुछ समझ लिया है। और मैं कोई बहुत अमीर भी नहीं हूं। बाबा तो बस एक इंजीनियर हैं, उन्हें यहां आए सात साल हो गए हैं। हमारे पास बचत तो है, लेकिन ऐसा नहीं है कि मैं अपनी जिंदगी यूं ही बर्बाद कर

दूं।
मैंने उसे पहली बार इतना परेशान देखा है।
'आप नहीं हैं-'
‘मुझे पता है कि मैं अपनी जिंदगी बर्बाद नहीं कर रहा हूँ। न तो मैं ड्रग्स ले रहा हूँ और न ही बेहिसाब पैसा खर्च कर रहा हूँ, लेकिन आप लोग मुझे ऐसा महसूस करा रहे हैं जैसे मैं कर रहा हूँ।’ वह गहरी सांस लेता है और कहता है, ‘कोई बात नहीं।’
हम थोड़ी देर पूल के किनारे बैठे रहे। उसने भी एक पेप्सी और फ्रेंच फ्राइज़ की एक प्लेट मंगवाई। मुझे भूख लगी थी और हम दोनों ने झटपट सब खत्म कर दिया। बीच-बीच में मेरे मन में एक असंभव सी बात, एक अजीब सी चीज़ का ख्याल आता है जो मैं नहीं चाहती: मैं और वह। शायद यह किसी नई जगह के रोमांच का असर था।
मैंने उसकी छाती पर कंधे के नीचे खुदे हुए छोटे से टैटू के बारे में पूछा, 'यह कौन सा टैटू है?'
‘रब्बानी का जन्मदिन,’ वह जवाब देता है। ‘वह तारीख जिसने मेरी जिंदगी बदल दी।’
‘इसने आपकी जिंदगी कैसे बदल दी?’
‘ऐसा लगता है जैसे मैं भाई बनने के लिए ही बना था। बेशक, मुझे यह पता नहीं था। और जिस दिन मैं भाई बना, मुझे पता चल गया, हाँ, मैं यही बनना चाहता हूँ। मुझे एक छोटी बहन चाहिए थी। यह बहुत अच्छा था।’
'क्या आप समीक्ष से मिलने की तारीख को इसके बगल में टैटू करवाएंगे?'
वह भौंहें चढ़ाता है।
‘देखा?’ मैंने उससे कहा। ‘तुम समीक्ष के साथ रहने के लिए नहीं बने थे।’
‘यह तर्क थोड़ा संदिग्ध है, लेकिन कोशिश करने के लिए धन्यवाद,’ वह मुस्कुराता है —एक सच्ची मुस्कान, न कि उसकी ‘शिष्ट’ मुस्कान। ‘हे? आपका फोन बज रहा है।’

विक्की का फोन आ रहा है।
मैंने अपने हाथ पोंछे और फोन उठाया।
जैसे-जैसे दक्ष मुझसे दूर तैरता जाता है, मेरे मन में एक विचार ज़ोर पकड़ने लगता है। यह मूर्खतापूर्ण और तर्कहीन है। लेकिन जितना मैं इसे दूर धकेलने की कोशिश करता हूँ, उतना ही यह वापस ज़ोर पकड़ने लगता है। यह आकार लेने लगता है। यह निर्णायक रूप ले लेता है।
मैं आश्चर्यचकित हूं।
मुझे आश्चर्य है यदि । । ।
... क्या दक्ष मेरे लिए भाग्यशाली है?
जब भी वो आस-पास होता है, मेरे साथ कुछ अच्छा ही होता है। नाश्ता, 42 और अब विक्की का फोन।
'हैलो, मैं साझा कर रहा हूँ।'

OceanofPDF.com

10.

Daksh Dey

मुझे पूरी सुबह लग गई।
मैंने समीक्ष की तस्वीर डिलीट कर दी है। मैंने कॉल रिकॉर्ड डिलीट कर दिए हैं। मैंने उसे जो मैसेज भेजे थे, वो भी डिलीट कर दिए हैं। मैंने उसकी तस्वीरों पर किए गए सारे लाइक भी हटा दिए हैं। यह नाटकीय है क्योंकि रिश्तों का अंत नाटकीय ही होता है। रिश्ते को इस तरह खत्म करना पड़ता है ताकि रिश्ते की एक निश्चित समयसीमा तय हो सके।
पिछले दो दिनों से मैं उस रिश्ते के बारे में सोच-सोच कर परेशान हूँ और समझ नहीं पा रहा कि मुझे इतना दुख क्यों नहीं हो रहा जितना होना चाहिए। मुझे टूट जाना चाहिए था। मुझे रोना चाहिए था। लेकिन नहीं, ऐसा कुछ नहीं हो रहा। ऊपर से, मुझे खुद पर थोड़ा बुरा भी लग रहा है, क्योंकि मुझे उसके स्तनों की याद आ रही है।
मुझे पता था कि मैंने समीक्ष के पीछे क्यों पड़ा, उसकी आकर्षक शारीरिक बनावट के अलावा भी। मैंने समीक्ष को इसलिए चुना क्योंकि पिछले दो साल मम्मी के घर के कामों में मदद करने, डायपर बदलने और डॉक्टर के चक्कर लगाने में ही बीत गए थे, और समीक्ष उन कुछ पहले लोगों में से एक थी जिन्होंने मुझमें दिलचस्पी दिखाई। समीक्ष, अपनी सात साल की बहन के साथ, आस-पास अकेली ऐसी थी जिसके छोटे भाई-बहन थे।
जैसे-जैसे मैं अपनी उदासी की कमी का विश्लेषण करता हूं, वैसे-वैसे एक कारण स्पष्ट होता जाता है कि मैं उतना निराश क्यों नहीं हूं जितना मैंने सोचा था।
Aanchal Madan.
अगर मैं किसी प्रेमिका के बिछड़ने के गम में डूबे होने के बावजूद किसी पर बुरी तरह फिदा हो सकता हूं, तो क्या वह वाकई प्यार था?
मेरे कमरे में फोन बजता है।
'नमस्ते?'
‘दक्ष?’ दूसरी तरफ से एक आवाज आती है। ‘मैं बिजनेस सेंटर में हूँ। आओ।’
‘Aanchal?’
'जल्दी आओ।'
मैंने कॉल काट दी और बिस्तर से कूदकर बाहर आ गया।
जब मैं वहाँ पहुँचा, तो वह खाली पड़े बिजनेस सेंटर के एक कोने में कंप्यूटर के सामने दुबकी बैठी थी, मानो किसी बंदी से छिप रही हो। वह अपने नाखून चबा रही थी। उसका चेहरा पीला पड़ गया था। उसकी सारी ऊर्जा क्षीण हो रही थी। उसके घुटने काँप रहे थे। कमरा एकदम ठंडा था, फिर भी उसकी कनपटी पर पसीने की बूँदें थीं।

मैं दौड़कर उसके पास गई। ‘क्या हुआ?’
वह नाराज़ लग रही है। 'परिणाम।'
‘क्या? ओह!’ मुझे अचानक याद आया। ‘आज है। ओह। धिक्कार है। तो तुम यहाँ छिपे हो।’
वह एक लंबी सांस छोड़ती है। 'गौरव और मम्मी-पापा मुझे परेशान कर रहे थे। वे बार-बार कह रहे थे कि अगर मेरे नंबर अच्छे नहीं आए तो दुनिया खत्म नहीं हो जाएगी। उन्हें लगता है कि मैं आत्महत्या कर लूंगी या कुछ और कर लूंगी।'
'आप जिस तरह से अभी दिख रहे हैं, उससे तो यही आभास होता है।'
‘वे यह भी जानते हैं कि आज का दिन कितना महत्वपूर्ण है। वे सिर्फ दिखावा कर रहे हैं, शांत रहने की कोशिश कर रहे हैं।’
वह मुड़कर अपने कंप्यूटर को घूरने लगती है।
मैंने अपनी घड़ी देखी। 'अभी तो सुबह के 10 बजे भी नहीं बजे हैं।'
'कभी-कभी नतीजे जल्दी आ जाते हैं,' वह कहती हैं। 'लेकिन अभी तक ऐसा नहीं हुआ है, वरना मुझे संदेश मिलने शुरू हो गए होते।'
उसकी उंगलियां कांप रही हैं। वह अपनी आंखें बंद कर लेती है और धीरे-धीरे प्रार्थना बुदबुदाती है।
उसका ध्यान भटकाने के लिए, मैंने कहा, 'मेरे लिए वह दिन काफी सामान्य था, जिस दिन मेरे परिणाम घोषित हुए थे।'
‘क्या आपके माता-पिता नाराज थे?’ वह पूछती है।
'फिर से, यह सोचना आपकी गुस्ताखी है कि मैंने खराब स्कोर किया, लेकिन हां, मैंने कुल मिलाकर 73 अंक बनाए। नहीं, वे नाराज नहीं थे।'
उन्हें ऐसा होना चाहिए था।
‘मम्मी ने मुझे गले लगाया। बाबा ने पहले से तैयार लंबा-चौड़ा भाषण दिया कि कुछ समय बाद कोई भी नंबर याद नहीं रखता। मुझे याद है कि हम बाहर गए और बिरयानी खाई। हमारे ठीक बगल में, कुछ माता-पिता 90 अंक लाने का जश्न मना रहे थे, और मेरे 73 अंक थे।’
और आप? 73 साल की उम्र के बारे में आपको कैसा लगा?
‘मुझे... यह जानकर निराशा हुई कि मैं होशियार नहीं था। मुझे और उम्मीद थी, लेकिन 73वें नंबर ने मुझे एक तरह से बता दिया कि मैं होशियार बच्चों में से नहीं था। यह अंतिम पुष्टि थी।’
वह सिर हिलाती है।
वह स्क्रीन की ओर मुड़ती है और उसे मेरी ओर घुमाती है। 'क्या आप जाँच कर सकते हैं, कृपया? मैं बहुत घबराई हुई हूँ।'
मैंने पेज को रिफ्रेश किया। नतीजे अभी भी नहीं आए। मैंने एक नया ब्राउज़र खोला। कभी-कभी, अगर आप बार-बार उसी वेबसाइट पर जाने की कोशिश करते हैं, तो पुराना कैश दिख जाता है। कोई बदलाव नहीं हुआ। इसलिए, मैंने अपना फ़ोन निकाला और उसके ब्राउज़र में वेबसाइट का नाम टाइप किया। लोड होने में थोड़ा समय लगा,

लेकिन लोड हो गया।
‘आंचल?’ मैंने कहा।
'क्या?'
नतीजे आ चुके हैं।
उसका चेहरा लाल हो गया। मैंने फोन उसके सामने लटका दिया। उसने मेरी तरफ देखा, उसकी आंखें मुझे भेद रही थीं और उसने मुझे आदेश दिया, 'तुम्हें मेरा रिजल्ट चेक करना होगा।'
‘क्या—’
‘करो, दक्ष,’ वह लगभग फुसफुसाते हुए कहती है। ‘3455883।’
'क्या आपको यकीन है?'
'आपको यह करना ही होगा, बस करना ही होगा,' वह कहती हैं।
मैं संख्या टाइप करती हूँ। पेज लोड होने में समय लगता है। मैं मन ही मन प्रार्थना करती हूँ। वह अपनी हथेली पर बने धुंधले स्वास्तिक को देखती है और मुट्ठी भींच लेती है। उसका स्कोरशीट बहुत धीरे-धीरे खुलता है। मैं फिर से प्रार्थना करने लगती हूँ। हे भगवान, उसकी मदद करो, उसकी मदद करो, उसकी मदद करो, उसकी मदद करो, उसकी मदद करो, उसकी मदद करो। मैं उसे गले लगाना चाहती हूँ और कहना चाहती हूँ कि सब ठीक हो जाएगा।
मेरी धड़कन तेज़ होने लगती है। संख्याएँ दिखने लगती हैं। मुझे दो, तीन या सात भी नहीं दिखते।
100.
99.
99.
100.
100.
उनमें बहुत सारे 9 और 0 थे।
इस तरह दो अंक कट गए।
केवल दो अंक।
‘ये तो एसआरसीसी के अंक हैं,’ मैं बुदबुदाता हूँ।
मैंने मुड़कर देखा तो वो एकदम जम गई थी। उसका मुंह खुला हुआ था, मानो आश्चर्य का भाव हो। वो हिल भी नहीं रही थी।
मेरे शरीर में एड्रेनालाईन का प्रवाह तेज़ हो गया है। ऐसा लग रहा है जैसे किसी ने मेरे दिमाग में खुशी का बम फोड़ दिया हो। मैं उसे सिर्फ चार दिन से जानती हूँ, फिर भी उसकी खुशी में मैं भी आनंदित हूँ। मैं उसे देखती रहती हूँ, उसके हिलने-डुलने, प्रतिक्रिया देने, खुशी मनाने, कमरे से भागकर चिल्लाने का इंतज़ार करती हूँ कि उसने यह कर दिखाया है। लेकिन वह कुछ नहीं करती। धीरे-धीरे, वह उन ईसाई मूर्तियों जैसी हो जाती है जिनके बारे में कहा जाता है कि वे रोती हैं। उसकी गालों पर छोटे-छोटे आँसू बहने लगते हैं।

‘Aanchal?’
अंत में वह कहती है, '3455902'।
‘लेकिन ये तुम्हारा नाम है। ये तुम्हारे नंबर हैं। देखो? आँचल मदन,’ मैंने पुष्टि की।
‘विकी,’ वह समझाती है।
मैंने रोल नंबर डाला। इस बार पेज जल्दी खुल गया।
100. 100. 99. 94. 94.
‘98.25,’ वह फुसफुसाती है।
ये एसआरसीसी के अंक नहीं हैं। आंचल की सफलता और विक्की की असफलता के बीच सिर्फ एक सवाल का अंतर है।
‘विकी नहीं बच पाएगी,’ वह बुदबुदाती है।
वह अपनी हथेली खोलती है। पसीने के कारण स्वास्तिक धुंधला हो गया है।
उसके फोन में बीप बजने लगती है। वह फोन उठाती है और उसे बंद कर देती है।
मैंने पूछा, 'यह कौन है?'
‘सहपाठी।’
वह गहरी साँसें लेती है—उस पर शांति छा जाती है। और शायद पहली बार, मैं उसे उसके असली रूप में देख पाता हूँ। यह मानो समय के साथ किसी फूल को खिलते हुए देखने जैसा है। यह पंद्रह मिनट पहले वाली आँचल नहीं है। यह वह आँचल नहीं है जिसके साथ मैंने कयाकिंग की थी। यह समुद्र तट पर उस रात चाँदनी रात में दिखने वाली खूबसूरत आँचल भी नहीं है।
यह आँचल अलग है।
एक अलग ही तरह की खूबसूरती। इस आँचल के चेहरे पर मुस्कान है। एक ऐसी मुस्कान जो होठों से नहीं, दिल से निकलती है। उसकी भौहें संवर गई हैं। उसके चेहरे पर एक अलग ही चमक है। उसकी आँखें चौड़ी हो गई हैं। उसके गालों पर लाली छाई है। मानो वह एक परिपूर्ण मूर्ति थी, लेकिन अब सही शब्दों का जाप हुआ है और वह जीवंत हो उठी है। वह एक नश्वर प्राणी से देवी में बदल गई है। मैं छोटा हो गया हूँ और वह बड़ी हो गई है, और हमारे बीच जो है वह दोस्ती नहीं, बल्कि भक्ति के करीब का रिश्ता है। वह मुझे खिड़की तक जाकर कूदने का आदेश दे सकती है और मैं मुस्कुराते हुए कूद जाऊँगा। वह मुझे मारने के लिए कह सकती है, और मैं मार डालूँगा।
‘मुझे जाना चाहिए,’ वह मुझसे कहती है।
मेरा दिल धीरे-धीरे टूट रहा है। हर छोटा टुकड़ा मेरे अंदरूनी अंगों को चीर रहा है। बस तीन शब्द—‘मुझे चले जाना चाहिए।’ फिर भी, मेरा मन मेरे शरीर को दर्द महसूस न करने के लिए मना नहीं पा रहा है।
मैं नहीं चाहता कि वह कहीं जाए। मैं चाहता हूँ कि वह यहीं रहे, और मैं उसे देखता रहूँ। 'तुम्हें चले जाना चाहिए।' यह अब तक का सबसे बड़ा झूठ है जो मैंने बोला है।
‘धन्यवाद,’ वह खुशी से चिल्लाई।
'किस लिए?'
‘दक्ष, तुमने मेरी किस्मत बदल दी,’ वह कहती है। ‘क्या तुम्हें यह दिखाई नहीं देता?’

'नहीं।'
‘तुम मेरी लकी चार्म हो। इसीलिए मैंने तुम्हें यहाँ बुलाया है। मुझे जाना होगा, ठीक है? थोड़ी देर में मिलते हैं।’
जैसे ही वह बिजनेस सेंटर से निकलती है, मुझे अकेलापन महसूस होता है। मुझे खुशकिस्मती का एहसास नहीं होता, मुझे अकेलापन महसूस होता है। मुझे लगता है कि मैं पूरी दुनिया का सबसे अकेला इंसान हूँ।

OceanofPDF.com

11.

Daksh Dey

मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मेरा दिल किसी कटी हुई छिपकली की पूंछ की तरह फड़फड़ा रहा हो। मैं अंडमान छोड़ना नहीं चाहता। जैसे-जैसे जाने का समय नजदीक आ रहा है, कारण और स्पष्ट होता जा रहा है। और जितना स्पष्ट होता जा रहा है, उतना ही मेरा दिल सिकुड़ता जा रहा है।
दोपहर में, मैंने मदन परिवार को रेस्टोरेंट में देखा। आँचल ने मुझे हाथ हिलाकर बुलाया। उसने अपने माता-पिता को बताया था कि मैं उसके लिए भाग्यशाली हूँ। उसके माता-पिता ने मुझे दोपहर के भोजन के लिए आमंत्रित किया, लेकिन मैंने मना कर दिया। मैंने उनसे कहा कि यह उनका आनंद लेने का क्षण है और मैं वहाँ से चला गया। बाद में, मैंने उसे पूल के पास फोन पर बात करते देखा। उसकी मुस्कान और आवाज़ से मुझे यकीन हो गया कि यह विक्की है। उसकी खिलखिलाहट और उन दोनों के बीच और तस्वीरें साझा होने की आशंका से ऐसा लगा जैसे किसी ने मेरे दिल में चाकू घोंप दिया हो और उसे घुमा रहा हो।
शाम को, मैंने तय किया कि बस बहुत हो गया। ये सिर्फ़ एक क्रश है और मैं इसे इससे ज़्यादा कुछ नहीं बनने दूँगा। मैंने खुद को याद दिलाया कि समीशा का मुझे छोड़ना मेरे दिल को उन चीज़ों पर यकीन दिला रहा है जो असल में हैं ही नहीं। मैंने आँचल से मिलने, उससे बात करने और अपने दिल को शांत करने का फ़ैसला किया। इसके विपरीत होता है।
यह आखिरी रात है, इसलिए सभी मेहमानों को कॉकटेल पार्टी के लिए आमंत्रित किया गया है। आँचल ने एक ऐसी ड्रेस पहनी है जो देखकर लगता है जैसे आज ही खरीदी गई हो। यह एक छोटी, काली, चमकदार ड्रेस है और वह इसमें बेहद खूबसूरत लग रही है। वैसे भी, सूट में भी वह कम सुंदर नहीं लगती थी।
मैंने पूरे समय फोन पर व्यस्त होने का नाटक किया क्योंकि बातचीत करने से स्थिति बेहतर होने वाली नहीं थी।

मैं पूरी रात सो नहीं पाती। मैं उसके बारे में इतना सोचती रहती हूँ कि मेरा सिर दुखने लगता है। मुझे पाखंडी जैसा महसूस होता है क्योंकि क्या मैंने बहत्तर घंटे पहले ही समीक्ष को अपने दिल की बात नहीं बताई थी? किसी पर क्रश होना प्यारा होता है, नुकसानदायक नहीं। आँचल मेरे दिमाग में बवंडर की तरह घूमती रहती है, अपने रास्ते में आने वाली हर चीज़ को तहस-नहस कर देती है।
समीक्षा के लिए मुझे जो दुख हुआ था, वह अब जो दुख हो रहा है उसके सामने कुछ भी नहीं है। ऐसा लगता है मानो वह दुख था ही नहीं। वह दुख और प्यार दोनों ही बनावटी थे। अब मुझे पता चल गया है। बिल्कुल पता चल गया है।
अब हम समुद्री संग्रहालय में हैं। हमारी यात्रा के आखिरी दिन के लिए यह जगह नीरस है। मुझे वापस जाने के लिए उत्साहित होना चाहिए था, लेकिन अब मैं चाहती हूँ कि यह छोटा सा द्वीप मीलों लंबी लहरों से दुनिया से अलग-थलग हो जाए। काश, मैं और आँचल हमेशा के लिए इसी द्वीप पर फंसे रह जाएँ।
‘क्या तुम्हें संग्रहालय पसंद नहीं आया? हमें लगा था कि तुम्हें पसंद आएगा,’ मम्मी कहती हैं।
‘यह अच्छा है,’ मैंने कहा। ‘बस थोड़ा थका हुआ सा लग रहा है।’
क्या यह समीक्ष के बारे में है?
‘मम्मी यार, नहीं,’ मैंने जवाब दिया। ‘मैं इससे उबर चुकी हूँ।’
‘यह पूरी तरह से उसका नुकसान है,’ वह कहती है और मेरे सिर पर हाथ फेरती है। ‘तुम्हारे जैसा लड़का भला किसे मिलेगा?’
‘मेरे जैसे बहुत से लोग हैं।’ मुझे दूर से मदन परिवार दिखाई दिया। मैंने उनकी ओर इशारा करते हुए मम्मी से कहा, ‘क्या आप यकीन कर सकती हैं? चार विषयों में 100 नंबर। आपको मेरे नंबर याद हैं?’
‘तुमने कितने अंक प्राप्त किए, यह मेरे लिए महत्वपूर्ण नहीं है। मुझे याद है कि तुम्हारे परिणाम वाले दिन हम बाहर गए थे। हमने करामा में बिरयानी खाई थी। क्या तुम्हें याद है?’
मुझे 73 प्रतिशत अंक मिले।
मां कंधे उचकाती है। 'ये तो बस आंकड़े हैं।'
'पिछले एक हफ्ते में दो लोगों ने मुझे लक्ष्यहीन, आवारा कहा है। जैसे मैं कोई हारा हुआ इंसान हूँ।'
‘जिस किसी ने भी यह कहा है, उसे जीवन के बारे में जरा भी जानकारी नहीं है।’
‘तुम गुस्सा क्यों नहीं हुए? दूसरे बच्चे भी थे जिन्होंने 90 से ज़्यादा अंक हासिल किए। हमारे पड़ोसी की बेटी, बाबा के सहकर्मियों के बेटे। तुम दोनों ने कभी मुझे धक्का क्यों नहीं दिया?’ मैंने पूछा।
मम्मी मेरी पीठ सहलाती हैं। शायद मेरी दिशाहीनता के लिए वे ही ज़िम्मेदार हैं। उन्हें मेरे साथ और सख्ती से पेश आना चाहिए था। शायद आँचल जैसे लोग ज़िंदगी में कामयाब हो जाएँगे और मैं अपने माता-पिता की बची-खुची बचत पर जीने वाला कोई आम आदमी बनकर रह जाऊँगा।

मम्मी ने गहरी सांस ली, फिर मेरी तरफ देखकर मुस्कुराईं।
‘तुम हमेशा से एक अच्छे बच्चे थे,’ वह कहती हैं। ‘क्या तुम्हें पता है? दूसरे बच्चे इधर-उधर भागते, चीजें तोड़ते, तरह-तरह की शरारतें करते थे। लेकिन तुम नहीं। तुम इतने अच्छे व्यवहार वाले बच्चे थे कि हमें लगता था कि तुम्हें नज़र लग जाएगी। तुम हमारी हर बात सुनते थे, बिना नखरे के खाना खाते थे, कभी खिलौनों के लिए नहीं रोते थे। कुछ माता-पिता जानते हैं कि बच्चों का पालन-पोषण कैसे किया जाता है। तुम्हारे बाबा और मुझे सीखने की ज़रूरत ही नहीं पड़ी। तुम इतने सीधे-सादे थे।’
मम्मी की आंखें थोड़ी धुंधली सी हैं। वो मुझे देख तो रही हैं, पर ऐसा लग रहा है जैसे वो कहीं और हैं। अतीत में कहीं खोई हुई हैं।
वह आगे कहती हैं, 'तुमने सिर्फ अंक हासिल नहीं किए। ऐसा इसलिए नहीं था कि तुम किताबों के साथ नहीं बैठते थे, बल्कि इसलिए कि तुम पढ़ते थे—'
मैं तो बस बेवकूफ था।
‘दक्ष, हर कोई स्कूल में अच्छा प्रदर्शन नहीं करता। तुम मेहनती थे। हम तुम्हें किस बात पर डांट सकते थे? कुछ भी नहीं।’
‘बोर्ड एग्जाम के दौरान तुम मुझे धक्का दे सकते थे। मैं दे देता...’
मम्मी हंसने लगती हैं। वो अपने आंसू पोंछती हैं। वो मेरा हाथ वैसे ही पकड़ती हैं जैसे रब्बानी के जन्म से पहले पकड़ती थीं। पहले तो मुझे शर्म आती थी, लेकिन अब मुझे एहसास होता है कि मुझे ये पल कितने याद आते हैं।
‘रब्बानी के जन्म के समय तुम ग्यारहवीं कक्षा में थे,’ वह कहती हैं। ‘जब भी मुझे तुम्हारी ज़रूरत होती, तुम मेरे साथ होते थे। तुम कई रातें जागते रहे। ज़रा सी खांसी आती तो तुम अपने कमरे से दौड़कर आ जाते। तुमने 73 अंक प्राप्त किए, यह एक चमत्कार था। तुम्हारी कक्षा में कितने छात्र इतने अंक ला सकते हैं? एक भी नहीं। तुम्हारे बाबा और मैं समय को लेकर हमेशा दोषी महसूस करते रहे। खासकर बाबा। वे कहते रहे कि हमने तुम्हारा करियर बर्बाद कर दिया। मैं उनसे कहती रही कि जीवन में करियर से बढ़कर भी बहुत कुछ है। हमें यह देखने का मौका मिला कि तुम कैसे थे, एक आदमी के रूप में कैसे बनोगे। यह मेरे लिए, तुम्हारे बाबा के लिए बहुत मायने रखता है। तुम एक अच्छे लड़के हो, दक्ष। इन छोटी-छोटी बातों की परवाह कौन करता है? अगर तुम महत्वाकांक्षी नहीं हो या तुम्हें नहीं पता कि जीवन में क्या करना है, तो क्या फर्क पड़ता है? मेरे लिए, तुम जैसे हो, वैसे ही जीवन में जीत रहे हो।’
मैं नज़रें फेर लेती हूँ। मैं इस संग्रहालय के बीचोंबीच रोना बिल्कुल नहीं चाहती।
तो मैंने कहा, 'ठीक है, मैं इसे अपने सीवी में जोड़ दूंगा।'
‘वहाँ देखो,’ माँ कहती है और बाबा की ओर इशारा करती है।
वह रब्बानी को कलाकृतियों को गिराने से रोकने के लिए संघर्ष कर रहा है। वह आगे कहती है, 'परिणाम घोषित होने से बहुत पहले ही आपको 100 अंक मिल गए थे। आप हमारे साथ थे। बस यही मायने रखता है। अंक क्या होते हैं? कुछ नहीं। आज यहां, कल भुला दिए जाएंगे। हम हमेशा आपके साथ रहेंगे।'

OceanofPDF.com

12.

Aanchal Madan

होटल के मुख्य द्वार पर हमारी बस हमारा इंतज़ार कर रही थी, जो हमें हवाई अड्डे ले जाएगी। हम इस यात्रा को लेकर महीनों से उत्साहित और थोड़े घबराए हुए थे। मैंने इसके बारे में सपने देखे थे, और इसने मेरी ज़िंदगी बदल दी है। मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मैं पहले जैसी नहीं रही। गौरव कहता है कि ऐसा इसलिए है क्योंकि अब मैं अपने सपनों, अपने परिवार के सपनों को सच होते देखने के कगार पर हूँ। मैं मंज़िल के बहुत करीब हूँ।

यह सच है। मेरे नतीजों के बाद से, मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मेरी लंबाई कुछ इंच बढ़ गई हो, मैं पहले से ज़्यादा आत्मविश्वास से चल रही हूँ। मैंने गौरव से झूठ बोला था जब मैंने उससे कहा था कि मुझे लगता है कि मैं यहाँ होने के लायक हूँ। लेकिन अब मुझे इस बात पर यकीन है। अब मैं भारत के शीर्ष 0.1 प्रतिशत छात्रों में शामिल हो जाऊँगी। SRCC मेरे लिए ये दरवाजे खोल देगा। कैंपस में सबसे अच्छी प्लेसमेंट पाने और खुद पैसे कमाने से मैं सिर्फ तीन साल दूर हूँ। और कौन जाने? हो सकता है मैं MBA करने का फैसला कर लूँ और सफलता की नई ऊँचाइयों को छू लूँ। इन लोगों और मुझमें क्या फर्क होगा? मैं अपनी फ्लाइट का किराया खुद दूंगी, मेरे पर्स में अमेरिकन एक्सप्रेस कार्ड होगा और मैं अपने होटल के कमरे में खराब एयर कंडीशनिंग की शिकायत करूंगी।

मेरे सारे सपने अब मेरी मुट्ठी में हैं। ये और भी मीठे हैं क्योंकि मैंने इन्हें अपनी मेहनत से हासिल किया है—मैंने हर इंच के लिए संघर्ष किया है और ये अब मेरा है।

माँ ने कल मुझसे कहा कि मैं हमेशा विनम्र रहूँ। बाबा ने भी सहमति में सिर हिलाया। मुझे लगता है कि वे बस डरे हुए हैं। हम एक अनजान राह पर कदम रख रहे हैं। मैंने उन्हें कई बार उन निशानों को घूरते हुए देखा है, मानो वे बदल जाएँगे। मैंने उनसे कहा है कि ये निशान ज़िंदगी भर रहेंगे, पत्थर पर उकेरे गए हैं और मेरे भविष्य का रास्ता भी। माँ ने मेरी तरफ से विनम्र रहने की प्रार्थना की। मैंने माँ से कहा कि मैं भगवान का शुक्रिया अदा करने के लिए स्वास्तिक का टैटू हमेशा के लिए बनवा लूँगी।

जब मैं बस में चढ़ा, तो दक्ष पहले से ही वहाँ था। वह आखिरी सीट पर बैठा खिड़की से बाहर खाली निगाहों से देख रहा था। मैंने उसे पहली बार बिना दाढ़ी बनाए देखा। वह थका हुआ और बिखरा हुआ लग रहा था। उसके साथ जुड़ी गर्मी की ताजगी गायब हो गई थी।

मैंने खांसकर उसका ध्यान अपनी ओर खींचा। उसने मेरी तरफ देखा। उसने जबरदस्ती मुस्कुराया और फिर होटल के कर्मचारियों को बस के निचले हिस्से में हमारे सूटकेस

रखते हुए घूरने लगा। मैं बीच-बीच में पीछे मुड़कर दक्ष को देखती रही। अब उसके कानों में हेडफ़ोन लगे थे और उसका सिर खिड़की की चौखट पर टिका था। ऐसा लग रहा था कि उसने अपने ब्रेकअप को अच्छे से संभाल लिया था, लेकिन अब जब मैं उसे वापस उसी रास्ते पर जाते देख रही हूँ, तो शायद मैंने उसे गलत समझा था।
वह उदास लग रहा है।
बस होटल से रवाना होती है।
मुझे पता है कि मैं दक्ष को कभी नहीं भूलूंगा।
जब मैं सालों बाद अपने बोर्ड परीक्षा के नतीजों के उस पल को याद करूंगा, तो मुझे याद आएगा कि वही वो इंसान था जिसने मेरे नतीजे देखे थे। मुझे उसके चेहरे की वो खुशी याद आएगी मानो ये मेरा नहीं बल्कि उसका नतीजा हो। ये बस शुद्ध खुशी और जश्न था। उसने मुझे ऐसे देखा जैसे मैंने पूरी दुनिया जीत ली हो। उसे संघर्ष या कामयाबी का कोई अनुभव नहीं था, फिर भी वो मेरे लिए खुश था। उस सुबह से लेकर अब तक, मैंने कई लोगों को अपने नतीजे बताए हैं, और कई लोगों ने कहा है कि उन्हें मेरे लिए खुशी है। लेकिन, मेरे परिवार के अलावा, उसका जश्न, उसकी प्रतिक्रिया सबसे सच्ची थी। उसकी अकेले की तालियों ने मुझे एक रॉक स्टार जैसा महसूस कराया। विक्की भी, जो अपने विकल्पों के बारे में बात करता रहा, उसकी बराबरी नहीं कर पाया।
मैं कभी भूल नहीं सकता।
अब दक्ष मुझे एक दोस्त जैसा लगता है—विकी के बाद मेरा पहला दोस्त।
एयरपोर्ट पर मैं उसे खो देता हूँ।
मैंने सूटकेस कन्वेयर बेल्ट पर रख दिए। मैंने एयरलाइन कर्मचारियों को अपने पहचान पत्र दे दिए। मैंने ये सब ऐसे किया जैसे ये पहले लाखों बार कर चुका हूँ। पहली बार वाली घबराहट बिल्कुल नहीं थी। हम सब जहाँ भी सीट मिली, बैठ गए। इस पूरे समय गौरव ने दक्ष के निन्टेंडो स्विच से नज़रें नहीं हटाईं।
‘इसे उसे लौटाना मत भूलना,’ मैंने कहा।
वह सुनता नहीं है। वह स्तब्ध रह जाता है।
मैंने चारों ओर देखा। मुझे दक्ष नहीं मिला।
मैं बधाई संदेशों का जवाब देकर समय बिताता हूं।
मैं बीच-बीच में हवाई अड्डे पर दक्ष को ढूंढने के लिए इधर-उधर देखता रहता हूँ।
जब गौरव ने मुझे गर्दन घुमाकर देखते हुए देखा, तो उसने कहा, 'उनकी फ्लाइट हैदराबाद के लिए है, जहां से वे दुबई के लिए उड़ान भरेंगे।'
'इसलिए?'
वह सुरक्षा जांच के दूसरी तरफ है।
मैं वापस फोन कॉल का जवाब देने लगता हूँ। थोड़ी देर बाद हम सुरक्षा जांच से गुजर जाते हैं। हवाई अड्डा छोटा है, लेकिन फिर भी मुझे बोर्डिंग गेट के आसपास कहीं भी दक्ष नजर नहीं आता।
'शायद लाउंज में,' गौरव ने बिजनेस क्लास लाउंज की ओर इशारा करते हुए कहा।

मुझे गेम दे दो, मैं जाकर उसे दे दूंगा।
'बिल्कुल नहीं। मैं उसे फ्लाइट में चढ़ते ही दे दूंगा।'
'यह ठीक नहीं लग रहा है, गौरव। बस दे दो—'
मैंने उससे वह चीज़ छीनने की कोशिश की, लेकिन उसने उसे अपने पास खींच लिया।
'तुम इसे ले लो, और मैं माँ को विक्की के बारे में बता दूँगा।'
वह मुझे अक्सर ऐसी धमकी देता है। हालांकि, उसका ऐसा करने का कोई इरादा नहीं होता।
'तुम ऐसा नहीं करोगे,' मैंने सख्ती से कहा। 'एक और गेम। मैं वॉशरूम जा रहा हूँ। मेरे वापस आने के बाद, तुम्हें गेम लौटाना होगा।'
गौरव कहता है, 'तुम उससे मिलने जा रही हो। मुझे पता था कि तुम उसे पसंद करती हो!'
'अपना खेल खेलो, ज्यादा होशियारी मत दिखाओ। एक और खेल बाकी है,' मैंने उसे चेतावनी दी।
मैंने बिजनेस क्लास काउंटर पर बैठे व्यक्ति से कहा कि मुझे एक दोस्त से मिलना है। उसने एक पल सोचा और जब मैंने उससे कहा कि मुझे बस अलविदा कहना है, तो उसने मुझे जाने दिया।
लाउंज लगभग खाली है। मैंने उसे तुरंत देख लिया। रब्बानी दक्ष के फोन पर एक वीडियो देख रही है और वह उसे किसी तरह की प्यूरी खिला रहा है।
'अरे।'
'ओह, हाय,' वह ऊपर देखते हुए कहता है।
रब्बानी मुझे हाथ हिलाकर इशारा करती है। मैं भी हाथ हिलाकर जवाब देती हूँ। मुझे समझ नहीं आ रहा कि रब्बानी से क्या कहूँ या उसके साथ क्या करूँ। मैं दक्ष को बताना चाहती हूँ कि उसकी बहन कितनी प्यारी है, क्योंकि मुझे पता है कि उसे यह सुनकर अच्छा लगेगा, लेकिन यह सरासर झूठ होगा।
'मैं अलविदा कहना चाहती थी,' मैंने उससे कहा। 'गौरव ने मुझे बताया कि तुम्हारी फ्लाइट हैदराबाद के लिए है। यह हमारी फ्लाइट से पहले है, इसलिए...'
वह मेरी तरफ मुस्कुराता है। यह उसकी बनावटी मुस्कानों में से एक है।
'आपसे मिलकर अच्छा लगा,' वह रब्बानी के मुंह में एक और चम्मच सादा दिखने वाला पेस्ट डालते हुए कहता है। 'अगर आप कभी दुबई आएं, तो मुझे जरूर बताएं। मैं आपको शहर घुमाऊंगा।'
मुझे पता है कि ये सिर्फ कहने की बात है। जाहिर है, वो मुझसे दुबई आने की उम्मीद नहीं कर रहा है। मैं भी औपचारिकता पूरी कर देता हूँ।
और अगर आप दिल्ली आते हैं, तो मैं आपको शहर घुमाऊंगा। दिल्ली में आपका एक दोस्त है।
'क्या अब हम दोस्त हैं?'
'तुम समझ रहे हो ना मेरा मतलब?' मैंने कहा। 'दक्ष? क्या हम नंबर एक्सचेंज कर लें?'

‘क्या आपको लगता है कि मैं आपको अंतरराष्ट्रीय कॉल करूंगा?’ वह हंसते हुए कहता है। ‘मुझे अपना नंबर दीजिए।’ वह मुझे अपना फोन देता है।
मैं अपना नंबर टाइप करता हूँ।
जैसे ही वह मुस्कुराना बंद करता है और मैं मुस्कुराना बंद करती हूं, माहौल बदल जाता है।
यह पल भर में हो जाता है।
हमारी जिंदगी फिर से शुरू होने वाली है।
यह द्वीप एक आम मिलन स्थल था, जहाँ नए नियम लागू होते थे, जहाँ नई भावनाएँ जागृत होती थीं, भविष्य की कल्पनाएँ की जाती थीं, लेकिन अब हम वास्तविक दुनिया में लौट रहे हैं, जहाँ हमारा कोई मेल नहीं है। उसकी अपनी ज़िंदगी है, दोस्तों का अपना दायरा है, एक पूर्व प्रेमिका है, और मेरी अपनी ज़िंदगी है। हम एक-दूसरे को किस बारे में संदेश भेजेंगे? अगर हमने नंबर भी ले लिए होते, तो हम किस बारे में बात करते?
'जब आप विमान में चढ़ेंगे तो गौरव आपको निंटेंडो लौटा देगा।'
वह इसमें काफी अच्छा है।
'मुझे जाना चाहिए।'
वह उठता है। वह टिश्यू से अपने हाथ पोंछता है। 'बाय,' वह कहता है। वह मेरी ओर बढ़ता है और मुझे गले लगा लेता है।
मेरा शरीर अकड़ जाता है।
मैंने विक्की के अलावा किसी और लड़के को कभी गले नहीं लगाया है।
ये मेरा पहला आलिंगन है। मेरे पहले सच्चे दोस्त के साथ। जो मेरा लकी चार्म भी है।
धीरे-धीरे मेरी मांसपेशियां शिथिल हो जाती हैं और मैं अपने शरीर पर उसकी गर्माहट महसूस करती हूँ, मानो वह सचमुच अलविदा कह रहा हो और मुझे बता रहा हो कि बीते सात दिन मेरे लिए मायने रखते थे। यह एक खोखला आलिंगन नहीं है। इस आलिंगन का एक अर्थ है, यह उन शब्दों को कह रहा है जिन्हें कहना शायद अटपटा या जल्दबाजी भरा लगे।
फिर हमने उसे छोड़ दिया।
‘फिर मिलेंगे,’ मैंने उदास होकर कहा। और फिर मैं रब्बानी की ओर मुड़कर बोली, ‘तुम्हें भी फिर मिलेंगे।’
दक्ष हंसता है। 'कोई बात नहीं। अगर तुम्हें बच्चे पसंद नहीं हैं, तो कोई बात नहीं।'
'क्षमा मांगना।'
‘Bye, Aanchal.’
‘Daksh?’
मुझे पता है वापस लौटना मुश्किल है, लेकिन मुझ पर भरोसा रखो, सब ठीक हो जाएगा।
'उंगलियों को पार कर।'
लाउंज से बाहर निकलते हुए मुझे अजीब सा महसूस हो रहा था। जैसे सात दिनों में

मैंने कुछ हासिल किया हो और अब उसे पीछे छोड़ रही हूँ। दिल्ली वापस जाने वाली फ्लाइट में, मैं सोचने लगी कि उसे क्या मेल करूँ। लेकिन फिर मैंने सोचा, इसका क्या फायदा? हम दोस्ती को तब भी खो देते हैं जब वह हमारे सामने होती है।
जब मैं लैंड करती हूँ, तो मैं उसका मैसेज देखने के लिए अपना फोन चेक करती हूँ। मैं समय देखती हूँ। वह एक घंटे पहले हैदराबाद में लैंड कर चुका होगा।
घर वापस आकर मैं फिर से अपना फोन चेक करती हूँ कि कहीं उसका कोई मैसेज तो नहीं आया।
अगले दिन, मैं उसके संदेश का इंतजार करता हूँ।
तीन दिन बीत जाते हैं; मैं उसके संदेश का इंतजार करता रहता हूं।
एक हफ्ते बाद मुझे पता चलता है कि गौरव ने मुझसे झूठ बोला था। मुझे अलमारी में छिपा हुआ निंटेंडो मिलता है। उसने उसे कभी लौटाया ही नहीं।
उन्होंने स्वीकार किया, 'मुझे वह लाउंज में नहीं मिला।'
‘तुमने इसे चुराया है।’
‘कृपया माँ को मत बताना,’ वह विनती करता है।
मैं ऐसा नहीं करूंगा।
'आप नाराज हो गए क्या?'
'नहीं, ऐसा नहीं है। वह दूसरा खरीद सकता है।'
कई महीने बीत जाते हैं, और वह मुझे अभी तक कोई संदेश नहीं भेजता।

OceanofPDF.com

OceanofPDF.com

भाग 2

चार साल बाद

OceanofPDF.com

1.

एयरपोर्ट का अनाउंसमेंट बोर्ड चमक रहा है। मुंबई का चेक-इन काउंटर 'जी' गलियारे में है। मां-पापा एयरपोर्ट के डिपार्चर टर्मिनल की कांच की दीवारों के दूसरी तरफ से मुझे घूर रहे हैं।

‘आप जा सकती हैं, माँ! मैं ठीक हूँ,’ मैंने फोन पर कहा।

मुझे मां की आंखों में आंसू दिखाई देते हैं। वह बुदबुदाती है, 'आंचल, तुम्हारा भाई—' मैंने उसकी बात बीच में ही काट दी क्योंकि यह मेरी प्राथमिकता सूची में पहले से ही शामिल था। 'मैं गौरव को ढूंढकर उससे बात करूंगी। चिंता मत करो। अब मैं जा रही हूं। जाओ मां।'

पापा ने चिंता जताते हुए कहा, 'इधर-उधर ज्यादा मत घूमना, होटल में ही रहना। और हमें लोकेशन भेजते रहना।'

उनकी आंखों की चमक फीकी पड़ रही है। मेरे जन्म के बाद पहली बार वे घर में बिना बच्चों के सोने जा रहे हैं। मैं उनकी उदासी में शामिल नहीं हूं। मैं तो बहुत उत्साहित हूं! मेरी पहली व्यावसायिक यात्रा, मेरी पहली एकल यात्रा। कल रात मैं मुश्किल से दो घंटे सो पाई। डिलीवरफूड में मेरे सहकर्मी पिछले एक महीने से मुझसे ईर्ष्या कर रहे थे। मैंने उनसे कहा कि उन्हें और मेहनत करनी चाहिए थी!

‘खाते रहो। और विक्की को फोन करते रहो,’ मां ने आगे कहा।

‘जैसे कि यह कोई विकल्प हो, माँ,’ मैंने रूखेपन से जवाब दिया।

‘और उसकी मां भी,’ मां ने फिर याद दिलाया। ‘वह भी चिंतित होगी। तुम जानती हो कि वह तुमसे प्यार करती है।’

विक्की की माँ सिर्फ़ एक ही व्यक्ति से प्यार करती है—विक्की से। अगर उसकी मर्ज़ी चलती, तो वो विक्की के शरीर में धागे सिलकर उसे कठपुतली की तरह नचाती। जब विक्की घर छोड़कर अपने दफ्तर के पास वाले अपार्टमेंट में रहने चला गया, तब से उसकी माँ ने तीन दिन तक खाना-पीना छोड़ दिया था।

मैं होटल पहुँचते ही उसे फोन करूँगी।

‘उनके लिए मुंबई से कुछ ले आओ,’ मां ने अनुरोध किया।

‘माँ, दिल्ली में तो सब कुछ मिल जाता है। मैं सम्मेलन में व्यस्त रहूँगी, उनके लिए क्या लाऊँगी? यूँ ही कुछ मत कहो।’

'अच्छा, अच्छा, ठीक है, मत करो, लेकिन कृपया उन्हें फोन करो। उन्हें गुस्सा होने का मौका मत दो।'

‘ठीक है, अब जाओ,’ मैं उनसे कहता हूं।

मैंने उन्हें हाथ हिलाकर फोन काट दिया। उनके कंधे झुक गए।

गलियारे में, नींद से व्याकुल माताएँ अपने रोते-चिल्लाते बच्चों को गोद में लिए खड़ी हैं। उनके पति एयरलाइन ऐप पर चेक-इन कर रहे हैं। मुझसे छोटे लड़कों और लड़कियों का एक समूह गोवा जा रहा है। जब गोवा जाने वाली लाइन में एक लड़का अपनी प्रेमिका को चूमता है तो मुझे ईर्ष्या होने लगती है।

मुझे प्यार मिलने की कमी खलती है।
विकी ने मुझे महीनों से प्यार से चूमा नहीं है। उसे चूमना किसी मरती हुई मछली को चूमने जैसा है। उसकी आँखें खुली हैं, पुतलियाँ हिल रही हैं। हमारे सड़े हुए रिश्ते की बदबू से मुझे उल्टी आने लगती है। मुझे हैरानी होती है कि वह अब भी मुझे कैसे बर्दाश्त करता है। अगर मैं उसकी जगह होती, तो मैं मुझे सालों पहले छोड़ देती। मैं सचमुच दुनिया की सबसे बुरी गर्लफ्रेंड हूँ। उसने हमारे झगड़ों के दौरान कई बार यह बात कही है, और हमारे झगड़े तो बहुत होते हैं।
सुरक्षा जांच के बाद, मैं अपने लिए एक कॉफ़ी खरीदता हूँ। देखो मुझे, मैं खुद से कहता हूँ। हवाई अड्डे पर, अकेला, व्यावसायिक यात्रा पर, अपने लिए कॉफ़ी खरीद रहा हूँ। मैं कितना महत्वपूर्ण महसूस कर रहा हूँ! मैं एक घूंट लेता हूँ। कॉफ़ी बहुत गर्म है और मेरी तंद्रा टूट जाती है। धत् तेरे की! मैं अपनी पैंट पर हाथ फेरता हूँ। मेरा फ़ोन वहाँ नहीं है। मैंने अपना फ़ोन सुरक्षा जांच में ही छोड़ दिया। मैं वापस भागता हूँ। मेरी तलाशी लेने वाली महिला मुझे मेरा फ़ोन देते हुए सिर हिलाती है, मानो कह रही हो, आज के युवा, बिल्कुल गैरजिम्मेदार।
विक्की के तेरह मिस्ड कॉल हैं। उसका नाम सुनते ही मुझे गुस्सा आ जाता है। मैं उसे कॉल करती हूँ।
‘जान,’ उसने चिंता से भरी आवाज में जवाब दिया। ‘क्या तुमने अपना फोन सुरक्षा गार्ड के पास छोड़ दिया था?’
आप क्यों फोन कर रहे हैं?
उसकी आवाज़ में बदलाव आता है। 'तुम्हारा क्या मतलब है, मैं क्यों फोन कर रहा हूँ?'
‘मैंने कल रात तुम्हें कितनी बार फोन किया। क्या तुम मुझे एक बार भी जवाब नहीं दे सकते थे? तुम कहाँ थे?’
‘कहीं नहीं,’ वह चिड़चिड़ाते हुए जवाब देता है। ‘बस ऑफिस और फिर घर। तुम क्यों चिल्ला रहे हो?’
‘आप अपार्टमेंट में कब वापस आए?’
‘मैंने समय नहीं देखा। मुझे बहुत नींद आ रही थी। यह पूछताछ क्यों है?’
तुम मुझसे फिर झूठ बोल रहे हो।
‘मैं झूठ नहीं बोल रहा! मैंने सचमुच समय नहीं देखा। मैं क्यों देखता—’
‘विकी, तुम किसी के भी साथ हो सकती हो! कौन जाने तुम मेरी पीठ पीछे किसके साथ सोती हो!’
‘मैं ऐसा क्यों करूंगा?’ वह चिल्लाता है।
‘देखो, तुम बचाव करने लगे हो,’ मैंने पलटकर जवाब दिया। ‘बेशक तुम किसी और के साथ सो सकते हो। मुझे सज़ा देने के लिए क्योंकि तुम मुझे अब पसंद भी नहीं करते!’
‘Calm down, Aanchal.’
'अच्छा!'
'कितना अच्छा?'
‘मैं अब ठीक नहीं कह सकती, विक्की? तुम्हें इससे भी कोई दिक्कत है?’

‘क्या मैं हर बात को समस्या बना रहा हूँ?’ वह झल्लाकर पूछता है।
नहीं, मैं बेवजह परेशानी खड़ी कर रही हूँ। मैं ही तो देर से लौटी और मैसेज भी नहीं किया। जब मन करे तब लौट आओ! रात भर जो मन करे करो! मुझे क्या फर्क पड़ता है? मुझे मैसेज मत करो। मुझे कॉल मत करो। जिसके साथ मन करे सो करो!
वह फोन पर गहरी सांसें लेता है। 'हम एक ही बात पर बार-बार बहस नहीं कर सकते। हर बार जब हम बात करते हैं—'
‘विकी, तुम्हें घर किसने छोड़ा?’
‘अरे, आँचल। भूल जाओ, ये तो बस एक बार हुआ था!’ वह गरजते हुए बोला।
‘मैंने उसे सिर्फ एक बार देखा है। कौन जाने कितनी बार सान्या तुम्हें घर छोड़ती है? कौन जाने अगर वो अब भी तुम्हारे साथ है और तुम लोग मुझ पर हंस रहे हो?’
‘यार! क्या हम इस बारे में बहस करना बंद कर सकते हैं!’
मैं उसे परेशान करना जारी रखती हूँ, मेरी आवाज़ में ज़हर भरा होता है। 'विकी, तुम मुझे इस बारे में बहस करने पर मजबूर कर रही हो! मैं पागल नहीं हूँ कि तुम्हारे बारे में सोचकर रात भर जागती रहती हूँ। पहले तो तुम मैसेज नहीं करती, और फिर मेरे सामने झूठ बोलने लगती हो! क्या मैं बेवकूफ हूँ?'
‘बिना वजह हंगामा मत करो।’
‘यह सब मेरी गलती है, बिल्कुल सही, बिल्कुल सही। रात में मुझे मैसेज न करना मेरी गलती है। है ना! मैं ही पागल हूँ!’
‘हाँ, कुत्तिया! पागल तो तुम हो! भगवान ही जाने मुझसे क्या चाहते हो।’
'मुझे गाली मत दो, विक्की। मैं तुम्हारी माँ को बता दूँगी।'
‘जाओ, उसे जो कहना है कह दो! वो जानती है कि तुम क्या हो,’ वो चिल्लाता है।
‘और जानती हो क्या, आँचल? जो भी ये सब सोचता है और ये बेतुके शक करता है, वही सबसे पहले जाकर दूसरे लोगों के साथ संबंध बनाता है। तुम भी ये जानती हो!’
‘मैं तुमसे बात करके क्यों परेशान हो रही हूँ!’ मैं मन ही मन सोचती हूँ। ‘मैं कुछ भी करूँ, तुम हमेशा उसे मुझ पर ही पलट दोगे। हमेशा। जैसे मैं इस ब्रह्मांड की सबसे बुरी इंसान हूँ!’
इससे उसका आपा टूट जाता है। 'मदरचोद! तुमसे बात करने का कोई फायदा है क्या?'
'हां, हां, सारी खामी मुझमें ही है। तुम एकदम सही हो। विक्की के बारे में सब कुछ एकदम सही है!'
वह गहरी आह भरता है। 'हर बार कोई न कोई नया ड्रामा शुरू हो जाता है। मैं सुबह फोन करता हूँ, ड्रामा शुरू हो जाता है, शाम को फोन करता हूँ, कोई नया ड्रामा शुरू हो जाता है...'
वह एक गहरी आह भरता है। मैं जानती हूँ कि वह क्या कर रहा है। वह इस झगड़े को खत्म करने की कोशिश कर रहा है। उसे मुझे इस तरह तड़पाना अच्छा लगता है। वह मुझे ऐसा महसूस कराता है कि वह मुझे छोड़कर चला जाएगा, लेकिन कभी नहीं जाता। यह एक ऐसी जेल है जिससे मैं कभी बाहर नहीं निकल सकती।

‘Aanchal.’
मैं उसे जवाब नहीं देता। मैं लड़ना चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि यह लड़ाई जारी रहे।
‘जान,’ वह धीरे से कहता है। ‘मैं बस तुम्हें यह बताना चाहता था कि मुझे तुम्हारी बहुत याद आएगी।’
मेरे पास कोई विकल्प नहीं है। 'मुझे भी तुम्हारी याद आएगी,' मैंने रूखेपन से जवाब दिया।
‘मैं तुमसे प्यार करता हूँ,’ वह कहता है। ‘मैं तुमसे बहुत प्यार करता हूँ। तुम यह जानती हो ना?’
कभी अपार शक्ति रखने वाले वे शब्द अब मेरे लिए कोई मायने नहीं रखते। वे सब मिट्टी के समान हैं।
'वही।'
‘क्या तुम मम्मी को फोन करोगे?’
अगर मैं फोन नहीं करूंगी तो विक्की की मां, मां को फोन कर देगी और मुझे उनसे कॉन्फ्रेंस कॉल के जरिए बात करनी पड़ेगी।
'लैंडिंग के बाद,' मैंने विक्की से कहा।
मैंने कॉल काट दी। मैंने बैठने के लिए एक जगह ढूंढी और अपनी बची हुई कॉफी का आनंद लिया।

OceanofPDF.com

2.

Daksh Dey

मैं स्कूटर को सड़क के किनारे खड़ा कर देता हूँ।
‘रब्बू, चलना बंद करो! स्कूटर गिर जाएगा। मुझे कितनी बार यही बात दोहरानी पड़ेगी?’
‘यह मेरी गलती नहीं है, दादा, ये सड़क के गड्ढे हैं!’
रब्बानी की बड़ी, नम, सम्मोहक आँखें मुझे उसकी बातों पर विश्वास करने के लिए मजबूर कर देती हैं। मैंने बच्चों की परवरिश पर कई किताबें पढ़ी हैं, पॉडकास्ट सुने हैं कि बच्चों को बिना अपना आपा खोए प्रभावी ढंग से कैसे पाला जाए। लेकिन जब आप उस स्थिति में होते हैं, तो ये सब बेकार साबित होते हैं। केवल मेरी पसंदीदा पॉडकास्टर अमृता ठाकुर ही सच बोलती हैं। जब सच में मुश्किल समय आता है, तो आप बुनियादी बातों पर लौट आते हैं। और बच्चों की परवरिश करते समय, बुनियादी बातें हैं उन्हें शर्मिंदा करना!
‘रब्बानी, क्या तुम देर से आना चाहते हो? तुम्हारी टीचर कहेंगी कि तुम्हारा भाई कितना निकम्मा है। क्या तुम चाहते हो कि वो ऐसा कहें?’

वह प्यार से मेरे चेहरे को छूती है। 'आप बेकार नहीं हैं, दादा। आप सबसे अच्छे हैं। दादा अद्भुत हैं! दादा सबसे अच्छे हैं!'
मैंने उसे ये शब्द तब भी सिखाना और दोहराना शुरू कर दिया था, जब उसे इनका मतलब भी नहीं पता था। अब वो इसे एक दवा की तरह इस्तेमाल करती है, जिससे मेरा मूड अच्छा हो जाता है, भले ही वो हमेशा ऐसा जानबूझकर न करती हो।
'हिलो मत, ठीक है? हर जगह कूदो, लेकिन स्कूटर पर रहते हुए नहीं।'
वह अपना गला दबाती है। 'वादा।'
मैंने इग्निशन चालू किया और स्कूटर फिर से स्टार्ट हो गया। रब्बानी ने खुद को संभालने के लिए डिस्प्ले पैनल को दोनों हाथों से कसकर पकड़ लिया। उसके स्कूल के बाहर, मैं एक किलोमीटर से भी अधिक लंबे, लड़खड़ाते और रुक-रुक कर चलने वाले वाहनों के विशाल जाम के बीच से स्कूटर निकालता हुआ आगे बढ़ा।
‘हमें कार कब मिलेगी?’ वह पूछती है।
‘शायद कभी नहीं,’ मैंने जवाब दिया। ‘तुम उनकी तरह हारे हुए क्यों बनना चाहोगे?’ मैंने हॉर्न बजाती हुई कारों की ओर इशारा किया।
उसके छह साल के सहपाठी अभी से कारों की तुलना करने लगे हैं। कुछ लड़के रब्बानी का मज़ाक उड़ाते हैं क्योंकि उसके दादा स्कूटर चलाते हैं। मैं सकारात्मक सोच रखने की कोशिश करती हूँ, उम्मीद करती हूँ कि रब्बानी उन लड़कों और आम तौर पर लड़कों से डर जाए, बड़ी होकर लड़कों से नफरत करने लगे और जब वह बालिग हो जाए तो लड़कियों से डेट करे। यही सबके लिए सबसे अच्छा होगा।
अमृता ठाकुर अपने पॉडकास्ट में कहती हैं कि अच्छी समझ होने के बावजूद, उन्हें अपने बच्चों का ब्रेनवाश करना अच्छा लगता है। इसलिए मैं रब्बानी को हर दिन कहती हूँ कि छोटे लड़के एकदम निकम्मे होते हैं।
रब्बानी ने स्कूल के गेट पर मुझे गले लगाया।
‘मैं आपसे प्यार करती हूँ, दादा,’ वह कहती है।
‘मैं भी तुमसे प्यार करती हूँ,’ मैं कहती हूँ, लेकिन ज़ाहिर है मैं झूठ बोल रही हूँ। मेरे दिल में जो भावनाएँ हैं, उनके आगे प्यार शब्द बहुत छोटा पड़ जाता है। ‘तुम एक प्यारे से बटन की तरह हो,’ मैं रब्बानी से कहती हूँ।
‘नहीं, दादा, आप एक प्यारा सा बटन हैं।’
‘यह भी सच है,’ मैंने कहा।
रब्बानी की क्लास टीचर, अर्चना कोटक, बाहर उसका इंतजार कर रही हैं। वह मेरी तरफ मुस्कुराती हैं।
कुछ महीने पहले मैं और अर्चना कोटक डेट पर गए थे। डेट के अंत में, नशे में धुत अर्चना ने मेरी गर्दन में बाहें डाल दीं। फिर उसने यह कहकर मुझे अस्वीकार कर दिया, 'मैं ऐसे व्यक्ति के साथ रहने के लिए तैयार नहीं हूँ जिसके पास बहुत सारी परेशानियाँ हों।'
मैंने जवाब दिया, 'जहां तक सामान की बात है, मैं पिछले कुछ वर्षों से सामान जमा करता आ रहा हूं। मेरे पास अलग-अलग आकार और वजन के सामानों की एक लंबी

कतार है।'
उसने अपनी उंगलियां मेरे चेहरे पर फिराईं और लड़खड़ाती आवाज में बोली, 'लेकिन सिर्फ इसलिए कि हम डेट पर नहीं जा सकते, इसका मतलब यह नहीं है कि तुम मुझे घर नहीं ले जा सकते, क्योंकि तुम बिल्कुल ले जा सकते हो।'
मैंने जवाब दिया, 'मैं एक कमरे की रसोई में रहती हूँ। रब्बानी और मेरे पिताजी वहाँ होंगे। अगर वे जाग गए और नर्सरी टीचर को उल्टी मुद्रा में देख लिया तो स्थिति थोड़ी अजीब हो सकती है।'
'मुझे घर वापस जाकर गूगल पर "रिवर्स काउगर्ल" सर्च करना पड़ेगा,' वह हंसते हुए बोली। फिर, बनावटी उदासी दिखाते हुए होंठों को ऊपर उठाते हुए उसने कहा, 'मैं तुम्हें घर ले जाती, लेकिन मैं अपने माता-पिता के साथ रहती हूँ। वे आत्मदाह कर लेंगे।'
हम दोनों में से कोई भी रात के लिए कमरा किराए पर लेने का खर्च नहीं उठाना चाहता था। हमारी इच्छा इतनी बड़ी नहीं थी। यहीं पर हमारी मुलाकात खत्म हो गई। अर्चना रब्बानी का हाथ पकड़ लेती है।
'आप कैसे हैं?' वह मुस्कुराते हुए मुझसे पूछती है।
'बस किसी तरह काम चल रहा है,' मैंने जवाब दिया।
उसके दाहिने हाथ में सोने की अंगूठी चमक रही है। स्कूल में यह उसका आखिरी महीना है। अगले महीने उसकी शादी हो रही है और वह चंडीगढ़ जा रही है। विडंबना यह है कि उसकी शादी एक किसान से हो रही है जिसे शायद रिवर्स काउगर्ल के बारे में पता हो या न हो।

OceanofPDF.com

3.

Aanchal Madan

विमान में एक ज़ोरदार झटका लगा। खिड़की वाली सीट से मुझे गहरा, अथाह सागर दिखाई दिया। विमान ज़मीन पर उतर गया। नेटवर्क वापस आ गया। वनिता पेन के मिस्ड कॉल के नोटिफिकेशन आए।
वनिता पेन, मेरी सबसे अच्छी दोस्त वनिता अय्यर है। चार साल पहले, एसआरसीसी में पंजीकरण के दिन वनिता अय्यर ने मुझसे एक पेन मांगा और फिर उसे खो दिया। उसने मुझसे अपना नंबर सेव करने और पेन लौटाने के लिए याद दिलाने को कहा। मैंने नाम नहीं बदला। उसने पेन कभी नहीं लौटाया।
वनिता एसआरसीसी में ऐसे दाखिल हुई मानो वह हमेशा से वहीं रही हो। 6 फुट 1 इंच की अत्यधिक लंबाई, दुबली-पतली काया और किसी बच्चे द्वारा बनाई गई दुबली-

पतली आकृति के बावजूद, वह एक नर्तकी की तरह सहजता और आत्मविश्वास के साथ, एक एथलीट की तरह गति से चलती थी।
पहले दिन, जब एक प्रोफेसर ने उससे कहा कि उसकी स्कर्ट लंबी होनी चाहिए, तो वह रो पड़ी और फिर उसकी शिकायत कर दी। दूसरे दिन, उसने छोटी स्कर्ट पहनी। तीसरे दिन, उसने नाटक, नृत्य, संगीत और वाद-विवाद समितियों में भाग लिया, लेकिन किसी में भी शामिल नहीं हुई। चौथे दिन, दो लड़कों ने उसे डेट पर जाने के लिए पूछा। जब मैं एसआरसीसी में अपने पहले छोटे-छोटे कदम रख रही थी, चुपचाप अपना अस्तित्व बनाए हुए थी, तब वह गलियारों में हंसती-हंसती, मानो अपनी मौजूदगी का ऐलान कर रही हो। मुझे वनिता पसंद थी। हर किसी को वनिता पसंद थी। वह आपसे ऐसे बात करती थी जैसे आप एक-दूसरे को सालों से जानते हों। लोग फुसफुसाते थे, 'वह तो सेना की बच्ची है। सेना के बच्चे किसी से भी बात कर सकते हैं।' हमारे कॉलेज में सेना के कई बच्चे थे। लेकिन कोई भी उसके जैसा नहीं था। उस पहले हफ्ते भर, मैं घर जाकर वनिता से बात करने, उससे दोस्ती करने, उसके जैसे गलियारों में चलने, बिल्कुल उसके जैसी बनने के सपने देखती रहती थी।
मैंने सातवें दिन उससे पूछा, 'क्या तुम्हारे पास मेरा पेन है?'
'नहीं,' उसने नाक सिकोड़ते हुए जवाब दिया।
मैंने उससे कहा, 'मैं तुमसे दोस्ती करना चाहती हूं।'
वह अपने चेहरे, शरीर और आँखों से हँसी। 'क्या हम पहले से ही नहीं हैं?' उसने कहा और अपना हाथ मेरे कंधे पर रख दिया। 'क्या मुझे अभी भी तुम्हें कलम वापस देनी है?'
और बस, बात यहीं खत्म हो गई। पहले महीने के अंत तक, हम बहनों से भी ज्यादा गहरी दोस्त बन चुकी थीं।
तब से हम एक-दूसरे के माता-पिता से झूठ बोलते रहे हैं। हम एक-दूसरे के लिए प्रॉक्सी मार्क करते हुए पकड़े गए हैं। मैंने उसके सभी बॉयफ्रेंड को कोसा है, ब्रेकअप के दौरान उसका साथ दिया है। हम दोनों ने एक-दूसरे को बेकाबू डीटीसी बसों के रास्ते से हटाया है।
उसने मुझे अपने शरीर को लेकर अपने संघर्षों, अपनी सांवली त्वचा के प्रति अपनी नफरत, अपने छोटे स्तनों के प्रति अपने गुस्से, अपने गहरे दुख, अपनी तीव्र शिकायतों और बचपन में इस्तेमाल किए गए उन तेज धार वाले हथियारों के बारे में बताया। मैंने उसे दुनिया के प्रति अपने गुस्से के बारे में, अपने दूध में पानी मिलने के बारे में, एक चाचा द्वारा स्पर्श किए जाने के बारे में, अपनी महत्वाकांक्षा की सीमा के बारे में, गरीब होने की शर्म के बारे में, और समाज में घुल-मिल न पाने के अकेलेपन के बारे में बताया।
मैंने उससे कहा कि वह कॉलेज की सबसे खूबसूरत लड़की है। उसने मुझसे कहा कि मैं कॉलेज की सबसे सुंदर लड़की हूँ। कभी-कभी वह बस मुझे देखती और कहती, 'आँचल, तुम इतनी खूबसूरत क्यों हो? ये तो नाइंसाफी है।' मैं विक्की से प्यार करती थी, लेकिन वनिता दुनिया में मेरी सबसे प्यारी इंसान थी। मैं विक्की के लिए अपनी

जान दे सकती थी, लेकिन मैं वनिता के साथ जीना चाहती थी।

* * *

विक्की गर्ग को वनिता अय्यर से पहली नजर में ही नफरत हो गई थी।
कॉलेज के शुरुआती कुछ महीनों में विक्की को सबसे नफरत थी। मुझसे भी, खासकर मुझसे। मैं एसआरसीसी में पढ़ती थी, जबकि वह रामजस में। चाहे वह अपनी नाराजगी छिपाने की कितनी भी कोशिश करे, वह हमेशा बाहर आ ही जाती थी। वह अपना गुस्सा मुझ पर निकालता, मुझे परजीवी कहता। वह कहता कि एसआरसीसी में मेरे बैठने का एकमात्र कारण वही है। वह चिल्लाता, मुझे बुरी तरह पकड़ता और फिर मेरे पैरों पर गिरकर रोता और माफी मांगता।
उन दिनों वनिता मुझसे कहा करती थी, 'तुम उसकी बकवास बर्दाश्त नहीं कर सकती।' मैं जवाब देती, 'उनके बिना, मैं सरस्वती कॉलेज में बैठी होती।'
पहले कुछ महीनों के बाद, उसने मुझे SRCC में उसकी जगह लेने के लिए माफ़ कर दिया। हम रोए और पहली बार शारीरिक संबंध बनाए। हमारा पहला अनुभव बहुत बुरा था, लेकिन धीरे-धीरे हमने खुद को संभाला और सब ठीक हो गया। फिर हमने खूब शारीरिक संबंध बनाए। वह दिन भर मुझे कामुक संदेश भेजता रहता था, और मैं भी उससे भी ज़्यादा कामुक संदेशों से जवाब देती थी। ऐसा लगता था मानो हमारी नज़दीकी ने हमारी सारी परेशानियाँ अस्थायी रूप से मिटा दी हों। लेकिन यह बस इतना ही था: अस्थायी।
और हालात कुछ समय के लिए बेहतर हुए, फिर बिगड़ गए।
कभी एक-दूसरे से जुड़े हमारे जीवन अब अलग होने लगे थे। कभी एक जैसी हमारी दुनियाएँ अब अलग हो गई थीं। रामजस कॉलेज और श्री राम कॉलेज ऑफ कॉमर्स एक-दूसरे से सिर्फ चार मिनट की दूरी पर थे। फिर भी ऐसा लगता था मानो हम अलग-अलग दुनिया में जी रहे हों। मैं कॉलेज के कोरियोग्राफी ग्रुप में डांस करना चाहती थी। वह चाहता था कि मैं उसके दोस्तों के साथ मुरथल परांठे खाने जाऊँ। मैं CAT परीक्षा के लिए अर्थशास्त्र की ट्यूशन देकर पैसे कमाना चाहती थी। वह अपने नए सबसे अच्छे दोस्त संजोग की तरह UPSC परीक्षा पर ध्यान देना चाहता था। हम हर दिन लड़ते थे—चिल्लाते, चीखते। वह वनिता को बदचलन कहता। मैं उसके दोस्तों को गुंडे और संजोग को विकृत कहती। वह मेरे कॉलेज को घमंडी कहता। मैं रामजस को हारे हुए लोगों का कॉलेज कहती। वह मुझे नापसंद कपड़े पहनने पर डांटता और मैं उसे दोस्तों के साथ शराब पीने पर डांटती। वह पापा को नाकाम कहता। मैं उसकी माँ को चुड़ैल कहती। वह मुझ पर दिखावा करने का आरोप लगाता। वह झगड़ा करता, मुझे गालियां देता, लेकिन फिर माफी मांगने के लिए रात भर मेरे अपार्टमेंट के बाहर बैठा रहता। वह मेरी कॉल लिस्ट में मौजूद हर लड़के का नंबर डिलीट कर देता था। और हर कॉल वेटिंग का मतलब तीन घंटे की बहस होती थी। मैं उसे गंवार कहती, वह कहता कि वह रिश्ता तोड़ना चाहता है, मैं भी कहती कि मैं भी रिश्ता तोड़ना चाहती

हूं।
कुछ रिश्ते टूट जाते हैं। एक बड़ी घटना और सब कुछ राख हो जाता है। कुछ रिश्ते धीरे-धीरे गलने लगते हैं। पता ही नहीं चलता कि कुछ बदल रहा है। लेकिन अंदर से बदबू आने लगती है, सड़ने और खराब होने लगती है। हमारा रिश्ता धीरे-धीरे गलने लगा।
उसके दोस्तों को लगता था कि वह बेहतर का हकदार है, मेरे दोस्तों को लगता था कि मैं बेहतर का हकदार हूं।
हम एक-दूसरे से कहते थे, तुम बदल गए हो। तुम पुराने विक्की नहीं हो। तुम पुरानी आँचल नहीं हो। हमने ये शब्द इतनी बार कहे कि हम भूल ही गए कि पुराने विक्की और आँचल कौन थे। मुझे वो विक्की याद नहीं था जो गुस्से में नहीं रहता था, जो मुझे थप्पड़ मारने से बस एक पल दूर नहीं होता था। उसे वो आँचल याद नहीं थी जो ज़रा सी बात पर भड़क उठती और झूठ नहीं बोलती थी। हम एक-दूसरे को समझ नहीं पा रहे थे, एक-दूसरे के नज़रिए को नहीं देख पा रहे थे।
एसआरसीसी जाने से पहले, हमारा एक ही सपना था।
हम एक ही टीम में थे।
और अब हालात बिगड़ने लगे हैं।
'यह उस गुफा की तरह है,' वनिता ने मुझसे कहा। 'सुकरात की गुफा! तो देखो, कल्पना करो कि तुम एक सुरक्षित गुफा में हो। जैसे विक्की और तुम स्कूल के दिनों में एक सुरक्षित गुफा में थे। तुम्हें बस इतना ही पता था कि ऐसी कोई जगह है। तुम दोनों को बाहरी दुनिया के बारे में कुछ नहीं पता था। लेकिन फिर एक दिन, तुम गुफा से बाहर निकलकर जंगल में चले गए।'
'क्या यह जंगल एसआरसीसी है?'
'हाँ, दिल्ली विश्वविद्यालय भी, कॉलेज का अनुभव, यहाँ कैंपस में सबसे बेहतरीन होना, वगैरह,' उसने कहा। 'तो यहाँ देखने लायक बहुत सी चीजें हैं, अनुभव करने लायक जगहें हैं, मनमोहक दृश्य हैं, नदियों में तैरने का मौका है, लेकिन साथ ही खतरनाक जानवर भी हैं जो आपको चीर-फाड़ सकते हैं। आप क्या करेंगे? गुफा में सुरक्षित रहेंगे? या जोखिम उठाकर सब कुछ अनुभव करेंगे? विक्की के साथ गुफा में रहेंगे? या बस बाहर निकलेंगे...'
काश मैं उस गुफा में ही रहती। काश मैं कभी बाहर ही न निकलती। काश मैं रजत से कभी न मिलती। काश मैंने रजत को मुझे छूने न दिया होता।

* * *

कन्वेयर बेल्ट पर पहुंचते ही मैं वनिता को फोन करती हूं।
'तुम आखिर हो कहां?' वनिता चीखती है।
मैं चीख पड़ी, 'मैं तुम्हारे बहुत करीब हूँ!'
खुशी की लहरें मेरे भीतर ऐसे दौड़ रही हैं जैसे किनारे पर लहरें टकराती हैं।

‘सुनो, मैं अभी क्लास जा रही हूँ। कुछ दिनों में मिलते हैं। कुछ एग्जाम खत्म करने हैं,’ वह कहती है। ‘और फिर हम तुम्हारे उस कमीने भाई को ढूंढने निकलेंगे।’
'मैं बहुत उत्साहित हूं!'
'अपने बच्चे को देखो।'
हमने कॉल काट दी। एक साल पहले, वनिता ने पुणे स्थित सिम्बायोसिस में नौकरी शुरू की, जबकि मैंने उससे कहा था कि वह कुछ साल काम करे, फिर से CAT परीक्षा दे और फिर IIM में दाखिला लेने की कोशिश करे। मूर्खतापूर्ण फैसला।
एयरपोर्ट के बाहर एक कार मेरा इंतज़ार कर रही थी, जो मुझे उस होटल तक ले गई जहाँ कॉन्फ्रेंस हो रही थी। बांद्रा-कुर्ला कॉम्प्लेक्स स्थित मैरियट होटल मेरे जैसे लोगों से खचाखच भरा हुआ था—अपनी-अपनी कंपनियों की तरफ से आए हुए युवा लड़के-लड़कियाँ। मैंने आँखें बंद कीं और यहाँ होने के लिए मन ही मन कृतज्ञता व्यक्त की। भगवान का मिजाज बदलता रहता है, सावधानी बरतना ही बेहतर है। मैंने अपने कमरे की तस्वीरें खींचीं और पापा, माँ और विक्की की माँ को भेज दीं।
विक्की की मां ने मुझे फोन किया।
‘बेटा, बहुत अच्छा कमरा है,’ वह मीठी आवाज़ में कहती है। ‘क्या फ्लाइट ठीक है?’
'हां, मम्मी,' मैं जवाब देती हूं। उन्हें मम्मी कहना मुझे ऐसा लगता है जैसे मैं अपनी जीभ को किसी कद्दूकस पर रगड़ रही हूं।
लेकिन याद रखना, बीटा, तुम वहाँ काम के लिए हो। इसलिए कॉन्फ्रेंस में जाओ और फिर वापस कमरे में आ जाओ। ठीक है? और विक्की को कॉल करते रहना।
मैं उसे मम्मी कहकर पुकारती हूं, लेकिन वह फोन नहीं उठाता।
‘मैं उनसे कहूंगी कि वे आपको वापस कॉल करें,’ वह कहती हैं।
कुछ मिनट बाद, मैंने विक्की को कई बार फोन किया। उसने फोन नहीं उठाया। मैं उम्मीद करती हूँ कि वो सान्या के साथ हो। मैं उम्मीद करती हूँ कि उसे सान्या से प्यार हो जाए। मैं उम्मीद करती हूँ कि वो उसके साथ सोए और मुझे उसके धोखे का सबूत मिल जाए। लेकिन सबसे ज़्यादा, मैं उम्मीद करती हूँ कि एक दिन वो मुझसे इतनी नफ़रत करे कि मुझे छोड़ दे। मैं उम्मीद करती हूँ कि मैं उससे छुटकारा पा सकूँ।

OceanofPDF.com

4.

Daksh Dey

मैं स्कूटर को रब्बानी के स्कूल, स्टार इंटरनेशनल से कुछ ही दूरी पर और मैरियट होटल के ठीक सामने पार्क करता हूं, जिसका पार्किंग स्थल आज टैक्सियों से भरा हुआ है।

सतबीर, जो इस महीने सुबह की शिफ्ट में है, मेरे पास आने पर मुझे सलाम करता है। वह आज परेशान लग रहा है।
'सुप्रभात, सर जी। कैसा चल रहा है?' मैंने पूछा और ड्रॉप-ऑफ एरिया में हॉर्न बजाती कारों की लहरों की ओर इशारा किया।
'व्यस्त हूँ,' वह आधे मन से अपना मेटल डिटेक्टर लहराते हुए, मुझे तलाशी लेने का नाटक करते हुए जवाब देता है। 'कोई सेल्स कॉन्फ्रेंस हो रही है। पूरी क्षमता से काम चल रहा है। नया फ्लोर मैनेजर है। पकड़े मत जाना।'
भूतल खचाखच भरा हुआ है। नाश्ते के रेस्तरां के बाहर लोगों की कतार लगी है। औपचारिक पतलून और टाई पहने पुरुष, लैपटॉप लिए स्कर्ट पहने महिलाएं, फोन पर जल्दबाजी में बात कर रही हैं।
मैं मेज़ानाइन फ्लोर की ओर मुड़ता हूँ।
वॉशरूम हमेशा की तरह खाली है।
मैरियट होटल, जिसकी सात मंजिलों पर तीन कंपनियों के कार्यालय भी हैं, ने सभी वॉशरूम में शॉवर लगवाए थे। ये उन अधिकारियों के लिए थे जो साइकिल चलाते हैं, स्थानीय ट्रेन से यात्रा करते हैं या रोज़ाना आने-जाने के दौरान पसीने से भीग जाते हैं, ताकि काम शुरू करने से पहले जल्दी से नहा सकें। शुरुआती उत्साह के बाद, अब ये शॉवर इस्तेमाल नहीं हो रहे हैं।
लेकिन मैं शॉवर का इस्तेमाल करता हूँ।
घर पर पानी कभी भी उतना गर्म नहीं होता जितना होना चाहिए। और गैस पर पानी गर्म करने में बहुत समय लगता है। और अगर पानी गर्म न हो तो क्या सच में नहाने का मज़ा ही कुछ और है? यहाँ पानी का प्रेशर बढ़िया है, तापमान एकदम सही है, और मेरा ऑफिस यहाँ से सिर्फ़ दस मिनट की ड्राइव पर है।
सतबीर, किरण, समीर—गार्ड, फ्लोर मैनेजर और हाउसकीपिंग हेड—सभी ने मुझे ऐसा करते हुए पकड़ लिया है। अब वे मेरे दोस्त बन गए हैं और मेरी गलतियों को अनदेखा कर देते हैं। वे मुझे चेतावनी देते हैं, 'बस पकड़े मत जाना।'
मैं नहाती हूँ, कपड़े पहनती हूँ, अपने बाल संवारती हूँ और हार और निराशा से भरे एक और दिन के लिए तैयार हो जाती हूँ।
मैं क्लाउड इंक. में काम करता हूँ, जो एक क्लाउड सेवा प्रदाता कंपनी है और अमेज़न और माइक्रोसॉफ्ट के साथ सीधी प्रतिस्पर्धा में है। जब मैं 'प्रतिस्पर्धा' कहता हूँ, तो मेरा मतलब है कि हम विलुप्त होने की कगार पर हैं। कार्यालय किसी वायरस से संक्रमित बंजर भूमि जैसा है जहाँ हर दिन कोई न कोई व्यक्ति गायब हो जाता है। एक दिन ऐसा भी आएगा जब मैं कार्यालय पहुँचूँगा और शटर बंद पाऊँगा। लेकिन तब तक, इससे मेरे छोटे-मोटे बिल, रब्बानी की फीस और बाबा के इलाज का खर्च चलता है।
मैं आमतौर पर ऑफिस में सबसे पहले पहुँचती हूँ, लेकिन आज मैंने देर से आने का फैसला किया है। मैं भूतल पर स्थित स्टारबक्स की ओर मुड़ती हूँ, जो लोगों से खचाखच भरा है। मैं अपने जन्मदिन सप्ताह की मुफ़्त ड्रिंक लेने के लिए लाइन में लग जाती हूँ। मैं अपने बैग से अपने लिए जन्मदिन का तोहफ़ा निकालती हूँ, एक हार्डकवर

किताब, 'द स्टॉकर', जो 450 पन्नों का एक बेतुका स्लेशर थ्रिलर है।
‘दक्ष?’ मुझे पीछे से एक आवाज सुनाई देती है।
मैं मुड़ता हूँ।
वह महिला मुझे घूर रही है।
मैं इस चेहरे को पहचानता हूँ। लेकिन मेरा दिमाग बाकी चेहरों को खंगालकर यह याद करने की कोशिश नहीं कर रहा कि वह कौन है। मैंने कहीं पढ़ा था कि दिमाग ध्यान केंद्रित करने का एक उपकरण है। अभी, मेरा दिमाग सिर्फ उसी पर केंद्रित है, और किसी और चीज़ पर नहीं। वह कौन है? इस आंतरिक प्रश्न का मेरे दिमाग से कोई उत्तर नहीं मिलता। जहाँ मैंने उसे पहले देखा है, वहाँ सोचने के बजाय, मेरा दिमाग उसकी नाक की बनावट, उसकी आँखों की चमक, उसके शैम्पू की खुशबू पर अटक जाता है। मैं बेवकूफी से उसे घूरता रहता हूँ। वह औरत खूबसूरत है। वह कौन है? यह सवाल मेरे अंदर फिर से गूंजता है। कोई जवाब नहीं। यह ठीक वैसा ही है जैसे एक तेज़ विद्युत चुम्बकीय तरंग सभी माइक्रोप्रोसेसरों को खराब कर देती है।
‘आंचल,’ महिला कहती है।
‘ओह,’ मैं कहती हूँ। मेरा दिमाग अचानक वर्तमान में लौट आता है। ‘बिल्कुल!’
यह देखकर आसानी से पता नहीं चलता कि यह वही है। वह बदल गई है। तब भी सुंदर थी, अब भी सुंदर है, लेकिन... वह बदल गई है। वह लंबी और सीधी हो गई है। उसके कंधे पीछे की ओर खिंचे हुए हैं। वह पहले से ज़्यादा मज़बूत दिखती है। उसने लैपटॉप बैग पकड़ रखा है, उसकी कमीज़ के अंदर की कसी हुई मांसपेशियां साफ दिख रही हैं। मेरा दिमाग पोर्ट्रेट मोड में चला जाता है, उसके आसपास सब कुछ धुंधला हो जाता है। वह बहुत जगह घेर लेती है, मानो कोई खूबसूरत विशालकाय हो। जैसे औपचारिक कपड़ों में कोई योद्धा राजकुमारी हो। अब वह लड़की नहीं, बल्कि औरत है, राजकुमारी नहीं, रानी है, छात्रा सचिव नहीं, राजनेता है। मेरे आसपास के लोग अपने बीच खड़ी इस सबसे खूबसूरत महिला की परवाह किए बिना अपने पेय खरीद रहे हैं। उसके गाल अब ऊंचे और धंसे हुए हैं। सफेद कमीज़ उसके स्तनों पर कसी हुई है, उसकी पतलून उसकी जांघों पर बिना सिलवटों के है, और मैं देखता हूं कि उसकी मांसपेशियों में कसाव आ गया है। हो सकता है मेरी बात सतही लगे, लेकिन नैतिकता को छोड़ो। क्या झरने, हरे-भरे जंगल, घाटी या पहाड़ को देखकर सांस रोक लेना सतही है? उसकी सुंदरता एक वस्तुनिष्ठ सत्य है।
अब मेरा दिमाग तेज़ी से काम करना शुरू करता है और लड़खड़ाते हुए हरकत में आने लगता है।
अंडमान के समुद्र तट, होटल का स्विमिंग पूल, ऐतिहासिक स्थलों की सैर। मैंने उसका नंबर ले लिया था, लेकिन कभी उसे कॉल नहीं किया। उसके भाई गौरव ने मेरा निंटेंडो चुरा लिया।
‘दक्ष! मुझे विश्वास ही नहीं हो रहा कि ये तुम हो! वाह, हे भगवान, ये सच में तुम ही हो। है ना?’ वो खुशी से मुस्कुराती है, उसकी आँखें चौड़ी हो गई हैं।
अब मैं भी मुस्कुरा रही हूँ। 'ये तो अविश्वसनीय है, है ना? आँचल मदन, मैंने कभी

सोचा भी नहीं था कि मैं तुम्हें फिर देख पाऊँगी।'
'कितना समय हो गया है? तीन—'
'चार साल।'
'चार साल! आप सम्मेलन के लिए यहाँ आए हैं?' वह पूछती है। 'मुझे अब भी विश्वास नहीं हो रहा कि यह आप हैं!'
वह एक पल के लिए मेरी बांह को छूती है। यह... अच्छा लगता है।
मुझे उसकी आवाज़ और उच्चारण में बदलाव नज़र आता है। यह उसके कॉर्पोरेट पहनावे, सीधी पीठ, स्थिर निगाहों और चमड़े के लैपटॉप बैग पर उसकी मज़बूत पकड़ से मेल खाता है। चार साल पहले, उसके चेहरे पर घबराहट झलकती थी। अभी वह आत्मविश्वास से भरी हुई है। तब वह बेमेल लगती थी, लेकिन अब वह यहाँ की है। ऐसा लगता है जैसे वह यहाँ किसी सम्मेलन में भाग लेने नहीं, बल्कि उसका संचालन करने आई है।
'मैं यहाँ कॉफ़ी के लिए आई हूँ,' मैं उससे कहती हूँ, मेरी चेतना धीरे-धीरे लौट रही है। मेरा दिल इतनी तेज़ी से धड़क रहा है कि मैं उसकी आवाज़ सुन सकती हूँ। मैं लाइन से हट जाती हूँ ताकि दूसरे लोग अपने ट्रिपल-शॉट अमेरिकानो और चाय लट्टे का ऑर्डर दे सकें। 'और रब्बानी का स्कूल ठीक सामने है।'
'क्या आप अब मुंबई में रहते हैं? क्या आप यहाँ आकर बस गए हैं?' वह पूछती है।
'हां, हम दुबई में अपनी लेम्बोर्गिनी कारों में घूमते-घूमते और हबीबी जीवन जीते-जीते थक गए थे। यहां आए हुए हमें लगभग दो साल हो गए हैं।'
हम वर्तमान में मम्मी को शामिल नहीं करते हैं।
वह बेहद प्यारी हंसी हंसती है। फिर उसकी नजरें मुझ पर टिक जाती हैं और वह चुप हो जाती है।
उसके विपरीत, जिसने बोर्ड मीटिंग में भाग लेने जैसे कपड़े पहने हैं, मैंने एक पुरानी काली टी-शर्ट और काली जींस पहनी है। मुझे आश्चर्य होता है कि क्या वह मेरे शरीर पर जमी और मेरी आँखों के आसपास जमी उदासी को महसूस कर पाती है।
क्या वह मेरे चेहरे पर पिछले चार वर्षों का इतिहास पढ़ सकती है?
मेरे दिल का भारीपन?
क्या उसे पता है कि मैंने कितनी बार अपनी मौत के बारे में कल्पना की है?
क्या वह मेरी आंखों में देख सकती है कि सच्ची, स्थायी खुशी पाना असंभव लगता है?
क्या इन चार वर्षों में मैंने जीवन भर का दुख झेला है?
कुछ क्षणों के लिए सन्नाटा छा जाता है।
मुझे आश्चर्य होता है कि उसके जीवन में क्या बदलाव आया है। वह अपनी कलाई घुमाती है और अपनी चमकती हुई टिसोट घड़ी में समय देखती है।
'क्या मैं आपसे बाद में मिल सकती हूँ?' वह पूछती है। 'मुझे अभी एक सेशन में जाना है। लेकिन मैं आपसे मिलूंगी, है ना? आप चार साल तक फिर से गायब तो नहीं हो जाओगे?'
मैं उसे फिर से देखना चाहती हूँ। पता नहीं मिल पाएगा या नहीं। पेंडिंग प्रोजेक्ट

प्रेजेंटेशन, बाबा की फिजियोथेरेपी और रब्बानी की क्लासेस, और नर्सों के लिए समय...
वह मेरी बांह को छूती है और मेरे व्यस्त कार्यक्रम में बाधा डालती है।
'मैं तुमसे जरूर मिलूंगी,' वह आदेश देती है। 'मुझे गौरव द्वारा तुम्हारा निंटेंडो चुराने के लिए माफी मांगनी है। इससे पहले कि तुम कुछ कहो, अगर तुमने मुझे फोन किया होता तो मैं उसे लौटा देती, लेकिन तुमने नहीं किया। इसलिए, तुम्हें इसके लिए माफी मांगनी होगी।'
मुझे उम्मीद थी कि आप इसके बारे में पूरी तरह से भूल गए होंगे।
'भूल गए? मैं? दक्ष, मैं खिड़की के पास फोन हाथ में लिए तुम्हारे कॉल का इंतजार कर रही थी। मैं रोती ही रही,' वह हंसते हुए जवाब देती है। 'क्या तुम मुझे एक मैसेज छोड़ दोगे? क्या तुम्हारे पास मेरा नंबर अभी भी है?'
मैं आँचल को यह नहीं बताता कि मुझे उसका नंबर मुंह ज़बानी याद है।
4049494979.
यह उसका नंबर है।
उसे इस बात का पता नहीं था कि ये दस उंगलियां मेरे लिए एक सुरक्षित आश्रय, मुस्कुराने की एक वजह और एक तरह से राहत का जरिया रही हैं।
और उसे पता नहीं चलना चाहिए। यह अजीब होगा। मैं बिना किसी सीरियल किलर की तरह दिखे, जो ड्रिल और चाकू लिए तहखाने में बंद है और जिसकी दीवारों पर खून के धब्बे हैं, मैं बात शुरू कैसे करूँ?
चार साल पहले, उसके नंबर ने मेरे पुरुष अहंकार को लगे एक भयानक झटके से उबरने में मेरी मदद की थी। लंदन पहुँचने के कुछ ही दिनों के भीतर, समीशा ने सबके सामने किसी के साथ डेटिंग शुरू कर दी। इंस्टाग्राम पर हर तरफ़ तस्वीरें ही तस्वीरें थीं —चुंबन करते हुए, हाथ पकड़े हुए, अश्लील वीडियो वगैरह।
टूटकर बिखर गया, मैं आँचल के बारे में सोचते हुए अपने अहंकार को सँवार रहा था, उसके फ़ोन नंबर को घूर रहा था। आँचल ने मुझे याद दिलाया कि समीक्ष के लिए मेरे दिल में जो भावनाएँ थीं, वे प्यार नहीं हो सकती थीं—क्योंकि आँचल के लिए मेरा आकर्षण समीक्ष के लिए मेरी भावनाओं से कहीं ज़्यादा मज़बूत था। मैं आँचल को फ़ोन करना चाहता था। लेकिन मैं उसे फ़ोन नहीं कर सका। अगर मैं करता, तो मुझे उसे बताना पड़ता कि उसके ख्यालों ने मेरे दिमाग पर पूरी तरह कब्ज़ा कर लिया है। मुझे उसे बताना पड़ता कि मैं एक स्कूली बच्चे की तरह उसके बारे में दिन में सपने देखने लगा हूँ।
और इसलिए, मैंने उसके प्रति अपने इस मूर्खतापूर्ण आकर्षण के कमजोर पड़ने का इंतजार किया।
फिर एक दिन मुझे सूचना मिली कि उसने अभी-अभी सोशल मीडिया अकाउंट बनाया है। वह लॉक था, उसने सिर्फ अपना पहला नाम इस्तेमाल किया था, और डिस्प्ले पिक्चर में वह एक लड़के के साथ थी। विक्की। मैं उसे रिक्वेस्ट भेजना चाहता था, लेकिन नहीं भेजा क्योंकि क) मुझे क्या उम्मीद थी कि क्या होगा और ख) वह विक्की

को, जो उसकी डिस्प्ले पिक्चर में दिख रहा था और बहुत पजेसिव था, मेरे बारे में क्या बताएगी?
हालांकि, उसे अपनी प्रोफाइल में न जोड़ने का विकल्प चुनने के बावजूद, एक साल के दौरान, मैं कभी-कभी उसके नंबर का उपयोग करके उसकी प्रोफाइल खोजता था, देखता था कि क्या उसकी डिस्प्ले पिक्चर अभी भी वही है, उसे ज़ूम करके देखता था और मेरा दिल विस्मय, खुशी और ईर्ष्या से भर जाता था।
जब तक उसने अपना प्रोफाइल डिलीट नहीं कर दिया।
तीन साल पहले, जब मेरी जिंदगी बदहाल हो गई, तो उसका नंबर खुशी और दिवास्वप्नों का स्रोत होने के बजाय एक पलायन का जरिया बन गया।
सबसे अंधेरी रातों में, जब हार मानना ही एकमात्र विकल्प लगता था, मैं उसका नंबर देखता था। मैं कल्पना करता था कि मैं उसे डायल कर रहा हूँ। मैं कल्पना करता था कि वह फोन उठाएगी और मुझे बताएगी कि वह मेरे कॉल का इंतजार कर रही थी।
दो साल पहले, मैं अपने दोस्तों, रिश्तेदारों और जान-पहचान वालों के फ़ोन नंबर अपनी कॉन्टैक्ट लिस्ट से डिलीट करने बैठा। वो लोग जिन्होंने हमें छोड़ दिया था। एकदम घटिया लोग, सब के सब। मैं स्क्रॉल करता रहा और डिलीट करता रहा। गुस्से से कांपती उंगलियों से मैंने आशीष अंकल का नंबर डिलीट किया, बाबा के सहकर्मी —उन्होंने मेरा फ़ोन उठाना बंद कर दिया था। अथावले अंकल, हमारे पड़ोसी, जिन्होंने कहा कि वे आर्थिक तंगी में हैं और हमें पैसे उधार नहीं दे सकते। मैंने अतुल अंकल का नंबर डिलीट किया, वो कमीना जिसे बाबा ने कई बार पैसे उधार दिए थे, जिसका पूरा परिवार कुछ साल पहले एक महीने के लिए हमारे साथ रहा था।
मेरी उंगलियां आंचल के नंबर पर अटकी हुई थीं। मैंने उसे डिलीट नहीं किया।
जब हम मुंबई आए, उसी समय उसने अपना नया लिंक्डइन अकाउंट बनाया। सबसे पहले डिस्प्ले पिक्चर लगाई: सफेद शर्ट, आत्मविश्वास से भरी ठुड्डी, आँखों में सफलता और दृढ़ संकल्प। फिर बाकी की जानकारी दी गई।
Aanchal Madan, third-year student, SRCC
आँचल मदन ने अंतर-महाविद्यालयीय वाद-विवाद प्रतियोगिता जीती।
कोका-कोला में ग्रीष्मकालीन इंटर्नशिप
पिछले साल उन्होंने एक और बिंदु जोड़ा।
Aanchal Madan joins DeliverFood
जिस लड़की के पास कुछ नहीं था, वह सब कुछ चाहती थी और उसे सब कुछ मिल गया।
जब मैं सबसे ज्यादा निराश होती थी, तब मैं उसे लिंक्डइन पर ढूंढती और खुद से कहती कि मैं अपनी किस्मत को अपनी जिंदगी तय नहीं करने दूंगी। मैं भी उसकी तरह लड़ सकती हूं। वह उम्मीद की एक किरण थी, रोशनी की एक किरण थी।
तो क्या मुझे उसका नंबर याद है? हाँ, बिल्कुल याद है। अगर वे मेरा दिल चीर कर निकाल लें, तो उन्हें उसमें वो नंबर तैरते हुए मिलेंगे जैसे हर सुबह रब्बानी के दूध में छोटे-छोटे अनाज के अक्षर तैरते हैं।

वह कहती हैं, 'मेरा नंबर 4049494979 है।'
मैं इसे अपने फोन पर टाइप करने का दिखावा करता हूँ।
वह मुस्कुराती है। 'मैं इंतजार करूंगी। इस बार मुझे उम्मीद है कि आप फोन करेंगे।'
वह मुझे अलविदा कहती है, मुड़ती है और स्टारबक्स से बाहर निकल रहे लोगों की भीड़ में शामिल हो जाती है। उसके गुजरते समय कुछ पुरुषों की नजर उस पर पड़ती है। वे सब उसकी ओर देखने लगते हैं।

OceanofPDF.com

5.

Aanchal Madan

मैं पैनलिस्टों की ग्राहक जीवनचक्र और ब्रांड संरचना पर ध्यान केंद्रित नहीं कर पा रही हूँ। मेरा मन दक्ष की ओर भटक रहा है। जब मैंने उसे कॉफी शॉप में देखा तो मुझे अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं हुआ। मैं उसकी ओर इसलिए देख रही थी क्योंकि वह सबसे अलग दिख रहा था। जहाँ बाकी लोग झुके हुए अपने फोन में मग्न थे, वहीं वह सीधा खड़ा था, उसका सिर थोड़ा झुका हुआ था, और वह अपनी किताब में खोया हुआ था। हल्के रंग की कमीज और तंग पतलून पहने पुरुषों और महिलाओं की भीड़ में, वह काली टी-शर्ट, काली जींस और गंदे सफेद स्नीकर्स में एक द्वीप की तरह अलग दिख रहा था। दूसरों के विपरीत, उसकी हरकतों में कोई जल्दबाजी नहीं थी, न ही वह पीछे मुड़कर देख रहा था कि लाइन कितनी आगे बढ़ी है।
जब मैंने गौर से देखा तो मेरा दिल उछल पड़ा।
Daksh!
मेरा लकी चार्म।
यादों की लहरें मुझ पर टूट पड़ती हैं। वो लड़का जिसका निन्टेंडो गौरव ने चुरा लिया था। जिसने मेरा नंबर लिया और कभी कॉल नहीं किया। जिसने मेरे बोर्ड के नतीजे अपने फोन पर देखे थे। जिसके साथ मैंने एक कॉरनेटो शेयर किया था, वो पहला इंसान जिसके बारे में मैंने विक्की से झूठ बोला था। वो बड़ा हो गया था, अब गहरी आँखों वाला, नुकीली नाक वाला, खुरदरी त्वचा वाला, शांत स्वभाव का... मैं उसे समझदार तो नहीं कहना चाहती क्योंकि ये बुढ़ापा होगा, लेकिन वो... परिपक्व है? शांत है? मैं ठीक से बता नहीं सकती। लेकिन मुझे ये अच्छी तरह पता है कि उसके साथ मुझे कैसा महसूस होता था। सुकून।
हालांकि, वह स्थिति वैसी ही बनी हुई है।
उन्होंने मेरी तरफ मुस्कुराया और उसी विनम्रता और शालीनता के साथ मुझसे बात की, जो मुझे इतने साल पहले बहुत आकर्षक लगी थी।
जब मैं पहली बार दक्ष से मिला, तब वह अठारह साल का था। उस समय मुझे लगा

कि कॉलेज में हर कोई उसी विनम्रता और खुलेपन से बात करता है जैसे वह करता था। चार साल बीत चुके हैं, मैंने अनगिनत लोगों से बात की है, लेकिन किसी की भी बातचीत मेरे मन में उसकी तरह अंकित नहीं है। मुझे आज भी याद है कि उन बातचीत के दौरान उसने मुझे कैसा महसूस कराया था।

आज, इतने वर्षों बाद, उन्होंने मुझे उस एहसास की याद दिला दी कि मुझे देखा जा रहा है, मैं महत्वपूर्ण हूँ। उस एहसास की याद दिला दी कि जब कोई सिर्फ एक श्रोता हो, तब भी ऐसा लगे मानो लोगों की फौज मेरे हर शब्द को ध्यान से सुन रही हो। एक बार फिर, उन्होंने मुझे ऐसा महसूस कराया मानो मैंने जो कुछ भी कहा हो, वह पत्थर पर उकेरा जाना चाहिए। मैं किराने की सूची भी पढ़ती, तो भी वे उसे ध्यान से सुनते। हालांकि इस बार उन पर उदासी का साया छाया हुआ था।

दिनभर मैं अपना फोन देखती रहती हूँ, उम्मीद करती हूँ कि वो मैसेज करेगा या कॉल करेगा। उसकी ये आदत भी नहीं बदली है। तब भी उसने मुझे इंतज़ार करवाया था। जैसे-जैसे दिन बीतता है, मैं उसके ख्यालों को अपने दिमाग से निकाल देती हूँ। शायद दक्ष जैसे आकर्षक और सुंदर लड़के यही करते हैं—लड़कियों को ये एहसास दिलाते हैं कि वो उनकी दुनिया की रानी हैं और फिर उन्हें यूँ ही छोड़ देते हैं।

सम्मेलन के पहले दिन के अंत में, आयोजकों ने हमें बताया कि वे सभी प्रतिभागियों के लिए कुछ किलोमीटर दूर स्थित ओपा नामक बार में एक पार्टी का आयोजन कर रहे हैं। जब मैंने माँ-पापा को इसके बारे में बताया, तो उन्होंने मुझसे विक्की की माँ से अनुमति लेने का अनुरोध किया।

‘तो मैं नहीं जा रहा। मैं उसकी अनुमति लेने के बजाय सांप से लड़ना पसंद करूंगा,’ मैं उनसे कहता हूं, जो एक सटीक उपमा है, लेकिन विक्की ने उसी को मेरे गले में जकड़ रखा है ताकि वह धीरे-धीरे मेरी जान निचोड़ सके।

‘बेटा, तुम ये सब बातें क्यों कहते हो?’ माँ ने घबराकर पूछा।

तो, मैं अपने कमरे में बैठ गई और पार्टी में जाने के लिए बाहर गलियारों में हो रही बातचीत को नज़रअंदाज़ करने की कोशिश करने लगी। एक घंटे बाद, मैंने हिम्मत जुटाकर कुट्टी को फोन किया।

‘मम्मी, क्या मैं जा सकती हूँ?’ मैंने विक्की की माँ से शरमाते हुए लहजे में पूछा। वो घिनौनी औरत फोन पर बड़बड़ाती है। मेरे दिमाग में एक गुस्से से आग बबूला बुलडॉग की छवि बनती है। 'क्या विक्की ने आपसे मेरी अनुमति लेने के लिए कहा था? अगर उसने कहा है, तो मेरा जवाब है ना।'

‘मम्मी, वो फोन नहीं उठा रहा है। उसकी आज देर रात तक समीक्षा बैठक है। मैंने उसे एक संदेश भेजा है। उसने जवाब नहीं दिया, लेकिन मैंने सोचा कि आपसे पूछ लूँ।’

‘आपने उसे कब मैसेज किया?’

'एक घंटे पहले।'

‘विकी ने मुझे पंद्रह मिनट पहले मैसेज किया था। अगर उसे तुम्हारे जाने से कोई आपत्ति नहीं होती, तो वह मुझे बता देता। और बेटा, तुम जानते हो कि उसे ये सब पसंद नहीं है। तुम क्यों जाना चाहते हो? वहाँ सब लोग बस शराब पिएंगे। तुम्हें नहीं

जाना चाहिए,' वह दृढ़ता से कहती है।
'मम्मी, मैं नहीं पीऊँगा—'
वह मुझे बीच में ही बड़े ही असभ्य तरीके से टोकती है। 'बेटी, मैंने तुम्हें बता दिया कि हम क्या चाहते हैं, बाकी सब तुम पर निर्भर है,' वह तीखे स्वर में कहती है। 'अगर तुम सुनना नहीं चाहती तो हमसे मत पूछो।'
मुझे पता है कि अगर मैं उसे उकसाऊँगी, तो वह इसका गलत मतलब निकालेगी और मेरे ही खिलाफ इस्तेमाल करेगी।
'ठीक है, मुझे वैसे भी नींद आ रही है, मम्मी। मैं जाकर सो जाती हूँ।'
'अच्छी लड़की।'
मेरी आंखों में गुस्से के आंसू फूट पड़े।
मुझे विक्की पर, उसकी मां पर और सबसे ज्यादा खुद पर गुस्सा आ रहा है।
मैंने अपनी मौत की कहानी उसी दिन लिख डाली, जिस दिन मैंने विक्की को धोखा देना शुरू किया। जिस दिन मैं पहली बार रजत बोपन्ना के IIT दिल्ली स्थित हॉस्टल में गई और उसे मेरे साथ जो चाहे करने दिया। रजत के साथ मेरे पहले पल के बाद, उसने मेरी गर्दन पर चुंबन करते हुए मुझसे कुछ सवाल फुसफुसाए।
'हम ऐसा क्यों कर रहे हैं? क्या आप विक्की से खुश नहीं हैं?'
'तुम्हारा हर एक चुंबन विक्की द्वारा मुझे रुलाए जाने के हर पल का एक छोटा सा बदला है।'
क्या वो अब भी तुम्हें रुलाता है?
मैं रोती हूं, लेकिन ये आंसू बनावटी होते हैं।
रजत से बहुत पहले ही मेरे आंसू सूख चुके थे, मेरी आत्मा मर चुकी थी। वह एक अलग मकसद से मेरे जीवन में आया था। इससे मुझे एहसास हुआ कि मुझे विक्की से प्यार नहीं, बल्कि शुद्धि, बदला और दूरी चाहिए थी।
विक्की और मैं ऐसे थे जिन्हें सुधारा नहीं जा सकता था।
हमने अपने रिश्ते को सुधारने की कई बार कोशिश की थी। भोलेपन से हमने सोचा था कि पर्याप्त प्यार और स्नेह से इसे सुधारा जा सकता है।
एसआरसीसी के पहले साल में, विक्की और मैं अपने जीवन के सबसे बुरे दौर से गुज़र रहे थे। हम एक मिनट भी बात नहीं कर पाते थे, बात चीख-पुकार में बदल जाती थी। हमारे बीच सिर्फ़ नाराज़गी और नफ़रत ही बची थी। जब पहले साल के नतीजे घोषित हुए, तो विक्की अपनी कक्षा में उन्नीसवें स्थान पर था, और मैं अपनी कक्षा में बाईसवें स्थान पर। यह वह भविष्य नहीं था जिसकी हमने अपने लिए कल्पना की थी।
'तुम्हें उससे रिश्ता तोड़ देना चाहिए,' वनिता ने सलाह दी थी। 'क्या वह तुम्हें चाहता भी है?'
यह एक ऐसा सवाल था जो मुझे परेशान करता रहता था। इसलिए, मैं विक्की के पास गई और उससे कहा कि मैं उससे अलग होना चाहती हूँ। मुझे तुरंत जवाब मिल गया। उसने मुझे थप्पड़ मारा और फिर फूट-फूटकर रोने लगा। वह सिसकते हुए बोला कि अगर यह रिश्ता उसके लिए सब कुछ नहीं होता, तो वह गिड़गिड़ाता और रोता

नहीं। उसने कहा कि उसके लिए सिर्फ मैं ही मायने रखती हूँ। वह मुझसे इतना प्यार करता था कि इसी प्यार ने उसे क्रोधित, प्रतिशोधी और टूटा हुआ बना दिया था। मेरे बिना, वह सड़क पर निकल जाएगा, अपनी कलाई पर चाकू मार लेगा, नहर में कूद जाएगा।
मैंने उसकी बात पर पूरा विश्वास किया। उसके हर शब्द पर।
'आंचल, हमारे बीच बहुत कुछ हो चुका है,' वह मेरे पैरों पर गिर पड़ा और रोने लगा। 'हमने साथ में बहुत कुछ झेला है। मैं इसे यूं ही जाने नहीं दे सकता। सिर्फ इसलिए कि हालात मुश्किल हो गए हैं, आप पीछे नहीं हट सकते। हम दोनों उलझ गए थे। हम दोनों ने गलतियां कीं। हमें फिर से कोशिश करनी चाहिए। मैं सचमुच चाहता हूं कि हम फिर से कोशिश करें।'
मैंने उसकी दर्द भरी, कांपती हुई आवाज में कहे गए हर एक शब्द पर विश्वास किया।
मैंने रोते हुए उससे कहा, 'हम इसे व्यर्थ नहीं जाने दे सकते। हमने इसमें बहुत कुछ दिया है। क्या हम अपने कॉलेजों को अपने बीच आने देंगे?'
उन्होंने वादा किया, 'मैं बेहतर हो जाऊंगा।'
मैंने इसे परम सत्य, ईश्वर का वचन, पत्थर पर उकेरा हुआ मान लिया।
हमने अपने रिश्ते को फिर से संवारना शुरू किया।
हम साथ में ज़्यादा समय बिताने लगे। हमने फिर से साथ में पढ़ाई शुरू कर दी। हमारे अंक बेहतर हो गए। कॉलेज के बाद, हम लंबी सैर पर जाते और अपने भविष्य के बारे में नए सिरे से सोचते। उसने मुझे CAT परीक्षा के बारे में दोबारा सोचने और UPSC की तैयारी शुरू करने के लिए कहा। हम घंटों कॉफी शॉप में बैठकर टीवी सीरियल देखते, खाली सिनेमाघर ढूंढते जहाँ हम एक-दूसरे को छूते और कॉलेज के लॉन में बैठकर असाइनमेंट पूरे करते। और हर शुक्रवार दोपहर को, उसके और मेरे दोस्त घर पर पार्टी करते और खूब शराब पीते। वनिता को उसके किसी भी दोस्त से कोई लगाव नहीं था, फिर भी वह विक्की और उसके दोस्तों के साथ समय बिताती थी।
वनिता ने स्वीकार किया कि वह इस बात से प्रभावित थी कि हम दोनों एक-दूसरे से दोबारा प्यार करने की हिम्मत जुटा पाए।
मुझे लगता है कि वनिता की विक्की के प्रति नफरत भी थोड़ी कम हो गई थी।
और जब चीजें कुछ हद तक शांत होती दिख रही थीं, तभी एक शुक्रवार को घर पर हुई पार्टी में, विक्की के सबसे अच्छे दोस्त, संजोग ने वनिता की पोशाक में हाथ डालकर उसके स्तनों को सहलाने की कोशिश की।
वनिता ने उसका हाथ झटक दिया।
लेकिन वह और भी आक्रामक हो गया और उसने वनिता के टॉप का एक हिस्सा फाड़ दिया। वनिता ने एक जोरदार मुक्के से उसकी नाक तोड़ दी। फिर उसने खून बह रहे संजोग से माफी मांगने को कहा। संजोग ने दावा किया कि नशे में धुत वनिता ने उसके साथ छेड़छाड़ की थी।
'तुम्हें क्या लगता है कि मैं उसके जैसी बदसूरत लड़की को हाथ लगाऊंगा?!' संजोग पागल कुत्ते की तरह चिल्लाया था।

'तुम मर चुके हो,' वनिता ने अब तक के सबसे ठंडे स्वर में जवाब दिया था।
आधे घंटे बाद, पुलिस स्टेशन में, एक कांस्टेबल और वनिता की माँ ने संजोग को झटपट थप्पड़ मारे। संजोग को अपने अंडरवियर में रहने के लिए मजबूर किया गया और उसे वनिता से माफी माँगनी पड़ी। वनिता की माँ ने तस्वीरें खींचीं और संजोग को चेतावनी दी कि अगर उसे उसके बारे में कुछ भी पता चला, तो वह विश्वविद्यालय भर में उसके पोस्टर चिपका देगी।
अगले दिन विक्की ने अपने दोस्तों, जिनमें संजोग भी शामिल था, के सामने मुझ पर चिल्लाते हुए कहा, 'या तो उसे चुनो या मुझे!' विक्की ने मेरा हाथ कसकर पकड़ लिया। 'वह मेरा भाई है! क्या तुम्हें पता है उसने मेरे लिए क्या-क्या किया है?'
लेकिन विक्की—
विकी ने दांत पीसते हुए और जबड़े भींचकर कहा, 'वनिता एक चरित्रहीन औरत है, यह तो सब जानते हैं। वह रंडी (वेश्या) नशे में थी। हम सबने उसे क्लबों में अनजान आदमियों के साथ नाचते देखा है,' वह गुस्से से भड़क उठा। 'सिर्फ इसलिए कि उसके माता-पिता के पुलिस में जान-पहचान है, वह बच गई।'
'वह वह नहीं थी—'
'तुम यह भी जानते हो कि वह किस तरह की लड़की है। तुम भी उसी की तरह रंडी बन जाओगे! मेरी बात याद रखना,' वह मेरे चेहरे के बिल्कुल करीब आकर चिल्लाया।
'चलो भाई,' संजोग गुर्राया और विक्की का हाथ खींच लिया।
संजोग ने मुझे द्वेषपूर्ण निगाहों से देखा। वह मेरे करीब आया। मुझे उसकी सांसों से शराब की गंध आ रही थी।
'वनिता को अपनी गलती की कीमत चुकानी पड़ेगी,' उसने कहा। 'एक रॉड, एसिड की एक बोतल, चेहरे पर नकाब लगाए मोटरसाइकिल पर सवार दो आदमी, बस इतना ही काफी है। यह बात अपने दोस्त को बता देना। अस्पताल के बिस्तर पर बंध जाने के बाद वह जितने चाहे उतने पुरुषों के साथ संबंध बना सकती है।'
संजोग को नहीं पता था कि वनिता मुझसे बात नहीं कर रही थी। जब तक मेरा विक्की से ब्रेकअप नहीं हुआ, तब तक उसने मुझसे बात नहीं की।
'तुम मुझसे विक्की से ब्रेकअप करने के लिए क्यों कह रही हो?' मैंने वनिता से बहस की। 'यह विक्की की गलती नहीं है, यह संजोग की गलती है। विक्की तो बस अपने दोस्त का साथ दे रहा है!'
'यह विकल्प ही क्यों है?! क्या तुम खुद अपनी बात सुन भी रही हो?' वनिता रोते हुए मुझ पर चिल्लाई थी।
मैंने विक्की से मुझसे बात करने की विनती की।
'ओए बहन की लौड़ी, हमारा रिश्ता खत्म हो गया,' वह मुझसे कहता था। 'अगर तुम अब भी वनिता से बात कर रही हो, तो नरक में जाओ। तुम और तुम्हारी झूठी दोस्त जिसके साथ चाहो सो जाओ। जाओ, पूरे कॉलेज से चुदवा लो, लेकिन मुझे फोन करने की हिम्मत मत करना!'
'वह झूठ क्यों बोलेगी?'

‘संजोग झूठ क्यों बोलेगा? वो तुम्हारी सहेली के छोटे, काले, किशमिश जैसे स्तनों को छूना भी क्यों चाहेगा? मेरा लिंग तो उसके चेहरे से भी ज़्यादा गोरा है!’
वनिता और विक्की दोनों ने मुझसे दूरी बना ली।
वनिता मेरी नज़रों के सामने भी नहीं बैठती थी। मैं घंटों विक्की के कॉलेज के बाहर उसका इंतज़ार करती रहती थी। मुझे भोलापन से लगता था कि अगर वो मुझसे बात कर ले, तो सब ठीक हो जाएगा। लेकिन मुझे अकेला छोड़ दिया गया, ठुकरा दिया गया। मैंने एक महीना रोते हुए, इंतज़ार करते हुए, उम्मीद करते हुए बिताया कि सब कुछ पहले जैसा हो जाएगा। अकेलेपन ने मुझे जकड़ लिया था।
तभी मुझसे गलती हुई।
मुझे रजत, जो IIT दिल्ली का चौथे साल का छात्र था, एक डेटिंग ऐप पर मिला। मुझे ये भी नहीं पता था कि वो मज़ाकिया, समझदार या अच्छा इंसान है या नहीं। लेकिन मुझे इतना पता था कि वो मौजूद था। मुझे पता था कि उसने मेरी बातें सुनीं। उन दिनों, इतना ही काफ़ी था। मैंने उसकी इस दयालुता का बदला उसके हॉस्टल जाकर चुकाया, उस गलियारे से गुज़री जहाँ कई आँखें मुझे घूर रही थीं, और फिर उसकी बदबूदार चादर पर उसके साथ नग्न हो गई, बिस्तर के नीचे ब्लेंडर प्राइड की बोतलें लुढ़क रही थीं।
मैंने उसे मेरे साथ यौन संबंध बनाने की अनुमति दी।
अगले कुछ हफ्तों में, रजत ने मुझे उस दुख के तूफान से उबरने में मदद की, जिसमें विक्की और वनिता ने मुझे धकेल दिया था। उसने मुझे ओल्ड मोंक के शॉट्स से परिचित कराया, जिसके बाद संतरे के रस के छोटे-छोटे घूंट लिए जाते थे, स्टीम आयरन पर पकी हुई मैगी से, और बाहर उसके दोस्तों की संदिग्ध हंसी को नज़रअंदाज़ करना सिखाया। मैं कई दोपहर नशे में और हैंगओवर में बिताता था, उसे और उसके दोस्तों को बदबूदार जॉइंट पीते हुए देखता था।
एक दिन उसने मुझसे कहा, 'तुम्हें विक्की को जाने देना चाहिए। वनिता एक अच्छी इंसान लगती है।'
'उसे छोड़कर यहीं रहने आ जाओ? अपनी बिना धुली चादर से एक छोटा सा तम्बू बना लो और यहीं रहो?'
‘तुम मुझसे कहीं बेहतर इंसान की हकदार हो। सच कहूँ तो, पूरे हॉस्टल में यही चल रहा है कि मैंने कौन सा जानवर कुर्बान किया है कि तुमने मेरे साथ रहने का फैसला किया है,’ रजत ने हंसते हुए जवाब दिया। ‘मैं इतना बेवकूफ नहीं हूँ कि इसे सिर्फ तुम्हारा एक क्षणिक रिश्ता समझूँ। मैं मूर्ख नहीं हूँ। लेकिन मुझे यह भी पता है कि विक्की की तुम्हारी ज़िंदगी में कोई जगह नहीं है। तुम्हें उससे कह देना चाहिए कि सब खत्म हो गया है।’
कभी-कभी मैं सोचती हूं कि अगर मैंने रजत की बात सुन ली होती, हिम्मत जुटाकर विक्की को बता दिया होता कि मेरी तरफ से भी सब कुछ खत्म हो गया है, तो क्या होता।
काश । । ।

लेकिन इससे पहले कि मैं कोई फैसला कर पाता, विक्की ने मुझे रजत के साथ सफदरजंग बाजार में देख लिया और फिर तो हंगामा मच गया। विक्की, संजोग और उसके दोस्तों ने ईंटों, बेल्टों और रॉडों से रजत पर हमला कर दिया। तीन मामूली फ्रैक्चर होने और छह गुस्से में भरे आदमियों से घिरे होने के बावजूद, रजत यही कहता रहा कि वह सिर्फ एक दोस्त है। उसने तो यह भी कहा कि वह सिर्फ दोस्त नहीं, बल्कि भाई जैसा है। लेकिन नुकसान तो हो ही चुका था।
उस दिन मैंने विक्की को यह अधिकार दे दिया कि वह मुझे जीवन भर रंडी, वेश्या, कुतिया कह सकता है।

* * *

बाहर, मुझे मैरियट के गलियारों में सन्नाटा छाता सुनाई देता है। सब लोग पार्टी के लिए निकल चुके हैं। मैं अपने आँसू पोंछती हूँ। विक्की को चोट पहुँचाने की जानी-पहचानी भावना मेरे दिल में फिर से जाग उठती है। मैं अपना फ़ोन एयरप्लेन मोड पर डाल देती हूँ। मैं विक्की और उसकी माँ को यह यकीन दिलाती हूँ कि मैंने उनकी बात नहीं मानी और पार्टी में चली गई। मेरी ज़िंदगी बस इसी खेल में सिमट गई है—नफ़रत की उम्मीद में।

OceanofPDF.com

6.

Daksh Dey

'अगर एक दिन यह इमारत ढह जाती है, तो इसका कारण तुम्हारी किताबों का भार होगा,' मेरे पड़ोसी और सबसे अच्छे दोस्त जगत ने मुझे चेतावनी देते हुए कहा, जब उसने मुझे कमरे के कोने में किताबों के ऊंचे ढेर के ऊपर 'द स्टॉकर' रखते हुए देखा। ‘इनमें से कुछ को दान कर दो। ऐसा नहीं है कि तुम इन्हें दोबारा कभी पढ़ोगे,’ वह दोहराता है।
मेरी दूसरी पड़ोसी और सबसे अच्छी दोस्त ज़ीनत कहती है, 'वह मरना ज़्यादा पसंद करेगा।' उसे अपनी गलती का तुरंत एहसास हो जाता है। वह धीरे से कहती है, 'माफ़ करना।'
मृत्यु एक ऐसा विषय है जिस पर हम अपने घर में बड़ी सावधानी से बात करते हैं। मानो इशारा मिलते ही, बाबा पीछे से कराह उठे। उनके कटे हुए पैर का बचा हुआ हिस्सा कंबल के नीचे से बाहर निकला हुआ था। मैं उठने ही वाली थी कि जगत ने मुझसे पहले ही कंबल को बाबा के पैर के बचे हुए हिस्से पर डाल दिया।

'सोते रहिए, चाचा जी,' वह बाबा से कहता है, जो कुछ और कराहते हैं और वापस सो जाते हैं।

* * *

दुबई प्राइम हॉस्पिटल के डॉक्टर ने बाबा से कहा था, 'आप बहुत भाग्यशाली हैं कि हम आपका घुटना बचा सके। यह वाकई सौभाग्य की बात है।'
'सिर्फ़ किस्मत ही क्यों, डॉक्टर?' बाबा ने डॉक्टर का मज़ाक उड़ाते हुए कहा। 'क्या मैं दुनिया का सबसे खुशनसीब इंसान नहीं हूँ? क्यों न आप मुझसे जगह बदल लें? आइए, आइए, आप इस पलंग पर लेट जाइए, मैं आपका एक पैर काट देता हूँ, फिर मैं आपको बताता हूँ कि आपके परिवार का क्या हुआ। आइए...'
डॉक्टर ने उन्हें शांत करने की कोशिश की। 'मैं समझता हूँ कि आप किस दौर से गुज़रे हैं, श्रीमान डे। मैं बस इतना कहना चाहता हूँ कि कृत्रिम अंग...'
तब तक बाबा फूट-फूटकर रोने लगे थे।

* * *

जगत आकर मेज पर बैठ जाता है।
'धन्यवाद,' मैंने जगत से कहा और उसने इसे नजरअंदाज कर दिया।
जगत और ज़ीनत आज शाम मेरे बनाए हुए भिंडी और दाल को खुद परोसने लगते हैं। जगत और ज़ीनत, जो विप्रो में शुरुआती स्तर के तकनीशियन हैं, धूमकेतु अपार्टमेंट्स में एक कमरे की रसोई में तब से रह रहे थे जब मैं तीन गत्ते के डिब्बों, चार साल की रब्बानी और अपने उदास, कुछ हद तक बेहोश बाबा को बैसाखी के सहारे लड़खड़ाते हुए लेकर वहाँ रहने आई थी।
जगत ने हमारे पास सामान की कमी को देखते हुए कहा था जब हम उसके बगल वाले एक कमरे के रसोईघर में दाखिल हुए थे, 'मिनिमलिस्ट? बढ़िया है, भाई।'
मुझे सादगीपूर्ण जीवनशैली अपनाने के लिए मजबूर किया गया था।
मुंबई के कार्गो टर्मिनल पर सीमा शुल्क अधिकारी उन बीस विशाल डिब्बों के अंदर रखी सामग्री को घूर रहा था, जिनमें हमने दुबई में अपना सारा सामान पैक किया था। कपड़े, खिलौने, किताबें, जूते, इलेक्ट्रॉनिक सामान, टीवी, बर्तन, कंबल।
उन्होंने हमें बताया, '45,000 रुपये'।
'लेकिन ये तो बस... ऐसी ही चीजें हैं,' मैंने कहा, मेरी आवाज मुश्किल से सुनाई दे रही थी।
रब्बानी मेरी गोद से नीचे उतरी। उसने खिलौनों के ढेर में से एक यूनिकॉर्न वाला तकिया उठाया। उसने उसे गले लगाया और मेरे पास वापस आ गई। उसने कहा, 'मुझे बस यही चाहिए।'
'यह तो बस... फालतू की बातें हैं,' मैंने खुद को दोहराते हुए पाया।
लेकिन जल्द ही जगत और ज़ीनत को हमारी सादगी के पीछे का असली कारण समझ

आ गया। उनका कहना है कि उन्होंने मुझसे पहली बार इसलिए बात की क्योंकि उन्हें मुझमें एक संभावित दोस्त नज़र आया।
वे झूठ बोलते हैं, बेशक।
उन्होंने मुझे रब्बानी के साथ, बाबा की विकलांगता के साथ और अपने दुख से जूझते हुए देखा। वे जानते थे कि मैं टूट जाऊंगी।
उन्होंने हर सुबह मेरी मुस्कान के पीछे की सच्चाई देख ली थी। उन्होंने मुझे हमारी इमारत की छत पर देखा, जहाँ मैं सबसे भयानक रातों में जाकर अपनी आँखें इतनी ज़ोर से बंद कर लेती थी कि उम्मीद करती थी कि जब मैं उन्हें खोलूँगी तो सब कुछ बदल जाएगा। सप्ताहांत में, उन्होंने मुझे बेंचों पर सोते हुए देखा, जबकि रब्बानी दूसरे बच्चों के साथ खेलता था।
फिर एक दिन, मेरी मदद करने के लिए - और अपनी मदद करने के लिए, जिसके बारे में उनका दावा है कि यह सच है लेकिन यह एक और झूठ था - उन्होंने सुझाव दिया कि जीवन को आसान बनाने के लिए हमें अपने-अपने घरों के कामों को आपस में बांट लेना चाहिए।
मैंने उनसे पूछा था, 'क्यों?'
ज़ीनत ने जवाब दिया था, 'पूरा दिन घर के काम करते हुए कौन बिताना चाहता है?'
जगत ने आगे कहा था, 'हमें एक टीम के रूप में मिलकर काम करना चाहिए, अपने जीवन को आसान बनाना चाहिए।'
मैंने विरोध किया, लेकिन जगत और ज़ीनत चाहें तो बड़ी आसानी से मना सकते हैं।
मैंने उनसे यह नहीं पूछा कि उन्होंने इमारत में रहने वाले अन्य युवाओं को यही प्रस्ताव क्यों नहीं दिया। क्योंकि शायद मुझे इसका जवाब पता था।
मुझे मदद की जरूरत थी।
ज़ीनत ने जगत और मेरे अंडरवियर को छोड़कर हमारे सारे कपड़े धोने का काम चुना। जगत, जो रात भर सस्ते सामान की तलाश में रहता है, उसने किराने का सामान खरीदने का काम चुना। उन्हें पता था कि मैं खाना बना सकता हूँ।
कुछ दिनों तक वे इस व्यवस्था पर अड़े रहे। लेकिन उसके बाद उन्होंने कहा कि वे मेरे घर आकर खाना खाएंगे। खाना खाने के बाद वे बर्तन धोने में भी मेरी मदद कर सकते हैं। मेरा विरोध तुरंत टूट गया। मुझे भी एहसास हुआ कि मुझे मदद की ज़रूरत है वरना मैं टूट जाऊंगी। मैं बस धीरे से 'हम्म' कह सकी। और उस रात से वे हर रात आने लगे। हम मेरे घर की छोटी सी फोल्डिंग टेबल पर खाना खाते, हममें से एक बर्तन धोता और दूसरा रब्बानी का मनोरंजन करता।
मैंने उन्हें कभी नहीं बताया, लेकिन उन शुरुआती कुछ शांत रात्रिभोजों ने मेरी जान बचाई।
मुझे नहीं पता कि उनके बिना मैं कहाँ होता।
‘दक्ष, अपना फोन देखना बंद करो। तुम आँचल को फोन नहीं कर रहे हो। वो आज यहाँ है, कल चली जाएगी। तुम इस झंझट में क्यों पड़ना चाहते हो? मैं तुम्हें मना करती हूँ!’ ज़ीनत मुझे चेतावनी देती है।

‘भाई, हमें टॉस करना चाहिए। भाग्य और ब्रह्मांड को फैसला करने दो,’ जगत सलाह देता है।
‘किस्मत उसके साथ कुछ खास मेहरबान नहीं रही है। ऐसी बेतुकी बातें मत कहो। किस्मत और ब्रह्मांड, धिक्कार है,’ ज़ीनत ने पलटवार किया।
जगत कहते हैं, ‘अपना नजरिया बदलो। वो हमारे साथ बैठे हैं। चाचा जी धीरे-धीरे ठीक हो रहे हैं। रब्बानी तो हद से ज्यादा होशियार और शिक्षक का चहेता निकला। मुझे लगता है किस्मत पलट रही है।’ वो चपाती का एक बड़ा टुकड़ा तोड़ते हैं, उसे दाल में डुबोते हैं और खाते हैं। ‘ये तो बहुत स्वादिष्ट है।’
ज़ीनत शिकायत करती है, 'चपाती बहुत मोटी है।'
जगत मेरी ओर मुड़ता है और अपने शांत, सौम्य स्वर में, जो किसी कन्नड़ हिंदू संत के लिए उपयुक्त है, पूछता है, 'आप उसे क्यों बुलाना चाहते हैं?'
ज़ीनत मुझे सोचने का मौका ही नहीं देती। 'उसने तुमसे कुछ पूछा...' ज़ीनत चिल्लाती रहती है।
‘मुझे अपने विचारों को इकट्ठा करने दो,’ मैंने विरोध किया।
‘मेरे विचारों को इकट्ठा करो?’ ज़ीनत ने उपहास उड़ाते हुए कहा। ‘तुम्हारे फोन में किसी ऐसे व्यक्ति का नंबर नहीं है जो तुम्हारे लिए महत्वपूर्ण न हो और उसका नंबर है?’ ज़ीनत ने गुस्से से कहा।
‘Why is Aanchal important?’ asks Jagath.
मैं आह भरती हूँ। ‘यह अजीब है,’ मैं स्वीकार करती हूँ। ‘आँचल... वह मेरे लिए एक तरह से ताकत का स्रोत रही है। वह ऐसी है... दुनिया ने उसके परिवार के साथ अच्छा बर्ताव नहीं किया और अब उसे देखो... उसने संघर्ष किया, हिम्मत नहीं हारी... और, तुम्हें पता है, उसने अपने परिवार को वह सब कुछ दिया जिसकी उन्हें ज़रूरत थी। काश मैं भी ऐसा कर पाती—’
‘बहुत से लोग ऐसा करते हैं। बस 'ह्यूमन्स ऑफ बॉम्बे' खोलकर देख लो, उसमें ऐसी ही कहानियाँ भरी पड़ी हैं,’ ज़ीनत ने उपहास उड़ाते हुए कहा। ‘तुम्हारा मामला अलग है —’
‘जीनत, दो तरह के दुखों की तुलना मत करो,’ जगत बीच में टोकते हुए कहता है। वह मुझे फोन देता है। ‘उसे फोन करो।’
‘जो भी हो,’ ज़ीनत कंधे उचकाते हुए कहती है। ‘यह एक गलती है।’
मैंने नंबर डायल किया। वह बंद है।
‘देखो, यह अच्छा है,’ ज़ीनत कहती हैं।

OceanofPDF.com

7.

रात के 11 बज रहे हैं। मैंने अभी-अभी बटर चिकन का पूरा एक हिस्सा खाया है, जिससे मेरे पेट में दर्द हो रहा है। मैंने चाय का एक कप पकड़ा हुआ है और अपना फोन भी साथ में रखा है।
एयरप्लेन मोड अभी भी चालू है।
विक्की पिछले कुछ घंटों से लगातार फोन कर रही होगी। मेरा फोन बिल्कुल भी नहीं लग रहा होगा।
इन दो घंटों में मैंने हर कुछ मिनट में एक तस्वीर खींची है। चिकन की। आईने में सेल्फी। चाय की। होटल के कमरे की। लैपटॉप पर चल रहे शो की। रेस्टोरेंट के आईने में सेल्फी।
मैं एयरप्लेन मोड बंद कर देता हूँ।
फोन चालू हो जाता है और उसमें एक झनझनाहट सुनाई देती है।
मैं इंतज़ार करता हु।
मैं विकी के गुस्से के मेरे फोन पर दिखने का इंतजार करता हूं।
मुझे इस आशंका में आनंद आता है। यह सोचकर कि विक्की यह सोचकर परेशान होता कि मैं कहाँ चली गई थी। मैं किसके चुटकुलों पर हँस रही थी? क्या मैंने किसी को देखकर मुस्कुराया था? क्या कोई मुझसे टकराया था? वह कितना गुस्सा हुआ होगा? कभी-कभी, मैं अपने बंधे हुए भविष्य के बारे में सोचती हूँ और कल्पना करती हूँ कि मैं अंततः विक्की को धीरे-धीरे कैसे मार डालूँगी। ट्रांस-फैट्स के ज़रिए, तनाव के ज़रिए, लगातार ताने मारकर, और शराब के बढ़ते सेवन से होने वाले लिवर फेलियर के ज़रिए।
मैं अपना फोन चेक करता हूँ।

48 सूचनाएं।
32 अपठित संदेश।

ये सारे संदेश विक्की के हैं। वो खुद ही जाल में फंस गया। पहला संदेश पढ़ते ही मुझे हंसी आ गई। जैसे कोई तड़पती-मरती मछली।

Aanchal?
रात 9:54

क्या आप वहां हैं?
रात 9:54

कहाँ हो?
रात 9:55 बजे

क्या तुम पार्टी में गए थे?
रात 9:58

क्या मां ने तुम्हें जाने से मना नहीं किया था?
रात 10:02 बजे

कहाँ हो?
रात 10:03 बजे

अपना फ़ोन चालू करें
रात 10:04

आप हमारी अनुमति के बिना कैसे जा सकते हैं?
रात 10:05 बजे

हॉल, बीच, तुम कहाँ हो?
रात 10:06

Jaa, jiske saath sona hai
रात 10:06

तुम बस देखो मैं तुम्हारे साथ क्या करता हूँ
रात 10:06
तुम कभी बदल नहीं सकते।
रात 10:07

Behen ki laudi, kiska chus rahi hai. Tu fon utha.
रात 10:08

अब देखो। अंकल आंटी को मेरे पैरों पर रोते देखना मजेदार होगा। बस देख लो।
रात 10:08

हे रैंडी
रात 10:08

Yaad dilau kya tere baap ka tatte mere haath mein kyu hai?
Should I remind
क्या आपके परिवार को मुझसे भीख मांगनी पड़ेगी?

फिर उसने एक तस्वीर भेजी है। उसमें मैं काले रंग के स्विमिंग सूट में हूँ। मैंने एक स्ट्रैप नीचे खींच रखी है, जिससे मेरा क्लीवेज दिख रहा है।

रैंडी, मेरे पास इनमें से और भी हैं। मुझे यकीन है कि बहुत से लोगों को ये पसंद आएंगे।
इन्हें देखकर
रात 10:09 बजे

वनिता ने क्या कहा? क्या वो संजोग का पोस्टर लगाएगी? उससे कहो कि मुझे ऐसा करने से रोके।
इन पोस्टरों को लगाना
रात 10:09 बजे

कहाँ हो?
रात 10:10 बजे

तुम मुझे फोन करो और मैं वादा करता हूँ कि मैं ऐसा नहीं करूँगा। मैं तुम्हें माफ कर दूँगा।
रात 10:10 बजे

मैं ही बेवकूफ हूँ, मुझे विश्वास था कि तुम बदल सकते हो।
रात 10:11 बजे
Ur dead Aanchal
रात 10:12 बजे

तुम चली गई, वेश्या
रात 10:13 बजे

सब तुम पर थूकेंगे, तुम्हारे अपने परिवार वाले भी।
रात 10:14 बजे

फिर मेरी और भी तस्वीरें हैं। अलग-अलग अवस्थाओं में, कम कपड़ों में। इनमें से ज़्यादातर में मैंने काले रंग का स्विमिंग सूट पहना हुआ है। कुछ तस्वीरें उस समय की हैं जब हम अपने रिश्ते को सुधारने की कोशिश कर रहे थे और वह मुझसे तभी बात करता था जब मैं उसे ये तस्वीरें भेजती थी।

और भी लेख हैं।

BHEN KI LAUDI!
रात 10:15 बजे

Jaa maa chuda
रात 10:16 बजे

तूने मेरा दिल तोड़ दिया। मैंने सब कुछ आजमाया लेकिन अब तूने जिम्मेदार।
रात 10:17 बजे

यह आखिरी मैसेज था, लेकिन इसके बाद भी कई मिस्ड कॉल अलर्ट आए।
अब मैं उसे मैसेज भेजती हूं।

मेरे घर में इंटरनेट नहीं चल रहा था। मैं होटल में था।
रात 10:30:00 बजे

फिर मैंने उसे होटल में अकेले ली गई अपनी तस्वीरें भेजीं, साथ में टाइम स्टैम्प भी लगाए ताकि यह साबित हो सके। मैं होटल से बाहर बिल्कुल नहीं निकली। लेकिन मुझे मानना पड़ेगा, यह किसी पार्टी से तो बेहतर ही है। इजाज़त देने के बाद भी वह मुझे परेशान करता ही, इसलिए सबसे बुरी स्थिति में यही बेहतर है।

Sorry, Aanchal

रात 10:33 बजे

क्षमा करें, मेरा मतलब यह सब नहीं था।

रात 10:34

जो भी हो, विक्की।
रात 10:35 बजे

यह मेरी जिंदगी है।
मैं सोने ही वाला था कि मुझे एक अनजान नंबर से कई मिस्ड कॉल अलर्ट मिले। मैंने उस नंबर को ट्रूकॉलर में डाला।

Daksh Dey Home.

फ़ोन मुझसे पूछता है कि क्या मैं नंबर सेव करना चाहती हूँ। मैं उसका नंबर 'लकी चार्म' के नाम से सेव कर लेती हूँ। चेहरे पर हल्की सी मुस्कान लिए मैं आराम से लेट जाती हूँ। जब मैं आँखें बंद करती हूँ, तो मैं खुद को उसी कॉफ़ी शॉप में पाती हूँ, वह वहाँ एक किताब लिए बैठा है, और मुझे ऐसे देख रहा है जैसे मैं पूरी दुनिया की सबसे दिलचस्प इंसान हूँ।

OceanofPDF.com

8.

Daksh Dey

जगत, जो एक सॉफ्टवेयर इंजीनियर के शरीर में एक वास्तविक भिक्षु है, ने एक साल पहले मुझे जबरन ध्यान करने के लिए मजबूर किया था।
‘तुम मुझसे दूर जा रहे हो, भाई। तुम्हें यह करना ही होगा!’ उसने जोर देकर कहा।
मैं भटक नहीं रही थी। मुझसे जो भी करने को कहा जाता था, मैं वही करती थी। एक ऐसी नौकरी करना जिसमें कोई भविष्य न हो, रब्बानी की परवरिश करना, सबको खाना खिलाना, बाबा को समय पर दवाइयाँ दिलवाना, एक्टिवा और घर को व्यवस्थित रखना। मैं भटकने के बिल्कुल विपरीत थी।
उन्होंने मुझसे बार-बार कहा, 'अपने लिए, अपने दिल के लिए, अपने भीतर की भावनाओं के लिए कुछ करो।'
मैंने अपने लिए बहुत कुछ किया। मैंने खूब सारे शो देखे और किताबें पढ़ीं।
‘भाई, अपने दिमाग के लिए,’ उसने जोश से तर्क दिया था। ‘कमजोर नाव में तूफ़ान का सामना कब तक कर सकता है? अपने दिमाग को युद्धपोत बना लो। क्योंकि नाव के डेक पर एक छोटी बच्ची और तुम्हारे पिता हैं। अगर दिमाग हिल गया, तो समुद्र तुम्हें पूरा निगल जाएगा। तुम बच नहीं सकते, दक्ष। तुम्हारे पास यह सुविधा नहीं है।’
मैंने उसे दूर धकेल दिया था।
लेकिन एक रात, मैंने सपने में उनका यह उदाहरण देखा। एक जल्दबाजी में बनाई गई नाव। चांदी की गोलियों की तरह बरसती बारिश। बाबा कोने में दुबके हुए, अपने पैर के दर्द से चीख रहे थे। एक डरा हुआ रब्बानी अपने उस भाई के बारे में बुदबुदा रहा था जो उन्हें अकेला छोड़कर चला गया था।
तेज बिजली की कड़क में मैंने मां का चेहरा देखा।
अगले दिन मैं सुबह 5 बजे उठ गया।
उस दिन से हम हर सुबह इस छत पर आते हैं।
‘शाबाश भाई,’ जगत ने धीरे से कहा। ‘सभी विचारों को जाने दो। उनका विश्लेषण

मत करो। बस उन्हें देखो और जाने दो।'
विचार अनेक हैं।
बाबा के अवसाद के तूफान से बाहर निकलने में असमर्थता के कारण उनके प्रति आक्रोश।
मैंने उसे जाने दिया।
रब्बानी के इतना ज्यादा बोलने, मेरी इतनी ऊर्जा खर्च करने और उसका लंच पैक करने के कारण मुझे चिढ़ हो रही है, जबकि मेरी उम्र के अन्य लोगों को ऐसा नहीं करना पड़ता।
मैंने उसे जाने दिया।
बाबा के प्रति मेरे मन में घृणा और नाराजगी है क्योंकि वे मेरे द्वारा उनके लिए किए गए कार्यों के लिए कृतघ्न हैं। क्या उनसे एक बार मेरी ओर देखकर धन्यवाद कहना बहुत बड़ी बात है?
मैंने उस विचार को जाने दिया।
माँ के हमें छोड़कर चले जाने पर उनके प्रति आक्रोश।
मैंने उसे जाने दिया।
बोर्डिंग स्कूल में रब्बानी की एक काल्पनिक दुनिया, मुझसे दूर। हम अमीर हैं, मैं जिम्मेदारियों से मुक्त हूँ। बाबा ठीक हैं।
मैंने उसे जाने दिया।
मैंने उसे जाने दिया।
मैंने उसे जाने दिया।
जब मैंने अपनी आंखें खोलीं, तो जगत ने अपने शांत, झुर्रियों रहित माथे के साथ मुझसे पूछा, 'बेहतर?'
मैं मंजूरी।
मेरे अलार्म की घंटी बजती है। मेरे फोन पर पहले सेट के रिमाइंडर की भरमार हो जाती है।
नाश्ता + दोपहर का भोजन
रब्बानी का पिकनिक फॉर्म
लंच पैक
बाबा को स्नान करने की याद दिलाने के लिए
'नाश्ते पर मिलते हैं,' मैं जगत से कहता हूं, जो अपनी सुबह की दौड़ के लिए निकल जाता है और उन कामों को करने के लिए जो मेरी उम्र के लोगों को करने चाहिए।

OceanofPDF.com

9.

Aanchal Madan

दोपहर के सन्नाटे में तेज बजते सायरन की आवाज आसमान में गूंज उठी।
दमकल गाड़ियाँ अभी तक नहीं पहुँची हैं। एक किलोमीटर के दायरे में मौजूद होटलों और दफ्तरों से लोग संकरी गली में निकल आए हैं, जिससे आने-जाने के सभी रास्ते बंद हो गए हैं। हमारे बगल में स्थित TheyWork बिल्डिंग की सोलहवीं मंजिल से धुआँ निकल रहा है। जब तक दमकल गाड़ियाँ पहुँचती हैं और दमकलकर्मी उतरकर अपनी पाइपें खोलते हैं, तब तक आग लगभग बुझ चुकी होती है। मुंबई में ऐसा लग रहा है मानो एक और बड़ी आग लगने से प्रलय आ जाएगी।
'यह बीमा के लिए ही होगा। इन लोगों का पैसा बहुत तेजी से खर्च होता है,' किराने का सामान पहुंचाने वाली एक स्टार्टअप कंपनी की लड़की रामनीक ने टिप्पणी की।
दमकलकर्मियों ने घोषणा की कि हमें अगले एक घंटे तक इमारतों के अंदर नहीं जाना है।
'हमें वापस अपनी नौकरी पर जाना है,' क्रेडिट कार्ड के विपणनकर्ता रविंदर सिंह ने सुलगते हुए मलबे में उतरे दमकलकर्मियों से शिकायत करते हुए कहा, जिन्हें इस बात का कोई अंदाजा नहीं था कि किसकी नौकरी ज्यादा महत्वपूर्ण मानी जानी चाहिए।
हवा में जले हुए प्लास्टिक, पसीने और घबराहट की गंध फैली हुई है। सड़क के दूसरी ओर, परेशान शिक्षक बच्चों को कतारों में खड़ा करने की कोशिश कर रहे हैं।
आस-पास के कुछ अन्य लोगों के विपरीत, ये छोटे बच्चे मेरे चेहरे पर मुस्कान नहीं लाते। मुझे उन्हें गोद में लेने या उनसे बात करने की कोई जल्दी नहीं होती।
लेकिन तभी मेरी नज़र उसके चेहरे पर पड़ती है... वो अब बच्ची नहीं रही... मैं तुरंत सब कुछ समझ जाती हूँ। शक्ल बिल्कुल मिलती-जुलती है।
वह अपने भाई की बिल्कुल हमशक्ल है।
रब्बानी.
उसके बाल करीने से गुंथे हुए हैं, उसकी कमीज़ पर स्याही के निशान हैं, उसके जूतों के फीते खुले हैं और वह अपने सहपाठियों से जोश से बातें कर रही है। बाकी बच्चे उसकी हर बात ध्यान से सुन रहे हैं।
घबराए हुए शिक्षक इधर-उधर भागते हुए बच्चों की गिनती कर रहे हैं, अभिभावकों के पहचान पत्र की जाँच कर रहे हैं और बच्चों को उनके हवाले कर रहे हैं। धीरे-धीरे रब्बानी के आसपास जमा भीड़ कम होती जा रही है, क्योंकि सभी बच्चों के माता-पिता अपने-अपने बच्चों को ले जा रहे हैं।
रब्बानी भीड़ में दक्ष या उसके माता-पिता को ढूंढ रही है, मेरा अनुमान है।
फिर अचानक उसके चेहरे पर एक प्यारी सी मुस्कान आ जाती है। मैं उसकी नज़र का पीछा करता हूँ और देखता हूँ कि दक्ष अपना स्कूटर पार्क कर रहा है। मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि दक्ष को खस्ताहाल स्कूटर चलाते हुए देखूँगा। खैर, दक्ष हमेशा से ही थोड़ा अजीब रहा है।
दक्ष ने शिक्षक को हाथ हिलाकर अभिवादन किया। मैं रब्बानी के पीछे-पीछे दक्ष की ओर दौड़ी। दक्ष ने रब्बानी को गोद में उठा लिया और उत्साह से अपना चेहरा उसकी

गर्दन में छिपा लिया, जिससे वह खिलखिलाकर हंसने लगी। तभी उसकी नज़र मुझ पर पड़ी।
‘उन्होंने होटल भी खाली करा दिया था,’ मैंने अपनी उपस्थिति का कारण बताते हुए कहा। ‘...और मैंने उसे देखा, वह बिल्कुल तुम्हारी तरह दिखती है। बिलकुल फोटोकॉपी जैसी, है ना?’
‘मैंने तुम्हें कल रात फोन किया था। तुम्हारा फोन बंद था।’ उसकी आवाज़ में चिंता झलक रही थी। ‘सब ठीक था? नए शहर में फोन बंद नहीं करना चाहिए।’
रब्बानी उत्साह से मेरी आस्तीन खींचती है। 'जगत दादा और ज़ीनत दीदी आपके बारे में बात कर रहे थे,' वह चहकती है।
‘रब्बू?’ दक्ष ने हैरानी से कहा। वह मेरी तरफ मुड़ा। ‘ये मेरे दोस्त हैं। ये जानना चाहते थे कि मैं किसका नंबर डायल कर रहा हूँ। इन्हें मेरे क्रश के बारे में पता है।’
मेरा चेहरा लाल हो जाता है। कितनी आसानी से वह यह बात कह देता है। कितनी मासूमियत से, लेकिन साथ ही कितनी गंभीरता से।
रब्बानी पूछती हैं, 'क्रश क्या होता है?'
दक्ष हंसने लगता है। ‘जब आपको किसी का चेहरा सचमुच पसंद आ जाए,’ वह जवाब देता है। ‘पिछली बार जब हम आंटी से मिले थे, तब मैंने तुम्हें यह बताया था, लेकिन तब तुम बहुत छोटे थे। उन्हें देखो। क्या वह खूबसूरत नहीं हैं?’
‘उम्म...’
‘रब्बानी,’ मैं कहती हूँ और उनका ध्यान अपनी ओर खींचती हूँ। ‘मैं तुम्हारी दीदी हूँ, आंटी नहीं, ठीक है?’ मैं दक्ष की ओर मुड़ती हूँ। ‘तुमने कल कई बार फोन किया था।’
‘मैं कैसे नहीं आ सकता था? तुम्हें देखना एक अजीब संयोग था,’ वह जवाब देता है। ‘खैर, मेरे दोस्त आए हुए थे, हम देर रात तक जागे रहे, तो मैंने सोचा कि तुम भी हमारे साथ शामिल हो जाओ।’ वह रुकता है, फिर मेरी ओर देखता है। ‘अगर तुम आज खाली हो, तो मेरी जन्मदिन की पार्टी में आ सकती हो।’
‘आज आपका जन्मदिन है?’
‘मैं बाईस साल का हो गया हूँ। अब मैं बालिग हो गया हूँ, बस पच्चीस साल का होने ही वाला हूँ। बहुत जल्द, मैं गठिया वगैरह की शिकायत करने लगूँगा। तो, क्या तुम आओगे?’
उसकी आँखें लैब्राडोर कुत्ते की तरह कोमल हैं। पिछले कुछ मिनटों में, वह मेरे बारे में चिंतित होने से लेकर अपने जन्मदिन को लेकर खुश होने और फिर मुझे उत्साह से घर बुलाने तक, सब कुछ बदल गया है।
‘बेशक मैं आऊंगा। मुझे अपना स्थान और समय भेज दो,’ मैंने कहा।
उसका चेहरा खिल उठा। 'मैं तुम्हें मैसेज करूंगा,' उसने कहा। उसकी नज़रें मेरी आँखों से मिलीं। 'आज रात मिलते हैं?'
मैंने सिर हिलाया। उसने अपनी उन मनमोहक मुस्कानों में से एक मुस्कान दी, जो उसके पास भरपूर मात्रा में हैं। उसने मुझे एक ऐसी अनुभूति कराई जो मैंने लंबे समय से महसूस नहीं की थी: एक अजीब सी घबराहट भरी खुशी।

दक्ष गाड़ी चलाकर चला जाता है और रब्बानी उसे एक छोटे चिंपैंजी की तरह कसकर पकड़े रहती है।
मेरे फोन पर एक मैसेज आया। यह दक्ष का संदेश था जिसमें स्थान और पता दिया गया था।
1223, धूमकेतु अपार्टमेंट्स, कांदिवली, निर्माणाधीन पेट्रोल पंप के बगल में।
अपने कमरे में वापस आकर मैंने धूमकेतु अपार्टमेंट्स को गूगल पर सर्च किया। तस्वीरों में एक जर्जर, काई से ढकी, चार मंजिला इमारत दिखाई दे रही थी, जिसमें सिर्फ एक कमरे और एक रसोई वाले अपार्टमेंट थे। ज़ूम करने पर मुझे प्रवेश द्वार के सामने कई स्कूटर कतार में खड़े दिखाई दिए। उनमें से एक दक्ष का था। उसने अपने निमंत्रण को अपने घर पर व्यक्तिगत बताया था। लेकिन धूमकेतु अपार्टमेंट्स को देखकर ऐसा लग रहा है जैसे यह उसका बैचलर पैड हो। अरे हाँ, उसने घर तो कहा था। हालांकि धूमकेतु अपार्टमेंट्स दक्ष और उसके परिवार के लिए बहुत जर्जर लग रहा है।
मुझे आज रात पता चल जाएगा। लेकिन उससे पहले, मुझे विक्की के लिए एक झूठ गढ़ना होगा।

OceanofPDF.com

10.

Daksh Dey

हम मेरे जन्मदिन के लिए बिरयानी बना रहे हैं—एकमात्र ऐसा व्यंजन जो अकेले ही पार्टी की रौनक बढ़ा सकता है। जगत और मैं रसोई की ज़िम्मेदारी संभाल रहे हैं। रब्बानी, ज़ीनत को घर की सफाई में मदद कर रही है।
जगत प्याज़ काटते हुए पूछता है, 'क्या उसे पता है?'
मैं अपना सिर हिलाता हूँ।
ज़ीनत भौंहें चढ़ाती है। 'उसने तुम्हें स्कूटर चलाते देखा और पूछा तक नहीं? यह जगह, पता, स्कूटर, ये सब तो साफ संकेत होने चाहिए थे। ये एक संकेत है, दक्ष। तुम्हें कभी भी ऐसे व्यक्ति के झांसे में नहीं आना चाहिए जिसे तुम्हारी कहानी में कोई दिलचस्पी न हो।'
मैंने जवाब दिया, 'इंस्टाग्राम कैप्शन की तरह बातें करना बंद करो। और यहाँ कोई किसी के प्यार में नहीं पड़ रहा है। मैंने बस उसे अपनी पार्टी में आमंत्रित किया है, बात खत्म।'
‘तुम गिर नहीं रहे हो, तुम तो पहले से ही प्यार में हो, भाई,’ जगत मुझसे ऐसे कहता है जैसे यह कोई आम बात हो। ‘और यह कोई पार्टी नहीं है, यह तुम्हारा परिवार है।

तुम उसे अपने करीबी लोगों के समूह में बुला रहे हो।'
'विकी अभी भी यहीं है,' मैंने उन दोनों को याद दिलाया। 'और खुद भी देखो, जगत। तुम्हें क्या लगता है क्या होगा? मैं उसके बारे में कुछ भी कल्पना करने की कोशिश नहीं कर रहा हूँ। मुझे पता है यह असंभव है।'
'मैं चारों ओर देखता हूं और मुझे घर खूबसूरत लगता है, बस इतना ही मुझे दिखाई देता है,' वे कहते हैं।
'आप जानते हैं कि मेरा क्या मतलब है।'
जगत अपनी आवाज धीमी करते हुए फुसफुसाता है। 'वह अंकल के बारे में पूछेगी।'
बाबा दीवार की ओर मुंह करके सो रहे हैं। आज मैंने उन्हें जबरदस्ती नहलाया था। हर दिन उन्हें बाथरूम तक ले जाना आसान होता जा रहा है। उनका वज़न दिन-ब-दिन कम होता जा रहा है। हर दिन उनमें मांस की मात्रा कम और हड्डियों की मात्रा ज़्यादा होती जा रही है। और हर दिन उनकी दाढ़ी बनाना और भी मुश्किल होता जा रहा है। उनकी त्वचा सूखने लगती है, गाल अंदर धंसने लगते हैं, और कुछ बाल ब्लेड से छूट जाते हैं। कभी-कभी तो उन्हें कट लग जाता है। कभी-कभी तो उनकी हल्की सी सिकुड़न ही उनके चेहरे पर दिखने वाला एकमात्र भाव होता है।
माँ के बाद, बाबा के लिए अलग-अलग डॉक्टरों ने अलग-अलग निदान दिए। एक ने कहा कि यह दीर्घकालिक शोक विकार है, तो दूसरे ने कहा कि यह अवसाद है। कुछ ने शोक परामर्श की सलाह दी, तो कुछ ने अवसादरोधी दवाएँ दीं।
कुछ भी काम नहीं आया।
मैंने उसे वजन कम करते, अनिद्रा से पीड़ित होते, रोते या बिल्कुल प्रतिक्रिया न करते और अत्यधिक उदासी के दौर से गुजरते देखा। कभी-कभी वह मम्मा से मिलने की गुहार लगाता। कुछ रातों में एक बार वह उठकर रोने लगता और हर बात का दोष मम्मा पर मँगवा देता। मम्मा पर दोष मँगवा देना आसान होता है। यह एक आसान जाल है जिसमें फँसना आसान है: मम्मा को दोष देना। उन्हीं की वजह से रब्बानी बिना माँ के पल-बढ़ रही है, और उसके पिता उसकी अनुपस्थित माँ से नफरत भी करते हैं और प्यार भी। उन्हीं की वजह से हम तीनों इस जर्जर एक कमरे के फ्लैट में रह रहे हैं, जिसमें तीन पलंग कमरे की तीन दीवारों से सटाकर रखे हैं। उन्हीं की वजह से जगत और ज़ीनत को हर महीने मुझे आखिरी हफ्ते के लिए पैसे उधार देने पड़ते हैं।
हमारे एक कमरे वाले रसोईघर में बाबा को सबसे लंबी दीवार मिली है। उनका पलंग 10 फुट लंबी दीवार से सटा हुआ है। पलंग के बगल में एक अलमारी है जिसमें उनकी दवाइयाँ, दस्तावेज़, प्रमाण पत्र और मेडिकल रिपोर्ट रखी हैं। एक छोटी दराज वाली पेटी में उनके कपड़े हैं: पाँच टी-शर्ट, पाँच पैंट और तीन जोड़ी जूते। सभी जोड़ियों में से बायाँ जूता एकदम नया है। बाबा की दीवार के ठीक सामने रब्बानी के लिए छोटी दीवार है। लेकिन यह उसके लिए काफी बड़ी है, जिस पर उसका छोटा पलंग, चित्रकारी और रेखाचित्र बनाने के लिए एक स्टैंड, किताबें, स्कूल बैग, जूते और कपड़े रखने के लिए एक रैक है। मेरे कमरे की तरफ एक खिड़की है, जिसके नीचे एक फोल्डिंग टेबल है जो डेस्क और डाइनिंग टेबल दोनों का काम करती है। ठीक उसके

बगल में फर्श से छत तक एक अस्थायी किताबों की अलमारी है। हमारे पास ज्यादा सामान नहीं है: एक कमरे में कितनी ही चीजें भरी जा सकती हैं।
दीवार को साफ करते हुए ज़ीनत कहती है, 'तुम पहले ऐसे व्यक्ति हो जिसे मैंने अपने जन्मदिन को लेकर इतना उत्साह दिखाते हुए देखा है।'
‘जन्मदिन एक बड़ी बात होती है,’ मैंने ज़ीनत से कहा।
रब्बानी चीखते हुए बोली, 'बहुत बड़ी बात है! ब्रह्मांड के पूरे इतिहास में सबसे बड़ी घटना!'

OceanofPDF.com

11.

Aanchal Madan

मैंने विक्की को बताया कि वनिता होटल पहुँच गई है और वहीं रुकेगी। लेकिन जब उसने बैकग्राउंड में उसकी आवाज़ सुनी तो उसे यकीन हो गया—दरअसल, वह एक कॉन्फ्रेंस कॉल थी।
वनिता कल सुबह आ रही है।
‘यह तो हास्यास्पद है कि वह इस झांसे में आ गया,’ वनिता ने कहा और थोड़ी देर रुककर बोली, ‘तुम्हें क्या लगता है आज रात क्या होगा? और चुप मत रहना, क्योंकि अगर वह उतना ही सुंदर है जितना तुम मुझे बताती रहती हो, तो तुम्हें कुछ करना ही होगा!’
‘कुछ नहीं,’ मैंने जवाब दिया। ‘मैं अपने झूठों के ढेर में एक और झूठ नहीं जोड़ना चाहता।’
‘विकी तुम्हारे द्वारा बोले गए हर झूठ और उससे भी ज़्यादा का हकदार है,’ वनिता कहती है। ‘वह दुनिया की सबसे बुरी सज़ा का हकदार है, और सबसे बढ़कर, उसे मरना चाहिए। धीरे-धीरे। उसके खाने में रोज़ थोड़ा सा आर्सेनिक मिला देने से काम बन जाएगा।’
‘काश उसने सच में आत्महत्या कर ली होती,’ मैंने कहा।
‘वह कायर है। वह ऐसा कभी नहीं करता।’
'मैं सपने में देखता हूं कि उसने अपनी कलाई ठीक से काट ली है और उसकी मां उसे खून के तालाब में पड़ा हुआ पाती है।'
'उसकी आत्मा इतनी काली है कि उससे खून नहीं, बल्कि तारकोल रिसता है।'
‘हम बुरे लोग हैं, वनिता।’
'नहीं, वह है। मैंने तुम्हें हमेशा यही बताया है।'
अगर मैं विक्की के लिए प्यार या जो भी भावनाएँ मेरे मन में थीं, उनमें अंधी न होती,

तो जिस दिन संजोग ने वनिता पर हमला किया था, उसी दिन मैं उसे चुन लेती। लड़कियाँ अक्सर भूल जाती हैं कि दूसरी लड़कियाँ ही उनकी जीवन संगिनी होती हैं, लड़के तो बस सहायक होते हैं। अगर मैंने वनिता की बात मान ली होती, तो मैं अब भी विक्की के पीछे न भाग रही होती, रजत के हॉस्टल के कमरे में न होती, और विक्की रजत और मुझे उस बाज़ार में न पाता और उसे बुरी तरह न पीटता।
उस दिन वह बाजार से यह चेतावनी देते हुए निकला था, 'अब देखो मैं तुम्हारे साथ क्या करता हूँ।'
अगले दिन वह अपने माता-पिता के साथ मेरे घर पर था।
टेबल पर प्रिंटआउट पड़े थे। विक्की की नीचता देखकर मैं आज भी हैरान रह जाती हूँ। उसने चार साल पहले भेजी गई मेरी स्विमसूट वाली तस्वीरों के प्रिंटआउट ले रखे थे, साथ ही समय-समय पर भेजी गई दूसरी तस्वीरों के भी। हमारे अश्लील संदेशों, वादों और फिर रजत के साथ शारीरिक संबंध होने की मेरी स्वीकारोक्ति के भी प्रिंटआउट थे। उसकी माँ रो रही थी, उसके पिता गुस्से से आग बबूला थे, और उसकी कलाई पर छोटे-छोटे कट के निशान थे। उसकी माँ ने उसे बाथरूम में चाकू के साथ पकड़ लिया था।
उसके माता-पिता ने मेरी तरफ देखा और कहा, 'इसे सुधारो।'
मेरे माता-पिता स्तब्ध और दुखी होकर देखते रहे। मैंने जो थोड़ी-बहुत इज्जत कमाई थी, वो सब उस पल खो दी। मैंने उसे ठीक करने की सहमति दे दी। मैं और क्या कर सकता था? मेज पर पड़ी उन तस्वीरों के साथ? उन कटी हुई कलाइयों के साथ? जब माँ-पापा मुझे इस सोच में देख रहे थे कि क्या तस्वीरें ज्यादा नुकसान पहुँचाएँगी या यह तथ्य कि मैंने एक आदमी को आत्महत्या के लिए मजबूर कर दिया?
मैं उन छोटे-छोटे घावों को घूरता रहा। मुझे पता था, ये चाकू नहीं था। एक धारहीन पेपर कटर था। जान से मारने के इरादे से नहीं, बल्कि इतना असरदार कि डर पैदा कर सके। लेकिन क्या मैं उन सबको बता पाता कि विकी, जो हर चीज़ की इतनी सख्ती से तैयारी करता था, खुद को मारने की इतनी बुरी कोशिश में नाकाम रहा? अगर वो चाहता, तो अपना काम पूरा कर लेता।
‘अगर तुमने उसे नहीं सुधारा,’ उसकी माँ ने मेरे माता-पिता की ओर देखते हुए कहा, ‘तो हम तुम्हारी बेटी को भी बर्बाद कर देंगे। हमारे पास सारी तस्वीरें हैं।’
विक्की की समस्या को सुलझाने के लिए सहमति जताते हुए, मैंने अपने जीवन की बागडोर विक्की की माँ के हाथों में सौंप दी।
तब से, मैंने विश्वविद्यालय में तीसरा स्थान प्राप्त किया, DeliverFood में वरिष्ठ विश्लेषक के रूप में कॉलेज के औसत वेतन से दोगुनी तनख्वाह पर नौकरी पाई, अपने माता-पिता को तीन बेडरूम वाले अपार्टमेंट में स्थानांतरित किया और दो व्यवस्थित निवेश योजनाएँ शुरू कीं। फिर भी, विक्की के साथ मेरा इतिहास और रजत के साथ मेरा रिश्ता (जिसे विक्की धोखा कहता है और उसकी माँ अफेयर कहती है) ही मेरे जीवन को परिभाषित करता है।
सभी ने—माँ, पापा, विक्की के माता-पिता, विक्की—झूठ बोला कि वे मेरे किए को

भुला देंगे। उसके माता-पिता सबके सामने मेरे माता-पिता को गले लगाते रहे और अकेले में उन्हें ताने मारते रहे। जल्द ही, हमारे रिश्तेदार हमसे पूछने लगे कि क्या हम जल्द ही शादी कर लेंगे। उसके रिश्तेदारों ने मुझे फेसबुक पर जोड़ा। उसके चचेरे भाई-बहन मुझसे मिले। मैं उसके परिवार के जाल में और उलझती चली गई, धीरे-धीरे मेरा दम घुट रहा था, उनके रोएँदार अंगारे मुझ पर कसते जा रहे थे।
लगभग दो साल हो गए हैं जब से मैं रजत और विक्की के साथ अपने रिश्ते की बारीकियों पर विचार कर रही हूँ। सवाल वही हैं। मेरे जवाब वही झूठ हैं।
हम सिर्फ तीन बार मिले थे।
हम सात बार मिले।
'हमने सिर्फ चुंबन किया है।'
हमने दो बार यौन संबंध बनाए हैं।
मैं तुम्हारे बारे में सोच रहा था। मैं बहुत उदास था।
मुझे खुशी थी कि विक्की के साथ सब कुछ खत्म हो गया, और मुझे राहत महसूस हुई।
मैंने उसे बताया कि हमारा ब्रेकअप हो गया है। उसे लगा कि हमारा ब्रेकअप हो गया है।
मैंने रजत को बताया कि विक्की मुझसे बात नहीं कर रहा था और अगर वह बात कर भी रहा होता तो इससे कोई फर्क नहीं पड़ता।
मुझे इसमें मजा नहीं आया।
मैंने किया।
मैंने उसके लिंग को नहीं छुआ। मैंने उसे ओरल सेक्स नहीं दिया। मैंने उसे मुझे छूने भी नहीं दिया।
मैंने किया।
आज भी हम हर हफ्ते ये बातचीत करते हैं। वो सवाल पूछता है, मैं उसे वही जवाब देती हूँ, और वो कहता है कि मैं झूठ बोल रही हूँ। ये बातचीत हमेशा चलती रहेगी।
वनिता आगे कहती है, 'तुमने तब मेरी बात नहीं सुनी, लेकिन अब सुनो। तुम्हें उससे छुटकारा पाना चाहिए, चाहे कुछ भी कीमत चुकानी पड़े।'
'बस कुछ ही समय की बात है। एक दिन वो मुझसे इतनी नफरत करेगा कि मुझे छोड़ देगा। तब मैं उससे मुक्त हो जाऊंगी,' मैंने वनिता से कहा। 'ठीक है, मुझे अब जाना होगा!'

OceanofPDF.com

12.

Aanchal Madan

धूमकेतु अपार्टमेंट्स को ढूंढना नामुमकिन है। टैक्सी ड्राइवर को तीन बार यू-टर्न लेने के लिए मजबूर करने के बाद, मैंने पैदल ही अपार्टमेंट ढूंढने का फैसला किया। जब फिर भी नाकामयाबी मिली, तो मैंने दक्ष को फोन किया, जिसने मुझे वहीं रुकने को कहा। फोन पर दक्ष की आवाज़ और भी अच्छी लग रही थी। उसकी आवाज़ में एक धीमी, भारीपन थी, मानो वो माइक्रोफोन में बोल रहा हो। उसकी आवाज़ पॉडकास्टर्स जैसी थी—लगभग सम्मोहक।

‘आंचल?’ एक भारी और गहरी महिला की आवाज़ सुनाई देती है। ‘मैं ज़ीनत हूँ। दक्ष ने मुझे तुम्हें ढूंढने भेजा है। बहुत से लोग तुम्हारा पता नहीं ढूंढ पा रहे हैं।’ वह बोलना बंद कर देती है, पास आती है, आँखें सिकोड़कर कहती है, ‘वाह, तुम वाकई उतनी ही खूबसूरत हो जितना वह हमें बताता है।’

ज़ीनत बहुत छोटी हैं। उनकी लंबाई पाँच फीट से थोड़ी ज़्यादा है, या शायद उससे भी कम, वो देखने में बच्ची जैसी लगती हैं, लेकिन उनकी ज़ुबान में एक शक्तिशाली, उम्रदराज़ महिला का आत्मविश्वास झलकता है। और हालाँकि वो जो कहती हैं वो तारीफ़ होती है, पर वो उसे ऐसे बोलती हैं जैसे कोई अपमान हो। मानो वो मुझसे नाराज़ हों।

‘उम्म... धन्यवाद?’ मैंने कहा। ‘आप भी।’

'जो भी हो,' वह कहती है, जिससे यह पुष्टि हो जाती है कि वह मुझे पसंद नहीं करती। मुझे आश्चर्य होता है कि दक्ष ने मेरे बारे में उसे 'सुंदर' वाली बात के अलावा और क्या बताया होगा (जिससे मुझे थोड़ी शर्म आती है)।

मैंने उससे पूछा, 'क्या यह कोई बड़ी पार्टी है?'

वह अपना सिर हिलाती है। 'बस परिवार वाले हैं। इसीलिए हमें आश्चर्य है कि आप यहां हैं। मैंने उनसे कहा था कि वे आपको फोन न करें।'

वह मुझसे काफी आगे चल रही है, फिर भी मुझे उसकी नाराज़गी महसूस हो रही है। मुझे लगता है कि कहीं वह दक्ष को पसंद तो नहीं करती और मुझे अपने लिए खतरा समझती है। वह मुझे पेट्रोल पंप के पास वाली बाड़ फांदने पर मजबूर कर देती है। दूसरी तरफ एक सुनसान ज़मीन है जो खरपतवार और झाड़ियों से भरी पड़ी है।

‘आगे बढ़ने से पहले,’ वह रुकती है और मेरी ओर मुड़ती है। सख्त स्वर में वह कहती है, ‘तुम्हें कुछ जानना ज़रूरी है। दक्ष ने तुम्हें इसलिए नहीं बताया क्योंकि वह नहीं चाहता था कि तुम घबरा जाओ या कुछ और, लेकिन... दक्ष की माँ का निधन हो चुका है। उन्हें मरे हुए तीन साल हो गए हैं। जहाँ तुम जा रहे हो, वहाँ बहुत दुख है, इसलिए चौंकना मत, ठीक है? मुझे पता है कि तुमने उसे आखिरी बार तब देखा था जब वह अमीर था, लेकिन अब हालात बदल गए हैं। जगत और मुझे उसे थोड़ा ठीक करने में बहुत मेहनत करनी पड़ी है, इसलिए उसे और मत तोड़ना, ठीक है?’

वह हर बात इतनी सहजता से कहती है, जैसे किसी को घर में प्रवेश करने से पहले अपने जूते बाहर रखने के लिए कहना, कि शब्द पहली बार में समझ में नहीं आते।

'क्या?'

‘दक्ष की मां मर चुकी है। मैं इससे ज्यादा स्पष्ट रूप से और क्या कह सकता हूं? वह

मर चुकी है। क्या मुझे इसे दोहराने की जरूरत है?'
ये शब्द सुनकर मेरी सांसें थम गईं। 'मर गया?' मैंने फुसफुसाते हुए कहा।
ज़ीनत ने अधीरता से अपनी आँखें घुमाईं। उसने अपनी जेब से फोन निकाला। मैंने देखा कि वह 'दुर्घटना, रस अल खैमाह रोड, चार मृत' टाइप कर रही थी। उसने फोन मुझे दे दिया।

आरएके दुर्घटना में 4 की मौत, 4 घायल

एक एसयूवी से वाहन की टक्कर होने के बाद चार लोगों की मौत हो गई। पुलिस ने बताया कि बुधवार दोपहर को अमीरात रिंग रोड पर एसयूवी तेज रफ्तार से चल रही थी, तभी चालक ने वाहन पर से नियंत्रण खो दिया।
पुलिस गश्ती दल और एम्बुलेंस घटनास्थल पर तुरंत पहुंचे, जहां चार लोगों को मृत घोषित कर दिया गया।
एक यात्री की मौत हो गई है। एक अन्य यात्री गंभीर रूप से घायल है।
घटना के कारणों का पता लगाने के लिए पुलिस विशेषज्ञ इसकी जांच कर रहे हैं।

ज़ीनत बताती हैं, 'वह ड्राइवर थी।'
मेरा गला सूख जाता है। शब्द मेरी आँखों के सामने तैरने लगते हैं। 'लेकिन... इसमें लिखा है कि चार लोग मारे गए।'
'वह दुर्घटना में बच गई थी, लेकिन बाद में अस्पताल में उसकी मौत हो गई। सबसे बुरा यही है कि उसकी मौत बाद में हुई,' ज़ीनत जवाब देती है और कुछ गुस्से के साथ आगे कहती है, 'अगर उसकी मौके पर ही मौत हो जाती, तो दक्ष कहीं ज्यादा खुश होता। लेकिन अब क्या कर सकते हैं, है ना? हमें अब जाना चाहिए। दक्ष हमारा इंतजार कर रहा होगा।'
'Zeenath—'
'हमें देर नहीं करनी चाहिए। और तमीज़ से पेश आना, उसके साथ छेड़छाड़ मत करना, वो पहले से ही तुम्हें पसंद करता है। उसे अपनी ज़िंदगी में कोई उलझन नहीं चाहिए, ठीक है?'
वह मुझे धूमकेतु अपार्टमेंट्स ले जाती है। प्रवेश द्वार पर मुझे दक्ष का स्कूटर दिखाई देता है। उस पर दो यूनिकॉर्न के स्टिकर लगे हैं। यह उसका बैचलर फ्लैट नहीं है। यह वह जगह है जहाँ वह अब रहता है। वह, उसके पिता और रब्बानी।
वह दरवाजा खोलता है। 'स्वागत है!' वह कहता है और उसकी आवाज धीमी हो जाती है। मेरे चेहरे पर हैरानी साफ दिख रही थी क्योंकि वह आगे पूछता है, 'क्या ज़ीनत ने तुम्हें बताया?'
'बिल्कुल!' ज़ीनत कहती है और मुझसे पहले अपार्टमेंट में घुस जाती है। 'अगर आप अजनबियों को घर में बुला सकती हैं, तो मैं भी उन्हें सब कुछ बता सकती हूँ।'

OceanofPDF.com

13.

Aanchal Madan

दीवारें जर्जर हैं, खिड़कियाँ छोटी हैं और घर में सीलन की बदबू आती है। नीचे का फर्श फटा हुआ है, लेकिन कोई गंदगी नहीं है। चीजें करीने से रखी हैं; साफ-सुथरा, व्यवस्थित, खाली-खाली सा। यह उस कमरे से ज़्यादा बड़ा नहीं है जिसमें मैं पली-बढ़ी थी। मैं दूसरों की तरह अपने चेहरे पर मुस्कान बनाए रखने की नाकाम कोशिश कर रही हूँ।
रब्बानी और एक लड़का पहले से ही लूडो बोर्ड लेकर हमारा इंतजार कर रहे हैं और हमें हाथ हिला रहे हैं।
‘जगत,’ वह लड़का कहता है। ‘मैं दक्ष का सबसे अच्छा दोस्त हूँ। ज़ीनत भी उसकी सबसे अच्छी दोस्त है। लेकिन सच तो यह है कि मैं ही उसका सबसे अच्छा दोस्त हूँ।’
‘दफा हो जाओ!’ ज़ीनत गुस्से से घूरती है, जो रसोई में दक्ष की मदद कर रही है और आधे कटे संतरे जूसर में निचोड़ रही है। रसोई कमरे के एक कोने में बस एक सपाट तख्ता है।
ज़ीनत की भाषा पर दक्ष चिढ़ जाता है। उसने फिर से अपनी काली टी-शर्ट पहनी हुई है। यह उस पर एकदम फिट बैठती है और जूसर में संतरे निचोड़ते समय उसकी बाइसेप्स पर ज़ोर पड़ता है। अलमारी के रूप में इस्तेमाल होने वाले खुले रैक में मुझे उसी तरह की पाँच और टी-शर्ट दिखाई देती हैं।
जगत ने माफी मांगते हुए कहा, 'जीनत के लिए हमें खेद है। जब भी हमारे चार लोगों के समूह में कोई नया व्यक्ति आता है, तो वह ऐसे ही हो जाती है। अगर अंकल को भी शामिल कर लें तो पांच हो जाते हैं।'
फिर जगत रसोई के स्लैब के बगल में बिस्तर पर पड़े कंकालनुमा, बेजान शरीर की ओर इशारा करते हुए अपनी धीमी, शांत आवाज़ में कहता है, 'हम जानते हैं कि आप उसे अलग तरह से याद करते हैं।'
दक्ष के पिता उस सांवले, बाल-बाल बचे कॉर्पोरेट व्यक्ति से बिलकुल अलग दिखते हैं, जैसा कि मुझे उनकी याद है। गाल पिचके हुए, आँखों के चारों ओर काले घेरे, हड्डियाँ किसी अकाल पीड़ित गाय की तरह उभरी हुई। वे जीवित से भी ज़्यादा मृत प्रतीत होते हैं।
मैं उनके पैर छूने के लिए उनके बिस्तर की ओर बढ़ा। उनका निचला शरीर कंबल से ढका हुआ था। उनका केवल एक ही पैर था और मुझे शर्म आ रही थी कि उनकी शारीरिक अक्षमता देखकर मैं सिहर उठा। चाचाजी ने बिना पलक झपकाए मुझे देखा। फिर, एक कराह के साथ, वे मुड़े और दीवार की ओर मुंह कर लिया।

रब्बानी कहती है, 'बाबा थक गए हैं। क्या हम खेलें?' वह लूडो बोर्ड ऊपर उठाती है। दो घंटे तक, रब्बानी, दक्ष, जगत और मैं नमकीन और चाय के साथ लूडो खेलते रहे। कमरे में उनके पिता की भारी साँसों की आवाज़ गूँजती रही। ऐसा लग रहा था जैसे कोई उनकी पसलियों पर पैर रख रहा हो, उनके फेफड़ों को कुचल रहा हो, उन्हें धीरे-धीरे मार रहा हो। ज़ीनत की चेतावनी ने मुझे ऐसी किसी चीज़ के लिए तैयार नहीं किया था। सबके चेहरों पर मुस्कान और हँसी उस घर में बेमेल लग रही थी जो अंदर से ढह रहा था।

दक्ष की नजर घड़ी पर पड़ती है।

‘हमें केक काटना चाहिए,’ वह रब्बानी से कहता है। ‘तुम्हें समय पर सोना होगा। मैं तुम्हारी अर्चना मैडम से एक और सुबह डांट नहीं खाना चाहता।’

रब्बानी नाटकीय अंदाज़ में आह भरती है। 'ठीक है, सिर्फ़ इसलिए कि आज तुम्हारा जन्मदिन है,' वह कहती है। वह लूडो बोर्ड को समेट देती है।

ज़ीनत उत्साह से केक का डिब्बा ले आती है। जगत चाकू लाता है। दक्ष कुछ कागज़ की टोपियाँ निकालता है। वह अपनी उम्र के हिसाब से जन्मदिन को लेकर बहुत उत्साहित है। मुझे हैरानी होती है कि उसे खुश रहने का कोई तरीका मिल गया है। जब वह मुझे टोपी पहनाता है, तो मेरी आँखों में हैरानी नज़र आती है।

‘मुझे इस तरह मत देखो, यह परंपरा है!’ वह उत्साह से कहता है। ‘मैं हमेशा से अपना जन्मदिन मनाता आया हूँ।’

'क्यों?'

‘ये जीवन बदलने वाली घटनाएँ नहीं हैं, बल्कि जीवन देने वाली घटनाएँ हैं। आपको कुछ चीजों की पवित्रता बनाए रखनी चाहिए।’

मुझे उसकी छाती पर बना टैटू याद है—रब्बानी का जन्मदिन।

वह अपने पिता के पास जाता है और धीरे से उन्हें जगाता है। वह उन्हें कुछ तकियों के सहारे बिठाता है। चाचा हमें खाली निगाहों से देखते हैं, मानो उन्हें समझ ही न आ रहा हो कि वे कहाँ हैं। उनकी आँखें बेजान सी हैं। अखबार की उस कतरन के शब्द मेरे दिमाग में गूंज रहे हैं: ड्राइवर ने नियंत्रण खो दिया। चार लोगों की मौत हो गई। अगर लेखक यहाँ होता, तो वह और अधिक विवरण जोड़ता। ड्राइवर का परिवार अब मुंबई चला गया है, जहाँ पति अब बिल्कुल टूट चुका है, खुशियाँ और अपने पैर का एक हिस्सा खो चुका है। ड्राइवर का बेटा अब अपनी छह साल की बहन की देखभाल कर रहा है।

ज़ीनत ने अपनी कोहनी मेरी तरफ धकेली। 'मुस्कुराओ! अगर दक्ष मुस्कुरा सकता है, तो तुम भी मुस्कुरा सकते हो।'

दक्ष अंकल के बिस्तर के पास एक छोटी सी मेज खींचकर लाता है और उस पर केक रख देता है। वह हमसे कहता है, 'तुम लोगों को गाना होगा वरना मैं केक नहीं काटूंगा।' इस घर में छाए उदासी के माहौल में उसके जन्मदिन की खुशी लगभग हास्यास्पद सी लगती है। जब वह काल्पनिक मोमबत्तियों पर फूंक मारने से पहले अपनी आँखें बंद करता है, तो मैं सोचने लगती हूँ कि वह क्या कामना कर रहा होगा। हम धीमी, बेढंगी

आवाज़ में 'हैप्पी बर्थडे' गाते हैं, और वह रब्बानी, अंकल, जगत, ज़ीनत और मुझे एक-एक करके खाना खिलाता है।
ज़ीनत पूछती हैं, 'क्या हमें वह धन्यवाद भाषण सुनने को मिलेगा?'
'धन्यवाद भाषण क्या होता है—'
इससे पहले कि मैं अपना सवाल पूरा कर पाती, दक्ष हंसते हुए मुझे बीच में ही रोक देता है। 'धन्यवाद भाषण बहुत ज़रूरी होते हैं, आंचल। ताकि पीछे मुड़कर देख सकें और महसूस कर सकें कि कुछ चीज़ें ऐसी थीं जिन्होंने साल को सार्थक बनाया। एक तरह से, जैसे साल के यादगार पलों का संग्रह। और मैं यह धन्यवाद भाषण उन लोगों के लिए देता हूँ जो मेरे लिए सबसे ज़्यादा मायने रखते हैं। तो लीजिए, यह रहा।'
वह उत्साह से अपने हाथ मलते हैं। एक बड़ी, खूबसूरत मुस्कान के साथ, वह शुरू करते हैं, 'सबसे पहले, रब्बानी दाय।'
रब्बानी खुशी से चीख उठती है।
"धन्यवाद, रब्बू, तुम जैसे हो वैसे ही रहने के लिए। तुम अब तक के सबसे प्यारे इंसान हो, सबसे प्यारे बटन जैसे, मेरे दिल का एक टुकड़ा, छोटे से छोट्टो मोमो जैसे। मैंने भगवान के प्यारे बच्चों की सूची घटते क्रम में देखी है और वो तुमसे शुरू होती है और तुम पर ही खत्म होती है। तुम पूरी दुनिया के सबसे मज़ेदार, सबसे अच्छे व्यवहार वाले, दयालु और अद्भुत बच्चे हो! मुझे नहीं पता तुम्हारे बिना मैं क्या होता। तुम कमाल हो और मैं पूरी दुनिया का सबसे खुशनसीब दादा हूँ!"
'दादा सबसे अच्छे हैं!'
वह चाचा की ओर मुड़ता है। 'धन्यवाद, बाबा।'
चाचा उसकी तरफ नहीं देखते।
फिर भी दक्ष अपनी बात जारी रखता है। 'धन्यवाद बाबा, मुझे इस दुनिया में लाने और जब तक संभव हुआ हमारा ख्याल रखने के लिए। आपकी खामोशी में बहुत प्यार था और अब मैं इसे समझ गया हूँ। हमने बहुत कुछ झेला है, लेकिन मुझे यकीन है कि आने वाले कई साल बीते सालों से कहीं ज्यादा आसान होंगे। आप मेरे बाबा हैं, और मैं हमेशा आपसे प्यार करूंगा।'
He turns to Jagath.
'धन्यवाद जगत, मेरे पहले सबसे अच्छे दोस्त, जिन्होंने "सबसे अच्छे दोस्त" शब्द को सही मायने दिए, मेरे लिए सहारा और मार्गदर्शक बनने के लिए, मुझे स्थिर रखने के लिए, हमेशा मेरे साथ रहने के लिए। एसआईपी और स्टॉक ऑप्शन की दुनिया में, आप मेरे फिक्स्ड डिपॉजिट की तरह हैं। और दिन के बेहतरीन सौदों और अन्य अवसरों का लाभ उठाकर इतनी बचत करने के लिए भी धन्यवाद।'
वह ज़ीनत की ओर मुड़ता है।
'ज़ीनत, मेरी दूसरी सबसे अच्छी दोस्त, तुम्हारा शुक्रिया, मेरी सच्चाई बनने के लिए, और उस अंधेरे में लौ बनने के लिए जिसमें मैं खुद को पाती हूँ, मुझे यह याद दिलाने के लिए कि सभी दुख अस्थायी होते हैं, और कुछ दुखों को क्रोध से बदला जा सकता है। और विशेष रूप से शुक्रिया, मेरे पास मौजूद केवल पाँच टी-शर्ट को हर दिन अद्भुत

खुशबू और खूबसूरती देने के लिए।'
वह मेरी ओर मुड़ता है। मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगता है, मेरा पूरा शरीर घबराहट से कांपने लगता है। उसकी गहरी, काली आँखें मुझ पर टिक जाती हैं। शायद एक पल के लिए ही सही, लेकिन ऐसा लगता है जैसे मेरा शरीर आग की लपटों में जल रहा हो। जमाने से।
'इस संयोग के लिए धन्यवाद, आँचल। मैंने तुम्हें यह नहीं बताया है, लेकिन तुम शायद अब तक देखी गई सबसे खूबसूरत महिला हो।'
ज़ीनत कहती हैं, 'थोड़ा सतही है।'
मैंने कहा, 'उसे बीच में मत टोको।'
'तुम्हारे होने के लिए धन्यवाद, उस स्ट्रॉबेरी आइसक्रीम के लिए धन्यवाद, जेल में तुम्हारे उस गुस्से भरे चेहरे के लिए धन्यवाद, मेरे विशेषाधिकार पर तुम्हारे गुस्से के लिए धन्यवाद, और उन कॉर्नेटोस के लिए धन्यवाद जो हमने साथ में खाए थे। तुम मेरी आखिरी बेदाग याद थे, और एक ऐसी याद जो मुझे बेहद प्यारी है।'
सब लोग हंस पड़ते हैं। मैं बस हल्की सी मुस्कान ही दे पाती हूँ क्योंकि मेरा दिल बुरी तरह पिघल चुका है।
वह आगे कहते हैं, 'हालात चाहे जैसे भी दिखें, पिछला साल मेरे लिए अच्छा ही रहा। मैं खुश और संतुष्ट रहने की पूरी कोशिश कर रहा हूँ और इसमें कामयाब भी हो रहा हूँ। हालाँकि, मेरी यही इच्छा है कि अगला साल थोड़ा आसान हो। इस साल के लिए धन्यवाद, और फिर मिलेंगे अगले साल।'
हम सब ताली बजाते हैं।
दक्ष हम सभी को गले लगा लेता है, और इस दौरान मैं अकेली नहीं हूँ जो अपने आँसू रोकने की कोशिश कर रही है।
ज़ीनत बोलती हैं, 'चलिए मान लेते हैं कि धन्यवाद भाषण देना अजीब नहीं होता।'
'हमेशा दूसरों की तरह होने के बजाय कुछ अलग होना चुनो,' मैंने दक्ष से कहा, जो प्यारी सी मुस्कान के साथ जवाब देता है।
उस समय, वह एक मासूम लड़के जैसा दिखता है जो कई जन्मदिन पार्टियों का हकदार है, न कि सिर्फ एक का।

OceanofPDF.com

14.

Aanchal Madan

दक्ष सबके पास जाकर बिरयानी की थाली लगाता है। वह अंकल और रब्बानी के बगल में बैठता है और देखता है कि वे अपना-अपना हिस्सा खत्म कर रहे हैं या नहीं।

उसकी अपनी थाली अभी तक वैसी ही पड़ी है। जगत, ज़ीनत और मैं अपनी-अपनी थालियों के साथ फोल्डिंग टेबल पर बैठते हैं। आखिरकार मैं उनसे वो सवाल पूछता हूँ जो मुझे काफी समय से परेशान कर रहे थे। ये घर। ये जर्जर इमारत। ये खस्ताहाल एक्टिवा।

मैंने उन दोनों से फुसफुसाते हुए कहा, 'तुमने कहा था कि दक्ष की मां दुर्घटना में बच गई थीं, लेकिन बाद में उनकी मृत्यु हो गई। क्या उनके अस्पताल के बिलों ने उनकी सारी बचत खत्म कर दी?'

'देखो कौन होशियार बन रहा है,' ज़ीनत हँसते हुए कहती है। 'लेकिन नहीं, तुम इतने होशियार नहीं हो।'

'मुझे समझ नहीं आ रहा कि तुम मुझ पर इतना गुस्सा क्यों कर रही हो,' मैंने ज़ीनत से कहा।

'क्योंकि-'

जगत ने ज़ीनत को चुप करा दिया। मुझे अब भी समझ नहीं आ रहा कि वो मुझसे इतनी नफरत क्यों करती है, जबकि साफ है कि वो जगत को पसंद करती है, दक्ष को नहीं। मैंने गौर किया है कि वो उसे कैसे देखती है। ये तो साफ है। लेकिन लगता है जगत, अपनी समझदारी के कारण, ये बात नहीं जानता।

जगत फुसफुसाते हुए कहता है, 'उसकी मां की वजह से हुए हादसे में चार लोगों की मौत हो गई। क्योंकि वह एक्सपायर्ड लाइसेंस के साथ गाड़ी चला रही थी, इसलिए यूएई की अदालतों ने उस पर मुकदमा चलाया। और यूएई में होता यह है कि अगर आप किसी को मार देते हैं, चाहे गलती से ही क्यों न हो, तो आपको मृतक के परिवार को खून का मुआवजा देना पड़ता है। वरना आपको जेल भेज दिया जाता है।'

'कितने?' मैंने पूछा।

'प्रत्येक मृत्यु के लिए 5,00,000 दिरहम।'

'चार करोड़ रुपये से अधिक? उन चार मृतकों के लिए?' मैं हिसाब लगाता हूँ।

ज़ीनत ने उपहास उड़ाते हुए कहा, 'वह गणित में अच्छी है। उन्होंने सब कुछ बेच दिया, उधार लिया, कर्ज लिया।'

यह संख्या देखकर मेरा सिर चकरा रहा है।

'क्या हम थोड़ा शांत रह सकते हैं?' जगत ने धीमी आवाज़ में डांटते हुए कहा। उसने अपनी आवाज़ कम कर ली। 'जब उस पर मुकदमा चलाया गया, तब तक वह ब्रेन-डेड हो चुकी थी। वह ज़िंदा तो थी, लेकिन दुर्घटना के बाद उसे एक बार भी होश नहीं आया। उन्होंने उसे जेल से बचाने के लिए पैसे दिए, लेकिन वह वैसे भी मर चुकी थी।'

ज़ीनत ने उपहास उड़ाते हुए कहा, 'उन्होंने एक लाश को जेल से बाहर रखने के लिए पैसे दिए।'

मेरा दिल उन्नीस वर्षीय दक्ष के लिए दुखता है, जो एक ठंडे अस्पताल के कमरे में अपनी मस्तिष्क-मृत माँ, सर्जरी में लगे पिता के साथ होता, और एक तीन साल के बच्चे को यह समझाने की कोशिश कर रहा होता कि वे वहाँ क्या कर रहे हैं या उनके पास अब घर क्यों नहीं है।

मेरे मन में अनेक प्रश्न उमड़ रहे हैं।
‘जीनत? आपने कहा था कि बाद में उसकी मौत होना सबसे बुरा था। क्या आपका मतलब यह है कि अगर वह भी उस दुर्घटना में मर जाती, तो उन्हें मृतकों के परिवारों को मुआवजा नहीं देना पड़ता?’ मैंने पूछा।
ज़ीनत ने कर्कश स्वर में कहा, 'दक्ष ने हमें बताया कि तुम जीवन में बहुत समझदारी से फैसले लेती हो।' उसने सिर हिलाकर सहमति जताई।
जगत बताते हैं, 'दक्ष के पास विकल्प था। डॉक्टरों के सुझाव के अनुसार वह उसे वेंटिलेटर से हटा सकता था। उसके ठीक होने की मात्र 2 प्रतिशत संभावना थी। उसने ऐसा करने से इनकार कर दिया।'
ज़ीनत कहती हैं, 'अगर उसने ऐसा किया होता, तो उसे उनका सारा पैसा नहीं गंवाना पड़ता। क्योंकि वह बेवकूफ है या जो भी हो। किसी मृत व्यक्ति का मुकदमा नहीं चलेगा, कोई पैसा नहीं दिया जाएगा।'
जगत आगे कहते हैं, 'चाचा ने भी उसे ऐसा करने के लिए कहा था। वैसे भी उसकी मां मर चुकी थी।'
मुझे लगता है, वह परिवारों को मुआवजा देना चाहता था।
ज़ीनत गुस्से से बोली, 'सही है, लेकिन अब तक का सबसे मूर्खतापूर्ण फैसला। अगर उसने उसे लाइफ सपोर्ट से हटा दिया होता, तो वह कहीं बेहतर स्थिति में होता। नेक बनकर उसे क्या मिला? कुछ नहीं। उसे सिर्फ बकवास मिली।'
जगत आंखें घुमाता है। 'उसने अपने फैसले पर कभी शिकायत नहीं की, तुमने की है,' जगत फटकार लगाता है।
ज़ीनत अपनी आँखें घुमाती है और फिर कहती है, 'वह देख रहा है।'
‘हमारी तरफ नहीं,’ जगत ने सुधार करते हुए कहा। ‘वो तुम्हारी तरफ देख रहा है, आँचल।’
ज़ीनत कहती हैं, 'उन्होंने आज फिर तुम्हें खूबसूरत कहा।'
‘वह ऐसा करता ही रहता है, है ना?’ जगत ने आगे कहा। ‘वह रब्बानी से कभी नज़र नहीं हटाता, और वह ऐसा कर रहा है।’
मैंने बीच में टोकते हुए कहा, 'यह बिरयानी बहुत बढ़िया है।'
‘अच्छा बहाना है,’ ज़ीनत कहती है। ‘देखो तो सही, तुम शरमा रही हो। क्या तुम्हारा कोई बॉयफ्रेंड वगैरह नहीं है?’
‘हां,’ मैंने जवाब दिया।
‘तो फिर तुम यहाँ क्यों हो?’ ज़ीनत फुफकारती है।
‘उसकी बातों पर ध्यान मत दीजिए, लेकिन हम आपसे किसी बात पर चर्चा करना चाहते थे,’ जगत ने बीच में ही टोकते हुए कहा।
‘जीनत ने मुझे पहले ही चेतावनी दे दी थी।’
जगत आगे कहते हैं, 'तो, आप जानते हैं, दक्ष भावनात्मक रूप से बहुत नाजुक दौर से गुजर रहा है। यह साफ दिख रहा है। उसका इस स्थिति में होना किसी चमत्कार से कम नहीं है। हमने उसके बुरे दिन देखे हैं।'

मैंने मुड़कर देखा तो दक्ष रब्बानी के कपड़े बदल रहा था और उसे बिस्तर पर लिटा रहा था।
जगत आगे बताते हैं, 'वह तुम्हें अपनी क्रश बताता रहता है, जो बिल्कुल झूठ है। तुम सिर्फ उसकी क्रश नहीं हो। हमें उसके दिल की गहराई का पता कुछ दिन पहले ही चला। जब हमने उससे पूछा कि वह तुम्हें इस पार्टी में क्यों बुला रहा है, तो उसने बताया कि तुम उसके लिए ताकत का स्रोत हो।'
ज़ीनत ने इतराते हुए कहा, 'हम किसी और के साथ नहीं घूमते। हम बहुत नाराज़ थे, लेकिन उसने हमारी बात नहीं सुनी।'
जगत आगे बताते हैं, 'जब हमने उनसे पूछा, तो उन्होंने कहा कि वे आपकी लिंक्डइन प्रोफाइल और आपकी सफलता को देखकर खुद को समझाते थे कि वे भी अपने दुख से उबर सकते हैं। असल में, वे अपने सबसे कमजोर पलों में आपकी ओर रुख करते थे।'
ज़ीनत की तीखी निगाहें मुझे असहज कर देती हैं। 'भले ही आप दोनों की परिस्थितियाँ बिल्कुल अलग थीं।'
‘उसने मुझे यह नहीं बताया,’ मैं हकलाते हुए बोला।
'उन्होंने हमें यह बात बताई भी नहीं,' ज़ीनत ने झल्लाकर कहा।
'आप दोनों मुझे ऐसा महसूस करा रहे हैं जैसे कि मैं किसी न किसी तरह से दोषी हूं जबकि मैंने कुछ भी नहीं किया है।'
‘तुमने नहीं देखा, ये सच है,’ जगत कहता है। वो दक्ष का फोन मेरी तरफ बढ़ाते हुए कहता है, ‘क्या तुम लॉक कोड का अनुमान लगाना चाहोगे?’
मुझे तुरंत जवाब मिल गया। 'रब्बानी का जन्मदिन?' मैंने पूछा।
ज़ीनत ने तीखे लहजे में कहा, 'पहले ऐसा होता था। लेकिन रब्बानी को पता चल गया, इसलिए उसने इसे बदल दिया। फिर उसने हमारी जन्मतिथि डाल दी, लेकिन रब्बानी को उसका भी पता चल गया। इसलिए उसने इसे फिर से बदल दिया।'
‘किसके लिए?’ मैंने पूछा।
‘जगत और मैं सोच रहे थे कि आज कौन सी तारीख है और फिर हमने किसी तरह इसका पता लगा लिया।’
‘आज मेरा जन्मदिन है?’ मैंने अनिश्चितता से कहा।
'यह वही दिन है जब वह तुमसे मिला था,' ज़ीनत ने चिढ़कर कहा।
लेकिन... लेकिन... वह ऐसा क्यों करेगा?
जगत ने दक्ष का फोन अनलॉक किया। उसने ब्राउज़र हिस्ट्री खोली। वह बार-बार ऊपर की ओर स्वाइप करता रहा और रुकता रहा। हर बार रुकने पर उसने मेरे नाम पर उंगली रखी। हर दो महीने में, 'आंचल मदन एसआरसीसी' सर्च होता था और मेरी लिंक्डइन प्रोफाइल खुलती थी। फिर, हर दो महीने में एक बार मेरे नंबर से भी सर्च होता था। यह सोचकर मेरा पेट दुखने लगा कि यह दुखी लड़का मुझे ढूंढ रहा है। वह मुझे कॉल कर सकता था, लेकिन उसने नहीं किया। तो फिर वह मेरा पीछा क्यों कर रहा था?

जगत इस सवाल पर विचार करते हुए आगे कहता है, 'तुम उसके लिए किसी न किसी तरह का सहारा थे। हम यही सोच रहे हैं। तलाशी अभियान बहुत कम और दूर-दूर तक फैले हुए हैं, इसलिए उसके पीछा करने का कोई सबूत नहीं है।'
मैंने सिर हिलाया। 'उसने कभी फोन नहीं किया। जबकि उसके पास फोन करने के सारे कारण थे,' मैंने बुदबुदाते हुए कहा। 'मेरे भाई ने उसका निन्टेंडो चुरा लिया।'
'देखो, आँचल,' ज़ीनत कहती है। 'मुझे यकीन है कि तुम अच्छी लड़की हो। लेकिन दक्ष नाज़ुक है। अगर तुम जिससे भी डेट कर रही हो, उसके साथ रिश्ते को लेकर गंभीर हो, तो उसे धोखा मत दो।'
जगत कहते हैं, 'मुझे यकीन है कि वह ऐसा नहीं करेगी। दक्ष इसे बर्दाश्त नहीं कर पाएगा।'

OceanofPDF.com

15.

Aanchal Madan

मैं बाकी शाम ध्यान केंद्रित नहीं कर पा रहा हूँ। मेरा मन दो वास्तविकताओं के बीच भटकता रहता है।
एक ऐसा पल जिसमें दक्ष मुझे फोन करता है और कबूल करता है कि वह मेरे बारे में सोच रहा है। वह मुझे दुर्घटना के बारे में बताता है, अपने परिवार के बिखर जाने के बारे में, अपने गहरे दुख के बारे में। और फिर मुझसे बात करके उसे सहारा मिलता है। उसे मुझमें एक ऐसा कंधा मिलता है जिस पर वह टिक सकता है।
और फिर एक यथार्थवादी परिदृश्य है कि वास्तव में क्या हो सकता था। क्या हो सकता था।
विकी—जो हमेशा मेरे जीमेल और लिंक्डइन में लॉग इन रहता है, जिसके पास मेरे सारे पासवर्ड हैं, जो यह नियंत्रित करता है कि मैं किसे फॉलो करूं और किसे नहीं, मैं किसकी तस्वीरों को लाइक कर सकता हूं और किसकी नहीं—उसका संदेश जरूर पढ़ता। वह मुझसे और मेरे माता-पिता से उसके बारे में पूछताछ करता। वह मेरी बांह तब तक पकड़ता जब तक कि मुझे चोट के निशान न पड़ जाते।
मैं कैसे समझाती कि दुबई के एक लड़के ने मुझे ऐसा मैसेज क्यों भेजा, जिसमें लिखा था, 'क्या तुम्हें मैं याद हूँ? हमने अंडमान में साथ में आइसक्रीम खाई थी। बीच पर नारियल पानी पिया था।' वो हाथ उठाकर रुक जाता और कहता, 'कोई और होता तो तुम्हें मार देता।' लेकिन दयालु और उदार विक्की मुझे नहीं मारता। जब वो गुस्सा होता है, तो मुझे दूसरे तरीकों से सज़ा देता है। जब हम अकेले होते हैं, तो वो मुझे किस नहीं करता। वो बस अपना लिंग मेरे मुँह में डाल देता है। वो मेरा सिर पकड़ता है, मेरे बाल खींचता है और मेरे मुँह में वीर्य निकाल देता है। उसे ये दिखावा करना अच्छा

लगता है कि मुझे भी ये पसंद है। फिर वो यूट्यूब वीडियो देखता है जबकि मैं गरारे करती हूँ। कभी-कभी, जब मेरे लिए उसके मन में भरी नफ़रत की वजह से उसका लिंग खड़ा नहीं होता, तो वो मुझे कसकर पकड़ता है, थूकता है और हल्के से थप्पड़ मारता है जैसे कि ये सब यौन क्रिया का हिस्सा हो, जबकि मैं जानती हूँ कि ऐसा नहीं है। लेकिन मुझे खुशी है कि वो मुझे ज़्यादा किस नहीं करता। क्योंकि मुझे सबसे ज़्यादा नफ़रत इसी से है।

जैसे-जैसे रात बढ़ती है, जगत और ज़ीनत को जम्हाई आने लगती है। जब वे जाने के लिए उठते हैं, तो मेरी तरफ देखते हैं। वे चाहते हैं कि मैं भी चला जाऊं।

मैंने दक्ष से कहा, 'मेरे पास करने को कुछ नहीं है। मैं थोड़ी देर रुक सकता हूँ।'

'भगवान का शुक्र है कि कोई तो मेरे जन्मदिन को लेकर उत्साहित है,' दक्ष ने खुशी से कहा।

ज़ीनत खिलखिलाकर हंसती है, 'तुम्हारा जन्मदिन तो बीत चुका है। बारह बज चुके हैं।'

जगत और ज़ीनत यह जानते हुए चले जाते हैं कि मैं टस से मस नहीं होऊंगी। उनके जाने के बाद, मैं उनके लिए लाया हुआ उपहार मेज पर रख देती हूँ।

'आपको ऐसा करने की ज़रूरत नहीं थी,' वह कहता है। फिर वह आँख मारता है और कहता है, 'लेकिन मुझे खुशी है कि आपने ऐसा किया क्योंकि उपहार सबसे अच्छा हिस्सा होते हैं।'

वह उपहार खोलता है। यह एक निंटेंडो है, वही मॉडल जो गौरव ने उसे दिया था। वह हंसने लगता है।

'तो ये असल में कोई तोहफा नहीं है, बस मेरा सामान लौटा रहे हैं,' वो हंसते हुए उसे हाथों में थामे हुए बटन दबाते हैं। फिर सीधे मेरी तरफ देखते हैं। 'धन्यवाद। मुझे ये बहुत पसंद आया।'

'आप अब नहीं खेलते, है ना?'

'इससे क्या फर्क पड़ता है? आपने सोचा और मुझे कुछ सार्थक दिया। अब जब भी मैं इसे देखूंगी, यह मुझे हमारी कहानी की याद दिलाएगा। उपहार यही तो होते हैं। किसी के साथ साझा की गई यादों के रूप में।'

आप जन्मदिन को काफी गंभीरता से लेते हैं।

वह हंसता है और फिर चुप हो जाता है।

आज शाम पहली बार मैंने उसके चेहरे से मुस्कान गायब होते देखी। जगत और ज़ीनत की बातों में जो उदासी झलक रही थी, वह उसके चेहरे पर साफ दिखाई दी। मानो पल भर में कमरे की सारी खुशियाँ गायब हो गई हों।

'मुझे माफ़ करना... आंटी,' मैंने कहा।

'कोई बात नहीं।' वह उदास होकर मुस्कुराता है। थोड़ी देर चुप रहने के बाद वह कहता है, 'मैं आप लोगों की बातें सुन सकता था। यह जानकर अच्छा लगा कि मेरे दोस्तों की कोई सीमा नहीं है और वे मेरे फोन में सेंध लगा सकते हैं।'

उन्हें पता है कि मुझे पता है। और किसी तरह उनकी आँखों में मुझे कोई झिझक नहीं दिखती। न ही मुझे उनके सामने कुछ छिपाने या छुपाने की ज़रूरत महसूस होती है। वे

मेरी आँखों में देखते हैं। उनकी निगाहों में एक ऐसी खूबी है जो मुझे अपने असली रूप में जीने के लिए प्रेरित करती है। अपनी सारी कमियों और खामियों के साथ।
‘तुमने मुझसे कभी संपर्क नहीं किया। तमाम कोशिशों के बावजूद—’
वह आगे की ओर झुकता है। हमारे चेहरों के बीच ज्यादा दूरी नहीं है।
‘आंचल। तुम्हारा बॉयफ्रेंड बहुत अधिकार जताने वाला था। शुरुआत में मेरे पास देने के लिए कुछ नहीं था। और फिर, सिर्फ दुख, सिर्फ बोझ,’ वह कहता है।
ज़ीनत ने कहा कि आपने उन्हें पैसे देकर गलती की।
वह अपना सिर हिलाता है। ‘यह मेरे जीवन का सबसे आसान फैसला था,’ वह पलटकर कहता है। ‘फैसला क्या था? अपने प्रियजनों को खोने वाले परिवारों को मुआवजा देने से बचने के लिए अपनी माँ को जल्दी मार डालना? मैं ऐसा कैसे कर सकता था? हर बार जब हम अदालत जाते थे, तो हम उन्हें अपनी आँखों के सामने देख सकते थे। रब्बानी से कुछ ही बड़े बच्चे, अपने पतियों के बिना महिलाएं, परिवार की मुख्य कमाने वाली महिलाएं। मैं इस अपराधबोध के साथ जीना नहीं चुन सकता था।’
‘तो तुमने इसे चुना,’ मैं बुदबुदाती हूँ।
‘भगवान ने हमें बचा लिया,’ वह सख्ती से कहता है। ‘दूसरी कार में हम चारों मारे गए। हमारी कार में सिर्फ ड्राइवर की सीट क्षतिग्रस्त हुई। बाबा, रब्बानी, मैं, हम सब दूसरी तरफ बैठे थे। अगर हम सिर्फ मम्मी को बचाते तो यह कृतघ्नता होती...’
जिस तरह से वह 'मम्मा' का उच्चारण करता है, मेरा दिल टूट जाता है। 'माँ' और 'मम्मा' का अर्थ एक ही है, लेकिन उनका भाव बिल्कुल अलग है। 'माँ' का अर्थ है किसी दयालु, रक्षा करने वाली हस्ती को संबोधित करना; 'मम्मा' का अर्थ है अपनी कमजोरी को स्वीकार करना। 'माँ' का अर्थ है अपनी माँ को शक्ति देना, जबकि 'मम्मा' का अर्थ है अपने भीतर के बच्चे को स्वीकार करना।
वह खुद को संभाल लेता है।
अब उनकी आवाज़ इतनी धीमी हो गई है कि मानो फुसफुसाहट हो। 'मुझे रब्बानी के लिए बुरा लग रहा है। उसे कभी माँ से मिलने का मौका ही नहीं मिला। और बाबा के साथ भी...' उनकी आवाज़ रुक जाती है। 'बाबा कई दिनों से हमसे बात नहीं करते। उन्हें बहुत ज़्यादा शारीरिक पीड़ा हो रही है।'
‘यह क्या है?’
'उसका दिमाग इस बात को समझ ही नहीं पा रहा है कि उसका पैर वहां नहीं है। और दर्द की दवा उसके दिमाग को सुन्न कर देती है।'
वह मुझे बताता है कि उसके पिता महीनों तक दर्द से कराहते रह सकते हैं। उन्होंने कृत्रिम पैर का खर्च तो उठा लिया था, लेकिन जब भी वह उसे इस्तेमाल करते हैं, दर्द से चीख उठते हैं। ऐसा लगता है जैसे उनका पैर—जो अब है ही नहीं—कुचल रहा हो, हड्डियाँ चूर-चूर हो रही हों, मांस चूर-चूर हो रहा हो। दक्ष रब्बानी को देखता है, जो बच्चों की तरह शांति से सो रहा है।
उसे उसकी जरूरत है।

'और आप?'
वह अपने आँसू रोकने की कोशिश करता है। मुझे आश्चर्य होता है कि क्या वह कभी खुद को रोने देता है।
मैंने उनसे पूछा, 'आप मुंबई क्यों चले गए?' मुझे आश्चर्य हो रहा था कि अगर वह दिल्ली चले गए होते तो क्या वह मुझे फोन करते। 'दिल्ली क्यों नहीं?'
‘हमारे पास सोचने का समय ही नहीं था। यही एक बचा हुआ हमारा एकमात्र निवेश था। बाबा के एक दोस्त ने मुझे यहाँ नौकरी दिलवा दी, बस बात खत्म,’ वह बताते हैं। ‘मैंने ऑनलाइन कॉलेज शुरू किया, रब्बानी ने स्कूल जाना शुरू किया, और हमने बाबा के ठीक होने का इंतज़ार करना छोड़ दिया।’ वह निंटेंडो की तरफ देखते हैं, फिर उसे वापस उसके डिब्बे में रख देते हैं। ‘हमने सोचा था कि बाबा इससे लड़ेंगे, हमारा ख्याल रखेंगे। पिता यही तो करते हैं, लेकिन... हाँ, यही सच है।’
'वह करेगा, मुझे पूरा यकीन है कि वह करेगा।'
‘क्या आप चाय पीना चाहेंगे?’ वह पूछता है। ‘अगर आपको देर नहीं हो रही है, तो।’
मुझे आश्चर्य होता है कि क्या कोई सर्वकालिक सबसे विनम्र व्यक्ति को मना कर सकता है। अगर दक्ष विनम्रता से पूछे तो सेनाएं भी निश्चित मृत्यु की ओर चल पड़ेंगी,
'बिरयानी के बाद चाय किसे पसंद नहीं होती?'
वह घर का कैमरा रब्बानी की ओर घुमाता है। जैसे ही वह ऐसा करता है, कार दुर्घटना मेरी आँखों के सामने साकार हो उठती है। मैं उनके विनाश के उस पल की कल्पना करता हूँ। चाची ज़मीन पर बेसुध पड़ी हैं। चाचा दर्द से चीख रहे हैं, उनका पैर फँसा हुआ है, खून बह रहा है। दक्ष स्तब्ध है, रब्बानी का रोना शोरगुल में दब गया है। तभी अचानक मेरे मन में कुछ कौंधता है।
‘Daksh?’
'हाँ?'
मैंने कहा, 'कुछ साल पहले मेरी चचेरी बहन की पत्नी की कार दुर्घटना में मौत हो गई थी। मैं उसे नहीं जानता था, लेकिन मैंने दुर्घटना के बारे में सुना था।'
'उसे सुनने के लिए मुझे माफ करें-'
'मेरा चचेरा भाई गाड़ी चला रहा था, उसकी पत्नी यात्री सीट पर बैठी थी। खुद को बचाने के लिए मेरे चचेरे भाई ने गाड़ी को अचानक मोड़ दिया। ट्रक यात्री की तरफ से टकरा गया।'
‘ठीक है, हम्म।’
जांच में पता चला कि यह ड्राइवर की सहज प्रवृत्ति के कारण हुआ था। ड्राइवरों के साथ ऐसा अक्सर होता है। वे खुद को बचाने के लिए स्टीयरिंग घुमाते हैं। ड्राइवर के ठीक पीछे बैठे यात्री आमतौर पर सुरक्षित रहते हैं।
'तुम मुझे ये क्यो बता रहे हो?'
‘तुम्हारे हादसे में तो ठीक उल्टा हुआ। तुमने कहा था कि कार का सिर्फ़ ड्राइवर वाला हिस्सा, तुम्हारी माँ वाला हिस्सा, क्षतिग्रस्त हुआ था, है ना? यात्री वाला हिस्सा, और जहाँ तुम अपने पिता के ठीक पीछे बैठी थी, वह बिल्कुल सुरक्षित था। क्या इसका

मतलब यह है कि आंटी ने गाड़ी को दूसरी दिशा में मोड़ दिया होगा? क्या उन्होंने खुद को हादसे का शिकार बनाया होगा? उन्होंने खुद को हादसे का शिकार बनाया,' मैं अनुमान लगाता हूँ।
वह चुप हो जाता है। मैं उसकी आँखें देख सकता हूँ, वह अब यहाँ नहीं है। वह दुर्घटना की कल्पना कर रहा है।
'वो... शायद तुम लोगों की जान बचा सकती थी। मुझे नहीं पता... बस ऐसा ही लगता है।'

OceanofPDF.com

16.

Daksh Dey

उन्होंने हमें बताया कि मम्मी को कार से निकालने के लिए मेटल कटर का इस्तेमाल करना पड़ा। नर्सों ने बताया कि उन्होंने उनकी खोपड़ी का एक हिस्सा काटने के लिए क्रेनियोटोम का इस्तेमाल किया। डॉक्टरों ने मुझे बताया कि उनके मस्तिष्क में रक्तस्राव के कारण दबाव बढ़ रहा था। स्टाफ ने हमें बताया कि हालांकि उनका शरीर कई जगहों से टूट चुका था, लेकिन उन्हें उनकी मानसिक स्थिति की चिंता थी। तरह-तरह के आंकड़े बताए गए, कैट स्कैन दिखाए गए, विकल्पों पर चर्चा हुई, दूसरी और तीसरी राय ली गई, वकीलों को बुलाया गया, पुलिस को सूचित किया गया। हमें बताया गया कि अगर हमने पैसे नहीं दिए और मम्मी को होश आ गया, तो उन्हें जेल में डाल दिया जाएगा। शोक परामर्शदाता नियुक्त किए गए, हमें जीवन के अंतिम समय की योजनाओं के बारे में समझाया गया, लेकिन उनमें से किसी ने भी यह नहीं कहा कि हम सभी का बच जाना महज़ संयोग नहीं था।
उन्होंने हमें यह नहीं बताया कि वह हमें बचाने के लिए गाड़ी को मोड़ सकती थी। उन्होंने हमें यह नहीं बताया कि हम मम्मी की वजह से जिंदा हैं।
'एक और,' आँचल कहती है और मुझे एक और दुर्घटना दिखाती है जिसमें ड्राइवर ने अपनी जान बचाने के लिए गाड़ी को मोड़ दिया था। ड्राइवर तो बच गया, लेकिन यात्री मारे गए।
आँचल यह सब मदद करने के लिए कर रही है। उसकी आँखें चमक रही हैं, चेहरा लाल हो रहा है, और मैं उसे यह बताने की हिम्मत नहीं कर पा रही हूँ कि वह मुझे उस दुर्घटना की याद दिला रही है।
आप मुझे लिंक बाद में भेज सकते हैं।
उसे बात समझ आ गई।
'लेकिन धन्यवाद,' मैंने कहा।

'धन्यवाद कहकर मुझे शर्मिंदा मत करो। इसमें कुछ भी नहीं है।'
‘यह सब कुछ है। क्योंकि एक दिन मुझे रब्बानी को इस दुर्घटना के बारे में और माँ कौन थीं, यह समझाना होगा। और मुझे हमेशा से डर लगता रहा है कि उन्हें माँ के बारे में बस यही याद रहेगा कि उन्होंने चार लोगों की जान ली थी। अब मेरे पास कुछ सबूत है। उन्होंने हमारी जान बचाई। यही माँ की कहानी होगी,’ मैं कहती हूँ। ‘वैसे, चाय कैसी है?’
‘इसमें बहुत ज्यादा चीनी है,’ वह कहती हैं। ‘मुझे यह पसंद है। यह ऐसा ही होना चाहिए।’
सिग्नल पर मिलने वाली मीठी चाय कभी मुझे बिल्कुल भी अच्छी नहीं लगती थी। अब यह मेरी दिनचर्या का हिस्सा बन गई है। हम सभी वो सब काम कर सकते हैं जो कभी नामुमकिन लगते थे।
‘आपके माता-पिता कैसे हैं?’ मैंने उससे पूछा, मुझे याद आया कि वे दोनों कितने प्यारे थे।
‘वे अच्छे हैं,’ वह ऐसे जवाब देती है जैसे कुछ छुपा रही हो। वह आगे कहती है, ‘वे किसी न किसी कारण से तनाव में आ ही जाते हैं।’
‘माता-पिता यही तो करते हैं, है ना?’ मैंने कहा। ‘और गौरव कैसा है, चोरों का राजा, डेनियल ओशन, डकैती का माहिर?’
मैंने उसके चेहरे पर उदासी देखी।
अरे? अरे? मैं मजाक कर रहा था। मुझे खुशी है कि उसने इसे चुरा लिया। वैसे भी मेरे लिए खेलना बंद करने का यही सही समय था। मैं इसमें बहुत बुरा था।
‘तुम अकेली नहीं हो जिससे उसने चोरी की है,’ वह उदास स्वर में कहती है। ‘उसने... हमसे चोरी की, कॉलेज छोड़ दिया। फिर वह भाग गया और यहाँ मुंबई आ गया, लेकिन... मामला पेचीदा है, वह...’
‘नशीली दवाएं?’
‘गेम्स,’ वह जवाब देती है। ‘डोटा, काउंटर-स्ट्राइक। वह गेमर बनना चाहता है।’
‘तुम मजाक कर रहे हो!’
‘खुश होने की कोई बात नहीं है,’ वह पलटकर जवाब देती है। ‘मेरे माता-पिता और गौरव ने सात महीने से बात नहीं की है। यह बहुत तनावपूर्ण है। और अगर वह कॉलेज वापस नहीं लौटा, तो उसके तीन साल बर्बाद हो जाएंगे। वह पूरी जिंदगी बारहवीं पास ही रहेगा।’
मैंने कहा, 'मुझे याद है कि वह इसमें अविश्वसनीय रूप से अच्छा था, उसमें बहुत क्षमता थी। मुझे लगता है कि वह बहुत अच्छा करेगा। वह जन्मजात प्रतिभाशाली था।'
वह मुझे घूरती है। 'यह बेवकूफी है। वह अपना जीवन बर्बाद कर रहा है। कम से कम वह अपनी डिग्री तो पूरी कर सकता था। उसमें तो बस एक साल लगता है।'
‘और एक साल तक प्रतिस्पर्धा से वंचित रहना? गेमिंग की दृष्टि से, यह आत्महत्या के समान है। प्रतिस्पर्धा करने के लिए युवा होना आवश्यक है। उम्र बढ़ने के साथ-साथ आपकी प्रतिक्रियाएँ मंद होती जाती हैं।’

‘चालीस साल का होने पर वह क्या करेगा? क्या खेल खेलता रहेगा?’
आँचल की आवाज़ अब किसी बुज़ुर्ग जैसी लगती है। मैं उसे बताना चाहती हूँ कि चालीस साल की उम्र में DeliverFood में उसकी नौकरी भी बिलकुल अलग होगी। उसकी जगह AI ले लेगा, और डिलीवरी एग्जीक्यूटिव की जगह ड्रोन का नया संस्करण आ जाएगा।
उसे बस एक बड़ा टूर्नामेंट जीतना है। वो DotA खेलता है, है ना? उसमें इनाम की रकम लाखों में होती है। Fortnite या Counter-Strike में भी यही हाल है। वो आराम कर सकता है, अपना खेल बदल सकता है या टेस्टर बन सकता है। उसके पास कई विकल्प हैं।
वह आश्वस्त नहीं दिखती। 'तुम बिल्कुल उसकी तरह बोलते हो,' वह बड़बड़ाती है। मुझे लगता है कि आप उससे मिलेंगे और उसे वापस जाने के लिए मनाएंगे?
‘मेरा दोस्त करेगा,’ वह जवाब देती है। ‘वह अब मुझसे बात नहीं करता। बस मेरी एक दोस्त से बात करता है। उसे उस पर क्रश है, इसलिए वह उसे समझाने की कोशिश करेगी।’
‘अपने ही भाई को हनी ट्रैप में फंसाना, वाह!’ मैंने कहा। ‘वो तुम्हारा भाई है, लेकिन मेरी सलाह है कि उसे वही करने दो जो वो करना चाहता है। इतना बड़ा फैसला लेने में वो बेवकूफ नहीं है। इससे ही उसकी गंभीरता का पता चल जाना चाहिए।’
‘वो गधा है,’ वो कहती है। ‘खैर, मैं इसके बारे में बात नहीं करना चाहती। घर पर भी हम ज्यादातर समय उसी के बारे में बात करते हैं। मुझे अपने बारे में बताओ। सिवाय इसके कि... तुम डेटिंग तो नहीं कर रहे हो?’
मुझे समझ नहीं आ रहा कि क्या मुझे उसे हमारी मुलाकातों के बारे में आने वाले दिवास्वप्नों के बारे में बताना चाहिए।
‘मैंने कोशिश की है,’ मैं जवाब देती हूँ। ‘लेकिन जब मैं किसी को अपने अतीत, आघात, अजीबोगरीब आदतों के बारे में पूरी जानकारी देती हूँ, तो वे भाग जाते हैं। और उन्हें भागना भी चाहिए।’
‘तुम इतने आकर्षक हो कि इससे कोई फर्क नहीं पड़ता।’
वह मेरी तरफ देखने के लिए मुड़ता है। उसके चेहरे पर हैरानी के भाव हैं।
‘रुको... क्या तुम... क्या यह पहली बार है... क्या तुम... क्या तुम मेरे साथ छेड़छाड़ कर रही हो? क्या यह पहली बार है जब आँचल मदन मेरे साथ छेड़छाड़ कर रही है?’
‘तुम भोले नहीं हो, तुम्हें पता है मैंने पहले भी तुम्हारे साथ फ्लर्ट किया है,’ वह कहती है। वह पलकें झपकाती है और उसकी पलकें नाटकीय अंदाज़ में नीचे झुकती हैं।
‘अगर स्कूटर पर तुम्हारे पीछे बैठकर तुम्हारे साथ आइसक्रीम कोन शेयर करना फ्लर्टिंग नहीं है, तो मुझे नहीं पता फ्लर्टिंग क्या होती है।’
'यह जानकर अच्छा लगा कि मैं सिर्फ कल्पना नहीं कर रही थी। वैसे, आप... मैं अपनी बात दोहरा रही हूँ। आप किसी फिल्म स्टार जैसी लग रही हैं। किसी ऐसी महारानी जैसी जो शाही कर्तव्यों से एक रात की छुट्टी लेकर आम लोगों के साथ समय बिताने आई हो।'

'तुम ये सब बातें कहते हो, दक्ष, और फिर चार साल के लिए गायब हो जाते हो।'
‘किसके विपरीत? किसी और के साथ आपके संपर्क में रहना और आपको देखना? नहीं, धन्यवाद।’
वह मुस्कुराती है और अपनी चाय की चुस्की लेती है।
आज उसने काले और सुनहरे रंग का सलवार सूट पहना है जो मानो उसी के लिए बना हो। आज शाम जब मैंने उसे दरवाजे पर देखा, तो मुझे ऐसा लगा जैसे मेरा कोई पुराना हिस्सा फिर से जीवित हो उठा हो।
ऐसा लग रहा था मानो मेरे आसपास की हवा में बिजली सी दौड़ गई हो।
पूरी शाम मुझे उसके होंठों पर टकटकी लगाए रहने और उनके साथ क्या करने की इच्छा हो रही है, इस सोच से खुद को रोकना पड़ा। मैं उसके पतले हाथों को देखता हूँ और सोचता हूँ कि उन्हें पकड़ना कैसा होगा।
उसके फोन पर बीप की आवाज आती है।
पिछले कुछ घंटों से मैंने आँचल के फोन की स्क्रीन पर मैसेज आते देखे हैं। वह जवाब देती है, फिर उसे स्वाइप करके डिलीट कर देती है।
‘विकी कैसी है?’
आँचल जानती है कि मैं क्या पूछ रही हूँ। मुझे विक्की की परवाह नहीं है। मैं जानना चाहती हूँ कि विक्की और आँचल का रिश्ता अब भी मज़बूत है या नहीं। उससे भी ज़्यादा, मैं उम्मीद कर रही हूँ कि उनका रिश्ता न रहे।
मैंने आगे पूछा, 'क्या आप सोच रहे हैं कि आपको इसका जवाब देना चाहिए या नहीं?'
'मैं सोच रहा हूँ कि आपने जो कुछ मुझे बताया है, उसके बाद... जो कुछ हुआ है, उसके बाद जीवन के बारे में शिकायत करना कितना अनुचित होगा।'
‘अरे, पिछली बार जब हम मिले थे, तब मैंने समीशा के बारे में खूब बुरा-भला कहा था, जबकि तुम्हारी जान खतरे में थी। सारी समस्याएं सापेक्ष होती हैं। तुम शिकायत करना शुरू कर सकती हो, मुझे कोई आपत्ति नहीं होगी।’
वह अपनी चाय की ओर देखती है और गहरी सांस छोड़ती है। उसके माथे पर झुर्रियां पड़ जाती हैं और वह बेहद दुखी दिखती है।
‘मैं अब विक्की के साथ नहीं रहना चाहती। लेकिन मैं उससे रिश्ता तोड़ भी नहीं सकती। उसके साथ यही सब चल रहा है... खैर, उस रिश्ते में अब गुस्से के सिवा कुछ नहीं बचा है।’
मुझे एक सुनहरा मौका दिख रहा है। मैं इसे पूरी तरह से भुनाना चाहता हूँ और उसे विक्की से छीन लेना चाहता हूँ।
‘तो फिर तुम दोनों साथ क्यों हो?’
‘...क्योंकि वह मुझसे नफरत करने के साथ-साथ मुझसे प्यार भी करता है। वह इसे कभी खत्म नहीं होने देगा।’
‘आंचल, तुम मेरी जान-पहचान की सबसे समझदार इंसान हो, लेकिन यह बेवकूफी वाली बात है। तुम किसी को भी कभी भी छोड़ सकती हो। तुम्हें कौन रोक रहा है? बस चली जाओ। लोग तो अक्सर ब्रेकअप करते रहते हैं।’

वह इस तरह सिर हिलाती है जैसे यह कोई विकल्प ही न हो। इससे मुझे बहुत गुस्सा आता है।
वह कहती हैं, 'मैं मां को इस सब से नहीं गुजारना चाहती। गौरव जो भी कर रहा है, पहले मैं करूंगी। यह उन दोनों के लिए बहुत ज्यादा हो जाएगा।'
तो क्या? तुम उससे आखिरकार शादी कर लोगी क्योंकि तुम अपने माता-पिता को यह नहीं बता सकती कि तुम उसे छोड़ना चाहती हो? इस वाक्य को अपने मन में दोहराकर देखो और समझो कि यह कितना हास्यास्पद है।
वह मुझे हाथ से इशारा करके जाने को कहती है। 'यह कितना बुरा हो सकता है? लोग अक्सर बिना प्यार वाली शादियों में रहते हैं। यह लगभग शादी की पहचान ही है: दुख,' वह कहती है।
'मैं असहमत हूँ। किसी से शादी करना सबसे पवित्र कार्य है। यह एक ऐसा वादा है जिसकी कोई तुलना नहीं,' मैंने उससे कहा। 'और जिस तरह से तुम इससे निपट रही हो, वह सबसे बुरा तरीका है।'
वह ऐसे कंधे उचकाती है जैसे यह कोई बड़ी बात ही न हो। 'यह तो बस एक कागज का टुकड़ा है।'
'ये तो साथ-साथ जीने की बात है,' मैं उसकी बेफिक्री देखकर हैरान होकर जवाब देती हूँ। 'तुम्हारे या तुम्हारे माता-पिता के अलग होने पर जो भी तुम्हें या तुम्हारे माता-पिता को बुरा-भला कहेगा, उससे कोई फर्क नहीं पड़ता। दुनिया आगे बढ़ती रहती है, आँचल। उन्हें इस बात से कोई लेना-देना नहीं कि हम अपनी जिंदगी में क्या करते हैं। और जिन्हें सच में परवाह है, उन्हें कोई आपत्ति नहीं होगी।'
मैं उसे मुझसे रिश्ता तोड़ने के लिए मजबूर करने की कोशिश कर रही हूं।
'उसने क्या किया?'
उसकी नजरें मुझसे मिलती हैं। 'ऐसा क्यों नहीं हो सकता कि यह मेरी गलती हो?' मुझे पता है कि आँचल कभी कोई गलती नहीं कर सकती। 'तुम्हें हर बात के लिए माफ़ कर दिया जाएगा।'
मैंने उसे धोखा दिया।
मैं उससे पूछना चाहता हूँ कि उसने किसके साथ धोखा किया, लेकिन ये मेरा काम नहीं है। मुझे जलन भी हो रही है और विकी और उस अनाम आदमी पर गुस्सा भी आ रहा है जिसके साथ उसने धोखा किया। उन्होंने उसके साथ रहने का मौका कैसे बर्बाद कर दिया?
मैंने उससे फिर पूछा, 'उसने क्या किया?'
'उसने वही किया जो लड़के करते हैं,' वह दृढ़ता से कहती है। 'जो होना था सो हुआ। मेरे पास उसे छोड़ने का विकल्प नहीं है। वह मेरी पूरी ज़िंदगी नहीं होगा, बस एक छोटा सा हिस्सा होगा। वैसे भी, मैं पहली ऐसी महिला नहीं हूँ जिसने किसी ऐसे व्यक्ति से शादी की हो जिसे वह पसंद नहीं करती। इसमें बड़ी बात क्या है?'
'यह तो सरासर बकवास है।'
आपको समझ नहीं आएगा।

‘बेशक, मुझे जीवन में जो वास्तव में महत्वपूर्ण है, वह कैसे मिलेगा?’
मेरा मतलब ऐसा नहीं था।
मुझे माफ करना, मेरा ऐसा करने का इरादा नहीं था।
वह मेरा हाथ छूती है। 'दक्ष, मैंने तुम्हें यह इसलिए नहीं बताया था कि तुम मेरे लिए इसे सुलझा दो। तुमने मेरी बात सुनी, यही काफी है। अब हमें इस बारे में बात करना बंद कर देना चाहिए। मैं संभाल लूंगी, यह कोई बड़ी बात नहीं है।'
'नहीं-'
‘अरे, शायद विक्की ब्रेकअप कर ले,’ वह मुस्कुराते हुए कहती है। ‘मैं उसे बहुत परेशान करती हूँ। बस कुछ ही समय की बात है जब उसे एहसास हो जाएगा कि वह दुनिया की सबसे बुरी गर्लफ्रेंड के साथ है।’
'तुम्हें एक अच्छे लड़के के साथ रहना चाहिए।'
मेरी निगाहें उस पर टिक गईं। एक लंबे अंतराल के बाद, उसने कहा, 'तुम्हारे जैसी?'
मेरा दिल ज़ोर से धड़क रहा है। उसके शब्द मेरे दिल को ऐसे लपेट लेते हैं जैसे सर्द सुबह में कंबल ओढ़ लेते हैं। मेरा शरीर गर्म हो जाता है।
मैं कोई अच्छा इंसान नहीं हूँ।
‘बेशक तुम नहीं हो, दक्ष। तुम तो सबसे बुरे इंसान हो।’
‘और तुम दुनिया की सबसे बुरी गर्लफ्रेंड हो,’ मैंने ऐलान किया। ‘हमारा रिश्ता स्वर्ग में बना है।’
तभी उसके फोन पर एक कॉल आती है। यह विक्की का फोन है।
'मैं अभी जाकर होटल से उसे वीडियो कॉल करूंगी, नहीं तो वह पागल हो जाएगा,' वह कहती है।
विकी और उसके एक मृत रिश्ते में बंधक बने होने का ख्याल आते ही मेरा पूरा शरीर कांप उठता है।
'आंचल। मैंने सोचा था कि मकसद उसे इतना गुस्सा दिलाना है कि वह चला जाए। मुझे उठकर उसे बताना चाहिए कि उसकी प्रेमिका मेरे साथ मेरे घर में है। मुझे उसे बताना चाहिए कि हमने अभी-अभी इतिहास का सबसे अविश्वसनीय चुंबन किया है।'
‘तुम उसे और क्या बताओगे?’ वह मुझसे नजरें मिलाते हुए पूछती है।
मैं उसके करीब जाती हूँ। 'मुझे लंबे समय से उसकी गर्लफ्रेंड पर बहुत बड़ा क्रश है।'
'दक्ष, अब तो इसे क्रश कहना भी मुश्किल है।'
उसकी आवाज़ का धीमा स्वर सुनकर मेरी धड़कन तेज़ हो जाती है। 'मैं इसे जुनून नहीं कहना चाहती।'
मैं जुनून को बर्दाश्त कर सकता हूँ।
मैं उसका चेहरा अपने हाथों में लेना चाहता हूँ, सचमुच देखना चाहता हूँ कि वह असली है या नहीं। मैं इस बात से व्याकुल हूँ कि वह कौन है, क्या है, उसका चेहरा, उसका शरीर, उसका हर अंग, उसके अस्तित्व का हर पल।
'वह मेरे माता-पिता को फोन करके वही सब बताएगा जो तुम उसे बताओगे।'
उसे वाकई मेरी मुट्ठी का सामना करना पड़ेगा।

‘मेरी टैक्सी दो मिनट में आ रही है, दक्ष।’
मैंने कहा, 'मैं आपको होटल तक छोड़ना चाहता हूं।'
'क्या आप कर सकते हैं?'
रब्बानी।
'अच्छा हुआ कि तुम ऐसा नहीं कर सकते, दक्ष। मैं नहीं चाहती कि तुम ऐसा करो,' वह आह भरते हुए कहती है।
'क्यों?'
'क्योंकि मैं अपने कमरे में अकेली हूं और मेरा कमरा टैक्सी स्टेशन से सिर्फ एक मिनट की पैदल दूरी पर है,' वह कहती हैं।
‘तुम मुझे ये कारण दे रहे हो कि मुझे तुम्हें क्यों छोड़ देना चाहिए, न कि क्यों नहीं छोड़ देना चाहिए।’
'हालात पहले से ही बहुत जटिल हैं।'
निमंत्रण और अस्वीकृति, दोनों एक साथ मिलने से मेरा दिल ज़ोर से धड़कने लगता है। मेरे भीतर एक हलचल मच जाती है। एक ऐसी इच्छा जो मैंने पहले कभी महसूस नहीं की थी। हम वहाँ खड़े एक-दूसरे को देखते रहते हैं, और कुछ पल के लिए, पीली रोशनी में जगमगाते उस ट्रैफिक सिग्नल पर हम दोनों ही अकेले होते हैं, मानो पूरा ब्रह्मांड गायब हो गया हो।
वह मेरी तंद्रा भंग कर देती है। 'रब्बानी प्यारी है। वह काफी बुद्धिमान होती जा रही है।' मुझे अचानक वर्तमान में खींच लिया जाता है। एक ऐसी वास्तविकता में जहाँ उसका एक बॉयफ्रेंड है और मेरा जीवन बिखरा हुआ है।
‘तुम्हें अब भी बच्चे नापसंद हैं, है ना?’
‘अब तो और भी ज्यादा,’ वह कहती हैं। ‘डिलीवरफूड के तीन उपाध्यक्ष मातृत्व अवकाश पर चले गए हैं। उन्हें विकास के बड़े अवसर से वंचित रहना पड़ेगा। यह मूर्खतापूर्ण है। हम यह कहने की कोशिश करते हैं कि हाँ, कुछ भी मायने नहीं रखता, लेकिन समान स्तर के लोग हमसे आगे निकल जाएंगे।’
हमारे बारे में न होने वाली बातचीत अनावश्यक, समय बिताने के लिए खोखले शब्दों जैसी लगती है। एक सफेद डिजायर उसके बगल में आकर रुकती है।
‘क्या मैं तुम्हें कल देख पाऊँगी, आँचल?’
'मुझे उम्मीद है,' वह मुझसे कहती है।
और कल क्या होगा?
वह कहती हैं, 'हम बदले हुए अतीत और ऐसे भविष्य के साथ खुद को फिर से प्रताड़ित करेंगे जिसका कोई अस्तित्व नहीं है।'
‘तो हम संभावनाओं के जाल में फंसकर खुद को परेशान करेंगे?’ मैंने कहा। ‘बढ़िया। मुझे इसकी आदत है।’
मैं उसे गले लगाने के लिए आगे बढ़ता हूँ, मेरा चेहरा उसके चेहरे से बस साँस लेने की दूरी पर है। वह ऊपर देखती है और मेरी नज़रें उससे मिलती हैं। उसकी आँखों में मुझे झिझक, उत्सुकता, क्रोध और प्रेम दिखाई देता है।

क्या मुझे गले लगाया जाएगा?
जैसे ही वह अपनी बाहों में मुझे भर लेती है, मुझे महसूस होता है कि उसका शरीर अपना आकार खोकर मेरे शरीर में विलीन हो रहा है। मैं उसे और कसकर पकड़ लेता हूँ। मैं नसों के जाल में फंसा हुआ हूँ। मैं सब कुछ महसूस करता हूँ। उसके शरीर के लिए एक गहरी भूख मेरे भीतर उमड़ती है। मैं उसे थामे रहना चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि उसके कपड़े उतर जाएँ, मैं उसकी त्वचा को अपनी त्वचा से छूना चाहता हूँ, अपनी जीभ उसकी जीभ से लगाना चाहता हूँ। मैं चाहता हूँ कि वह मेरी हो जाए।
मैंने उसे जाने दिया।
वह टैक्सी में बैठ जाती है।
'आप सही कह रहे हैं। यह यातना ही है,' मैंने स्वीकार किया।
'मैं तुम्हारे बारे में सोचूंगा, दक्ष।'
ड्राइवर ने मुझसे ओटीपी मांगा। उसने गाड़ी को गियर में डाला। उसने मुझे हाथ हिलाकर इशारा किया। मैं तब तक हाथ हिलाता रहा जब तक उसने रियर-व्यू मिरर से नज़र नहीं हटा ली। ऐसा लगा जैसे मेरा दिल सीने से निकाल लिया गया हो।
घर लौटकर मैं रब्बानी के बगल में बिस्तर पर लेट गई। वह मुझसे लिपट गई। मुझे बाबा के करवट बदलने की आवाज़ सुनाई दी। जब मैंने उनकी तरफ देखा, तो उनकी आँखें खुली हुई थीं। मैंने सबसे बुरे की आशंका जताई।
'बाबा?'
वह पलकें झपकाता है। वह जीवित है।
और फिर, वह मुस्कुराता है। वह नज़रें नहीं फेरता।
'सो जाओ, दक्ष,' वह आंखें बंद करने से पहले मुझसे कहता है।
हाँ, बिल्कुल।

OceanofPDF.com

17.

Aanchal Madan

मेरा शरीर आग की तरह जल रहा है।
मुझे अब भी उसके हाथों का स्पर्श अपने शरीर पर महसूस हो रहा है। उसकी उंगलियाँ कपड़े को चीरती हुई मेरी त्वचा पर महसूस हो रही थीं। जब उसका शरीर मेरे शरीर से सटा, तो मुझे नग्नता का अहसास हुआ। उसके शरीर का हर उभार मेरे शरीर से ऐसा लग रहा था मानो हमेशा से होना ही था। मैंने उसके हर इंच को अपने शरीर से महसूस किया और मेरा हर इंच प्यास से जल रहा था। वह मुझसे सटा हुआ था और मेरे अस्तित्व का हर कण उसमें विलीन होना चाहता था। इससे पहले जब भी मुझे किसी

ने छुआ था, शर्म ने मुझे घेर लिया था। कुछ गलत करने की शर्म, किसी गलत व्यक्ति के साथ होने की शर्म। लेकिन आज, मुझे इनमें से कुछ भी महसूस नहीं हुआ।
मेरा शरीर अब मेरा नहीं, बल्कि उसका था।
अगर वह मुझमें प्रवेश करता, तो मैं उसे ऐसा करने देती। अगर वह अपने हाथ अंदर डालता, अपनी उंगलियों को मेरी कमर पर फेरता, तो मैं उसे प्रोत्साहित करती। अगर वह मेरे कान के पास गहरी साँसें लेता, तो मैं आह भरती और उसे आगे बढ़ने के लिए कहती। अगर उसके होंठ मेरी गर्दन पर टिकते, तो मैं उसे और आगे बढ़ने के लिए आमंत्रित करती। अगर वह अपने उभार को मुझसे सटाता, तो मैं उसे पकड़कर और आगे बढ़ने के लिए उकसाती।
लेकिन उन्होंने ऐसा नहीं किया।
मैंने उसकी भारी साँसें महसूस कीं, मुझे अपने सीने से उसका धड़कता हुआ दिल महसूस हुआ, फिर भी उसने मुझे जाने दिया। और जब उसका शरीर मेरे शरीर से अलग हुआ, तो मुझे ऐसा लगा जैसे मेरे शरीर का एक हिस्सा मुझसे अलग हो रहा हो।
मुझे उसके साथ होटल वापस आने के ख्याल से ही कंपकंपी छूट गई थी। हम कमरे तक पहुँच ही नहीं पाते। मैं उसे लिफ्ट में ही खा जाती। मैं... मैं... मुझे नहीं लगता था कि मेरा शरीर इस इच्छा को सहन कर सकता है।
में उसे चाहता हूँ।
मैं यह सोचना बंद नहीं कर पा रही हूँ कि उसका शरीर मेरे शरीर से कैसे स्पर्श कर रहा था। दक्ष को अपने दिमाग से निकालने की मेरी कोशिश पूरी तरह नाकाम हो रही है। उसने मुझे चाहत भरी निगाहों से हाथ हिलाया था, तब से बीस मिनट बीत चुके हैं। और मैं अब भी सांस नहीं ले पा रही हूँ।
मैरियट के बाहर टैक्सी ड्राइवर ने मुझसे पूछा, 'अंदर?'
मैं मंजूरी।
जैसे ही मैं कार से उतरी, मेरी नज़र दो ऐसे चेहरों पर पड़ी जिन्हें मैंने बहुत दिनों से नहीं देखा था। विक्की और वनिता। लॉबी उनकी चीखों से गूंज रही थी।

OceanofPDF.com

18.

Aanchal Madan

लॉबी में मौजूद सभी लोग उनकी लड़ाई सुनकर स्तब्ध रह गए। वनिता चीख-चीख कर चिल्ला रही थी, विक्की मुंह से थूक उगलते हुए गरज रहा था। वनिता मुट्ठियां भींच रही थी, विक्की जबड़े भींच रहा था। रिसेप्शन के कर्मचारी उन्हें शांत करने की कोशिश

कर रहे थे। गार्ड उन्हें अलग करने की कोशिश कर रहे थे। कोई पुलिस को बुला रहा था। वनिता और विक्की एक-दूसरे से बार-बार यही कह रहे थे: 'उसे आने दो, उसे आने दो!'
वे मेरे बारे में चिल्ला रहे हैं।
'तुम यहाँ क्या कर रहे हो!' वनिता विक्की पर चिल्लाती है।
'तुम यहाँ क्या कर रहे हो?' विक्की चिल्लाकर जवाब देती है।
दोनों ने मुझे एक ही समय पर देख लिया। मेरे पैरों तले ज़मीन कांप उठी। मेरा दिमाग सुन्न हो गया। बीस जोड़ी आँखें मेरी ओर मुड़ गईं। मैं, जिसने एक अनजान लड़के की जन्मदिन पार्टी में रात बिताई। विकी, जिसकी आँखें लाल धधक रही थीं, मेरी ओर तेज़ी से बढ़ा। वनिता, अपने लंबे पैरों और तेज़ कदमों के साथ, उससे आगे निकल गई और मेरे और उसके बीच खड़ी हो गई।
'वो कौन था?' वो दहाड़ता है। 'वो कौन है बे? कौन था बहनचोद!'
मेरा दिमाग चकरा रहा है। मेरे घुटनों में जान नहीं बच रही। मेरा दिल इतनी ज़ोर से धड़क रहा है कि मुझे अपने विचार भी सुनाई नहीं दे रहे। मेरी ज़िंदगी खत्म हो गई है। सब कुछ समाप्त हो गया है। मानो मैं मर ही गया हूँ।
'मुझसे दूर हट जा, कमीने!' वनिता चीखती है।
'आपको इसे बाहर ले जाना होगा,' फ्रंट डेस्क मैनेजर ने विनती की।
'गौ...रव...मैं गौरव को ढूंढ रहा था,' मैं बुदबुदाता हूँ।
विकी की आँखों में गुस्से की आग भड़क रही है। 'मैं बेवकूफ हूँ क्या! अगर तुम उसके साथ थे तो उसे फोन करो! उसे फोन करो!'
'अपनी भाषा पर नियंत्रण रखो!' वनिता उस पर चिल्लाई। 'चलो कमरे में चलते हैं।'
विक्की वनिता की ओर देखता है। 'अपनी रंडी से गौरव को बुलाने के लिए कहो। बोल साली को!'
'वाह, विक्की, तुमने तो कमाल कर दिया। यहाँ तमाशा करने का कोई मतलब नहीं है,' वनिता ने बहस करते हुए कहा। 'चलो कमरे में चलते हैं और बात करते हैं।'
'वो मेरे सामने झूठ बोल रही है! बहन की लौड़ी, मुझे पता था कि तुम कभी नहीं बदलोगी। मम्मी ने मुझे बताया था कि तुम्हारे जैसी बदचलन औरतें कभी नहीं बदलतीं!'
'हां, वह झूठ बोल रही है,' वनिता ने अपनी आवाज धीमी करते हुए जवाब दिया। 'लेकिन चलो इस बारे में यहां बात नहीं करते।'
'वनिता, मैं झूठ नहीं बोल रहा—'
वनिता ने मेरी बात काट दी। 'हो गया, उसे पता चल गया है कि तुम झूठ बोल रही हो। चलो अब यहीं से आगे बढ़ते हैं।'
'सर, मैडम,' बेचारे मैनेजर ने बीच में ही टोकते हुए कहा। 'आप लोगों को जाना होगा।'
विक्की मेरी तरफ घूरती है और धीमी आवाज़ में बड़बड़ाते हुए कहती है, 'रंडी, चलें? या मैं तुम्हारे ब्रा में कुछ पैसे ठूंस दूं? या तुम्हारी माँ के?'

‘बस करो!’ वनिता ने चेतावनी दी।
‘मुझे पता था, आँचल, मुझे पता था कि तुम ऐसा नहीं करोगी—’
'यहाँ नहीं,' वनिता ने विक्की को चुप करा दिया।
मैंने चाबी का कार्ड खो दिया है,’ मैं बुदबुदाया।
वनिता मेरा हाथ पकड़कर मुझे रिसेप्शन तक ले जाती है। वहाँ मौजूद लड़की मेरे चेहरे को दया और उलझन भरी नज़रों से देखती है और हमें कमरे की चाबी का कार्ड देती है। हम लिफ्ट से अपने कमरे में जाते हैं। वनिता मुझे कंधों से पकड़े हुए धीरे-धीरे कमरे की ओर बढ़ती है। दरवाज़े पर विक्की वनिता को अंदर जाने से रोक देता है।
‘यह हमारे बीच की बात है। तुम यहाँ क्या कर रहे हो?’ विक्की ने आदेश दिया।
‘मैं कहीं नहीं जा रही। तुम लोग जो भी बात करोगे, वो मेरे सामने ही होगा,’ वनिता ने गुस्से से जवाब दिया। ‘और विक्की, अगर तुमने मुझे एक बार और छुआ, तो मैं तुम्हारा भी संजोग बना दूंगी।’
विक्की वनिता से दूर हट जाता है। उसका चेहरा सख्त हो जाता है।
‘क्यों? तुम्हारे सामने क्यों? तुम कौन हो?’ वह गुस्से से पलटकर बोला। ‘ओए आँचल, उसे जाने के लिए कहो वरना—’
‘या फिर क्या? तुम क्या करोगे? मुझे बताओ, क्या?’
मेरा गला सूख गया है, दुनिया हल्की-हल्की घूम रही है। मेरे मुंह से एक भी शब्द नहीं निकल रहा।
ऐसा लग रहा है जैसे मैं अपने शरीर से बाहर निकल गई हूँ। मैं यहाँ नहीं हूँ। मेरा शरीर ही यहाँ है, और मैं उसे ऊपर से देख रही हूँ। मेरा असली रूप भविष्य में है। हम विक्की के घर में हैं, जहाँ विक्की माँ-पापा को बता रहा है कि मैं मुंबई में अनजान आदमियों के साथ संबंध बना रही थी। माँ बाबा से कह रही हैं कि काश उनकी मृत्यु प्रसव के दौरान ही हो गई होती। वनिता कार्ड स्वाइप करती है। कमरा खुलता है। मैं कमरे के एक कोने में चली जाती हूँ। मैं विक्की को देख नहीं पा रही हूँ। वह ऐसा लग रहा है जैसे कुछ भी कर सकता है...
‘वह कौन था? मुझसे झूठ बोलने की हिम्मत मत करना,’ विक्की गुस्से से बोली।
मैं बोलने की कोशिश करता हूँ लेकिन मेरे मुँह से शब्द नहीं निकल पाते।
‘बताएगी रंडी या तुम बस अपने पैरों को देखते रहोगे?’
‘इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि वह कौन था,’ वनिता जवाब देती है। ‘हम सब जानते हैं कि तुम उसके माता-पिता से वही कहोगे जो तुम्हारे मन में आएगा।’
‘मैं तुमसे पूछ रही हूँ!’ विक्की गरजते हुए बोली। ‘क्या अब तुम बहरी हो गई हो? क्या उसने तुम्हारे कान में भी ज़बरदस्ती की?!’
‘दक्ष...’ वनिता कहती है। ‘वही लड़का है जिससे वह अंडमान में मिली थी।’
मैं वनिता को भयभीत होकर देखती हूँ। अब लड़ने का नहीं, भीख मांगने का समय है। उससे माफ़ी मांगो। विकी के साथ तो यही तरीका काम करता है। जब मैं ऊपर देखती हूँ, तो विकी मेरी तरफ बढ़ता हुआ दिखाई देता है। उसका चेहरा मुझसे कुछ ही इंच दूर है। मैं पीछे हट जाती हूँ। उसकी दुर्गंधयुक्त साँसें मेरी तरफ आती हैं। उसके नुकीले

दाँतों से लार की बूँदें किसी पागल कुत्ते की तरह लटक रही हैं। मेरे अंदर एक अजीब सा डर बैठ जाता है।
‘ये कौन है? तुमने इसके साथ क्या किया!? क्या तुमने इसके साथ शारीरिक संबंध बनाए? मुझे बताओ!’
वनिता आकर मेरे बगल में खड़ी हो जाती है। वनिता दोहराती है, 'तुम्हें इसका जवाब देने की ज़रूरत नहीं है। वो वैसे भी कुछ न कुछ बकवास करेगा। तो फिर क्या फर्क पड़ता है? कुछ मत कहो, आँचल!'
‘मदरचोद!’ वह चिल्लाता है और चला जाता है।
वह गोल-गोल चक्कर लगाने लगता है। वह मेज से फलों की प्लेट उठाता है और उसे ज़मीन पर फेंक देता है। कांच टूट जाता है। कांच के छोटे-छोटे टुकड़े वनिता और मुझे लगते हैं।
वह हमारी ओर मुड़ता है, 'बहनचोद! क्या तुम लोग पागल हो गए हो?' वह एक और प्लेट उठाता है। 'मुझे बताओ वरना अगली प्लेट तुम्हारे मुंह पर होगी!'
वनिता मेरे और उसके बीच खड़ी है।
‘ओये!’ वह गुस्से से चिल्लाया।
‘मुझसे पंगा मत लो,’ वनिता ने चेतावनी दी। ‘तुम बिलकुल तुच्छ व्यक्ति हो!’
‘बस करो, वनिता, कृपया बोलना बंद करो,’ मैं आखिरकार बुदबुदाती हूँ। ‘तुम इसे और बिगाड़ रही हो। कृपया, कृपया जाओ। मैं संभाल लूँगी।’
'उसकी बात सुनो, यह हम दोनों के बीच की बात है!'
‘अरे, प्लीज़!’ वनिता कहती है। ‘सुनो, विक्की। ऐसा होना ही था। उसे किसी के साथ सोना ही था।’
‘चुप कर, बहन की लौड़ी!’ विक्की चिल्लाता है। ‘कोई तुमसे बात नहीं कर रहा!’
वनिता ने अपने हाथ हवा में उठा दिए। 'वह तुमसे प्यार करती है, लेकिन तुम दोनों के बीच का यौन संबंध बहुत ही भयानक था। उसने मुझे इसके बारे में सब कुछ बताया।'
‘वनिता!’ मैं चीख पड़ी।
विक्की ने मेरी तरफ मुड़कर देखा, उसकी आँखें लाल थीं। 'तुमने उसे क्या बताया?'
‘सब कुछ, उसने मुझे सब कुछ बताया, विक्की,’ वनिता ने जवाब दिया। ‘कि तुम उससे जबरदस्ती ओरल सेक्स करवाते हो! कि कभी-कभी जब तुम्हारा लिंग खड़ा नहीं होता तो तुम उसे थप्पड़ मार देते हो।’
ऐसा बिल्कुल नहीं है!
मुझे चक्कर आ रहे हैं। मैं बिस्तर पर बैठ जाती हूँ।
वनिता हंसती है और विक्की के गुप्तांग की ओर इशारा करते हुए कहती है, 'उसने मुझसे कहा था कि रजत का लिंग बेहतर और मोटा है! वह तुमसे झूठ बोलती है कि रजत का लिंग छोटा है, लेकिन मैं तुम्हें बता दूं, उसने तस्वीरें भेजी हैं और वह बहुत बड़ा है!'
‘तुम ये क्या बकवास कर रहे हो!’ विक्की दहाड़ते हुए बोली।
‘बस करो, वनिता!’ मैं चिल्लाई।

‘उसे जाने के लिए कहो!’ विक्की गुस्से से बोली।
वनिता ने मुझे इशारा करके रोका। ‘और तुम तो बहुत छोटे हो, विक्की!’ उसने मुझसे कहा। उसने मुझसे कहा कि इसीलिए तुम्हें इरेक्शन नहीं होता।’
‘BEHENCHOD!’ screams Vicky. ‘BATAU TUJHE KISKA CHHOTA HAI. WILL FUCK YOU AND YOUR ENTIRE FAMILY!’
‘बेशक वो एक लिंग के पीछे ही भागी!’ वनिता हंसते हुए कहती है।
विक्की, जिसका चेहरा आंसुओं से भीगा हुआ था, मेरी तरफ देखता है। उसके अंदर एक ऐसा गुस्सा है जो मैंने पहले कभी नहीं देखा। वह अपनी मुट्ठी भींच लेता है।
‘मुझसे दूर हट जाओ, विक्की!’ वनिता ने चेतावनी दी।
‘क्यों? तुम क्या करोगे? हां? तुम मुझसे लड़ोगे? मां छोड़ दूंगा तेरी!’
'भाड़ में जाओ,' वनिता ने शांत भाव से कहा। 'तुम निकम्मे हो।'
विकी वनिता पर झपट पड़ा। मेरे मुँह से एक खामोश चीख निकल गई। उसने अपना हाथ उठाया। थाली उसके हाथ में हवा में थी, और धीरे-धीरे, दर्दनाक ढंग से वनिता के चेहरे की ओर बढ़ रही थी। मैं चीख पड़ी।
'नहीं!'
वह थाली को वनिता के सिर पर दे मारता है, जो ठीक समय पर अपना हाथ ऊपर उठा लेती है। मेरे शरीर में भय की लहर दौड़ जाती है। मेरे अंदर कुछ टूट जाता है। ऐसा लगता है जैसे मेरा दिमाग, मेरा दिल, मेरा सब कुछ कुचला जा रहा है, टूट रहा है, घुल रहा है और फिर से जोड़ा जा रहा है।
असहनीय पीड़ा है... लेकिन गुस्सा भी है।
वनिता के हाथ से खून बह रहा था। मैं कुछ पल के लिए स्तब्ध रह गया, फिर होश में आया। मैं फिर से अपने पैरों पर खड़ा हो गया। वनिता लड़खड़ाकर गिर पड़ी थी। मैं उसकी ओर दौड़ा, लेकिन उसके पास पहुँचने से पहले ही विक्की ने मुझे पीछे से पकड़ लिया और दीवार की ओर धकेल दिया।
‘विकी!’ मैं चिल्लाई।
मुझे इस समय पता है कि चाहे कुछ भी हो जाए, विक्की को जाना ही था।
मैं झट से खड़ा हो गया। मैं उसे मार गिराना चाहता था, उस कमीने को जान से मार देना चाहता था। मैं दांत पीसते हुए उस पर टूट पड़ा, उसे अपने हाथों से चीर-फाड़ देना चाहता था, बस उसे जान से मार देना चाहता था, लेकिन विक्की बहुत फुर्तीला था। उसने मुझ पर झपट्टा मारा और उसकी मुट्ठी मेरे जबड़े पर लगी। मुझे लगा जैसे मेरे दांत टूट गए हों, मेरा दिमाग चकरा गया और मैं ज़मीन पर गिर पड़ा। मैंने अपनी आँखें खोलीं और मुझे सिर्फ विक्की का पैर दिखाई दिया, जो मेरे चेहरे से कुछ ही इंच दूर था।
फिर, वह अचानक पीछे की ओर खिंच जाता है। वनिता की बाहें उसकी कमर के चारों ओर कसकर लिपटी हुई हैं।
‘बस बहुत हो गया!’ वह युद्धघोष की तरह दहाड़ती है।

वनिता ने विक्की को दीवार पर पटक दिया। उसका कंधा दीवार से टकराया। कमरे में एक भयानक आवाज़ गूंजी। विक्की के मुंह से एक अमानवीय चीख निकली। वनिता ने अपना पैर उसके कंधे पर रखा और उसे ज़ोर से दबाया। एक बार, दो बार, तीन बार। धड़। धड़। धड़। उसकी पूरी ताकत उसके शरीर पर पड़ रही थी। वार तेज़ और निर्णायक थे। विक्की की चीखें कमरे में गूंज उठीं। उसने उठने की कोशिश की लेकिन वापस बैठ गया। उसने अपना कंधा पकड़ लिया जो अपनी जगह पर अजीब तरह से हिल रहा था।
वह दर्द से चीख उठता है।
वनिता ने एक बार फिर अपना पैर उसके टूटे हुए कंधे पर पटक दिया।
‘उठने की कोशिश मत करो, विक्की,’ वनिता ने धमकी देते हुए कहा। ‘तुम दोनों कंधों के साथ मुझसे लड़ नहीं सकते, तो एक कंधे के साथ कोशिश भी मत करो!’
'बहनचोद!' वह दर्द से चिल्लाता है।
वनिता ने आंखें घुमाईं। 'तुम लोगों को गाली-गलौज से क्या दिक्कत है? एक टूटा हुआ कंधा काफी नहीं है क्या?'
‘मैं तुम्हें नष्ट कर दूंगा!’ वह मुझे धमकी देता है।
वो करेगा। मुझे पूरा यकीन है। आज वो आखिरी दिन है जब मैं सचमुच किसी तरह की खुशी महसूस करूँगी। लेकिन उसे बेबस और दर्द में देखकर मुझे एक अजीब सी भावना हो रही है। मैं अपने डरे हुए दिल में उस भावना को परखती हूँ और जानती हूँ कि वो क्या है: वो बदला है।
यह अच्छा लग रहा है।
वनिता विक्की पर हंसती है। 'तुम तो किसी बुरे खलनायक की तरह लग रहे हो, विक्की। तुम ऐसा कुछ नहीं करने वाले।'
वह कमरे के उस पार जाकर अपना फोन उठाती है, जो हमारे सामने रखी मेज पर सीधा खड़ा है। वह उसे पहले विक्की को और फिर मुझे दिखाती है।
वह आगे कहती है, 'तुमने हम पर हमला किया। और मेरे पास सबूत हैं। बात खत्म। तुम्हारा काम तमाम।'
‘कौन परवाह करता है!’ वह कहता है, उसके शब्द दर्द भरी चीखों में बदल जाते हैं।
‘तुम्हारे मालिक परवाह करेंगे, पुलिस परवाह करेगी, मेरे माता-पिता तो ज़रूर परवाह करेंगे,’ वनिता ने बड़ी सहजता से कहा। ‘तुम्हें क्या लगता है कि मैं तुम्हें अपने सिर पर प्लेट तोड़ने दूंगी? मैं तुम्हारे जैसे कद-काठी के आदमियों को नींद में भी गिरा सकती हूँ, विक्की। मैं इसे दोहराऊंगी, विक्की। तुम कुछ भी नहीं हो।’
‘लेकिन तुम...’ वह गुस्से से विरोध करता है, दोबारा उठने की कोशिश करता है लेकिन असफल हो जाता है।
वनिता कंधे उचकाती है और नकली अंदाज़ में अपने हाथ पोंछती है। 'सब खत्म हो गया, विक्की।'
अभी जो कुछ हुआ उसकी गंभीरता समझ में आने लगती है। बस यही है। यही है आजादी। विक्की को भी इसका एहसास हो जाता है।

‘यह ठीक नहीं है!’ वह गरजते हुए बोला।
वनिता हंस पड़ी. 'वह प्यारा है।'
मैं झट से अपने पैरों पर खड़ा हो गया। मेरे पूरे शरीर में खून दौड़ गया। मुझे राहत मिली। ऐसा लगा जैसे मेरा पुनर्जन्म हुआ हो।
‘विकी।’
विक्की मेरी तरफ देखने के लिए मुड़ता है।
मैंने आगे कहा, 'तुम मेरे साथ जो कर रहे थे, वह उचित नहीं था। हमारे बीच कुछ भी उचित नहीं था। संजोग का मेरे माता-पिता के पास जाना, हमारी सारी संपत्ति को त्याग देना। यह उचित नहीं था।'
‘देखो, आखिरकार किसे बोलने का मौका मिला!’ वनिता खुशी से ताली बजाते हुए चिल्लाई। ‘आखिरकार। मुझे लगा था कि दोपहर तक इंतजार करना पड़ेगा।’
‘चुप रहो, वनिता,’ मैंने कहा।
मैं चलकर उस जगह जाता हूँ जहाँ विक्की बेसुध होकर बैठी है।
'मेरे पास मत आओ,' वह एक डरे हुए, घायल जानवर की तरह कहता है।
मैं उसके बगल में बैठ जाती हूँ। जब मैं उसका कंधा छूने के लिए हाथ बढ़ाती हूँ तो वह थोड़ा सहम जाता है। मैं उसके कंधे को हल्के से छूती हूँ। 'क्या दर्द हो रहा है?' मैं उससे पूछती हूँ।
वह सिर हिलाता है, उसकी आँखों में आँसू और दर्द उमड़ आते हैं। 'बेशक दर्द होता है,' वह गुर्राता है।
गुस्सा, आक्रोश, शर्म, पछतावा—ये सब मेरे शरीर से निकल रहे हैं। बस वो है—वो लड़का जिससे मैं स्कूल में मिली थी, जिससे मुझे प्यार हो गया था। और बस मैं हूँ। ये सब इतना कैसे बदल गया? ये सब इस मुकाम तक कैसे पहुँच गया? पूरी ज़िंदगी मैंने बड़ा होना चाहा, एक समझदार इंसान बनना चाहा, अपनी ज़िंदगी की बागडोर अपने हाथों में लेना चाहा... अब मुझे एहसास हो रहा है कि ये सब कुछ ज़्यादा ही था।
मैं उसकी आँखों में देखती हूँ। ‘जान, मेरी तरफ देखो, प्लीज़,’ मैं विक्की से कहती हूँ। ‘तुम्हें पता है अभी क्या हुआ है। सब खत्म हो गया है। हमारे बीच जो कुछ भी था, वो खत्म हो गया है, बस सब समाप्त हो गया है।’
विक्की मुझसे नज़रें फेर लेता है। मैं धीरे से उसका चेहरा पकड़कर उसे मेरी तरफ देखने के लिए मजबूर करती हूँ। उसकी आँखों में आंसू हैं। बहुत दिनों बाद मुझे उसके लिए बुरा लगता है।
‘क्या तुम लोगों ने इसकी योजना बनाई थी?’ वह टूटे हुए स्वर और मनोबल के साथ पूछता है। ‘तुम्हें कैसे पता चला कि मैं आऊंगा? तुमने इसकी योजना कैसे बनाई?’
हमें पता नहीं था कि आप आएंगे।
‘मैं तुम्हें सरप्राइज देने आया था।’ उसकी आँखों से आँसू बहने लगे। ‘यह सब खत्म नहीं हो सकता,’ वह एक खोए हुए पिल्ले की तरह हकलाते हुए बोला।
उसकी टूटी हुई हालत में ही मुझे उसके लिए सबसे अधिक प्रेम महसूस होता है, जो मैंने लंबे समय से महसूस नहीं किया था।

‘मैंने रजत के साथ गलती की,’ मैंने स्वीकार किया। ‘और मुझे इसके लिए बहुत-बहुत खेद है। क्योंकि मैंने उस लड़के को दुख पहुँचाया जिसे मैं सबसे ज्यादा प्यार करती थी, जो मेरा जान था। लेकिन तुमने भी गलतियाँ की हैं, विक्की। तुम्हें यह समझना होगा, जान। ये... तुम ही थे... तुमने ही हमें पहले तोड़ा।’
'मैं तुम्हारा नहीं हूँ-'
‘विकी, विकी, विकी, मेरी तरफ देखो। मेरी बात सुनो,’ मैंने उसका हाथ अपने हाथों में ले लिया। यह आखिरी बार था जब मैं उसे थाम रही थी।
'नहीं।'
‘प्लीज़, इसे हम सबके लिए आसान बना दो। अगर इससे कुछ आसानी होती है, तो मैंने रजत के अलावा किसी और लड़के को हाथ नहीं लगाया। लेकिन मैंने तुमसे झूठ बोला है, मैंने तुम्हारा दिल तोड़ा है, और तुमने मेरा। हमने एक-दूसरे का अपमान किया है। यह किसी के साथ सोने से भी बदतर है, जान।’
महीनों में पहली बार, वह बिना नफरत के मेरी तरफ देखता है। 'आप हमसे क्या करवाना चाहते हैं?'
वनिता ने हताशा में अपने हाथ ऊपर उठा लिए। 'क्या यह स्पष्ट नहीं है?'
‘मुझे माफ कर दो,’ विक्की धीरे से बुदबुदाती है।
‘जान,’ मैंने विक्की से कहा। और फिर मैंने विक्की से वो आखिरी झूठ बोला जो मैं कभी बोलूंगी। ‘सच कहूं तो, तुम्हारा लिंग मैंने आज तक जितने भी लिंग देखे हैं, उनमें सबसे बड़ा है। अब तक का सबसे बड़ा।’
वनिता अपनी आँखें घुमाती है, लेकिन विक्की... विक्की अपने आँसुओं के बीच से मुस्कुराता है।

OceanofPDF.com

19.

Daksh Dey

मैंने रब्बानी को चेतावनी देते हुए कहा, 'अब और बात मत करो। अपना सैंडविच खत्म करो। और अगर तुमने अपना लंच खत्म नहीं किया, तो देखो मैं क्या करूंगा।'
‘तुम क्या करोगे?’ रब्बानी ने चमकती आँखों से पूछा।
‘प्लीज इसे खा लीजिए। मैं सुबह यूं ही नहीं उठती,’ मैं जवाब देती हूं, यह महसूस करते हुए कि मैं वही वाक्य दोहरा रही हूं जो मम्मी कहा करती थीं।
‘दादा?’
‘बातें करना बंद करो और खाना खाओ, रब्बू।’
वह मेरी आस्तीन खींचती है।

‘नहीं,’ मैंने उससे कहा।
वह फिर से मेरी आस्तीन खींचती है।
‘क्या?’ मैंने झट से कहा।
‘वहाँ! बाबा!’ वह कहती है और बाबा की दिशा में इशारा करती है।
बाबा बिस्तर पर बैठे हैं।
वह न तो गाली दे रहा है और न ही कराह रहा है।
वह बिस्तर के किनारे की ओर धकेलने की कोशिश कर रहा है। मैं उठने ही वाली थी कि उसने मेरी तरफ देखा और हाथ उठाया। उसने इशारे से कहा कि वह खुद ही उठ जाएगा।
कुछ बदल गया है।
उसकी आँखें, उसका दिमाग, सब कुछ ठीक है। उसे दर्द निवारक दवा लिए काफी समय हो गया है। मुझे एहसास हुआ कि मैं आखिरी खुराक देना भूल गई थी। आमतौर पर, आधी रात को दर्द से उसकी नींद खुल जाती है।
वह अपनी बैसाखी उठाता है। दर्द भरी कराह के साथ, वह खुद को संभालता है। महीनों में यह पहली बार है कि उसे मुझसे, जगत या ज़ीनत से किसी मदद की ज़रूरत नहीं पड़ी है। वह छोटे-छोटे, दर्द भरे कदमों से हमारी ओर लंगड़ाते हुए आता है।
‘सुप्रभात,’ वह हमसे कहता है। वह एक कुर्सी खींचता है। ‘तुम दोनों को हर रोज सैंडविच नहीं खाने चाहिए। भारतीय शरीर प्रोसेस्ड आटे से बने खाद्य पदार्थों के लिए नहीं बने हैं।’
एक साल से भी ज़्यादा समय में उसने हमसे जो सबसे लंबा वाक्य बोला है, वह यही है। और महीनों बाद एक पिता अपने बच्चे से पहले शब्द के रूप में प्रतिक्रिया के अलावा और क्या चुनेगा?
रब्बानी बाबा का हाथ अपने हाथों में लेकर चूमती है। बाबा रब्बानी के चेहरे को सहलाते हैं और वह उनकी गोद में पिघलकर एक छोटी सी झील सी बन जाती है। रब्बानी कितनी सरल है! बिल्कुल एक पिल्ले जैसी। पिता से थोड़ा सा प्यार पाकर वह अपनी सारी निराशा और अतीत की सारी शिकायतें भूल जाती है।
बाबा मेरी तरफ देखते हैं। जब वे मुस्कुराते हैं, तो उनके माथे पर गहरी लकीरें बन जाती हैं। वे सिर हिलाते हैं। उनका सिर हिलाना ही उनकी माफी है। यहाँ तक कि मेरे पास पहुँचने के लिए उन्होंने जो सात लड़खड़ाते कदम उठाए, वे भी एक माफी ही थे। और मेरे लिए इतना ही काफी है। शायद मैं रब्बानी से बहुत अलग नहीं हूँ।
‘मैं अब यहाँ हूँ,’ वह आत्मविश्वास से भरी और गहरी आवाज़ में कहता है।
जब मैं रब्बानी की उम्र का था, तब उनकी आवाज़ सुनकर मुझे बहुत डर लगता था। अब यह सुनकर राहत मिलती है। उनकी आवाज़ में मौजूद खुरदुरापन और आत्मविश्वास मुझे स्थिति की सच्चाई बता देते हैं। वे फिर से माता-पिता बन गए हैं। मैं बच्चा बन गया हूँ। हमें इन्हीं भूमिकाओं में वापस लौटना होगा।
‘डक—’ दर्द के कारण उसके शब्द बीच में ही रुक गए।
‘क्या आपको दवाइयाँ चाहिए, बाबा?’

वह अपना सिर हिलाता है। 'मैं इनसे तंग आ चुका हूँ, है ना? मैं इन्हें आज ही फेंक दूँगा। दवाइयों के नुस्खों के साथ।'
'क्या दर्द हो रहा है, बाबा?' रब्बानी ने पूछा।
वह रब्बानी का चेहरा अपने हाथों में थाम लेता है। 'हाँ, रब्बू, पर इतना भी नहीं।' वह मेरी तरफ देखता है। 'मुझे भूख लगी है।'
मेरे उठने से पहले ही रब्बानी उठ जाता है। हम दोनों मिलकर उसके लिए दूध और कॉर्नफ्लेक्स का कटोरा लाते हैं। वह मुंह बनाकर एक चम्मच जबरदस्ती पी जाता है। फिर दूसरा। उसे उल्टी जैसा महसूस होता है, लेकिन वह खाता रहता है। उसकी मांसपेशियां तन जाती हैं, लेकिन वह खाता रहता है। उसका दर्द और संघर्ष हम सब में समा जाता है; यह हवा में घुल जाता है, दीवार पर दाग छोड़ देता है। यह उजाले से पहले का अंधेरा है। वह कटोरा खत्म होने तक नहीं रुकता।
फिर वह मुस्कुराता है। एक ऐसी मुस्कान जिसमें दर्द नहीं है। वह रब्बानी की ओर देखता है। 'मैं आज तुम्हें स्कूल छोड़ दूंगा।'
'बाबा—'
वह मुझे बीच में ही रोक देता है। 'तुम्हें काम पर ध्यान देना चाहिए, दक्ष, और किसी चीज पर नहीं,' वह मुझे आदेश देता है।
पिता के सामने बेटों की तरह मैं सिकुड़ जाता हूँ। हमारे बीच बीतते हर पल के साथ ऐसा लगता है जैसे वो और बड़े, लंबे और ताकतवर होते जा रहे हैं। बाबा मेरी जगह ले लेते हैं। मैं सिकुड़ जाता हूँ। मैं इसलिए सिकुड़ जाता हूँ क्योंकि मुझे हर जगह मौजूद रहने, हर काम करने की ज़रूरत नहीं है। मुझे हल्कापन महसूस होता है। जैसे मैं फिर से तैर सकता हूँ। ऐसा लगता है जैसे बाबा नाश्ता नहीं कर रहे हैं, बल्कि मेरे पैरों में जकड़ी उन बेड़ियों को आरी से काट रहे हैं जिनसे गहरे, ज़ख्म बन गए हैं।
'दक्ष,' वह डांटते हुए कहता है। 'तुम्हारा वजन कम हो गया है। तुम तीस साल के लगते हो।'
यह विडंबना मुझे मुस्कुराने पर मजबूर कर देती है। मेरे पिता, जिनका कभी तोंद निकला हुआ था और अब वे सिर्फ हड्डियों पर टिकी त्वचा और अधमरे हैं, मुझे पतला और बूढ़ा कह रहे हैं।
मैंने उसकी कटी हुई टांग की ओर इशारा करते हुए कहा, 'तुम्हारा वजन भी कम हो गया है।'
'अब तुम्हें थप्पड़ पड़ेगा,' उसने पलटवार किया।
मैं माफी नहीं मांगता। वह भी माफी नहीं मांगता। पिता और पुत्र जो काम नहीं कर सकते, उनमें से एक है माफी मांगना। अपनी पत्नियों से, अपने बच्चों से। उनकी माफी कार्यों में, दयालुता के छोटे-छोटे कामों में झलकती है।
बाबा चेहरा धोने के लिए उठते हैं। इस बार वे मुझे उनकी मदद करने देते हैं।
'दक्ष,' वह कहता है। 'तुम्हारी माँ... उसे दोष मत दो।'
'मैंने ऐसा कभी नहीं किया, बाबा,' मैंने झूठ बोला।
'उसने हमें बचाने की कोशिश की,' वह बुदबुदाता है। 'क्या उस लड़की ने कल यही

नहीं कहा था? आँचल, यही उसका नाम है ना? चलो उसकी बात मान लेते हैं।'
ऐसा लगता है जैसे मेरे पास विकल्प है। अगर वह दिन के बीच में ही कह दे कि रात हो गई है, तो मैं उस पर विश्वास कर लूंगा।

OceanofPDF.com

20.

Daksh Dey

गौरव को एक परिपक्व व्यक्ति, बीस वर्षीय युवक के रूप में सोचना अजीब लगता है। जब मैं उससे पहली बार मिला था, तब वह सोलह वर्ष का था, मुझसे केवल दो साल छोटा, लेकिन मेरे लिए वह बिल्कुल नासमझ, अधमरा सा था। यह सोचना पागलपन है कि वह गेमिंग में करियर बनाने के लिए घर से भागने लायक उम्र का हो गया है। मैं मुंबई के बाहरी इलाके में एक पुरानी अपार्टमेंट इमारत के बाहर खड़ा हूँ, जहाँ कथित तौर पर वह रहता है। उसे ढूंढना आसान था। मैंने मुंबई गेमिंग रेडिट थ्रेड्स में खोजबीन की और मुझे एक ऐसा लड़का मिला जिसने मुंबई के गेमिंग समुदाय में शामिल होने के लिए अपनी डिग्री दांव पर लगा दी। मुझे न केवल उसका पता मिला, बल्कि यह भी पता चला कि उन समूहों में उसे एक अजीब लेकिन प्रतिभाशाली गेमर के रूप में देखा जाता है।
मैं घंटी बजाता हूँ।
मुझे कदमों की आहट सुनाई देती है। एक छोटा, दुबला-पतला लड़का, जिसकी उम्र सोलह साल से अधिक नहीं होगी, फटी हुई टी-शर्ट और शॉर्ट्स पहने हुए, दरवाजा खोलता है।
'हाँ?'
'जब तक तुम छोटे नहीं हो जाते, तब तक तुम गौरव नहीं हो।'
‘मैं समीर हूं, गौरव का टीममेट,’ वह जवाब देता है। ‘क्या आप हमारे द्वारा ऑर्डर किया गया खाना लेकर आए हैं?’
मैंने उससे कहा, 'मैं गौरव के लिए यहां आया हूं।'
‘गौरव!’ लड़का चिल्लाता है।
गौरव बैठक कक्ष में दाखिल होता है। उसने एक पुरानी, कई बार धुली हुई ग्रे टी-शर्ट और शॉर्ट्स पहन रखे हैं। उसके गले में हेडफ़ोन लटके हैं। अब वह पहले से लंबा तो है, लेकिन पहले से भी दुबला हो गया है। उसका चेहरा ज़्यादातर उसकी बिखरी हुई, हल्की दाढ़ी से ढका है। उसका रंग पीला है, मानो वह कभी धूप में निकला ही न हो। वह किसी अकाल पीड़ित जैसा दिखता है। उसके बाल छोटे-छोटे कटे हुए हैं और उसकी नाक पर सुनहरे गोल फ्रेम का चश्मा टिका है। वह ऐसा दिखता है मानो हैरी

पॉटर को अज़काबान में बंद कर दिया गया हो और उस पर कुछ डेमेंटर्स छोड़ दिए गए हों।
‘तुम कौन हो?’ वह चश्मा ठीक करते हुए पूछता है। उसकी आवाज़ कर्कश और बेजान है, मानो किसी ने उसकी श्वास नली पर पैर रख दिया हो। जैसे उसकी आवाज़ टूटने लगी और बीच में ही रुक गई हो।
‘दक्ष,’ मैंने कहा। ‘मैं तुमसे चार साल पहले अंडमान में मिला था। तुमने मेरा निंटेंडो चुरा लिया था। कुछ याद आया?’
उसकी आँखों में पहचान के भाव हैं।
मैंने आगे कहा, 'आंचल तुम्हें ढूंढ रही है।'
वह भ्रमित और क्रोधित दिख रहा है।
‘मुझे उनसे कोई वास्ता नहीं रखना। तुम जा सकते हो,’ उसने मुझे तीखे स्वर में कहा।
'दुर्भाग्यवश, इसके लिए मुझे आपकी बहन को निराश करना पड़ेगा और मैं ऐसा किसी भी कीमत पर नहीं करने वाला।'
‘जो भी हो यार। बस चले जाओ।’
मुझे “यार” मत कहो।
‘क्या तुमने सुना उसने अभी क्या कहा?’ छोटा लड़का समीर धमकी देते हुए कहता है। ‘अब यहाँ से चले जाओ!’
इससे मुझे हंसी आती है।
गौरव कहता है, 'यार, कृपया चले जाओ। मुझे उस परिवार से कोई वास्ता नहीं रखना। मैंने उन्हें यह बात सौ बार कह दी है। उन्हें मुझे अकेला छोड़ देना चाहिए।'
‘तुम्हारा मतलब उस परिवार से है जिसने तुम्हें पाला-पोसा, तुम्हारे लिए कुर्बानियां दीं? गौरव, तुम्हें इस बारे में अच्छे से सोचना होगा। बस आँचल को फोन कर लो।’
वह मेरी तरफ आंखें घुमाता है और गुस्से से जवाब देता है, 'ये तो घिसी-पिटी बात है, दक्ष। कौन सा परिवार त्याग नहीं करता? सच में, हर कोई। वे मुझे सड़क किनारे तो नहीं छोड़ सकते थे, है ना? बड़ी बात है। और तुम यहां क्या कर रहे हो?'
क्योंकि मुझे तुम्हारी बहन पर क्रश है, हमेशा से रहा है। इसलिए अगर तुम उसे दुखी कर रहे हो, तो यह मेरे लिए बिल्कुल भी अच्छी स्थिति नहीं है।'
'क्या तुम्हें अब भी उस पर क्रश है?'
'क्या आपको इस बात से कोई तकलीफ है?'
'विकी ने शायद ऐसा किया होगा। वह अभी भी उसके साथ है।'
‘इससे कुछ नहीं बदलता,’ मैंने कहा। ‘लेकिन वैसे, मुझे लगता है कि आप जो कर रहे हैं वह बहुत बढ़िया है। रेडिट के अनुसार, जिस तरह से आप क्रीप इक्विलिब्रियम को नियंत्रित करते हैं और अपने आइटम बिल्ड को अनुकूलित करते हैं, वह टॉप-टियर डोटा गेमप्ले है। तो हाँ, इसके लिए बधाई।’
‘तुम्हें... तुम्हें लगता है कि मैं जो कर रहा हूँ वो बढ़िया है?’
'गौरव, मैं एक ऐसा गेमर हूं जिसमें कोई प्रतिभा नहीं है। इसलिए, ज़ाहिर है, मुझे लगता है कि तुम जो करते हो वह शानदार है।'

मैं उसे रेडिट के अलग-अलग थ्रेड्स पर उसके गेमप्ले पर आए सबसे बेहतरीन कमेंट्स के स्क्रीनशॉट दिखाता हूँ। 'रेडिट को लगता है कि तुम अगले बड़े स्टार बनोगे, लेकिन तुम्हें मैंने ही पहचाना था, याद है?' मैं कहता हूँ। 'मुझे याद है कि तुम फीफा में इलास्टिको को ऐसे खेलते थे जैसे बच्चों का खेल हो। और तुम तब बच्चे थे।'
उसका चेहरा नरम पड़ जाता है। 'अगर मैं दीदी से मिल भी जाऊं, तो भी उन्हें यह बात समझ नहीं आएगी।'
'क्या तुमने वो आवाज़ सुनी?' समीर बीच में टोकते हुए बोला। 'अब निकल जाओ, अंकल—'
मैं उसकी ओर मुड़ा और उसकी आँखों में आँखें मिलाने के लिए नीचे झुका। 'मैं तुम्हारी बांह तोड़कर तुम्हारे गुदा में डाल दूंगा। एक हाथ से गेम खेलने के लिए शुभकामनाएँ।'
'समीर, घर जाओ,' गौरव उसे निर्देश देता है और वह बड़बड़ाते हुए भाग जाता है।
मैं गौरव की ओर बढ़ा। 'देखो गौरव, भागना कोई विकल्प नहीं है। उन्हें इस बात की परवाह नहीं है कि तुमने चोरी की। मुझे भी इस बात की परवाह नहीं थी कि तुमने चोरी की। जानते हो क्यों? क्योंकि तुम उस निन्टेंडो के मुझसे ज़्यादा हकदार थे। अब तुम्हें बस उन्हें यह दिखाना है कि तुम गेमिंग से कुछ हासिल कर सकते हो। कि यह वाकई सार्थक है।'
वह अपना सिर हिलाता है। 'वे ऐसा नहीं करेंगे—'
मैंने उसकी बात काटते हुए कहा, 'नकारात्मक सोचना बंद करो। और मेरा मूड खराब मत करो। मेरे एक पैर वाले, अवसादग्रस्त पिता आज सुबह उठे, मुस्कुराए और अपनी बेटी को स्कूल ले जा रहे हैं, इसलिए आज सचमुच कुछ भी हो सकता है। तो अब, मुझे अपनी योजना दिखाओ और यह भी बताओ कि तुम इसे वैध बनाने के लिए क्या कर रहे हो।'
गौरव मुझे अपने बेडरूम में ले जाता है जिसे उसने गेमिंग हब में बदल दिया है। कई चमकते हुए पीसी एक के ऊपर एक रखे हैं, केबल करीने से व्यवस्थित हैं, स्क्रीन पर गेम और ट्यूटोरियल चल रहे हैं। गौरव उनके गेमिंग ग्रुप, फीनिक्स राइजिंग का टीम लीडर है, जो वॉर ऑफ वर्ल्ड्स (एक मल्टीप्लेयर आरपीजी), डॉटा और काउंटर-स्ट्राइक में माहिर है। जैसा मैंने सोचा था, उसके विपरीत - वह गंदगी में रहता होगा - यह किसी व्यवस्थित सैन्य बंकर जैसा है।
यहां टीवी नहीं है। गंदगी नहीं है।
'क्या आप टीम के मालिक हैं?'
'Daksh—'
'अगर तुमने मुझे एक बार और दक्ष, ड्यूड या ब्रो कहा तो मैं तुम्हारा गला घोंट दूंगा। मुझे भैया कहो।'
वह थोड़ा सिकुड़ता है और आज्ञाकारी भाव से सिर हिलाता है। 'भैया, उपकरण मेरे हैं, घर का किराया मेरे नाम पर है। मेरे टीम के सदस्य ये सब वहन नहीं कर सकते...' वह सेटअप की ओर इशारा करता है। 'इसलिए वे यहाँ आते हैं और हम यहाँ प्रशिक्षण लेते हैं।'

‘क्या आपकी टीम अच्छी है? क्योंकि आप जो खेल खेल रहे हैं, उसमें आपकी टीम जितनी अच्छी होगी, आप भी उतने ही अच्छे होंगे।’
‘भैया, मैं अच्छे खिलाड़ियों को नहीं रख सकता। अगर हम कोई मैच जीतते हैं तो वे उसमें से बहुत सारा पैसा ले लेंगे,’ वह समझाते हैं। ‘इसलिए मैं उन्हें अच्छा खिलाड़ी बनने के लिए प्रशिक्षित कर रहा हूं। वे जरूर बन जाएंगे।’
‘स्मार्ट,’ मैंने उससे कहा। ‘मैंने कभी नहीं सोचा था कि मैं तुम्हारे लिए इस शब्द का इस्तेमाल करूंगा।’
तुम मुझे जानते तक नहीं हो।
‘मुझे पता है कि पिछली बार जब तुमने FIFA खेला था, तब तुम बहुत ज्यादा डाइव-टैकल करते थे। बहुत ज्यादा ड्रिबल करते थे, वही घिसे-पिटे तरीके अपनाते थे... ये अनुभव की कमी नहीं है, ये एक खिलाड़ी की कमी है। उम्मीद है तुमने इसे सुधार लिया होगा,’ मैंने उससे कहा। ‘क्या तुम्हारा कोई यूट्यूब चैनल है?’
गौरव अपना सिर हिलाता है।
‘आपके पास एक यूट्यूब चैनल, कई सोशल मीडिया अकाउंट और उनके बैकअप होने चाहिए, साथ ही कागजों पर एक कंपनी होनी चाहिए जिसके आप मालिक हों। आपको उस नाम को पंजीकृत भी कराना होगा। आप यह सब कैसे नहीं जानते?’
वह अनमने ढंग से सिर हिलाता है। मैं देखती हूँ कि उसका ध्यान कहीं और है। 'दीदी कैसी हैं?' वह धीरे से पूछता है। परिवार की परवाह न करने का उसका सारा दिखावा अब गायब हो गया है। मैं देख सकती हूँ कि वह उन्हें बहुत याद कर रहा है।
हम उससे मिलने जा रहे हैं। हम उससे मिलने जाएंगे और फिर उसे यहां लाकर दिखाएंगे कि आप इस मामले को लेकर कितने गंभीर हैं।

OceanofPDF.com

21.

Aanchal Madan

अभी एक साल भी नहीं बीता है, फिर भी ऐसा लगता है जैसे गौरव समुद्र में खो गया था और दस साल बाद मेरे पास लौट आया हो। वो दुबला-पतला, थका हुआ सा लग रहा है, लेकिन पिछली बार जब मैंने उसे देखा था, उससे ज़्यादा खुश है। शायद वो अकेला ऐसा व्यक्ति था जो कॉलेज के पहले दिन खुश नहीं था। उसने वो उदास चेहरा और मायूसी तीन साल तक अपने कॉलेज में बनाए रखी। उसके चश्मे के नीचे गहरे काले घेरे दिखने लगे और वो कम बोलने लगा। उसके कभी अच्छे नंबर नहीं आए, वो कम बोलता था और अपना ज़्यादातर समय लैपटॉप पर बिताता था। फिर भी, उसका भाग जाना हम सबके लिए एक बड़ा झटका था। मैंने कभी सोचा भी नहीं था कि वो ऐसा कर सकता है। वो तो बस... मेरा छोटा भाई था। कभी-कभी हिम्मत और नादानी

के बीच बहुत बारीक रेखा होती है।
मैं और वनिता ऑटो में बैठकर दक्ष के स्कूटर का पीछा कर रहे हैं, जहाँ गौरव अब रहता है। यह जानकर अजीब और थोड़ा डरावना लगता है कि वह बिल्कुल अकेला रहता है। इतने सालों तक उसे हर चीज़ के लिए हमारी ज़रूरत थी।
'मुझे विश्वास नहीं हो रहा कि दक्ष को गौरव मुझसे पहले मिल गया,' वनिता बड़बड़ाती है। 'लगता है दोस्ती से ज्यादा सेक्स ही प्रेरणा का स्रोत है।'
'यह तर्क तो तुम्हारे ही खिलाफ जाता है। गौरव तुमसे सिर्फ इसलिए बात कर रहा था... खैर,' मैंने कहा। 'और दक्ष के मामले में, उसे सेक्स नहीं मिल रहा था। वह उसे ढूंढने इसलिए नहीं गया क्योंकि... तुम्हें पता है... सेक्स।'
'तुम्हारे साथ जो कुछ भी हुआ है, उसके बाद तो तुम्हें यहाँ से दिल्ली तक के हर हैंडसम लड़के के साथ संबंध बना लेना चाहिए,' वह आँख मारते हुए कहती है।
'लेकिन मुझे एक बात बताओ, दक्ष ने तुम्हारे लिए गौरव को ढूंढा और मैंने विक्की से छुटकारा दिलाया, तुम किसे ज़्यादा अहमियत दोगी?'
'अगर तुम किसी का खून करोगे, तो मुझे आकर लाश के टुकड़े करने में तुम्हारी मदद करनी पड़ेगी।'
वनिता हंसती है। 'लेकिन क्या तुमने गौरव को मुझे वनिता कहते सुना? यह सबसे अजीब बात है, उसका मुझसे प्यार करना।'
'उसका किसी से प्यार करना सबसे अजीब बात है। मुझे लगा था कि उसे लोगों में कोई दिलचस्पी नहीं है।'
वनिता खिलखिलाकर हंसती है। 'लेकिन सेक्स की बात करें तो...'
हम यौन संबंध की बात नहीं कर रहे हैं।
'आपको किसी न किसी तरह से उसका शुक्रिया अदा करना ही होगा। और उसने जो कुछ सहा है, उसके बाद कम से कम वह इस बात का हकदार तो है ही कि उसे उस इंसान के साथ सेक्स करने का मौका मिले जिसकी वह पिछले चार सालों से सचमुच पूजा करता आया है!'
क्या हम भी उन्हीं लोगों में से होंगे जो सिर्फ लड़कों के बारे में ही बात करते हैं?
'सबसे पहले तो, दक्ष लड़का नहीं है और—'
और दूसरी बात,' मैंने बीच में टोकते हुए कहा। 'तुम्हें पता है जब विक्की ने तुम्हें उस प्लेट से मारा था, तब मुझे बस... बस... एक अहसास हुआ, एक अहसास हुआ। यह मेरे दिल को गहराई से छू गया।'
'वैसे, मेरी अनुमति के बिना वह मुझे कभी नुकसान नहीं पहुंचा सकता था,' वनिता कहती हैं। 'हमें वीडियो के लिए इसकी ज़रूरत थी।'
'इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। मैंने बस देखा कि दांव पर क्या लगा था। मैं... मैं... विश्वास नहीं कर पा रही थी कि मैं खुद को ऐसी स्थिति में डाल सकती हूँ, कि मैं इस तरह जीना स्वीकार कर सकती हूँ। तुम्हें चोट लग रही है, और मैं अपना पूरा जीवन बिना किसी स्वतंत्रता के और सिर्फ... नफरत के साथ जी रही हूँ। मुझे बस इतना पता था कि यही सब कुछ का अंत है।'

‘किसका अंत?’
मैं घोषणा करता हूँ, 'मैं अपनी स्वतंत्रता को कभी भी, किसी भी कीमत पर नहीं छोड़ूंगा।'
'आखिर इसका क्या मतलब है?'
‘लड़कों, मर्दों या जो भी कहो, मैं इससे तंग आ चुकी हूँ। मैं अब और नहीं कर सकती। फिर कभी नहीं, भगवान की कसम। कोई चांस ही नहीं!’
'खराब रिश्ते के अंत में हर कोई यही कहता है। यह समय भी बीत जाएगा।'
‘यह कोई बुरा रिश्ता नहीं था। ऐसा लगा जैसे मैंने अपना जीवन किसी और के लिए छोड़ दिया हो। वनिता, कितने साल यूं ही बर्बाद हो गए। क्या तुम सोच सकती हो कि अगर वह मेरे हर काम को नियंत्रित न करता तो मैं क्या-क्या कर सकती थी?’
‘मैं तुम्हें यही कहती रही थी,’ वनिता कहती है। ‘तुम फंस गए थे।’
और बस, यहीं पर बात खत्म। मैंने पूरी तरह से फैसला कर लिया है। मैं अपने जीवन के हर पहलू को नियंत्रित करना चाहता हूँ। मैं यह गलती दोबारा कभी नहीं दोहराऊँगा। लेकिन अगर आप दुनिया को किसी विषैले व्यक्ति के ही रंग में रंगते रहेंगे, तो आप कभी किसी से जुड़ नहीं पाएंगे।
‘आप जो चाहें कह सकते हैं, लेकिन अभी मुझे जो महसूस हो रहा है, उसे मैं शब्दों में बयान नहीं कर सकता। ऐसा लग रहा है जैसे किसी ने मेरे सीने पर पैर रख दिया हो, और आखिरकार मैंने उस पैर से छुटकारा पा लिया है।’
‘उस पैर में गैंग्रीन हो गया था, तुमने उसे काट दिया। हर कोई ऐसा नहीं होता—’
‘आखिरकार मैं चैन की सांस ले सकती हूँ। लगभग चार साल हो गए हैं, मैं हर पल डर-डरकर जी रही थी, लगातार सोचती रहती थी कि विक्की के मन में क्या चल रहा है। अगर मैं ऐसा करूँगी तो विक्की क्या सोचेगा? क्या वह गुस्सा होगा? क्या उसका मूड खराब है? वह ऐसे क्यों बोल रहा है? मैं बस उसके हर मूड के बारे में सोचती रहती थी और... और मैं थक गई थी। मैं उन चीजों को नियंत्रित करने की कोशिश करती रही जिन्हें मैं नियंत्रित नहीं कर सकती थी। मैं विक्की की भावनाओं को कैसे नियंत्रित कर सकती थी जब वह खुद ऐसा नहीं कर सकता था? मैं बस उसके भविष्य की प्रतिक्रियाओं के बारे में सोचकर और डरकर खुद को बहुत चिंतित कर रही थी। यह भयानक था। अभी भी मैं सोच रही हूँ, मैं इस कार में हूँ, मुझे उसे बता देना चाहिए ताकि वह बाद में हंगामा न करे। सालों तक यही सब करते-करते मैं बूढ़ी हो गई हूँ। अब मैं यह सब दोबारा नहीं कर सकती। मैं किसी के बारे में गुस्सा या चिंता करने में और समय नहीं बिता सकती। मुझमें यह करने की क्षमता नहीं है। मैं बस कुछ देर के लिए खुद को वैसे ही रहने देना चाहती हूँ जैसी मैं हूँ।’
वनिता मुझे गले लगाती है। अलग होते हुए वह कहती है, 'मैं तुम्हारी भावना समझती हूँ... लेकिन मैं बस इतना कह रही हूँ कि जब हमने दक्ष को बताया कि तुमने विक्की से ब्रेकअप कर लिया है, तो उसका चेहरा क्रिसमस ट्री की तरह चमक उठा।'
'क्या आपने देखा कि जब हमने उसे घटना के बारे में बताया तो वह कितना गुस्सा हो गया?'

‘डरावना। उसकी आंख की नस फट सकती थी,’ वनिता कहती हैं। ‘अगर आपने पहले से ही तय कर रखा है कि आप किसी लड़के के बारे में नहीं सोचेंगी, तो आपको उसे ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित नहीं करना चाहिए।’
हम गौरव के घर पहुँच गए।
'यहीं तो मैं रहता हूँ, दीदी,' वह घबराते हुए दरवाजा खोलते हुए कहता है।
वह अपने चश्मे से खेल रहा है, मेरी प्रतिक्रिया का इंतज़ार कर रहा है। एक घंटा पहले, दक्ष गौरव को साथ लेकर मेरे पास आया और ज़िद करने लगा कि हम देखें कि गौरव कैसे रह रहा है और क्या बनाने की कोशिश कर रहा है। मैंने हमेशा सोचा था कि गौरव को देखते ही मैं उस पर चिल्लाऊँगी। लेकिन जैसे ही मैंने उसे देखा, मेरा दिल पिघल गया। मैंने उसे हर बात के लिए माफ़ कर दिया, लेकिन मैं उसे यह कैसे दिखा सकती थी? मैं नहीं चाहती थी कि वह खेल खेलकर अपनी ज़िंदगी बर्बाद कर दे। इसलिए, मैंने अपना गुस्सा काबू में रखा।
'हम्म।'
मैं गुस्से का दिखावा करती हूं जबकि मेरा मन सिर्फ उसे गले लगाने का करता है। उसका कमरा मेरी कल्पना से कहीं ज़्यादा साफ़ है। वहाँ न तो ओल्ड मोंक की बोतलें बिखरी पड़ी हैं, न सूखे खाने के प्लास्टिक के डिब्बे, न कोक के कैन। कमरा उसके पुराने घर के रहन-सहन से बिलकुल अलग है—जहाँ वह किसी जानवर की तरह रहता था। वह पूरी तरह बदल गया है।
कमरे में सीपीयू और कीबोर्ड की आरजीबी लाइटें जगमगा रही हैं। चारों ओर एक हल्की सी गूंज सुनाई दे रही है।
‘उस तरह जीना बहुत मुश्किल था, दीदी,’ वह धीरे से कहता है।
‘गौरव, हमारे लिए मुश्किलें कब से नहीं आई हैं?’ मैं उसे डांटती हूँ। ‘हमारी ज़िंदगी एक बाधा दौड़ रही है, एक के बाद एक मुसीबतें आती रहीं और जब हम मंज़िल के करीब पहुँचे, तो तुम उल्टी दिशा में भाग गए। तुम रुक सकते थे।’
‘आंचल,’ दक्ष ने बीच में टोकते हुए कहा, ‘शायद उसे भागना नहीं चाहिए था। लेकिन मैं तुम्हें लिखित में दे सकता हूँ कि उसके सहपाठियों में से कोई भी अपने करियर को लेकर उतना गंभीर नहीं है जितना वह है।’
'आपका मतलब उसके उन सहपाठियों से है जिन्हें एक साल के भीतर कॉलेज की डिग्री मिल जाएगी?'
‘वो बेहद दृढ़ निश्चयी है, आँचल। तुम इसे पहचान ही सकती हो। वो तुम्हारी तरह ही आँखों पर पट्टी बाँधे घोड़े की तरह है। अगर उसकी मंज़िल उसके सहपाठियों से अलग है तो क्या फर्क पड़ता है?’
‘क्या इससे...’ वनिता मेज पर रखे सभी पीसी की ओर इशारा करते हुए कहती है, ‘क्या इससे पैसे कमाए जा सकते हैं?’
'बहुत सारा पैसा, वनिता,' गौरव शर्माते हुए जवाब देता है।
वह वनिता की आंखों में एक बार भी नहीं देख पाया है। यह पहली बार है जब वह वनिता को दीदी कहकर नहीं बुला रहा है। यह अजीब है।

दक्ष बीच में टोकता है, 'यह एक गंभीर प्रयास है।'
दक्ष गौरव के हाथ से फोन लेकर मुझे दे देता है।
उसका फ़ोन चेक करो। अलार्म सुबह 6 बजे का लगा है। उसी समय वो ट्रेनिंग के लिए उठता है। कोई सोशल मीडिया नहीं, कुछ नहीं, बस लगातार गेमिंग। उसे बस सही चाल चलने की ज़रूरत है। एक स्ट्रीमिंग चैनल, एक रहस्यमयी छवि, कुछ सामान, और सोशल मीडिया पर सक्रिय लेकिन नियंत्रित उपस्थिति। उसकी मेहनत से वो इसमें वाकई कुछ बड़ा कर सकता है। मैं बस इतना कह रही हूँ कि उसे दिल्ली ले जाओ और अपने माता-पिता को बताओ कि उसके लिए सब ठीक हो जाएगा। उसे हर तरह के समर्थन की ज़रूरत होगी। क्या उसे ये समर्थन आप लोगों से नहीं मिलना चाहिए? उसके परिवार से? वो और कहाँ जाएगा?
मैंने गौरव की ओर मुड़कर देखा। उसकी आँखों में आँसू आ गए थे। अपने छोटे भाई को असहाय, समुद्र में खोया हुआ और अकेला देखकर मेरा दिल थोड़ा टूट गया। उसने आशा भरी निगाहों से मेरी ओर देखा।
‘ओए बुद्धू,’ मैंने गौरव से कहा। ‘मेरी चार घंटे में फ्लाइट है। एयरपोर्ट पर मिलते हैं। चलो मम्मी-पापा को बता देते हैं कि उनका बेटा... गेमर है।’

OceanofPDF.com

22.

Daksh Dey

‘मुझे बताओ अंकल-आंटी क्या कहते हैं,’ वनिता टैक्सी में बैठते हुए कहती है। ‘और धन्यवाद, दक्ष। अगली बार थोड़ा कम होशियारी दिखाना और मुझे उनके लिए काम करने देना।’
'अगर बात इस पर आ जाए कि तुम आंचल के लिए कितनी दूर तक जाओगी, तो तुम मुझे कभी नहीं हरा पाओगी,' मैं वनिता से कहती हूं।
‘लड़के और उनका अति आत्मविश्वास,’ वह मुस्कुराते हुए कहती है। ‘देखते हैं।’
'क्या आप लोग चुप रह सकते हैं?' आंचल पूछती है।
'नहीं।'
'नहीं।'
आंचल वनिता से कहती है, 'मैं तुमसे प्यार करती हूं।'
'मुझे अब जाना चाहिए,' वनिता कहती है और टैक्सी में बैठ जाती है।
होटल के बरामदे से टैक्सी निकलते ही वह हाथ हिलाती है। आँचल और मैं होटल वापस आते हैं। लॉबी के अंदर फिर से लंबी कतारें लगी हुई हैं। सम्मेलन में आए सभी लोग अब चेक आउट कर रहे हैं।

आंचल कहती है, 'मुझे भी अब निकलना चाहिए। मुझे देर हो रही है।'
'हां, आपको करना चाहिए। लेकिन मैं नहीं चाहता कि आप ऐसा करें। मैं बस... नहीं चाहता।'
क्या आप मुझे कॉल के लिए चार साल तक इंतजार करवाएंगे?
मैं ऐसा नहीं करूंगा।
वह गले लगने के लिए आगे बढ़ती है। मैं जानता हूँ कि अगर मैं उसे अपनी बाहों में ले लूँ तो मैं उसे छोड़ना नहीं चाहूँगा। जब मैं उसे गले लगाता हूँ, तो मेरे अंदर ऊर्जा का एक प्रवाह दौड़ उठता है। आखिरकार, वह कमीना विक्की चला गया, वह अध्याय समाप्त हो गया। पिछली रात से लेकर अब तक, संभावनाएं उज्ज्वल हो गई हैं। मैं उसे जल्दबाजी नहीं करवाना चाहता, लेकिन निश्चित रूप से, मैं उसे जल्दबाजी करवाना चाहता हूँ क्योंकि चार लंबे साल बीत गए हैं। मुझे ऐसा लगता है जैसे मैं उन ऋषियों में से एक हूँ जो अपनी इच्छाओं के लिए इतने लंबे समय तक ध्यान और प्रार्थना करते हैं कि पेड़ की जड़ें उनके शरीर को जकड़ लेती हैं। तो हाँ, मैं उसे जल्दबाजी करवाना चाहता हूँ।
‘धन्यवाद, दक्ष,’ वह एक प्यारी सी मुस्कान के साथ कहती है। ‘तुम आज भी मेरे लिए लकी चार्म हो।’
'सेवा का होकर ख़ुशी है।'
मुझे अब जाना होगा।
अगर करना ही पड़े तो।
वह मुड़कर लिफ्ट की ओर चल पड़ती है। मैं बाहर निकलने की ओर मुड़ जाता हूँ। हमारे बीच की हर दूरी एक शारीरिक पीड़ा की तरह महसूस होती है। मैं उसे लिफ्ट के अंदर जाते हुए देखता हूँ। मैं होटल के प्रवेश द्वार पर खड़ा हूँ, मेरे हाथ में फोन है, कैब का ऐप खुला हुआ है। मैं कैब बुक करने की हिम्मत नहीं कर पा रहा हूँ।
मैं अब खुद को धोखा नहीं दे सकता। वो मेरी क्रश नहीं है। भला वो मेरी क्रश कैसे हो सकती है, जब मैं डूब रहा था, जब सब कुछ खोया हुआ लग रहा था, तब वो मेरी उम्मीद की किरण थी?
यह बहुत ही घिसा-पिटा है, लेकिन वह मेरी आस्था है, वह मेरा सत्य है।
जब मैं उसे देखता हूँ, तो ऐसा लगता है मानो मैं ईश्वर के घर में हूँ। यह शायद नाटकीय लगे, पर सच में वह मुझे ऐसा ही महसूस कराती है। मेरा हर अंग उसके सामने नतमस्तक हो जाता है। मैं असहाय, शक्तिहीन हो जाता हूँ और बस उसे प्रसन्न करना चाहता हूँ। वह मुझे अपने जीवन का हर हिस्सा उसके चरणों में अर्पित करने के लिए प्रेरित करती है।
ऐसा लगता है जैसे वही मेरे अस्तित्व का कारण है।
हर मुस्कान सौर ज्वाला जैसी है, और हर उदासी अपने साथ काले बादल, संदेह और निराशा लेकर आती है। वही मेरी डोर थामे हुए है, मेरा दिल उसकी मुट्ठी में है। ऐसा लगता है जैसे मैं उसके हाथ में एक बेजान टैटू की गुड़िया हूँ। अगर वह मुझे नष्ट करने का फैसला भी करे, तो मैं खुशी-खुशी उस नियति को स्वीकार कर लूँगा। मेरी

भावनाएँ तर्कसंगत नहीं हैं। ये पागलपन है। मेरी भावनाएँ तर्क और बुद्धि के साथ नहीं रह सकतीं। जब मैं यहाँ होटल में खड़ा हूँ, तो मैं चाहता हूँ कि हमारे आस-पास की दुनिया जलकर राख हो जाए ताकि हम यहीं, इस होटल में, अनंत काल तक फँसे रहें। मैं जाना नहीं चाहता, मैं नहीं चाहता कि वह मुझे छोड़कर जाए।
मेरे फोन में बीप की आवाज आती है।

आंचल दक्ष, तुम कहाँ हो? अभी भी होटल में ही हूँ।

Aanchal Daksh
क्यों? जाने की हिम्मत ही नहीं हुई। पैकिंग हो गई? आँचल दक्ष, अभी नीचे आ रही हूँ। मत जाओ। मैं कैसे जा सकती हूँ?

वह लैपटॉप बैग और सूटकेस लिए लिफ्ट से बाहर निकली। मैं उसकी मदद करने के लिए दौड़ा।
'मुझे खुशी है कि तुम नहीं गए,' वह मुस्कुराते हुए और माथे पर पसीना लिए कहती है।
हम बिल चुकाने वाली लाइन में लग गए। हम चौथे नंबर पर थे। जैसे ही हम आगे बढ़े, वह मेरे करीब आ गई। उसके शरीर की निकटता से मेरा गला सूख गया। मैं उसे बहुत कुछ कहना चाहता था, लेकिन शब्द मेरे दिमाग में घूम रहे थे, जिससे मेरे लिए एक वाक्य बनाना असंभव हो गया।
अब वो विक्की की नहीं रही। क्या वो मेरी हो सकती है? क्या उसका शरीर मेरा हो सकता है?
मैं उसकी छाती के उठने-गिरने, उसके होंठों के खुलने और बंद होने को देखता हूँ। और उसके लिए मेरे भीतर एक गहरी चाहत जाग उठती है। जैसे-जैसे कतार आगे बढ़ती है, मैं उसे हिलाने के लिए उसकी कमर पर थपथपाता हूँ, लेकिन मैं अपना हाथ हटा नहीं पाता। मैं उसे उसकी पीठ पर टिका देता हूँ। वह ऊपर देखती है, पलकें झपकाती है और मेरे हाथ को वहीं रहने देती है।
लानत है।
मेरा हाथ उसकी कमर पर था, हमारे बीच बस एक पतली सी टी-शर्ट थी। एक स्पर्श से, मैंने धीरे से अपनी उंगलियों को उसकी कमर पर दबाया। उसने मेरी ओर देखा और कुछ नहीं कहा।
या तो मुझे अभी रोक दो या फिर बिल्कुल मत रोको।
वह मेरे करीब आती है, उसका पैर मेरे पैर से छू जाता है, उसकी आंखें सहमति में मेरी आंखों से मिलती हैं।
हम लाइन में एक स्थान आगे बढ़ जाते हैं। वह मेरे और करीब आ जाती है। मेरा हाथ उसकी कमर के दूसरी तरफ चला जाता है। वह मुझसे चिपक जाती है, उसका कोमल शरीर मेरे शरीर से सट जाता है। जब वह ऊपर देखती है, तो हम एक ही हवा में सांस ले रहे होते हैं। एक और स्थान आगे बढ़ जाता है। हम काउंटर पर पहुँच जाते हैं।

रिसेप्शन पर बैठा व्यक्ति चाबी मांगता है।
वह मेरी ओर मुड़ती है। 'यह मेरी पिछली जेब में है,' वह धीरे से कहती है।
नहीं।
मैंने अपना हाथ उसकी कमर से हटाकर उसकी जींस की पिछली जेब में डाल दिया। उसने अपना नितंब आगे करके मेरे हाथ से मिलाया। मैंने धीरे से चाबी निकाली। मेरी तेज़ साँसों के कारण मुझे रिसेप्शन पर बैठी लड़की की आवाज़ मुश्किल से सुनाई दे रही थी।
लड़की कहती है, 'होटल की गाड़ी बाहर इंतजार कर रही है।'
जैसे ही हम लाइन से बाहर निकले, मैंने अपना हाथ उससे हटा लिया। अब मैं उसे छू नहीं रहा था और इससे मुझे बहुत गुस्सा आया। उसकी हिम्मत कैसे हुई कि उसका शरीर मेरे शरीर को न छुए?
'मेज़ानाइन फ्लोर,' मैंने उसे बताया।
'मुझे भी साथ लो।'

OceanofPDF.com

23.

Daksh Dey

मैं लिफ्ट की ओर बढ़ा। वह मेरे पीछे आई। उसने लिफ्ट का बटन दबाया। लोगों की एक कतार बाहर निकली। हम लिफ्ट में दाखिल हुए और बंद करने का बटन जोर से दबा दिया।
बस हम ही हैं।
वह मुड़ती है, मैं उसकी ओर बढ़ता हूँ। हमारे शरीर हज़ारों सूर्यों की ज्वाला के साथ मिलते हैं। मैं उसकी गर्दन पकड़ लेता हूँ। उसकी आँखों में शुद्ध प्यास है।
लिफ्ट का दरवाजा मेज़ानाइन फ्लोर पर खुलता है। मैं उसका हाथ पकड़ता हूँ, वह मेरा हाथ कसकर थाम लेती है। समय हमारा दुश्मन है। मैं उसे चाहता हूँ, और अभी चाहता हूँ। हम उन वॉशरूम की ओर चलते हैं जिनका कोई इस्तेमाल नहीं करता। हम पुरुषों के वॉशरूम में प्रवेश करते हैं और दरवाजा बंद कर लेते हैं।
अब वह मेरी ओर देख रही है। वह कुछ कदम दूर हट जाती है। वातावरण में एक अजीब सी सनसनी है। यह डरावना है। ऐसा लगता है जैसे आपको एहसास हो रहा हो कि दुनिया जिस चीज को चाहती है, वह सिर्फ आपके पास है।
'अपनी कमीज उतारो,' वह आदेश देती है।
मैं इसके बटन खोलना शुरू करता हूँ।
जैसे ही मैं आगे बढ़ता हूँ, वह कुछ कदम आगे बढ़ती है। और फिर अधीरता से अपने

आखिरी बटन को भी खोल देती है। खाली, शांत वॉशरूम में हमारी साँसें गूँजती हैं। वह अपनी उंगलियों से मेरी छाती को सहलाती है, जिससे मेरी रीढ़ में सिहरन दौड़ जाती है। मैं उसका चेहरा थाम लेता हूँ, वह मुझे कसकर पकड़ लेती है। मैं उसे अपने करीब खींचता हूँ और उसके होंठ मेरे होंठों को छू लेते हैं। उस पल, मुझे लगता है कि मैं उसमें खो रहा हूँ। उसके होंठ मेरे होंठों को और मेरे होंठ उसके होंठों को घेर लेते हैं, और उस गर्माहट और नमी में, मेरे आस-पास की दुनिया गायब हो जाती है। ऐसा लगता है जैसे उसके होंठ ही आखिरी सहारा हैं और मैं अनंत काल यहीं बिताऊँगा। वह मेरी कमीज़ उतार देती है। मैं उसके होंठों को छोड़ नहीं पाता। हमारी चाहत और बढ़ जाती है। मैं अपने हाथ उसकी कमर पर रख देता हूँ।
‘मुझे तुम्हारे कपड़े पसंद नहीं हैं, इन्हें उतार दो,’ मैं फुसफुसाती हूँ। ‘नग्न हो जाओ।’
‘मुझे लगा था कि तुम ऐसा कभी नहीं कहोगे,’ वह कराहते हुए कहती है।
मैंने उसकी टी-शर्ट उतार दी। उसने अपनी ब्रा खोली और वह ज़मीन पर पड़ी थी। उसकी नग्नता से मेरे पूरे शरीर में सिहरन दौड़ गई। मैंने उसकी जींस का बटन पकड़ा और उसने मेरा बटन पकड़ लिया। मैंने उसकी जींस के बटन खोले, ज़िप खोली। वह मेरी जींस खोलने की कोशिश कर रही थी। उसके स्पर्श से मेरा पूरा शरीर कांप उठा। और फिर अचानक उसने अपना हाथ नीचे सरका दिया। उसने मेरा लिंग पकड़ा और जींस के ऊपर से ही उसे रगड़ने लगी। मैंने उसकी जींस नीचे खींच दी। वह मुझसे दूर हट गई। उसने मेरी तरफ देखा, उसकी आँखें गुस्से से लाल थीं, और वह अपनी जींस उतारने लगी।
'मैं तुम्हारा लिंग देखना चाहती हूं,' वह कराहती है।
मैंने बटन खोले, ज़िप खोली।
हम दोनों नग्न हैं।
मैं उसे पूरी तरह निहारता हूँ। उसके स्तनों का उभार, उसके पेट का सपाटपन, उसकी टांगों का आकार, उसकी उंगलियों की कोमलता जब वह अपनी गीली जगह को सहलाती है और खुद को छूती है। उसकी आँखें आधी बंद हो जाती हैं। जब वे खुलती हैं तो उसकी नज़र मेरी आँखों से मिलती है और फिर उसकी निगाह मेरे लिंग पर पड़ती है, जो फड़क रहा है।
‘मुझे यह पसंद है,’ वह कहती है।
'यह तुम्हारा है।'
मैं आगे बढ़ता हूँ। वह मेरे लिंग को पकड़कर मुझे अपनी ओर खींचती है। वह मुझे बेतरतीब ढंग से चूमती है और फिर मुझे नीचे धकेल देती है। मेरी जीभ उसके उभारों और वक्रों पर फिरती है। मैं उसके शरीर के लिए अपनी लालसा में अंधा हो जाता हूँ। मैं उसका सब कुछ चाहता हूँ। मैं उसका एक स्तन अपने मुँह में ले लेता हूँ, उसे चाटता हूँ, उसके निप्पल के चारों ओर घुमाता हूँ और अपनी जीभ से उसे सहलाता हूँ। उसकी आहें मुझे और उत्तेजित करती हैं।
मैंने पूछा, 'क्या आप चाहते हैं कि मैं कोमल रहूँ?'
वह मेरे बाल खींच रही है, वह मेरे लिंग को खींच रही है।

'दक्ष, सौम्य होने के बिल्कुल विपरीत बनो,' वह कहती है।
मेरी ठुड्डी उसकी निप्पल पर कस जाती है। वह और ज़ोर से कराहती है। मैं उसे फिर से चूमता हूँ, इस बार वह और भी ज़्यादा उत्तेजित है।
मैंने उससे कहा, 'मैं तुम्हें पूरी तरह से पाना चाहता हूँ।'
वह मेरी तरफ देखती है। 'मैं पूरी तरह से तुम्हारी हूँ,' वह जवाब देती है। 'मुझे पूरी तरह से अपना लो।'
मैं उसे उठा लेता हूँ। उसकी बाहें मेरी गर्दन के चारों ओर हैं, उसके पैर मेरे ऊपर लिपटे हुए हैं, मेरा उत्तेजित लिंग उसकी गीली त्वचा से रगड़ रहा है। मैं उसे सिंक तक ले जाता हूँ। वह वहाँ बैठ जाती है। बाथरूम के दर्पण हमारी नग्नता, हमारी लालसा को, हम पर ही प्रतिबिंबित करते हैं।
'मुझे पता ही नहीं था कि मैं यह चाहती थी,' वह फुसफुसाती है।
मैं उसके पैर फैलाता हूँ। वह आईने में देखती है कि मैं उसकी जांघों के बीच गायब हो जाता हूँ। मेरी जीभ उसे छूती है। वह पूरी तरह भीगी हुई है। मैं उसकी जांघों को काटता हूँ। वह कराहती है, उसका शरीर कांप उठता है। जैसे ही मेरी जीभ उसके अंदर जाती है, जैसे ही मैं उसका स्वाद लेता हूँ, मैं उसकी सिसकी सुनता हूँ। आईने में, मैं देखता हूँ कि वह अपने स्तनों को पकड़ लेती है। जब मैं उसे झटका देता हूँ तो वह मेरे बालों को पकड़ लेती है। वह अपने पैरों को मेरे चेहरे के चारों ओर लपेट लेती है। मैं महसूस करता हूँ कि वे कस जाते हैं और जकड़ जाते हैं। मैं उन्हें कांपते हुए महसूस करता हूँ।
"धत् तेरे की," वह बुदबुदाई।
वह अपने पैर खोलती है। वह मेरा चेहरा खुद से दूर खींचती है। वह मुझे धक्का देकर दूर कर देती है, उसके चेहरे पर मुस्कान है।
'मुझे लगा था कि तुम एक अच्छे इंसान हो, दक्ष,' वह शरारती मुस्कान के साथ कहती है। 'मुझे बहुत खुशी है कि तुम अच्छे इंसान नहीं हो।'
'मेरी अच्छाई चुनिंदा है,' मैंने कर्कश स्वर में कहा।
'मैं तुम्हें चाहती हूँ,' वह कहती है और घुटनों के बल बैठ जाती है। वह मेरे लिंग को पकड़ती है और मेरी ओर देखती है। 'मेरा गला घोंट दो,' वह आदेश देती है। 'नरमी मत बरतो।'
वह अपना मुँह खोलती है। मैं खुद को उसके मुँह में समाते हुए देखता हूँ। पहले धीरे-धीरे, फिर और गहराई में। मैं उसका सिर पकड़कर उसे अपनी ओर खींचता हूँ। मुझे उसकी जीभ अपने पूरे शरीर पर महसूस होती है। मेरी पकड़ और कस जाती है। मैं उसकी ओर देखता हूँ और वह अब भी अपनी मोहक आँखों से मुझे देख रही होती है। वह मुझे बाहर निकालती है, गीला और लथपथ।
मैंने उससे कहा, 'मैं तुम्हारे अंदर जाना चाहता हूं।'
वह अपना मुंह पोंछती है और मुस्कुराते हुए कहती है, 'यह तो आश्चर्य की बात है।'
मैंने कहा, 'मैं तुम्हारे चेहरे से वो मुस्कान मिटा दूंगा।'
'मुझे इसी की उम्मीद है,' वह कहती हैं।

वह मुझे पकड़कर अपनी ओर खींच लेती है। मैं उसकी जांघ पकड़कर उसका पैर ऊपर उठाता हूँ और उससे रगड़ खाता हूँ। "वाह!" वह कराहती है जैसे ही मैं उसके अंदर प्रवेश करता हूँ। उसकी गर्म नमी मुझे घेर लेती है। मेरा दिमाग चकरा जाता है। मैं ज़ोर से धक्का देता हूँ और हमारी साँसें तेज़ हो जाती हैं।
‘Daksh—’
उसकी कराह अचानक रुक जाती है।
हमें एक ज़ोरदार धमाके की आवाज़ सुनाई देती है। और फिर एक और। दरवाज़े के टकराने की आवाज़ अब तेज़ हो गई है और बाथरूम में गूंज रही है।
‘धत् तेरे की,’ मैंने कहा।
मैं उससे दूर हट जाता हूँ।
बाहर से एक तेज आवाज गूंजती है, 'वहाँ कौन है?'
मैं दौड़कर आंचल के कपड़े पकड़ती हूँ और उसे फेंक देती हूँ। 'उस स्टॉल पर जाओ,' मैं उसे निर्देश देती हूँ।
'दरवाजा खोलें!'

OceanofPDF.com

24.

Aanchal Madan

हम मैरियट, बीकेसी के प्रबंध निदेशक के कार्यालय में हैं।
मैंने दक्ष से कहा, 'मुझे लगा था कि यह बड़ा होगा।'
दक्ष भौंहें चढ़ाता है। 'मैं ऐसा दिखावा करूंगा कि मैंने यह सुना ही नहीं।'
‘आप नहीं,’ मैंने खुद को सुधारते हुए कहा। ‘यह दफ्तर। मुझे लगा था कि प्रबंध निदेशक का दफ्तर बड़ा होगा। आप... बिलकुल सही आकार के हैं।’
‘तो शुक्र है प्राकृतिक चयन का,’ वह कहता है।
‘क्या हमें पुलिस के आने को लेकर ज्यादा घबराना चाहिए?’ मैंने उससे पूछा क्योंकि मुझे जरा भी घबराहट महसूस नहीं हो रही थी।
मेरा दिमाग अभी भी उस वॉशरूम में अटका हुआ है, मैं सोच रही हूँ कि अगर उस बेवकूफ फ्रंट डेस्क मैनेजर ने दरवाज़ा न खटखटाया होता तो क्या होता। जो कुछ हमने अधूरा छोड़ दिया, उससे मेरा शरीर जल रहा है। अगर हम पुलिस के फैसले का इंतज़ार न कर रहे होते, तो मैं दक्ष से कहती कि मुझे यहीं ज़मीन पर पटक दे और मेरे साथ संबंध बना ले।
दक्ष कंधे उचकाते हुए कहता है, 'मुझे घबराने की क्या ज़रूरत है? मैं उन्हें सच बताने जा रहा हूँ। कि तुम एक चरित्रहीन औरत हो जिसने मुझे बहकाया।'

इस समय, दक्ष जो कुछ भी कहता है, उससे मेरे शरीर में ऐसी प्रतिक्रियाएं होती हैं जिनकी मैंने कल्पना भी नहीं की थी।
'मुझे तुम्हारे साथ बदचलन व्यवहार करना अच्छा लगता है,' मैंने जवाब दिया।
और मैं उस पर अपने शब्दों का असर देख सकती हूँ। वह अपनी कुर्सी से उठकर मुझे फिर से गले लगाना चाहता है। जो हमने शुरू किया था, उसे पूरा करना चाहता है।
'तुम्हें मेरे साथ वैसा ही बर्ताव करना चाहिए,' मैं उसे उकसाती हूँ। मैं हमारे सामने रखी मेज की ओर इशारा करती हूँ। 'तुम्हें मुझे इस मेज से सटाकर धक्का देना चाहिए और मुझ पर गिरना चाहिए। तुम्हें मेरे बाल खींचने चाहिए—'
'Stop it, Aanchal.'
'जब मैं अपने पैर फैलाकर आपको और भी गहराई तक आमंत्रित करूंगी, तो क्या आप मेरे स्तनों को पकड़ना नहीं चाहेंगे?'
'कृपया रुक जाइए,' वह हांफते हुए कहता है।
मैं इसलिए नहीं रुकती क्योंकि वह चाहता है कि मैं रुकूँ। मुझे वह इसी रूप में पसंद है: थोड़ा बेकाबू। मैं इसलिए रुकती हूँ क्योंकि मैं इतनी बेकाबू नहीं रह सकती। मेरा शरीर ऐसा लगता है मानो वह उसे इस्तेमाल करने के लिए ही बना है: जहाँ चाहे, जब चाहे, जैसे चाहे।
'हमें बात करना बंद कर देना चाहिए,' वह आदेश देता है।
और मैं सुनती रहती हूँ। वह अपनी आँखें बंद कर लेता है और शांत होने की कोशिश करता है। लेकिन कोई फायदा नहीं होता। मैं जहाँ बैठी हूँ, वहाँ से उसका उभार साफ दिखाई देता है। मैं भी अपनी आँखें बंद कर लेती हूँ क्योंकि मैं अब और साँस लेने के लिए संघर्ष नहीं करना चाहती। हम दस मिनट या उससे अधिक समय तक चुपचाप बैठे रहते हैं। मुझे हवा थोड़ी शांत महसूस होती है, मेरा शरीर वर्तमान में अधिक मौजूद होता है, मेरा मन थोड़ा आराम महसूस करता है। जब मैं अपनी आँखें खोलती हूँ, तो वह मुझे देख रहा होता है।
'Aanchal.'
'Daksh.'
'हम क्या बनने वाले हैं?' वह पूछता है, उसकी आवाज इतनी गहरी है जितनी मैंने पहले कभी नहीं सुनी थी।
'आपका क्या मतलब है?'
अब हम क्या होंगे?
यह कोई निरर्थक प्रश्न नहीं है। जब मैं उसे गौर से देखता हूँ, तो मुझे एहसास होता है कि उसके पास इस प्रश्न का उत्तर है। मैं प्रश्न को हवा में ही छोड़ देता हूँ। मुझे उम्मीद है कि यह अपने आप ही लुप्त हो जाएगा। ऐसा प्रश्न जिसका उत्तर देने की आवश्यकता नहीं है। लेकिन दक्ष की निगाहें मुझ पर टिकी हैं, मानो वह प्रतीक्षा कर रहा हो। मानो वह हमेशा से प्रतीक्षा कर रहा हो।
'इसका क्या मतलब है, दक्ष?' मैंने पूछा, मेरे मन का एक हिस्सा उसकी ईमानदारी की गहराई से भयभीत था।

वह अपनी कुर्सी मेरी ओर घुमाता है और आगे झुकता है। 'तुम्हारे लिए मेरे मन में जो भावना है, वह सिर्फ़ आकर्षण नहीं है, शायद प्यार भी नहीं, बल्कि उससे कहीं अधिक गहरी भावना है।'
'दक्ष... मुझे... क्या हमें वाकई इस बारे में बात करने की जरूरत है?'
'मुझे पता है यह क्या है।'
'क्या यह सब... बहुत जल्दी है? मैं बस...'
'चार साल बीत चुके हैं, और मुझे पता है कि मैं अपनी जिंदगी का हर पल तुम्हारे बारे में सोचते हुए बिताऊंगा। मुझे नहीं लगता कि मैंने अपनी जिंदगी में कभी किसी और चीज को इतना चाहा है जितना तुम्हें चाहा है।'
'तुम मुझे जानते तक नहीं, दक्ष।'
मुझे सब पता है। और मैंने जो कुछ भी किया है, जो कुछ भी सहा है, उसका अंत तुम पर ही होता है। सब कुछ मुझे तुम्हारे पास ले आया। भले ही यह तुम्हें थोड़ा घिसा-पिटा लगे, और यकीन मानो, मुझे भी ऐसा ही लगता है, लेकिन तुम ही मेरी मंजिल हो, तुम ही मेरा घर हो जिसकी मुझे तलाश थी। मैं आँचल के लिए ही बना हूँ। तुम... तुम ही मेरा मकसद हो।
'दक्ष, वह थोड़ा-सा है-'
'आंचल, मैं तुमसे प्यार करता हूँ।'
'Daksh—'
वह मेरी आंखों में वो सब पढ़ लेता है जो मैंने अभी तक नहीं कहा है। वह मेरे दिल की बात जानता है।
'आंचल, मैं सचमुच ऐसा करती हूँ।'
'दक्ष,' मैं बुदबुदाती हूँ। 'तुम जानते हो मैं नहीं कर सकती। मैं... मैं नहीं कर सकती।'
'Aanchal.'
'दक्ष, मुझे माफ करना। मैं तुम्हें वह नहीं दे सकता जो तुम ढूंढ रहे हो। मैं... बस नहीं दे सकता।'
तभी दरवाजा खुलता है और प्रबंध निदेशक दो कांस्टेबलों के साथ अंदर आते हैं। मैं दक्ष के चेहरे पर एक बार फिर उदासी को उभरते हुए देखता हूँ। लेकिन मुझे पता है कि इस बार मेरा दिल मेरे दिमाग पर हावी नहीं होगा।
मैं नहीं कर सकता।

OceanofPDF.com

OceanofPDF.com

भाग 3

तीन साल बाद

OceanofPDF.com

1.

Daksh Dey

‘Bhaiya, yaar,’ Gaurav protests. ‘Why are you not coming?’
मैंने इस सवाल को नजरअंदाज कर दिया, ठीक वैसे ही जैसे मैंने पिछले बीस बार किया है जब उसने मुझसे यह सवाल पूछा था।
‘आंचल और आपके दोनों के कपड़ों पर समारोहों के हिसाब से निशान लगे हैं—कॉकटेल, शादी, रिसेप्शन,’ मैंने उन्हें याद दिलाया। ‘मुझे कुछ तस्वीरों के विकल्प दीजिए। और हां, इन्हें फाड़ना मत, इन पर कुछ गिराना मत और न ही खोना। हमें ये सभी कपड़े वापस करने हैं।’
‘भैया, कृपया आइए, नहीं। हम दोनों फर्स्ट क्लास में सफर करेंगे। मेरी तरफ से बिल!’
गौरव की अपरिपक्वता हर साल बढ़ती जा रही है। वह अपने उन तेरह वर्षीय दीवाने प्रशंसकों की तरह बनता जा रहा है जो उसे अपना आदर्श मानते हैं। मैं उसके फिजूलखर्ची वाले और असहनीय प्रस्ताव को नज़रअंदाज़ कर देता हूँ, क्योंकि मुझे पता है कि अगर मैंने उसे क्रेडिट कार्ड का इस्तेमाल करने दिया, तो वह देखते ही देखते किसी छोटे द्वीप देश से भी बड़ा कर्ज जमा कर लेगा।
'मेरी बात सुनो, गौरव। तुम अपना पासपोर्ट छोड़कर सब कुछ खो सकते हो। कई कार्यक्रम तय हैं और तुम वहाँ फँसे नहीं रह सकते। टीम प्रैक्टिस भी है। नए फोर्टनाइट में बड़े बदलाव हुए हैं। मैंने कुछ कमियों की सूची बना ली है।'
वह अनमने ढंग से सिर हिलाता है। फिर, उसका चेहरा एक दयनीय, उदास पिल्ले जैसी भावहीनता में बदल जाता है, जो वह उस दिन से बना रहा है जब से वनिता ने अपनी शादी की घोषणा की थी।
मुझे विश्वास नहीं हो रहा कि मैं वनिता को उस कमीने से शादी करते हुए देखने जा रही हूँ!
‘यह बिल्कुल विश्वसनीय है क्योंकि तुम बेवकूफ हो। और मुझे समापन के बारे में बकवास मत सुनाओ। तुम लोगों के बीच कुछ नहीं था। यह सारा ड्रामा व्यर्थ था। तुम

अब भी न जाने का विकल्प चुन सकते हो।'
'यह-'
दीवार से बहस करने की भी एक सीमा होती है। 'ज़्यादा शराब मत पियो और सार्वजनिक रूप से किसी को चूमना मत। वहाँ ये सब गैरकानूनी है और रिश्वत देकर जेल से नहीं बच सकते,' मैंने उसे चेतावनी दी।
गौरव ने अभी-अभी कभी-कभार शराब पीना शुरू किया है, अक्सर मेरी अनुमति के बिना, मुझसे छुपकर, हमारे समझौते को तोड़ते हुए। गेमर्स की उम्र जल्दी ही कम हो जाती है। चौबीस साल की उम्र तक, उनकी प्रतिक्रिया गति धीमी हो जाती है, जिससे वे प्रतिस्पर्धा में पिछड़ जाते हैं। शराब और ड्रग्स इस प्रक्रिया को और तेज़ कर देते हैं। इससे निपटने के लिए, हमने गौरव के लिए सोशल मीडिया पर एक अलग छवि बनाई ताकि वह अपने करियर को आगे बढ़ा सके और चैंपियनशिप जीतने पर निर्भर न रहे। लेकिन फिर भी, उसे इतना चुस्त और सक्रिय रहना होगा जैसे कि उसकी ज़िंदगी इस पर निर्भर करती हो।
'इसीलिए तो आप मेरे साथ चलिए, भैया,' वह गिड़गिड़ाता है। 'सुनिए भैया, हम होटल में होंगे। आपको दीदी से मिलने की ज़रूरत नहीं है। मैं उन्हें बताऊँगा भी नहीं कि आप वहाँ हैं। प्लीज़, भैया।'
मैंने कुली से गौरव की ट्रॉली लेकर चलना शुरू करने को कहा।
'मुझे आपकी बहुत याद आएगी, भैया।'
'अपने बाल कटवा लो।'
अपने इंस्टाग्राम फैंस की वजह से उसे यकीन हो गया है कि मैन-बन (पुरुषों के बालों का जूड़ा) आजकल कूल है। एक दिन मैं इसे कैंची से काट दूंगी। गौरव मुझे गले लगाता है। यह अभी भी उतना ही अजीब और असहज है जितना पहली बार था। यह तब की बात है जब हमारी टीम, फीनिक्स राइजिंग ने अपना पहला बड़ा गेमिंग सम्मेलन जीता था, जिसने हमें एशियाई गेमिंग जगत में उभरते सितारों के रूप में पहचान दिलाई।
'मैं आपसे प्यार करती हूँ, भैया।'
मैं भी उससे प्यार करती हूं, लेकिन जाहिर है, मैं हवाई अड्डे पर चिल्लाकर यह बात नहीं कहूंगी।
'क्या आप चाहते हैं कि मैं दीदी से कुछ कहूँ?' वह आँख मारते हुए मुझसे पूछता है। और क्योंकि वह जानता है कि मैं क्या कहने वाला हूँ, इसलिए वह अपने बड़े हेडफ़ोन अपने कानों पर लगा लेता है।
'उसे कहो कि दफ़ा हो जाए,' मैंने गौरव से कहा। 'अपनी बहन से कहो कि वह इतिहास की सबसे बुरी इंसान है और मैं कामना करता हूँ कि उसके जीवन का हर दिन यातना की शुद्ध परिभाषा हो।'
वह हाथ हिलाता है और अपने कुली के पीछे-पीछे दिल्ली अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे में प्रवेश करता है। बीस वर्ष से अधिक आयु के प्रशंसकों का एक समूह उसे देखता है और उसके चारों ओर जमा हो जाता है, उसकी प्रशंसा करने लगता है। वे तस्वीरें लेने

के लिए अपने फोन निकाल लेते हैं। वह सभी को मुस्कुराकर और गले लगाकर अभिवादन करता है। एशिया में बेजोड़ गेमिंग कौशल के अलावा, प्रशंसकों के प्रति उसका व्यवहार भी उसे इतना लोकप्रिय बनाता है। कुछ ही मिनटों में, उसका डिस्कॉर्ड समूह सक्रिय हो उठता है।
गौरव मदन दिल्ली एयरपोर्ट पर नजर आए!

मेरे फोन पर गौरव के सोशल मीडिया अकाउंट्स से नोटिफिकेशन की बाढ़ आ गई। डीएम की भरमार हो गई, लोग ऑटोग्राफ मांग रहे थे, मिलने का प्लान बना रहे थे और गौरव को ओरल सेक्स देने की पेशकश कर रहे थे। गौरव को इन सब बातों का कोई अंदाजा नहीं था, क्योंकि वह एक साल से ज्यादा समय से इंस्टाग्राम से गायब था।
उसे किसी भी तरह के भटकाव की सख्त जरूरत नहीं है। वह सोशल मीडिया के आकर्षण में आसानी से फंस जाता है और फोन पर घंटों बिता देता है। हमने उसे सोशल मीडिया से पूरी तरह से दूर करने का निर्णायक फैसला लिया है।
फीनिक्स राइजिंग गेमिंग के टीम प्रिंसिपल और सह-मालिक के रूप में, उनकी और टीम की ऑनलाइन उपस्थिति का प्रबंधन करना मेरी जिम्मेदारी है।
विदेशों में गेमिंग कॉन्फ्रेंस में, अन्य टीम मैनेजर मुझसे कहते हैं कि मैंने टीम को एक प्रतिष्ठित ब्रांड बनाने में बहुत अच्छा काम किया है। गौरव भी अपनी सफलता का श्रेय मुझे ही देता है, जो कि अतिशयोक्ति है क्योंकि अंततः कीबोर्ड और गेम प्लान तो वही संभालता है।
लेकिन एक व्यक्ति ऐसा भी है जो सोचता है कि मैं एक परजीवी हूं, गौरव के शरीर से खून चूसने वाली एक खून चूसने वाली जोंक हूं।
Aanchal.
आंचल का तर्क है कि गौरव, जो गेमिंग का महाप्रतिभाशाली खिलाड़ी है, भीड़ में पत्थर फेंके तो भी कोई न कोई टीम को संभालने वाला मिल ही जाएगा। लेकिन फिर भी, उसने मेरे और हम सबके साथ जो किया है, उसके बाद तो कोई भी उसके मुझे स्वार्थी कहने के आरोप को गंभीरता से नहीं लेगा। वह सचमुच सबसे स्वार्थी इंसान है।

* * *

फीनिक्स राइजिंग गेमिंग का कार्यालय, जिसमें गौरव और मैं सह-मालिक हैं, नेताजी सुभाष प्लेस में माता रानी बिल्डिंग की सातवीं मंजिल पर स्थित है। अधिकतर दिनों में लिफ्ट खराब रहती है, और हमें अपने नमीयुक्त, बिना खिड़की वाले कार्यालय तक पहुँचने के लिए सात सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ती हैं।
हमारे यहाँ लेखा विभाग में तीन लोग, पोस्ट-प्रोडक्शन में दो लोग हैं, जिनमें फीनिक्स राइजिंग की चार टीम सदस्य और मैं शामिल नहीं हैं। हमने ऑफिस के बाकी हिस्सों पर कम खर्च किया ताकि हम गेमिंग रूम पर दिल खोलकर खर्च कर सकें। यह हमारे

ऑफिस का मुख्य आकर्षण है जहाँ गौरव और उनकी टीम दिन में सोलह घंटे तक अत्याधुनिक गेमिंग उपकरणों पर अपने कौशल को निखारने और ऑनलाइन चैनलों के लिए लाइव स्ट्रीम रिकॉर्ड करने में बिताते हैं। हम बाकी लोग गेमिंग रूम के सामने एक लंबी मेज पर बैठते हैं। यह एक तंग, सादा ऑफिस है जिसे शायद ही कभी सर्वश्रेष्ठ कार्यस्थल का पुरस्कार मिलेगा, लेकिन यह हमारे लिए ठीक है। गेमिंग रूम के ठीक बगल में हमारा एक छोटा सा पॉडकास्ट स्टूडियो है जिसे हम पॉडकास्टरों को किराए पर देते हैं। यह आय का एक छोटा लेकिन स्थिर स्रोत है।

जब मैं ऑफिस पहुंची, तो अमृता ठाकुर पहले से ही पॉडकास्ट स्टूडियो में अपने लैपटॉप से पॉडकास्ट माइक्रोफोन जोड़ रही थीं। उन्होंने ज़िप बंद की हुई काली नाइकी विंडचीटर और काली टाइट्स पहनी हुई थी। विंडचीटर के अंदर, मुझे पता चला कि उन्होंने काली स्पोर्ट्स ब्रा पहनी हुई है। वह इसे अपना 'दिन भर का यूनिफॉर्म' कहती हैं। उनके पास कई सारी स्पोर्ट्स ब्रा हैं, जो उन्होंने सेल में खरीदी थीं। उनके पास तीन ड्रेस के अलावा और कुछ नहीं है - एक जो कभी-कभार पार्टी के लिए काफी छोटी है, एक जो फॉर्मल है और एक जो रेड कार्पेट के लिए एकदम सही है, और ये सभी काले रंग की हैं। उनका कहना है कि दाग-धब्बों से बचने का एकमात्र तरीका काला पहनना है। दो बेटों की मां होने के नाते, वह दाग-धब्बों के बारे में अच्छी तरह जानती हैं। उनके आठ साल के जुड़वां बेटे, नमन और निशांत, जो मैंने अब तक देखे सबसे अच्छे व्यवहार वाले, ईमानदार और आज्ञाकारी लड़कों में से दो हैं, अब उनकी नकल करते हैं और काले नाइकी एथलीजर के अलावा कुछ भी पहनने से इनकार करते हैं।

मुझे अमृता के पॉडकास्ट के बारे में छह साल पहले पता चला था जब मैं पहली बार रब्बानी और अपने अवसादग्रस्त पिता के साथ मुंबई आया था।

कनेक्शन तुरंत हो गया।

अमृता ठाकुर इक्कीस साल की थीं और उनके एक साल के जुड़वां बेटे थे। उनके पति की अचानक दिल का दौरा पड़ने से मृत्यु हो गई थी। वह अपने माता-पिता, दो रोते-बिलखते बच्चों और भविष्य के बारे में टूटी हुई उम्मीदों के साथ रह रही थीं। उन्होंने अपने जीवन के बारे में, अपने पति के बारे में, जो बहुत ज्यादा खाते-पीते थे और असमय ही दुनिया छोड़ गए, अपनी भड़ास निकालने के लिए अपने फोन पर पहला पॉडकास्ट रिकॉर्ड किया था।

उनका पॉडकास्ट एक साथ दिल दहला देने वाला, मज़ेदार और समझने लायक था। उनकी आवाज़, रब्बानी को पालने-पोसने की मेरी परेशानियों पर एक कोमल मरहम की तरह थी। ऐसा लग रहा था जैसे वो मेरे कानों में फुसफुसा रही हों, 'कोई बात नहीं, हर किसी से गलती हो जाती है।' 'तुम उसका लंच पैक करना भूल गईं? कोई बात नहीं! हर किसी से गलती हो जाती है।' 'तुमने अपने बच्चे पर चिल्लाया, कोई बात नहीं, हर किसी से गलती हो जाती है, लेकिन दोबारा ऐसा मत करना।'

फिर अचानक उसने पॉडकास्ट करना बंद कर दिया।

एक साल पहले, जब हमने अपने कार्यालय में पॉडकास्ट स्टूडियो जोड़ा ताकि हमने जिन पोस्ट-प्रोडक्शन टीम को काम पर रखा था, उनसे और अधिक काम ले सकें, तो

मैंने सबसे पहले अमृता से संपर्क किया, भले ही उन्होंने तीन साल में एक भी पॉडकास्ट रिकॉर्ड नहीं किया था। मुझे पता चला कि वह सहायक प्रोफेसर के रूप में इतिहास पढ़ाती हैं, और वह इस बात को लेकर असमंजस में थीं कि मैं कौन हूं और मैं उन्हें पॉडकास्टिंग में वापस आने के लिए क्यों कह रहा हूं।
जब मैं उनसे उनके छोटे से दफ्तर में मिली, जहाँ सिर्फ उनकी मेज और किताबों के लिए जगह थी, तो उन्होंने मुझे बताया, 'मेरे बच्चों के अलावा किसी ने भी मेरा पॉडकास्ट नहीं सुना। उन्होंने सुना और कहा, "हमारे बारे में शिकायत करना बंद करो!" तो हाँ, अब मेरे दोबारा पॉडकास्ट करने की कोई संभावना नहीं है।'
मुझे उसे पॉडकास्टिंग में वापस आने के लिए मनाने में तीन महीने लग गए। और उसे मुझे यह समझाने में तीन महीने लग गए कि मुझे भी पॉडकास्ट का हिस्सा बनना चाहिए।
‘तैयार हो?’ अमृता मुझसे पूछती है।
मैं उसके लैपटॉप पर लेवल चेक करता हूं, गेन एडजस्ट करता हूं और माइक्रोफोन को अपनी तरफ खींचता हूं।
‘वापस स्वागत है दोस्तों! मैं दक्ष हूँ...’
‘...और मैं अमृता हूँ! और हमारे पॉडकास्ट, किड्स रेज़िंग किड्स में आपका स्वागत है! जहाँ दो अनजाने माता-पिता अपनी परवरिश की गलतियों पर चर्चा करते हैं और आशा करते हैं कि आप बेहतर करेंगे!’
वह मेरा हाथ थाम लेती है। मैं उसका हाथ थाम लेता हूँ और उसकी गर्माहट अपने अंदर महसूस करता हूँ। उसके पति को गुज़रे आठ साल हो गए हैं। जब मैं उससे पहली बार मिला था, तो उसकी त्वचा उस जगह पर हल्की थी जहाँ कभी शादी की अंगूठी हुआ करती थी। समय ने उस जगह को फिर से रंग दिया है। उसकी उंगली को सहलाते हुए, मैं सोचता हूँ कि क्या मुझे उसे अंगूठी पहना देनी चाहिए।

OceanofPDF.com

2.

Aanchal Madan

‘तुम कहाँ हो!’ वनिता फोन पर चीखती है।
मैं हवाई अड्डे के फर्श पर पड़ा हूँ, मेरे कान से खून बह रहा है।
‘मैं बाहर हूँ! जल्दी आओ! मैं अपनी ही शादी में लोगों को लेने नहीं जा सकती।’
मैंने विरोध करते हुए कहा, 'मैंने तुमसे कहा था कि मैं टैक्सी ले लूंगी। और मैं शराब लिए बिना बाहर नहीं आऊंगी। अगर तुम सच में यह शादी करने जा रहे हो, तो मैं होश में रहते हुए इसे नहीं देखूंगी।'

‘मेरा समय बर्बाद करना बंद करो और भागो, आँचल! यार, सब लोग पहले ही शराब ले आए हैं।’
मैं जिन और थोड़ी सी वोदका खरीद रहा हूँ। क्या कोई व्हिस्की पीना चाहेगा?
वनिता फोन पर गहरी सांस लेती है। 'सब कुछ थोड़ा-थोड़ा ले आना,' वह मान जाती है। 'तो, वहाँ एक साइनबोर्ड होगा जिस पर लिखा होगा दुबई एयरपोर्ट टैक्सी स्टैंड... मैं उसके बगल वाली सड़क पर हूँ। जल्दी करो, जल्दी करो, और तेज़ दौड़ो। अलविदा!'
मेरी जेब में रखा ऑफिस का फोन वाइब्रेट कर रहा है। इस छुट्टी के लिए तीन हफ्ते पहले सूचना देने और कई बार चेतावनी देने के बावजूद, मेरी टीम हर छोटी-मोटी बात को बच्चों की तरह मेरे पास खींच ला रही है। कुछ लोगों की भर्ती मेरी गलती है—मैंने उन्हें मैनेजमेंट स्कूलों से सीधे भर्ती कर लिया, यह सोचकर कि वे कुशल होंगे। उनके पास बस एक डिग्री है। उन्हें देखकर मुझे खुशी होती है कि मैंने मैनेजमेंट कॉलेज में दो साल मार्केटिंग की ऐसी शब्दावली सीखने में बर्बाद नहीं किए जो चीन में जलवायु परिवर्तन के विरोध प्रदर्शनों जितनी ही बेकार है। मैं ऑफिस के मैसेजिंग ग्रुप के लिए एक वॉइस नोट रिकॉर्ड करता हूँ।
‘आप लोग घटिया मूल्यांकन से बस एक और संदेश दूर हैं! अब और संदेश नहीं!’
पिछले हफ्ते मुझे एचआर से एक सख्त ईमेल मिला। जाहिर तौर पर, मैं जूनियर्स के साथ कुछ ज्यादा ही दोस्ताना व्यवहार कर रहा था, और अगर उनमें से किसी ने शिकायत की तो यह उल्टा पड़ सकता है। मैंने वॉइस नोट डिलीट कर दिया, हालांकि मुझे ऐसा करने की जरूरत नहीं थी। स्टार्ट-अप में पांच शानदार साल बिताने के बाद मैं नोटिस पीरियड पर हूं। इन पांच सालों में डिलीवरफूड ने मुझे सब कुछ दिया है: तेजी से तरक्की, लेकिन इतना तनाव कि मुझे याद ही नहीं कि सिरदर्द न होना कैसा होता है; ऐसे बॉस जिन्होंने ऑफसाइट मीटिंग्स में मेरी पीठ पकड़ी, लेकिन ऐसे बॉस भी थे जिन्होंने मेरी कमियों को पूरा किया और मुझे वह सब कुछ सिखाया जो मैं जानता हूं; कुछ दोस्त, कुछ बदतमीज लोग, अनुभव, एक शानदार सीवी, बालों का झड़ना और ढेर सारी बचत। कृतज्ञता के भाव से, मैंने टीम को एक ईमेल भेजा। क्योंकि मुझे डिलीवरफूड से एक आखिरी मदद चाहिए: एक शानदार सिफारिश पत्र।

प्रिय टीम,
जैसा कि आप समझ सकते हैं, मैं छुट्टी पर हूँ और काम से संबंधित किसी भी कॉल का जवाब देने में असमर्थ हूँ। वापस आने पर मैं सभी मामलों को प्राथमिकता दूंगा।
सम्मान
Aanchal Madan
उपाध्यक्ष, विपणन, डिलीवरफूड

‘देर हो गई!’ वनिता खुशी से चिल्लाती है और मुझे गले लगा लेती है।
शादी के लिए वो और भी फिट हो गई है, जो अपने आप में एक बड़ी बात है क्योंकि

वो हमेशा से ही मांसपेशियों से भरी और बेजान सी रही है। ऐसा लग रहा है जैसे मैं उसकी किसी पत्थर की मूर्ति को गले लगा रहा हूँ, न कि उसे। मुझे एक साथ ईर्ष्या और प्रेरणा दोनों महसूस हो रही हैं। वो मेरा सूटकेस लेती है और उसे किराए की मस्टैंग कार की पिछली सीट पर ऐसे फेंक देती है जैसे वो कोई खिलौना हो, सामान नहीं।

दुबई की बेहद चौड़ी सड़कों और तेज़ रफ़्तार ट्रैफिक में वनिता जब खतरनाक तरीके से गाड़ी चला रही थी, तो मैंने उससे कहा, 'तुम्हें गाड़ी चलाने की इजाज़त नहीं होनी चाहिए।...और ये सब...ये तो लापरवाही है।'

'मैं आंखें बंद करके, हाथ पीछे बांधकर भी गाड़ी चला सकता हूं। मैं बारह साल की उम्र से गाड़ी चला रहा हूं।'

'सबसे पहले तो, ये खराब परवरिश है,' मैंने कहा। 'तुम्हारे माता-पिता को खुद पर शर्म आनी चाहिए। और मैं ड्राइविंग की बात नहीं कर रही, बल्कि तुम्हारी शादी की बात कर रही हूँ। पच्चीस साल की उम्र में कौन शादी करता है?!'

वह आंखें घुमाती है। 'अगर आप अखिल भारतीय आंकड़े देखें, तो सचमुच भारत में हर लड़की की शादी पच्चीस साल की उम्र तक हो जाती है!'

'मेरा मतलब करियर बनाने वाली लड़कियों से था। हमारी कक्षा की सभी लड़कियों में से, तुम सबसे पहले शादी कैसे कर सकती हो? पच्चीस साल की उम्र में! पच्चीस साल की उम्र में!'

सच कहूं तो, मानसिक रूप से मुझे ऐसा लगता है जैसे मैं तेईस साल का हूं।

अगर इस उम्र में शादी करना उसकी पहली गलती है, तो दुबई में पीक सीजन में शादी करना उसकी दूसरी गलती है। मैंने उससे कहा था कि इससे बेहतर है कि वह पैसों का ढेर जला दे। उसने मुझे अंकल स्क्रूज कहा, जो पैसों के गट्ठे पकड़े मरेगा।

'हम थोड़ी देर के लिए दर्जी के पास रुकेंगे, मेरे लहंगे में कुछ आखिरी समय के बदलाव करवाने हैं।'

मैंने उससे पूछा, 'क्या तुम अपने पेट की मांसपेशियों को फिट करने के लिए और जगह बना रही हो?'

'जल्द ही मेरा पेट भी शादी के बाद वाले पेट की तरह निकल आएगा,' वह मुझसे कहती है।

दर्जी ने हमें आधे घंटे और इंतज़ार करने को कहा। हम दुकान से बाहर निकले और पास के रेस्तरां की ओर चल दिए। मैंने अपने बैग में हाथ डाला और हवाई अड्डे से खरीदी हुई जिन और टॉनिक की दो कैन निकालीं और उन्हें उसके सामने लहराया।

'...और तुम ये दोनों पी रही हो,' वह कैन की ओर इशारा करते हुए कहती है। 'मेरे दिन लंबे होते हैं, मैं हर समय नशे में नहीं रह सकती। मेरी शादी है, मैं बेहोश होकर कुछ भी याद न रखना नहीं चाहती।'

'उबाऊ! तुम तो अभी से बूढ़े हो रहे हो!' मैंने विरोध किया, मेरी कैन आधी खाली हो चुकी थी। 'अगर तुम बेहोश हो जाओ तो क्या फर्क पड़ता है? हमारे पास वीडियो होंगे!'

मैं शराबी नहीं हूँ, भले ही सप्ताहांत में मेरा उत्साह देखकर कोई मुझे शराबी समझ ले। लेकिन मैं कभी भी (अकेले) और (कार्यदिवसों में) शराब नहीं पीऊँगा।
लेकिन सप्ताहांत में, नशे के उन क्षणों में, सारा तनाव और चिंताएँ गायब हो जाती हैं, केवल खुशी और बेफिक्री रह जाती है। और मैंने कभी ऐसा हैंगओवर अनुभव नहीं किया जो आठ घंटे की नींद और कुछ मसालेदार मैगी से ठीक न हो सके। मेरे बॉस कहते हैं कि बस कुछ ही समय की बात है जब उम्र का असर मुझ पर पड़ेगा और हैंगओवर इतना बुरा होगा कि मैं शराब पूरी तरह से छोड़ दूँगा।
'आदित्य अब तक का सबसे सुंदर लड़का है जिससे मैं मिली हूं,' वनिता कहती है, मानो इस बेतुकी शादी को समझाने की कोशिश कर रही हो।
मैंने उनकी तस्वीरें देखी हैं। वनिता किसी अंकल जैसे दिखने वाले लड़के की आकर्षक, युवा बहन जैसी दिखती है, जो एलआईसी या इसी तरह की किसी नीरस नौकरी में काम करता है।
मैंने उसे याद दिलाया, 'वह तुमसे तीन इंच छोटा है और उसकी मूंछें हैं।' 'ऐसा कोई नहीं जिसके लिए तुम अपनी जान जोखिम में डालोगी।'
‘आदित्य का लिंग बड़ा और नसों से भरा हुआ है, तीन इंच ज्यादा लंबा है, वह मुझसे प्यार करता है और अपने काम से भी प्यार करता है। और यह कहना बंद करो कि मैं अपनी जिंदगी बर्बाद कर रही हूँ! मैं परिवार को पाँच साल देना चाहती हूँ, जल्दी से दो बच्चे पैदा करना चाहती हूँ, फिर कॉर्पोरेट जीवन में वापस जाना चाहती हूँ।’
'मैं ऐसी कंपनी की कल्पना करने की कोशिश कर रही हूँ जो बिना अनुभव वाली और दो बच्चों की माँ को काम पर रखेगी, और ऐसी कोई कंपनी मौजूद ही नहीं है। यह पेशेवर आत्महत्या है।'
वनिता ऐसे कंधे उचकाती है मानो उस पर अलग नियम लागू होते हों। 'देखते हैं,' वह चुनौती भरे लहजे में कहती है। 'और अगर भविष्य के बारे में आपकी सोच इतनी स्पष्ट है, तो पांच साल बाद आप कहां होंगी?'
‘मैं कहीं भी हो सकती हूँ, मैं कुछ भी कर सकती हूँ। किसी अनजान आदमी से शादी न करने का यही सबसे अच्छा पहलू है,’ मैंने जवाब दिया। ‘एक बात तो मैं पक्के तौर पर जानती हूँ, मैं बच्चों के डायपर नहीं बदलना चाहती और किसी आदमी के घर आने का इंतज़ार नहीं करना चाहती जो मुझे थोड़ा ध्यान दे और फिर मुझे अपने काम की मुश्किलों के बारे में बताए।’
वनिता मेरी तरफ देखती है और मुस्कुराती है, मानो उसे जीवन का कोई ऐसा रहस्य पता हो जो मुझे नहीं पता। हर वो इंसान जो कोई बहुत ही मूर्खतापूर्ण फैसला लेने वाला होता है, सोचता है कि उसने उस रहस्य को सुलझा लिया है।
आँचल, मुझे बिलकुल यही चाहिए। तुमने जो कुछ भी कहा, उसका हर एक शब्द। मैं आदित्य को शिकायत करते हुए सुनना चाहती हूँ। मैं उससे अपने बच्चों के बारे में बड़बड़ाना चाहती हूँ, जिनका नाम हम एरियाना या कुछ ऐसा ही बड़ा-सा रखेंगे। मैं उसके काम के बारे में बात करना चाहती हूँ, उसके ऑफिस या मेरे दोस्तों के सर्कल में किसी के बारे में गपशप करना चाहती हूँ, नेटफ्लिक्स पर कोई शो देखना चाहती हूँ

और फिर सो जाना चाहती हूँ। मैं चाहती हूँ कि हम पारिवारिक यात्राओं की योजना बनाएँ, और फिर आदित्य पर चिल्लाऊँ कि उसने पर्याप्त चार्जर पैक नहीं किए, और उसे मुझ पर चिल्लाते हुए सुनूँ कि मैंने बच्चों को पानी में ज़्यादा देर तक खेलने क्यों दिया। हम मोटे हो जाएँगे, अपने शरीर से नफ़रत करेंगे, फिर पतले हो जाएँगे। हम एक-दूसरे को प्यार, चिंता, उदासी और गुस्से की समस्याएँ देंगे। हम एक-दूसरे को जान से मार देना चाहेंगे, लेकिन एक-दूसरे से बेइंतहा प्यार भी करेंगे।
उसके भविष्य के बारे में उसकी सोच मुझे घृणास्पद लगती है। मैंने हमेशा वनिता को एक विश्व भ्रमण करने वाली, चुटकुलों से भरी और डांस फ्लोर पर धूम मचाने वाली सीईओ के रूप में देखा था।
'तुम ऐसा कैसे चाह सकते हो? ऐसा लगता है जैसे तुम लाल रंग पसंद करते हो इसलिए ब्लेंडर में हाथ डालना चाहते हो!'
'आप सिंगापुर, अमेरिका या ऑस्ट्रेलिया में उपराष्ट्रपति बनना कैसे चाह सकते हैं?' वह तीखे स्वर में बोली। 'ऐसा लगता है जैसे भगवान ने आपको 7 अरब लोग दिए हों और आप अकेले रहना चुनते हों।'
यह तर्क बेबुनियाद है। मेरे पास हर काम के लिए लोग हैं—कनिका जिसके साथ मैं फिल्में देखने जाती हूँ, रजत जिसके साथ मैं दोस्तों के साथ घूमती हूँ, स्मिता जिसके साथ मैं शॉपिंग करती हूँ और अरुणिमा जिसके साथ मैं दुकानों का नज़ारा देखती हूँ। मैं क्यों चाहूँगी कि हर काम के लिए मेरे साथ सिर्फ एक ही व्यक्ति हो?
'तुम्हें इसका पछतावा होगा,' मैंने उसे चेतावनी दी। 'जब तुम चालीस साल की हो जाओगी और तुम्हें एहसास होगा कि तुम्हारे बच्चे बिगड़े हुए किशोर बन गए हैं जो कभी स्क्रीन से नज़र नहीं हटाते और तुम्हें अनकूल होने के लिए कोसते हैं, जब तुम्हारे पति को लगेगा कि तुम अब उतनी आकर्षक नहीं रही, तब तुम सब कुछ वापस जाकर बदलना चाहोगी।'
वनिता मुझे हैरानी से देखती है। 'तुम्हें लगता है कि मैं चालीस साल की उम्र में आकर्षक नहीं रहूंगी? अरे यार।'
'उस हिस्से में मुझसे गलती हो गई।'
हम पहले भी इस बहस से गुज़र चुके हैं, और इसका अंत ठीक वहीं होता है जहाँ से शुरू हुआ था। असहमति में। और विषय बदलने में।
मैंने समय देखा। 'एक घंटे में गौरव आ जाएगा। सच कहूँ तो, तुम्हारी शादी से ज़्यादा मुझे उसके द्वारा मेरे लिए लाए जा रहे कपड़ों को लेकर उत्साह है।'
वनिता की आँखें चमक उठीं। 'आदित्य के सारे दोस्त तुम्हें देखकर मर ही जाएँगे!'
वनिता चहकते हुए बोली। 'मुझे विश्वास ही नहीं हो रहा कि तुम मेरी शादी में मुझसे भी अच्छे कपड़े पहनने वाली हो। ये तो पीठ में छुरा घोंपने जैसा है, और फिर घाव पर नमक छिड़कने जैसा।'
मैं शादी में सत्या पॉल, सब्यसाची और मनीष मल्होत्रा के डिज़ाइन किए हुए कपड़े पहन रही हूँ। मेरे बेवकूफ लेकिन मशहूर भाई गौरव ने ये सब मुमकिन किया।
'तुम मेरे साइज के क्यों नहीं हो?' वह शिकायत करती है और गहरी सांस छोड़ती है।

‘मुझे गौरव से शादी कर लेनी चाहिए थी, तब मैं उसके संपर्कों का फायदा उठा पाती।’
‘मुझे हैरानी हो रही है कि वो शादी में आ भी रहा है,’ मैंने कबूल किया। ‘वो बेवकूफ बहुत ज़्यादा फिल्में देख चुका है और उम्मीद कर रहा है कि तुम आखिरी पल में शादी रद्द करके उसके साथ भाग जाओगी। तुम्हें देखना चाहिए था कि जब तुमने शादी की घोषणा की तो वो कितना रोया था। उसने मुझे ऐसे कोसा जैसे मेरा काम हो कि मैं तुम्हें उससे प्यार करवाऊं।’
वह खिलखिलाकर हंसती है। 'प्यारा तो है। लेकिन चलो, कम से कम वो मशहूर तो है। अकेला आ रहा है ना? दक्ष नहीं आ रहा है।'
आज सुबह जब गौरव ने पुष्टि की कि वह अकेले आएगा, तो मुझे ज़रा राहत मिली। दक्ष का सामना करने के ख्याल मात्र से ही मैं भयभीत हो गई थी, और मुझे डर सता रहा था कि कहीं वह मेरे प्यारे दोस्त की शादी खराब न कर दे। अपनी हताशा में, मैंने अपने आजमाए हुए तरीके का सहारा लिया। कुछ दिन पहले, मैंने अपनी हथेली पर 'जय श्री राम' लिखा था, और ठान लिया था कि जब तक मुझे यह खबर नहीं मिल जाती कि वह नहीं आ रहा है, तब तक मैं इसे मिटने नहीं दूंगी।
‘भगवान का शुक्र है कि वह नहीं आ रहा है,’ मैंने कहा।
‘वो रजत से कहीं बेहतर है। और मुझे ये बकवास मत सुनाओ कि वो तुम्हारा सबसे अच्छा दोस्त है या कुछ और,’ वनिता गुस्से से बोली। ‘जिन दो लोगों के बीच शारीरिक संबंध हो चुके हों, वे कभी दोस्त नहीं हो सकते।’
मैंने जिन की दूसरी कैन खोली। मुझे अपने शरीर में नशे का हल्का सा एहसास होने लगा। वनिता को यह बात समझ में आ सकती है कि जो लोग सिर्फ छह महीने से एक-दूसरे को जानते हैं, वे शादी कर सकते हैं और अगले पचास साल साथ बिता सकते हैं, लेकिन लोग सिर्फ छह बार शारीरिक संबंध बनाने के बाद दोस्त नहीं रह सकते।
‘मुझे कितनी बार तुम्हें बताना पड़ेगा कि रजत की एक गर्लफ्रेंड है? नंदिनी,’ मैंने उसे चिढ़कर कहा।
वनिता मुझे ऐसे झटक देती है जैसे मैं उसके कानों के पास भिनभिनाती कोई मक्खी हूँ। 'जो तुम्हें इतना पसंद करता है, वो अंधा ही होगा। आँचल, आखिरी बार कह रही हूँ, जिनके साथ शारीरिक संबंध बना लिया हो, उनसे दोस्ती नहीं रख सकते।'
‘रजत नंदिनी से शादी करने जा रहा है। वह बस उससे पूछने के लिए सही मौके की तलाश में है।’
रजत का निर्णय वनिता के निर्णय से कहीं अधिक विवेकपूर्ण है। अट्ठाईस वर्षीय नंदिनी, भारतीय महिलाओं के लिए अशुभ मानी जाने वाली उम्र के करीब पहुँचते ही अपने माता-पिता की चिंताओं का बोझ महसूस कर रही है। रजत और नंदिनी दोनों ने आईआईटी से शिक्षा प्राप्त की है और सॉफ्टवेयर क्षेत्र में सफल करियर बना चुके हैं, तथा एक ही सामाजिक दायरे में सहजता से अपनी जगह बनाए हुए हैं। वनिता के विपरीत, उनमें से किसी को भी विवाह के नाम पर अपनी महत्वाकांक्षाओं का त्याग नहीं करना पड़ता।

वनिता को यकीन नहीं है। 'अगर सदियों बाद भी नंदिनी और रजत के कंकाल उनकी कब्र में एक-दूसरे को गले लगाते हुए मिलें, तब भी मुझे पता होगा कि वह तुमसे बेइंतहा प्यार करता है। मुझे यकीन है कि नंदिनी के साथ अंतरंग होते समय वह तुम्हारे बारे में ही सोचता होगा।'
मुझे लगता है कि तुम इसलिए जल रहे हो क्योंकि तुम्हारे अलावा मेरा एक और सबसे अच्छा दोस्त है।
मुझे जलन हो रही है, लेकिन मुझे उसके लिए दुख भी हो रहा है।
'अपने लिए दुखी हो जाओ। तुमने अपना सारा दांव एक ही टोकरी में लगा दिया है,' मैंने कहा।
'तकनीकी रूप से, वह अपनी कोई चीज मेरे अंडों की टोकरी में डाल रहा होगा।'
'. . .'
'वह मेरे गर्भाशय, मेरे अंडों में ये सब डालेगा—'
मुझे आपकी बात समझ आ गई!
'मैं प्यार में हूँ, आँचल। तुम्हें पता भी नहीं चलेगा।'
मैंने झुंझलाहट भरी आह भरी, मेरी आँखें इतनी पीछे की ओर घूम गईं कि मानो मेरी पुतलियाँ मेरे मस्तिष्क में घुस गई हों। 'मैं वहाँ जा चुकी हूँ, बिल्कुल भी नहीं। प्यार एक जाल है।'
'ऐसा ही मानते रहो, एक दिन तुम अकेले और तन्हा रह जाओगे।'
'लोग शादीशुदा और रिश्तों में होते हुए भी अकेलेपन का अनुभव कर सकते हैं। कम से कम इसके लिए मैं खुद को ही दोषी ठहराऊंगी। खैर, मेरी सबसे अच्छी दोस्त मेरे साथ होगी,' मैं कहती हूं और अपना हाथ उसके कंधे पर रख देती हूं। 'जो अपने पति और बिगड़े हुए बच्चों से इतनी तंग आ चुकी होगी कि अपना सारा समय मेरे साथ बिताएगी। लेकिन...'
'लेकिन?'
इसके लिए आपको अमेरिका का वीजा लेना होगा।
'क्या?'
'यह सच है,' मैंने कहा। 'मुझे पिछले हफ्ते ही नौकरी का पत्र मिला है।'
'मुझे मत बताओ!' वनिता ने अपने हाथों से अपना मुंह ढक लिया। फिर उसने मुझे गले लगा लिया। 'वाह! मैं तुमसे बहुत प्यार करती हूँ! मुझे तुम्हारे लिए बहुत खुशी है!'

OceanofPDF.com

3.

Aanchal Madan

आदित्य दुबई के बेहद विशाल अटलांटिस होटल के बरामदे में इंतज़ार कर रहा है। समुद्र की थीम पर आधारित यह रिसॉर्ट, जो रेत के रंगों में रंगा है और ठीक समुद्र तट पर बना है, लोगों से खचाखच भरा हुआ है। जब मैंने आखिरी बार ऑनलाइन चेक किया था, तो रिसॉर्ट के सभी 1544 कमरे पूरी तरह से बुक थे। इससे वनिता की पीक सीज़न में डेस्टिनेशन वेडिंग के बारे में मेरी बात सही साबित हुई। कितना बड़ा नुकसान!

आदित्य में गजब का स्नेह और आकर्षण है, यह स्पष्ट है। वह मेरा सूटकेस मुझसे ले लेता है, मुझे बताता है कि जब मम्मी-पापा आएंगे तो उन्हें मेरे बगल वाला कमरा दिया जाएगा और वह मुझे अपने दोस्तों से मिलवाने के लिए उत्सुक है—जो सभी वनिता की खूबसूरत दोस्त के आने का बेसब्री से इंतजार कर रहे हैं।

आदित्य ने उत्साह से कहा, 'हम सब तुम्हारे भाई का भी इंतजार कर रहे हैं। हमने एक कमरे में प्लेस्टेशन लगा रखा है। हमें उम्मीद है कि वह हमें फीफा में अपने कुछ गुर सिखाएगा।'

'ऐसा लगता है कि किसी को मेरी शादी की परवाह नहीं है,' वनिता शिकायत करती है।

मुझे हमेशा से ही यह अजीब लगता है जब लोग गौरव से मिलने की गुजारिश लेकर मेरे पास आते हैं। उनके फैन मीट-एंड-ग्रीट कार्यक्रम बेहद रोमांचक होते हैं। सैकड़ों लोग उन्हें घेर लेते हैं और वे गेमिंग कंट्रोलर से लेकर टी-शर्ट और यहां तक कि लोगों के हाथों पर भी ऑटोग्राफ देने लगते हैं।

'मुझे कभी भी यह बात समझ में नहीं आती कि लोग गौरव को एक अनाड़ी बेवकूफ के अलावा कुछ और समझते हैं,' मैं आदित्य से कहता हूं।

आदित्य मुझे ऐसे टाल देता है मानो वह मेरे भाई को मुझसे बेहतर जानता हो। ‘वह एक स्टार है!’ आदित्य जोर देकर कहता है। ‘उसका खेल अविश्वसनीय है।’

अगर आप अपनी मंगेतर से पूछेंगे तो वह आपको बताएगी कि गौरव को लड़कियों को पटाने का बिल्कुल भी हुनर नहीं है।

वनिता खिलखिलाकर हंसती है।

‘अगर मैं वनिता होती,’ आदित्य सोचता है, ‘तो मैं गौरव से सौ बार शादी कर लेती। सोचो, किसी ऐसे व्यक्ति से शादी करने की कल्पना कैसे कर सकते हो जो गेम खेलकर अपना जीवन यापन करता हो?’

‘तुम अब भी ऐसा कर सकती हो,’ वनिता बीच में बोल पड़ी। ‘वह आ रहा है, अपनी किस्मत आजमाओ।’

आदित्य अपने प्रशंसक होने में कोई कसर नहीं छोड़ते। 'लेकिन बात सिर्फ उनके गेमप्ले की ही नहीं है, जो वाकई लाजवाब है। वह एक मजाकिया इंसान हैं। काफी तेज दिमाग वाले हैं। गेम स्ट्रीम के दौरान वह जो कुछ कहते हैं, उस पर रेडिट पर खूब चर्चा होती है। एकदम लाजवाब।'

कमेंट सेक्शन में गौरव मदन के बारे में अलग-अलग शब्दों में यही बात कही गई है: आप अच्छा खेलते हैं, लेकिन हमें आपका व्यक्तित्व ज़्यादा पसंद है। वह गेमिंग

कम्युनिटी के इकलौते गेमर हैं जिन्हें गेम न खेलने वाले लोग भी काफ़ी पसंद करते हैं। जो लड़कियाँ गेम नहीं खेलतीं, वे उन्हें संवेदनशील और होशियार कहती हैं। लड़के उन्हें महत्वाकांक्षी, चतुर और दबंग बताते हैं। जो भी गौरव मदन की ऑनलाइन प्रोफाइल पर कुछ समय बिताता है, उसे यही एहसास होता है कि वह कुएँ के मेंढक की तरह अधविकसित व्यक्तित्व वाले आम गेमर नहीं हैं। बल्कि, वह हाज़िरजवाब, तेज़ दिमाग वाले, संवेदनशील, दुनिया की समझ रखने वाले और हर विषय पर संतुलित राय रखने में माहिर हैं। अपने गेम स्ट्रीम्स में, वह पूर्वी ब्लॉक, कश्मीर और लैटिन अमेरिका की उभरती राजनीतिक स्थिति पर उतनी ही कुशलता से बात करते हैं, जितनी कुशलता से वह नए वारक्राफ्ट गेम के ग्राफिक्स पर चर्चा करते हैं।

'मुझे समझ नहीं आता कि आप लोग उसकी बुद्धिमत्ता को कैसे नहीं देख पाते,' आदित्य ने निराशा से बुदबुदाते हुए कहा। 'वह तो मानो सर्वज्ञानी योडा है, गेमर के भेष में।'

वनिता और मैंने एक-दूसरे को देखकर सहमति जताई, क्योंकि हम दोनों गौरव की ऑनलाइन छवि के पीछे की सच्चाई जानते हैं। गौरव पहले जैसा था, उससे बिल्कुल भी नहीं बदला है। वह दृढ़ निश्चयी, कर्मठ और साहसी है, लेकिन वह अपने ऑनलाइन व्यक्तित्व से बिल्कुल भी मेल नहीं खाता।

यह सब फर्जी है।

गौरव मदन की वह छवि जिससे उनके अनुयायी मोहित हो गए हैं, वह सच्चाई नहीं है।

यह व्यक्तित्व उनका नहीं है।

यह उधार लिया गया है।

इसका निर्माण हो चुका है।

It's Daksh Dey's persona.

* * *

जब भी मैं कोई ट्वीट पढ़ती हूँ, गेम स्ट्रीम पर गौरव की हाजिरजवाबी सुनती हूँ या उसकी पोस्ट का कोई अर्थपूर्ण कैप्शन देखती हूँ, तो मुझे यह बात पूरी तरह से महसूस होती है कि हर एक शब्द दक्ष का है। हर चुटकुला, हर विचार, हर बात उसी की है। गौरव एक प्रतिभाशाली गेमर है, लेकिन दक्ष ने उसे एक ऐसे रोमांचक उत्पाद की तरह पेश किया है जिसे लोगों ने दिल से पसंद किया और सराहा। अगर मैं मनीष मल्होत्रा द्वारा डिज़ाइन किए गए लहंगे पहनती हूँ, तो यह इसलिए है क्योंकि दक्ष ने उसे इतना लोकप्रिय बना दिया है कि लाखों लोग उसे फॉलो करते हैं।

हम दर्जनों स्टील और कांच की लिफ्टों में से एक में चढ़ते हैं। मैं गौरव के बारे में और बात नहीं करना चाहता क्योंकि अगर आप उसके बारे में बात करेंगे तो आपको दक्ष के बारे में भी बात करनी पड़ेगी। तीन साल पहले जब से उन्होंने साथ काम करना शुरू किया है, तब से वे दोनों जुड़वां भाई-बहन की तरह हैं।

मैं बातचीत को एक अलग दिशा में मोड़ देता हूँ।

‘मुझे तुम पसंद नहीं हो,’ मैंने आदित्य से कहा। ‘वह तुमसे शादी करके अपनी जिंदगी बर्बाद कर रही है।’
वनिता धीरे से 'आह' कहती है और आदित्य के माथे पर चुंबन करती है।
आदित्य हंसता है। 'वनिता ने मुझे यह बताया था। यकीन मानो, मैंने उसे समझाने की कोशिश की है कि हमें थोड़ा इंतजार करना चाहिए। लेकिन तुम्हारी दोस्त यह सब तुरंत करना चाहती है।'
‘मेरे दोस्त, तुमने उसका दिमाग खराब कर दिया होगा। सिर्फ अच्छा सेक्स ही रिश्ते की गारंटी नहीं देता।’
आदित्य की आँखें एक छोटे बच्चे की तरह चमक उठीं। वह वनिता की ओर मुड़ा। 'तुमने उसे बताया कि हमारा सेक्स अच्छा है?'
नहीं, मैंने उससे कहा कि मैं एक ऐसे आदमी से शादी कर रही हूँ जिसके साथ मेरा सेक्स अनुभव बहुत खराब है।
आदित्य की लंबाई 3 इंच बढ़ गई लगती है।
हम मेरे कमरे की ओर मुड़ते हैं। मुझे वो शोर सुनाई दे रहा है जो सिर्फ शादी की पार्टी के जश्न में ही सुनाई देता है। चीख-पुकार, हंसी और हंसी-मजाक की आवाजें गूंज रही हैं। वनिता मेरे कमरे का कार्ड स्वाइप करती है। आदित्य मेरा सूटकेस कमरे के अंदर खींच लाता है।
‘सुनो, हम सब पूल के किनारे ड्रिंक्स के लिए जा रहे हैं। तुम्हारे पास पंद्रह मिनट हैं,’ वनिता कहती है।
मैंने दुबई ड्यूटी-फ्री का खनखनाता हुआ बैग आदित्य को सौंप दिया। 'तो फिर आपको इसकी जरूरत पड़ेगी।'
आदित्य ने बैग में झाँका। उसके चेहरे पर एक बड़ी सी मुस्कान आ गई। 'और मुझे लगा था कि तुम मुझसे सच में नफरत करते हो। अब तो तुम हमारे सबसे अच्छे दोस्त हो! अब बस हमें तुम्हारे लिए एक लड़का ढूंढना है!'

OceanofPDF.com

4.

Daksh Dey

अमृता और मैं 'बच्चों के गाली देने पर उनसे कैसे निपटें और उन्हें चुप कैसे कराएं' विषय पर तीन घंटे का एक एपिसोड रिकॉर्ड करते हैं। यह एक दिलचस्प विषय है, क्योंकि हम दोनों का मानना है कि 'फकिंग', 'बहनचोद' और 'मदरचोद' जैसे अपशब्दों का दैनिक जीवन में व्यावहारिक उपयोग होता है। हमारे पॉडकास्ट में दी जाने वाली अधिकांश सलाह लेखों, किताबों और अन्य पॉडकास्टों से ली गई होती है। हम अपनी

ही सलाह पर भरोसा नहीं कर सकते और हम अपने श्रोताओं को हर पॉडकास्ट में कई बार चेतावनी देते हैं कि हम 'अनजाने में माता-पिता बने' हैं। कभी-कभी हम इतने गैर-मौलिक होते हैं कि हमें लगता है कि हम विभिन्न स्रोतों को संक्षेप में प्रस्तुत करके पैसे कमाने वाले धोखेबाज हैं।

'रिकॉर्डिंग के दौरान आप बहुत मज़ाकिया होते हैं। मुझे तो आपकी मज़ाकिया बातें बिल्कुल पसंद नहीं आतीं,' अमृता शिकायत करती है। 'अब हमारी मेल आईडी उन महिलाओं के संदेशों से भर जाएगी जिनके पति बिल्कुल भी मददगार नहीं हैं, जैसे 'दक्ष! तुम कितने प्यारे हो!'

'देखो कौन बोल रहा है,' मैंने जवाब दिया। 'तुम्हें प्रति मेल सबसे अधिक विवाह प्रस्ताव मिलते हैं। तुम एक ही समय में एक हजार पुरुषों से शादी करने का विकल्प चुन सकती हो।'

'एक सचमुच का बुरा सपना,' वह हंसते हुए कहती है।

हमारे पॉडकास्ट-ओनली मेल में लगभग हर मेल अमृता को संबोधित होता है और एक खास तरह के पुरुष से आता है। हमने उस प्रोफाइल को थोड़ा और स्पष्ट कर दिया है: चालीस वर्ष की आयु का तलाकशुदा (कभी-कभी विधवा), सुसंस्कृत पुरुष, जिसके पास मैनेजमेंट/सॉफ्टवेयर क्षेत्र में काम करके खूब पैसा कमाया हुआ है, कम से कम एक बच्चे का पिता, और जिसकी पत्नी अब उसके जीवन में नहीं है।

अमृता की आवाज़ भारी और थोड़ी कर्कश है, और सुनकर लगता है कि वह चालीस या तीस के आस-पास की उम्र की है। हालांकि वह सबको याद दिलाती रहती है कि उसके बच्चे कम उम्र में ही हो गए थे, फिर भी लोग अक्सर भूल जाते हैं कि वह सिर्फ़ छब्बीस साल की है। कभी-कभी तो मैं भी भूल जाता हूँ कि वह छब्बीस साल की है। वह उन्नीस साल से ज़्यादा की नहीं लगती। उसकी लंबाई 5 फुट 1 इंच है और गोल चेहरा उसे और भी जवान दिखाता है।

कभी-कभी मैं भी भूल जाता हूँ कि मैं पच्चीस साल का हूँ।

लेकिन जब हम अपनी उम्र के लोगों को देखते हैं तो हमें बुढ़ापा महसूस होता है। हमारी उम्र के लोग अभी भी क्लबों के सामने ललचाते हुए उल्टी कर रहे होते हैं, जबकि हम अगली सुबह के लिए बच्चों की यूनिफॉर्म इस्त्री कर रहे होते हैं। अमृता और मैंने 'युवा माता-पिता का FOMO' (कुछ छूट जाने का डर) विषय पर दो भागों का पॉडकास्ट किया और इस स्पष्ट निष्कर्ष पर पहुंचे कि हम सब कुछ करना चाहते हैं: बच्चों के साथ रहना भी और पार्टी भी करना, किताबें पढ़ना भी और लंबी ड्राइव पर जाना भी, घर पर रहना भी और अचानक घूमने जाना भी, अकेले छुट्टियां मनाना भी और परिवार के साथ यात्रा करना भी, बच्चों की फिल्म देखना भी और अपनी उम्र के लोगों के साथ पार्टी करना भी। इन्हीं स्पष्ट, लेकिन बेतुकी सलाहों के कारण हम अपने श्रोताओं को आगाह करते हैं कि वे हमारी बातों को गंभीरता से न लें।

'आज तुम्हें गणित का होमवर्क पूरा करना है, ठीक है?' अमृता ने पिछले कुछ घंटों में तीसरी बार मुझे चेतावनी दी।

'मैं... ठीक हूँ,' मैं बुदबुदाती हूँ। 'मुझे... विश्वास नहीं हो रहा कि वे अभी भी घटाव में

संघर्ष कर रहे हैं। कोई कैसे कर सकता है—'
'हमारे बच्चों को शर्मिंदा मत करो,' वह हंसते हुए मेरी बात काट देती है।
बच्चों की गणित में अक्षमता के बारे में वह भी बिल्कुल वैसा ही महसूस करती है जैसा मैं करता हूँ।
हम दोनों गणित के बेहद अधीर शिक्षक हैं। यह अविश्वसनीय है कि नौ साल की रब्बानी और अमृता के बेटे, आठ साल के नमन और निशांत, गणित में कितने कमज़ोर हैं। हम खुद को यही समझाते रहते हैं कि जब तक वे बड़े होंगे, तकनीक गणित से संबंधित नौकरियों को अप्रचलित कर देगी और तब तक कोई फर्क नहीं पड़ेगा। हर दो महीने में अभिभावक-शिक्षक बैठक के दौरान, अमृता और मैं बाल भारती स्कूल के कक्षा 3B की चिंतित शिक्षिका के सामने बीस मिनट तक शर्मनाक तरीके से बैठे रहते हैं, और वह हमें बताती रहती हैं कि रब्बानी, नमन और निशांत गणित में कितने कमज़ोर हैं। वही चिंतित शिक्षिका अपने स्टाफ रूम में इस बात की कानाफूसी करती रहती हैं कि क्या अमृता और मेरे बीच कुछ चल रहा है।
कक्षा शिक्षक का अधिकार।
अमृता और मेरे बीच कुछ तो है। बस हम खुद नहीं जानते कि वो क्या है। हमारी जिंदगी एक जटिल पहेली की तरह, एक ऊंचे जेंगा टावर की तरह आपस में जुड़ी हुई है। रब्बानी और उसके बेटे एक ही कक्षा में पढ़ते हैं, हम दोनों गुड़गांव में रहते हैं, हम दोनों के पास लचीली दिन की नौकरियां हैं, यह छोटा सा पॉडकास्ट है और हम दोनों 20s के मध्य की ऐसी जिंदगी जी रहे हैं जो बहुत कम लोगों को मिलती है।
और हम दोनों डरे हुए हैं।
अगर हम इस पहेली के आखिरी टुकड़े को भी जोड़ लेते हैं और हमारी जिंदगी एक दूसरे से जुड़ जाती है, तो हमें बहुत सारे लोगों के लिए फैसला लेना होगा। उसके माता-पिता, मेरे पिता और बच्चे। और यह बात हमें बुरी तरह डरा देती है।
मेरा फोन बजता है।
'हेलो... ये क्या... बकवास... क्या तुम सच में ऐसा कह रहे हो?... बिलकुल नहीं... मैं देखता हूँ मैं क्या कर सकता हूँ...'
मैंने कॉल काट दी। सहज ही, मैंने मेकमाईट्रिप खोला और दुबई के लिए अगली फ्लाइट चेक की। वह दो घंटे में रवाना होने वाली थी।
अमृता पूछती है, 'क्या सब ठीक है?'
'एयरलाइंस गौरव का सामान लोड करना भूल गई,' मैंने जवाब दिया। 'अगली फ्लाइट रात में है। अगर कपड़े वहाँ पहुँचने ही हैं तो—'
मेरी बात पूरी होने से पहले ही वह मुझे टोक देती है। 'मैं बच्चों को नहीं पढ़ा रही, बिलकुल नहीं!' वह विरोध करती है। 'मैं बच्चों को घटाना सिखाने के बजाय उन्हें असफल होने दूंगी,' वह कहती है।
'मैं उन्हें पढ़ाने की बजाय अपने ऊपर विमान का चढ़ जाना ज्यादा पसंद करूंगा।'
'मैं उन्हें पढ़ाने की बजाय टरबाइन में घुसना ज्यादा पसंद करूंगा।'
'मैं उन्हें पढ़ाने के बजाय मालवाहक जहाज के गोदाम में बैठकर ठंड से मरना पसंद

करूंगा।'
वह हंसती है। 'हमें यह सब पॉडकास्ट में कहना चाहिए। अब जाओ, निकलो। कल मिलते हैं।'
दुबई हवाई अड्डे पर आव्रजन अधिकारी ने पहले मेरी ओर देखा, फिर मेरे पासपोर्ट की ओर और फिर मेरी ओर। जब उसने मेरा पुराना निवास वीज़ा देखा, तो उसने अपने गाढ़े अरबी लहजे में मुझसे पूछा, 'क्या आप पहले यहाँ के निवासी थे, हबीबी?'
मैंने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, 'इसने मुझसे सब कुछ छीन लिया।'
'उम्मीद है इस बार बेहतर होगा। दुबई में आपका स्वागत है!' वह मुझसे कहता है और मेरे पासपोर्ट पर मुहर लगा देता है।
दुबई की शुष्क हवा तुरंत जानी-पहचानी सी लगती है। मैं गौरव के सूटकेस टैक्सी के बूट में रखती हूँ। 'अटलांटिस,' मैं ड्राइवर से कहती हूँ। 'मैं एयरपोर्ट वापस आऊँगी, इसलिए मेरे वहाँ पहुँचने के बाद यात्रा मत रोकना।'
दुबई की सड़कें नज़र आने लगती हैं। वही शहर जिसने हमें भगा दिया था।
मेरे फोन में बीप की आवाज आती है।
Amruta
तुम ठीक हो?
मुझे
शहर बदल गया है। शुक्र है इस बात का।

हर शहर पाँच साल में बदल जाता है। नई इमारतें पुरानी इमारतों को ढक लेती हैं। सड़कें चौड़ी हो जाती हैं। सड़कों पर गाड़ियों की संख्या बढ़ जाती है। दुबई में यह बदलाव किसी भी शहर से कहीं ज़्यादा तेज़ी से होता है। मैं कुछ जानी-पहचानी जगहों से गुज़रता हूँ, लेकिन मेरी यादों में बसी ज़्यादातर चीज़ें रंगी जा चुकी हैं, उन पर नई इमारतें बन चुकी हैं, कुछ टूटी-फूटी हैं और फिर से बनाई गई हैं। यह एक छोटी सी राहत है कि यह शहर अब उस शहर जैसा नहीं दिखता जिसने मुझसे सब कुछ छीन लिया था।
जैसे-जैसे मैं अटलांटिस के करीब पहुँचती हूँ, मेरी बेचैनी बढ़ती जाती है। मैं उस घमंडी, निर्दयी और बेरहम इंसान से बिल्कुल भी नहीं मिलना चाहती, जिससे कभी मुझे प्यार था। अब तक मुझे एहसास ही नहीं था कि उस स्वार्थी औरत के लिए मेरे दिल में कितनी गहरी नफरत भरी है। यह नफरत मेरी हड्डियों तक महसूस हो रही है।
'यात्रा मत रोको,' मैंने अटलांटिस के बाहर सूटकेस निकालते हुए ड्राइवर से दोहराया।
शाम के 6 बज रहे थे, इसलिए कॉकटेल पार्टी शुरू होने में अभी काफी समय था। रिसेप्शन के बाहर पर्यटकों की एक लंबी कतार लगी हुई है, जो अपने हैंडबैग घसीटते हुए यह जांच कर रहे हैं कि कहीं उनके पासपोर्ट खो तो नहीं गए हैं।
मैंने चेक-इन काउंटर पर मौजूद महिला से कहा, 'मैं गौरव मदन का सामान छोड़ने आया हूं।'
'क्या आपको कमरे का नंबर पता है, महोदय?' वह पूछती है।

मैंने गौरव को फोन किया। और हमेशा की तरह, उसने फोन नहीं उठाया।
'सुनो, वो मेरा फोन नहीं उठा रहा है। क्या तुम उसके कमरे में फोन करके उसे बता सकते हो?'
वह मेरे पीछे लगी कतार को देखती है और विरोध करने ही वाली होती है।
'ये शादी के कपड़े हैं, वरना मैं आपका समय बर्बाद नहीं करती,' मैंने उसे बताया।
वह कमरे का नंबर देखती है और कॉल करती है। वह अपना सिर हिलाती है और रिसीवर नीचे रख देती है।
'सर, कोई जवाब नहीं मिला,' वह कहती है। 'आप अपना सामान यहीं रख दीजिए और खुले इलाके में जाकर देख लीजिए। शायद आपको मेहमान वहीं मिल जाए। मैं इससे ज्यादा आपके लिए कुछ नहीं कर सकती।'
'बिल्कुल सही,' मैंने उससे कहा।
बस फर्क इतना है कि यह पूरी तरह सही नहीं है। मुझे अपनी टैक्सी में बैठकर इस शहर से दूर जाना चाहिए था। उसकी तरफ नहीं, जिसकी वजह से मैंने कुछ साल घोर दुख में बिताए।
कई गलियारों से गुज़रने के बाद, मुझे कॉकटेल पार्टी का स्थान दिखाई दिया। वनिता और आदित्य की शादी हो रही थी। स्टेज तैयार था, बत्तियाँ जल चुकी थीं, और व्यस्त कर्मचारी कुर्सियाँ इधर-उधर कर रहे थे, फूल सजा रहे थे, साउंड सिस्टम की जाँच कर रहे थे। काले टी-शर्ट पहने वेडिंग प्लानर अपने वॉकी-टॉकी पर निर्देश दे रहे थे। गोरे लोग देख रहे थे, सोच रहे थे कि आखिर हो क्या रहा है। हल्की-हल्की हिंदी धुनें सुनाई दे रही थीं। मैं मुड़कर रिसेप्शन की ओर चल पड़ा।
तभी मैंने उसे देखा।
आँचल मदन को चोद रही है।
मुझे सबसे ज्यादा पछतावा है। दुनिया की सबसे बुरी गर्लफ्रेंड होने का।
नफरत की एक लहर मुझ पर टूट पड़ती है। मैं उसमें पूरी तरह डूब जाता हूँ। वह मुझे पूरी तरह जकड़ लेती है। मेरा शरीर घृणा की आग से झुलस उठता है। मेरी पहली प्रवृत्ति उससे दूर हटने की होती है, उसकी मौजूदगी से पूरी तरह बचने की। लेकिन मैं उससे सामना करने के लिए विवश महसूस करता हूँ, उस दबी हुई क्रोध को बाहर निकालने के लिए जो मुझे चीर-फाड़ कर देने की धमकी दे रही है। मैं उसे उस दर्द की याद दिलाना चाहता हूँ जो उसने पीछे छोड़ा है। मैं उसे पकड़कर जवाब माँगना चाहता हूँ। मैं जानना चाहता हूँ कि क्या उसे अपने किए पर पछतावा है। क्या मेरे दिल को चकनाचूर करना उसकी अंतहीन कार्यसूची में बस एक और काम था?
रिसेप्शनिस्ट उसे सूटकेस दिखा रही है। आंचल से बात करते हुए उसकी नजर मुझ पर पड़ती है।
'वो रहा!' रिसेप्शनिस्ट ने मेरी ओर इशारा किया। और फिर उत्साह से मुझसे बोली, 'मैंने उसे ढूंढ लिया! मैंने आप लोगों को ढूंढ लिया!'
हाँ, तुमने ही किया।
आँचल मेरी तरफ देखने के लिए मुड़ती है।

सही तरीका यह होगा कि मैं उसकी ओर चलूं, सूटकेसों की ओर इशारा करूं, सिर हिलाऊं और फिर उससे दूर चला जाऊं, यह दिखावा करते हुए कि हमारे इतिहास का बोझ अचानक मेरी पीठ पर नहीं आ पड़ा है और उसे तोड़ नहीं रहा है।
मुझे खुद को याद दिलाना चाहिए कि वह अब मेरे जीवन का एक सड़ा हुआ, भुला देने लायक हिस्सा है जिसे मैंने दफना दिया है और भुला दिया है। आँचल के ठुकराए जाने से उबरने में मेरी आत्मा का एक हिस्सा, बल्कि उससे भी कहीं अधिक, लगा है। अगर मैं खुद से ज़रा भी प्यार करती हूँ, तो मुझे उससे दूर चले जाना चाहिए। अगर मैं एक मिनट भी यह सोचने में बर्बाद नहीं करना चाहती कि मैंने क्या गलती की और मुझमें क्या कमी थी, तो मुझे उससे भाग जाना चाहिए। मुझे उससे दूर चले जाना चाहिए, उस टैक्सी में बैठना चाहिए जिसका मीटर अभी भी चालू है, अमृता के पास वापस उड़ जाना चाहिए और उसकी गणित पढ़ाने की कला के बारे में शिकायत करनी चाहिए। लेकिन मेरे पैर मुझे आँचल ले जाते हैं।
‘तुम्हारा सामान मेरे पास है,’ मैं गुस्से से गुर्राता हूँ। मेरा पूरा शरीर गुस्से से जल रहा है। ‘ले लो।’
आखिरकार मैंने खुद पर थोड़ा काबू पाया और उससे मुंह फेर लिया। मैं उससे दूर चली गई: उस सारे दर्द और गुस्से से जो मैंने उससे प्यार करके खुद को दिया था। मुझे उसके पीछे दौड़ने की आवाज़ सुनाई दी। मैं उसे रोकना चाहती थी। उससे कहना चाहती थी कि वह अपनी ज़िंदगी में वापस चली जाए। एक ऐसी ज़िंदगी जिससे मैंने बड़ी मुश्किलों से दूर रहने की कोशिश की है। मैं उसकी बातें नहीं सुनना चाहती, उस ज़ख्म को कुरेदना नहीं चाहती जो उसने मुझे दिया है।
‘Daksh?’
मैं जवाब नहीं देता।
‘Daksh?’
मेरे कदम लंबे हो जाते हैं, मेरी छाती तेजी से ऊपर-नीचे होने लगती है।
‘यह कोई दौड़ नहीं है,’ वह मुझसे कहती है।
तभी मेरा आपा टूट गया। मैं रुका, मुड़ा और हज़ार सूर्यों की शक्ति से उसके चेहरे पर चीख पड़ा। 'भाड़ में जाओ!'
मुझे बहुत राहत महसूस हो रही है। अच्छा लगा।
‘भाड़ में जाओ,’ मैं फिर से गुस्से से भर उठा।
मुझे इस बात का अफसोस है कि मैंने यह पहले क्यों नहीं किया, जब मेरा दिल उसके हाथों में था और उसने बिना सोचे समझे उसे चकनाचूर कर दिया था।
‘तुम दुनिया की सबसे घटिया गर्लफ्रेंड हो!’ मैं चिल्लाई।
यह एक तरह की थेरेपी है। उसकी भौंहों को सिकुड़ते हुए देखना मेरे दिल को सुकून देता है। यह मुझे उन सभी पलों की याद दिलाता है जब उसने मुझे बहाने और स्पष्टीकरण दिए, और मैंने उसकी आँखों में कुछ समझने की कोशिश की, लेकिन मुझे कुछ नहीं मिला।
'मेरी जिंदगी से दफा हो जाओ!'

वह मेरी आँखों में देखती है। मैं उनमें पछतावा खोजने की कोशिश करता हूँ। मुझे केवल उदासीनता ही मिलती है।
‘दक्ष, मुझे छोड़कर मत जाओ,’ वह धीरे से बुदबुदाती है।
मेरी आँखें गुस्से से नम हो गईं। 'नहीं! आँचल, तुम मेरे साथ ऐसा नहीं कर सकती।' मैं उसके करीब गई। 'तुम नहीं कर सकती! मैं तुम्हारे साथ एक पल भी बर्बाद नहीं कर सकती।'
‘और फिर भी तुम यहाँ हो।’ उसकी आवाज़ ठंडी और हिसाब-किताब वाली है। मानो उसे इस बातचीत में मज़ा आ रहा हो। जैसे उसे मुझे टूटा हुआ, दुखी देखकर अच्छा लग रहा हो।
मेरा दिमाग आग बबूला हो रहा है, जैसे लावा। 'मुझे यकीन नहीं हो रहा। और यह सोचना तुम्हारी सरासर धृष्टता है कि मैं तुम्हारे लिए यहाँ हूँ। मैं गौरव के लिए यहाँ हूँ।'
‘और तुम अब भी गौरव के साथ क्यों हो?’ मैंने पूछा।
‘यह मेरा काम है। मैं इसे कभी नहीं छोड़ूंगा।’
वह मेरी आँखों में देखती है। 'तुम जानते हो कि यह झूठ है। गौरव ही मेरा एकमात्र संपर्क सूत्र है, दक्ष। अगर तुम उसके साथ काम नहीं करोगे, तो हमारा संपर्क टूट जाएगा,' वह मोहक लहजे में कहती है, जो उसने समय के साथ लोगों से अपनी इच्छा के अनुसार काम करवाने के लिए सीख लिया है।
उसकी धृष्टता अब मुझे आश्चर्यचकित नहीं करती। 'यह काम के अलावा और कुछ नहीं है,' मैं गुस्से से कहता हूँ।
मैंने दुनिया में बहुत से स्वार्थी लोगों से मुलाकात की है, लेकिन वह उन सभी से कहीं आगे है। मैं उसे याद दिलाती हूँ कि उसके लिए सबसे महत्वपूर्ण क्या है। 'तुम कभी भी अपना काम नहीं छोड़ोगी। तुम अपने काम के लिए हर संभव बलिदान दोगी!'
मुझे लगता है कि वह मुस्कुरा रही है। वह व्यंग्य करते हुए बोली, 'तुम इसे ऐसे कह रहे हो जैसे यह कोई अपमान हो, दक्ष। और हाँ, तुम सही हो। मैं इसे कभी नहीं छोड़ूंगी।'
‘बहुत खूब, भाड़ में जाओ, तुम्हारा काम भी भाड़ में जाए, तुम्हारी जिंदगी के लिए शुभकामनाएं।’ मैंने उसे दो उंगलियां दिखाईं जैसे मैं हाई स्कूल का छात्र हूं और वो मेरी स्कूल क्रश हो। ‘भाड़ में जाओ, आंचल।’
'अरे!'
बगल से एक तेज़ आवाज़ गूंजी। हम दोनों मुड़े। चारों ओर जमा भीड़ के कारण मैं उन्हें पहले देख नहीं पाया। तीन पुलिसकर्मी अपनी बंदूकों के होल्स्टर पर हाथ रखे हमारी ओर बढ़ रहे थे। इससे पहले कि मैं कुछ प्रतिक्रिया कर पाता, वे मुझे घेर लेते हैं और गुस्से से चिल्लाते हैं, 'तुम यहाँ ऐसा नहीं कर सकते, हबीबी!' एक लंबे-चौड़े पुलिसकर्मी ने मेरा हाथ पकड़ते हुए कहा। 'तुम सार्वजनिक रूप से गाली नहीं दे सकते। तुम्हें हमारे साथ चलना होगा।'
‘वह इसकी हकदार है,’ मैं खुद को बुदबुदाते हुए सुनता हूँ।
OceanofPDF.com

5.

Daksh Dey

होटल के बिजनेस सेंटर के एक कमरे में, आँचल और मैं एक छोटी सी कांच की मेज के आमने-सामने बैठे हैं। मेरे दिमाग में गालियों के ढेर लगे हैं। वर्दीधारी पुलिस अधिकारी मुझे बता रहे हैं कि यूएई में सार्वजनिक रूप से गाली देना एक दंडनीय अपराध है। हां, अगर पीड़ित पक्ष माफी मांग ले तो बात अलग है। मैं पुलिसवालों से कहना चाहती हूं कि आँचल वाकई उन सभी गालियों की हकदार है जो मैं सोच सकती हूं और वो पीड़ित पक्ष नहीं है। अगर उन्हें हमारी कहानी पता होती, तो वे भी मुझसे सहमत होते। आखिर वो भी पुरुष ही हैं। मैं चुप रहती हूं। यूएई के कानून से मेरा सामना मुझे यह सिखा चुका है कि चाहे राजा हो या गरीब, नियम नहीं बदलते। दरअसल, वे झुकते तो हैं। लेकिन सिर्फ यूएई के राजा के लिए।
आंचल पुलिसकर्मियों से बाहर इंतजार करने को कहती है। अनिच्छा से, अपने हाथों को अपनी पिस्तौल की पेटियों में रखे हुए, वे बाहर चले जाते हैं।
'बस उनसे कह दो कि मैंने माफी मांग ली है और हम एक-दूसरे के रास्ते से हट जाएंगे,' मैंने आंचल से कहा।
वह बिना किसी भाव के मेरी ओर देखती है। 'मैं झूठ नहीं बोलूंगी,' वह सीधे चेहरे से जवाब देती है। 'तुम्हें माफी मांगनी होगी, दक्ष। यही एकमात्र तरीका है जिससे यह मामला खत्म होता है। यही कानून है।'
यह देखकर हैरानी होती है कि वह कितनी घटिया इंसान है। 'मेरा समय बर्बाद मत करो, आँचल। मैं इन फालतू के खेलों से तंग आ चुकी हूँ।'
‘सावधान रहो, तुम फिर से गाली दे रहे हो,’ वह मुझे चेतावनी देती है। ‘और तुम्हारा क्लाइंट दुबई में है। तुम्हें इतनी ज़रूरी जगह कहाँ जाना है?’
‘तुम अपने भाई को गौरव की बजाय मेरा ग्राहक कहते हो? यह वाक्य रचना का मामला नहीं है, यह तुम्हारी घटिया आत्मा की झलक है। तुम्हारे लिए सब कुछ एक लेन-देन है।’
पहली बार मुझे उसके चेहरे पर गुस्से के लक्षण दिखाई दिए।
‘और तुम दुनिया के सबसे नेक लड़के हो, दक्ष डे, है ना? अपना अहंकार छोड़ो और एक बार दूसरों के नजरिए से चीजों को देखो।’
उसके जैसी लोग बदलते नहीं हैं। वो खुद को क्या समझती है?
‘तुम्हें अब भी पूरा यकीन है कि तुम सही हो!’ मैंने अपना गुस्सा काबू करने की कोशिश की। ‘सुनो, आँचल। हम रात भर एक-दूसरे को गालियाँ दे सकते हैं, लेकिन मेरे पास समय नहीं है और तुम्हें एक शादी में जाना है।’
अपनी कुर्सी पर झुकते हुए, वह एक गहरी, थकी हुई आह भरती है। 'आप यह क्यों नहीं समझ पा रहे कि मुझे वही करना पड़ा जो मुझे करना था? क्या आप एक बार के

लिए भी यह समझ सकते हैं?'
मेरा दिल बेकाबू ट्रेन की तरह तेज़ी से धड़क रहा है। बाहर खड़ा पुलिसवाला मेरी आँखों में गुस्सा देखकर शीशे के पास आ जाता है।
'आंचल, मैं तुमसे बात नहीं करना चाहता, तुम्हें देखना नहीं चाहता, तुम्हारे आस-पास रहना नहीं चाहता। तुम मेरे लिए बिलकुल अजनबी हो। काश तुम हमेशा अजनबी ही रहतीं।'
ऐसा मत कहो।
मुझे पता है कि मैं जो कहने जा रहा हूं वह झूठ है, लेकिन मैं उसे चोट पहुंचाना चाहता हूं, उसे रोते हुए देखना चाहता हूं।
मुझे तुमसे मिलने के उस पल पर पछतावा है। मैं तुम्हें और तुम्हारे बारे में सब कुछ भूलने के लिए कुछ भी कर सकता हूँ। अगर मैं कर सकता, तो मैं तुम्हारे अस्तित्व की हर निशानी को अपने जीवन से जला देता।
वह अकड़ जाती है। कंधे उचकाते हुए वह कहती है, 'ठीक है, तो जेल चले जाओ। तब तुम्हें मुझे जरूर याद रहेगा।'
‘आंचल, “मुझे तुमसे हर चीज से नफरत है” वाली बात का कौन सा हिस्सा तुम्हें समझ नहीं आता?’
'वह हिस्सा जिसमें जो कुछ हुआ वह मेरी गलती नहीं थी।'
‘तुम इतने बेवकूफ कैसे हो सकते हो? तुमने मेरा दिल तोड़ दिया…’ मेरी आवाज लड़खड़ा गई। मुझे अपने कानों में अपने दिल की धड़कन सुनाई दे रही थी। मैं अपनी ही सांसों में घुट रही थी। ‘तुम ही मेरी सब कुछ थे। मेरी जिंदगी में जो कुछ भी मुझे चाहिए था, तुमने वो सब छीन लिया। तुम्हें सब कुछ बर्बाद करना ही था, है ना?’
वह लंबी और थकी हुई सांस छोड़ती है, मानो मैंने ही उसकी आत्मा को चीर-फाड़ कर उसके हौसले को चकनाचूर कर दिया हो। 'तीन साल हो गए हैं, दक्ष।'
और फिर भी ऐसा लगता है जैसे मेरा घाव कल की तरह ताजा है, सड़ रहा है और मुझे पूरी तरह से खा रहा है। तुमने मुझे मेरे असली रूप का खोखला ढांचा बना दिया है, आंचल।
‘बस एक महीना ही तो था, दक्ष,’ वह जोर देकर कहती है, उसकी आवाज अब धीरे-धीरे ऊंची हो रही है। ‘बस एक महीना ही तो था! तुम्हें मेरी समस्या कैसी लग रही है!’
मैंने अपने दुख को दबा लिया, जैसा कि मैंने खुद से वादा किया था कि अगर मैं उसे कभी देखूँगी तो ऐसा ही करूँगी। 'पहली बात तो ये तैंतालीस दिन थे। और अगर मैं उन तैंतालीस दिनों में महसूस की गई खुशी के टुकड़ों को एक साथ जोड़ूँ, तो वे मुझे अनंत काल जैसे लगते हैं। इसलिए मुझसे ये मत कहो कि हमारा प्यार समय के बंधन में बंधा था।'
पिछले तीन वर्षों में मैंने इस बातचीत की कई बार कल्पना की है। मुझे इस पल तक पता नहीं था कि मैं उससे प्यार करना कभी नहीं छोड़ूंगा। उसे देखना आज भी दर्दनाक है, जैसे सभी खूबसूरत चीजें होती हैं।
'हम दोनों की चाहतें अलग-अलग थीं,' वह कहती है, और यह कहते ही सारा दर्द फिर

से ताजा हो जाता है।
मैंने अपना सिर हिलाया। हम दोनों की चाहत अलग नहीं थी। उसका फैसला उसकी अपनी इच्छा पर आधारित था। कोई चर्चा नहीं हुई, समझौते की कोई गुंजाइश नहीं थी। वह एक पहाड़ी से लुढ़कते पत्थर की तरह थी और उसने मुझे कुचल दिया। मुझे बस हाँ कह देना था, बात खत्म।
'यह सब बकवास है।'
'दक्ष,' वह गंभीर स्वर में कहती है। 'मेरा विक्की से अभी-अभी ब्रेकअप हुआ था। मैं चार साल पुराने रिश्ते से बाहर निकली थी जो कि... बहुत ही खराब था। तुम कल्पना भी नहीं कर सकते कि मैंने क्या-क्या झेला।'
'तुम्हें तो वैसे भी उस आदमी के साथ नहीं होना चाहिए था,' मैं तर्क देती हूं।
मुझे समय चाहिए था। मैं इतनी जल्दी किसी चीज में नहीं पड़ सकती थी। क्या मुझे घबरा जाने का अधिकार नहीं है?'
मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मेरे सारे घाव धीरे-धीरे फिर से खुल रहे हैं। 'और मैंने तुम्हें साफ-साफ कहा था कि मैं हर कदम पर तुम्हारे साथ रहूंगी। कहा था या नहीं? मैंने गिड़गिड़ाकर तुम्हारे पैरों पर गिर पड़ी थी कि हमें एक मौका दो और तुमने बस... मैं तुमसे सालों से प्यार करती रही थी, और तुमने उस प्यार को कुचल दिया। बस यूं ही।'
मुझे यह पता लगाना था कि मैं अपने लिए क्या चाहती हूं।
और वह आत्म-खोज कैसी चल रही है?
वह आगे झुकती है और अपनी निगाहें मुझ पर टिका देती है। 'दक्ष, यह मेरे लिए बहुत ज़्यादा था। मैं बस... आज़ाद होना चाहती थी। मैं बस कुछ पल के लिए आँचल बनना चाहती थी।'
मैं खुद को संभालता हूँ और उसके दिए किसी भी दर्द से खुद को बचाने के लिए अपने दिल को मजबूत करता हूँ। और वो दे सकती है। इतने सालों बाद भी, मैं उसके प्यार का गुलाम हूँ। आज भी, हर गुजरते पल के साथ, आँचल और भी ज्यादा चमकती है, एक ऐसे फूल की तरह जो खिलता ही रहता है। लेकिन मैं उसके अंदर की बातों को, उसने मेरे साथ जो किया, हम सबके साथ जो किया, उसे कैसे भूल सकता हूँ?
'आप दोनों का ब्रेकअप हो गया, मैंने उसका सम्मान किया।'
वह मुझे बीच में ही रोक देती है। 'तुमने ब्रेकअप किया, दक्ष, मैंने नहीं।'
मैंने खुद को रोका। 'यह फैसला किसने लिया, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। तुमने मुझे ऐसा करने पर मजबूर किया। तुम्हें लगता है कि तुमने जो किया, जिस तरह से किया, उसके बाद मैं तुम्हारे साथ रहूंगी?'
वह उदास हंसी हंसती है मानो मैंने कोई मजेदार बात कह दी हो।
'तुम्हारे और मेरे बीच फर्क था, दक्ष। मैंने तुमसे कभी कुछ वादा नहीं किया था। ये सब तो तुम ही थे। तुम्हें हमेशा हमेशा साथ रहने, त्याग करने और न जाने क्या-क्या बड़ी-बड़ी बातें करना पसंद था। तुम कहते थे कि चाहे कुछ भी हो जाए, तुम मेरे साथ रहोगे। तुमने वादा किया था कि मेरे साथ नरक तक जाओगे। मैं तो कभी किसी रिश्ते में रहना ही नहीं चाहती थी! लेकिन तुमने कहा था कि तुम सब ठीक कर दोगे। कि तुम

मेरा हाथ थामोगे, मुझे उस दुख से बाहर निकालोगे जिसमें विक्की ने मुझे छोड़ दिया था, और न जाने क्या-क्या। ये सब एक बड़ा झूठ था। तो अगर इस सब में किसी को दोष देना है, तो वो तुम हो, दक्ष!'
उसके आरोपों से मेरा खून खौल उठता है। वह कुर्सी पर पीछे झुक जाती है, मानो जल्लाद को ही अपराध का दोषी ठहराया जा सकता हो। मैं रिश्ता खत्म कर सकता था, लेकिन उसने मुझे मजबूर कर दिया। उसने मेरे लिए उसके साथ रहना नामुमकिन बना दिया।
मैं मान लेता हूँ। 'यह मेरी गलती है। मैं ही समस्या था। ठीक है, मैं सहमत हूँ। क्या हम इस दिखावटी बातचीत को खत्म करके अपनी-अपनी जिंदगी में आगे बढ़ सकते हैं?'
'हमारा जीवन, मतलब अमृता और उसके बच्चों का?' वह मुझसे पूछती है। 'वैसे, पॉडकास्ट बहुत अच्छा था—'
मैंने उसकी बात काट दी। 'मैं तुम्हें अपनी ज़िंदगी में नहीं चाहती। मैंने तुमसे कहा था, न कॉल, न मैसेज, कुछ भी नहीं। मैं उस बात पर कायम रही। हमारे बीच कुछ भी नहीं है।'
'इतना कठोर होने की ज़रूरत नहीं थी। कम से कम आप इतना तो कर सकते थे कि सामान उठा लेते—'
'हमारा रिश्ता खत्म हो चुका था। तुम्हारे फोन उठाने के बाद तुम मुझसे क्या सुनना चाहते थे? कि मैं आगे बढ़ गई? बिलकुल नहीं, मैं आगे नहीं बढ़ी थी। मैं झूठ क्यों बोलूँगी सिर्फ इसलिए कि तुम अपने फैसले से संतुष्ट हो जाओ? तुम खुद को खोजना चाहते थे, है ना? तो जाओ, खुद को खोजो!'
उसकी आँखों में निराशा की आग जल रही थी। 'यही हो तुम, दक्ष। वो नहीं जो तुम होने का दिखावा करते थे—एक आदर्श, सबको स्वीकार करने वाला, नेक इंसान। तुमने भी ऐसे वादे किए जिन्हें तुम निभा नहीं सके। आखिर फर्क क्या है—'
मेरी तुलना विक्की से मत करो।
'मैं नहीं चाहती थी कि हमारा कोई रिश्ता हो!' वह हैरानी से बोली। वह आगे झुकी। 'तुमने मुझसे कहा था कि तुम उससे अलग हो। लेकिन तुमने झूठ बोला।'
मैं उससे तंग आ चुका हूँ। मैं उठता हूँ। 'मैं तुम्हारे साथ और समय बर्बाद नहीं कर सकता। बस बहुत हो गया। तो अब, एक बार तो रहम दिखाओ, उन पुलिसवालों को मेरी माफी के बारे में बता दो और चलो एक-दूसरे की ज़िंदगी से निकल चलते हैं। मैं तुम्हारे बिना तीन साल जी चुका हूँ, तीस साल और क्या फर्क पड़ता है?'
वह आंखें घुमाती है। 'तुम तब भी अन्याय कर रहे थे, अब भी अन्याय कर रहे हो।'
मैंने उन शब्दों को अपने ऊपर हावी होने दिया। 'ठीक है।'
लेकिन वह घृणा भरे भाव से कहती है, 'तुम खुद को पीड़ित बताते हो, लेकिन पीड़ित तो मैं थी क्योंकि तुमने कहा था कि तुम प्यार करते हो, पर तुम नहीं करते थे। मैंने विक्की के साथ सालों तक दर्दनाक पीड़ा झेली और तुमने भी मेरे साथ वही किया। तुमने मुझे हमेशा के लिए प्यार से दूर कर दिया। क्या तुम कभी इस बारे में सोचते हो?'

मैं सब कुछ करने को तैयार था।
वह हताशा में अपना सिर पीछे की ओर झटक देती है।
‘कितने उदार हो, दक्ष, हद से ज़्यादा उदार। तुम वो सब करने को तैयार थे जो तुम्हें ठीक लगता था, मुझे नहीं। तुम मेरे सपनों का राजकुमार बनना चाहते थे, पर मुझे इन सब की ज़रूरत नहीं थी। मुझे एक ऐसा लड़का चाहिए था जो मुझसे वैसे ही प्यार करे जैसा उसने कहा था। तो, सम्मान के साथ कहूँ तो, दक्ष, दफ़ा हो जाओ। तुम जा सकते हो।’

OceanofPDF.com

6.

Aanchal Madan

अटलांटिस की सबसे ऊपरी मंजिल पर स्थित वनिता और आदित्य के प्रेसिडेंशियल सुइट में रंगों और चहल-पहल का माहौल है। वनिता की वॉक-इन वार्डरोब एक अस्थायी ब्यूटी सैलून में तब्दील हो गई है, जहां लोगों की एक टीम उनके बालों, मेकअप और कपड़ों को संवारने में लगी है, और उन सभी ने मिलकर वनिता को बेहद खूबसूरत बना दिया है।
और मेरे चारों ओर इतनी हलचल होने के बावजूद, मेरा मन उसी पर टिका है। दक्ष के धोखे की यादें मेरे मन में उमड़ आती हैं और मुझे पूरी तरह से व्याकुल कर देती हैं। उनके बारे में सोचते ही मैं सुन्न पड़ जाती हूँ। कभी-कभी इतनी बुरी घटनाएँ घटित हो जाती हैं कि ठीक होने के बाद आप सोचते हैं कि आपने उस दर्द को कैसे सहन किया।
‘ओये?’ वनिता ने पुकारा। ‘अपना मेकअप करवा लो। मेरी शादी के वीडियो में सिर्फ खूबसूरत लोग ही होंगे।’ उसने अपनी एक लड़की को मेरे सूटकेस की ओर इशारा करते हुए कहा, ‘अरे, क्या तुम इसके कपड़े निकाल कर उन्हें ध्यान से इस्त्री कर सकती हो?’
'यह मैं खुद करूंगा।'
‘बिल्कुल नहीं,’ वनिता बीच में टोकते हुए बोली। ‘तुम्हारे और भी काम हैं। रूम डाइनिंग में फोन करके हमारे लिए बर्फ मंगवा लो और ड्रिंक्स का इंतजाम कर दो। मैं तुम्हें दोबारा याद नहीं दिला रही कि मेरी शादी है। और दक्ष के साथ तुम्हारा जो भी मामला है, वो बाद में देख लो,’ उसने कहा। ‘लेकिन एक बात और, क्या वो पहले से ज्यादा आकर्षक हो गया है?’
‘Vanita—’
वह कुर्सी घुमाकर मेरी तरफ देखती है। ‘मैं बस इतना कह रही थी। वह उन लड़कों में से एक लग रहा था जो बड़े होकर मर्द बनते हैं, चाचा नहीं। क्या उसने अपने किए के

लिए माफी मांगी और तुम्हें दोबारा डेट पर बुलाया?'
मैंने जवाब दिया, 'उसने मुझसे कहा कि वह मुझसे नफरत करता है और वह इसे ऐसे ही रखना चाहता है।'
पारुल नाम की एक लड़की मुझे सोफे पर बिठाती है और आँखें बंद करने को कहती है। फिर वह अपना मेकअप किट खोलती है और अपनी हथेली पर फाउंडेशन निकालती है। लेकिन वनिता के सवाल का जवाब—क्या वह पहले से ज़्यादा आकर्षक हो गया है?—दुर्भाग्य से, हाँ। उसने काली पोलो टी-शर्ट और काली पैंट पहनी हुई थी जो उस पर अच्छी तरह फिट हो रही थी और सफेद स्नीकर्स पहने हुए थे। आजकल वह यही पहनता है। शायद यह किसी बिगड़े हुए बच्चे का पहनावा है, जो आराम से गोल्फ खेलता है या अपने उतने ही बिगड़े हुए दोस्तों के साथ शानदार ब्रंच का लुत्फ़ उठाता है।
'और तुम? क्या तुम अब भी उससे नफरत करती हो?' वनिता पूछती है। 'मुझे जानना जरूरी है क्योंकि मैं उसके साथ उसी हिसाब से व्यवहार करूंगी।'
'कृपया उससे नफरत करो।'
यह सवाल पिछले तीन सालों से मुझे परेशान कर रहा है। हर बार जब मैं दक्ष के साथ अपने संक्षिप्त रिश्ते के बारे में सोचती हूँ, तो मुझे एक नया जवाब मिलता है। लेकिन जैसे-जैसे मैं उन तैंतालीस दिनों का विश्लेषण करती हूँ जो हमने साथ बिताए, दो बातें और भी स्पष्ट होती जाती हैं।
पहली बात तो ये है कि जब हम साथ थे तब मुझे दक्ष से प्यार नहीं हुआ था। मुझे उससे प्यार तब हुआ जब उसने मुझसे मुंह मोड़ लिया और मुझे छोड़ दिया। तब भी, मुझे उसके पूरे व्यक्तित्व से प्यार नहीं हुआ, बल्कि उन पहलुओं से प्यार हुआ जिन्हें मैं चुनना चाहती थी। उसके पूरे व्यक्तित्व से नहीं, बल्कि उसके कुछ हिस्सों से। जब हम साथ थे, उसने मेरी जिंदगी में खुशियां तो लाईं, लेकिन मैं अपने अतीत के घावों से इतनी टूटी हुई थी कि उससे सच्चा प्यार नहीं कर पाई।
दूसरी बात, हमारा ब्रेकअप मेरी गलती नहीं थी—यह उसकी गलती थी। वह भले ही खुद को पीड़ित बताए, लेकिन सारा दोष उसी का है।
'मुझे उससे ठीक से प्यार करने का मौका ही नहीं मिला। उसने मेरा दिल तोड़ दिया, वनिता। सब कुछ जानने के बाद भी, उसने...' मैं अपनी बात समझाती हूँ।
मेकअप आर्टिस्ट अपना काम जारी रखती है। मुझे आश्चर्य होता है कि मेकअप आर्टिस्ट और टैक्सी ड्राइवर अपने ग्राहकों के बारे में कितने रहस्य जानते होंगे।
'देखो, तुम जो भी करो, मैं तुम्हारे साथ हूँ। मुझे भी लगता है कि वह कुछ ज़्यादा ही गंभीर है, मैं सहमत हूँ,' वनिता कहती है। 'वह सबके लिए नहीं है।'
'मुझे विश्वास नहीं हो रहा कि ये सिर्फ तैंतालीस दिन थे। ये तो बस... बहुत लंबे लग रहे थे।'
'आप दक्ष के बारे में कितनी बार सोचते हैं?' वनिता पूछती है।
मैं बिना सोचे समझे कहता हूँ, 'हर दिन।'
वनिता ने हवा में मंडराते मेकअप ब्रश को हाथ से हटा दिया। 'हर दिन? तीन साल से?'

मेरे जीवन में दक्ष की उपस्थिति या अनुपस्थिति एक दिलचस्प निशान की तरह है। आप इसे हर दिन छूते हैं, लेकिन इसका अब कोई मतलब नहीं रह गया है।
'क्या आपको नहीं लगता कि वहां कुछ गड़बड़ है?' वनिता पूछती है।
'वनीता, जो कुछ भी है, मुझे वो नहीं चाहिए,' मैंने कहा। 'क्या तुम्हें सच में लगता है कि वो अब बदल गया होगा? क्या तुमने उस औरत के साथ उसका पॉडकास्ट नहीं सुना?'
तुम उससे ईर्ष्या करते हो।
वह मेरी तरफ एक नजर डालती है और मैं उसे नजरअंदाज करते हुए हाथ हिला देता हूं।
'वह परिवार, बच्चों की परवरिश और न जाने किन-किन चीजों को लेकर जुनूनी है। मुझे लगता है कि मैं वहां फिट नहीं बैठती। यह तो तब भी एक चेतावनी थी, मुझे नहीं पता कि मैंने इसे कैसे नजरअंदाज कर दिया। वह छब्बीस साल का है, चालीस का नहीं! वह कुछ ज्यादा ही... मर्द है।'
वह कहती हैं, 'कुछ लोग कहेंगे कि यह एक बहुत बड़ा सकारात्मक संकेत है।' 'उनका पॉडकास्ट... माफ कीजिएगा, बुरा नहीं है।'
रजत ने भी अपने पॉडकास्ट के बारे में यही बात कही है। भले ही वे मेरे पक्ष में हों, लेकिन उनका पॉडकास्ट सुनना मुझे स्वीकार्य नहीं है।
'मैं कुछ लोगों जैसी नहीं हूँ,' मैंने वनिता को याद दिलाया। 'मैं वो सब नहीं चाहती जो तुम लोग चाहते हो। और बात सिर्फ इतनी ही नहीं थी। रब्बानी भी इसमें शामिल था। और उसके पिता अभी भी ठीक हो रहे थे। मैं उसके भविष्य की कल्पनाओं में कैसे उलझ सकती थी? मेरा मतलब है, अभी भी रब्बानी सिर्फ नौ साल का है। वो सचमुच एक पिता थे। उनके साथ रहने का मतलब होता रब्बानी के लिए एक तरह से माँ की भूमिका निभाना, जो कि... छह साल का था।'
'वह आपसे ऐसा करने के लिए नहीं कहता।'
'कौन जाने, वनिता? कौन जाने लड़कों का क्या हाल होता है? मुझे बस इतना पता है कि मुझे उस होटल मैनेजर के कार्यालय में अपने फैसले पर अडिग रहना चाहिए था। लेकिन नहीं, मैंने क्या किया? मैंने उसकी बातों में आकर रिश्ते के लिए हां कह दी और देखो क्या हुआ... क्या तुम नहीं देख रही हो? एक रिश्ता खत्म करने के बारह घंटे के अंदर ही मैं फिर से दूसरे रिश्ते में आ गई!'
'गौरव मुझे बता रहा था कि दक्ष के पिता अब एक इंजीनियरिंग कंसल्टिंग फर्म में उपाध्यक्ष हैं,' वनिता कहती हैं।
'जो भी हो, वनिता। मुझे लगता है कि मैं खुद की देखभाल करने के अलावा कुछ और करने के लिए परिपक्व नहीं हूँ। न तो प्रेमिका, न पत्नी, न ही जल्द ही माँ बनने की सोच रहा हूँ। यह सब बोझ जैसा लगता है। यहाँ तक कि तुम्हारा इस दुल्हन वाले लिबास में होना भी मुझे अजीब लगता है। मैं यह नहीं कर सकता। मैं अकेला रहना चाहता हूँ।'
वो मुझे ऐसे देखती है मानो चाहना कोई दुखद बात हो। लेकिन मैं खुद खुश क्यों नहीं

रह सकती? पूरी तरह खुश रहने के लिए मुझे किसी और की चाह क्यों रखनी चाहिए? मैं सचमुच पूरी तरह खुश हूँ। मुझे आज़ादी है, मेरा करियर है, मेरे माता-पिता खुश हैं, मेरा भाई अच्छा कर रहा है। मैं किसी लड़के को, चाहे वो कितना भी अच्छा क्यों न हो, अपनी ज़िंदगी में क्यों शामिल करूँ और सब कुछ बिगाड़ दूँ?

'क्या आप किसी के साथ अपना जीवन साझा करना नहीं चाहते?' वह पूछती है।

जब भी मुझसे यह सवाल पूछा गया है, तो लहजा दया से भरा होता है। मानो मैं किसी चीज से वंचित रह रहा हूँ।

मैं सुबह उठता हूँ, चाय बनाता हूँ, अपने माता-पिता के साथ कुछ समय बिताता हूँ, फिर काम पर जाता हूँ जहाँ मुझे सबसे ज़्यादा मज़ा आता है। घर वापस आता हूँ या ऑफिस के लोगों या जान-पहचान वालों के साथ बाहर जाता हूँ, टीवी देखता हूँ और सो जाता हूँ। मुझे यह अच्छा लगता है, वनिता। मुझे पता है कि यह तुम्हारी खुशी की परिभाषा नहीं है, लेकिन मेरी है। मुझे यह सादगी पसंद है।

वनिता ने सभी प्रतिबद्ध लोगों की तरह सिर हिलाया। और मैं यह बात अच्छी तरह जानती हूँ कि हर प्रतिबद्ध व्यक्ति के मन में यह सवाल उठता है कि दोबारा अविवाहित होना कैसा होगा।

'अगर यही तुम्हारी इच्छा है,' वह एक हताश आह भरते हुए कहती है। 'लेकिन यह मत सोचो कि अगर ऐसा होता तो जीवन कैसा होता...'

वनिता तो ये बात कहने की हिम्मत भी नहीं कर पाती। वो भी ऐसे बर्ताव करती है जैसे मैं कोई हत्यारा हूँ। जैसे दक्ष करता है, या शायद अमृता भी। असलियत में, सबकी सोच अभी भी 1970 के दशक में अटकी हुई है।

यहां तक कि ठोस वैज्ञानिक प्रमाण भी उन्हें यह विश्वास दिलाने में विफल रहेंगे कि यह हत्या नहीं थी।

इसी तरह मैंने खुद को यकीन दिलाया कि मैंने जो किया वह न केवल नैतिक रूप से स्वीकार्य था बल्कि मेरे द्वारा लिया जा सकने वाला सबसे अच्छा विकल्प भी था।

पैंतीस दिनों में, गर्भावस्था का एकमात्र संकेत आपके अंदर मौजूद 2 मिलीमीटर का भ्रूण होता है। यह मेरी तर्जनी उंगली के नाखून की लंबाई से भी छोटा होता है। यह एक नली जैसी संरचना होती है जिसमें रक्त प्रवाहित होता है। यह एक धमनी की तरह होती है, रक्त की एक अतिरिक्त वाहिका।

इतना ही।

हृदय धमनियां भी इस नली जैसी संरचना से बड़ी और मोटी होती हैं। मैं अपने अंदर यह उभार नहीं चाहती थी। पैंतीसवें दिन, मैंने मासिक धर्म न आने के ठीक चार दिन बाद एक गोली ली। इस दवा ने प्रोजेस्टेरोन हार्मोन को अवरुद्ध कर दिया, जिसकी कमी से मेरे गर्भाशय की दीवारें कमजोर हो गईं। एक दिन बाद, मैंने एक और दवा ली जिससे गर्भाशय की परत बाहर निकल गई। दर्द और रक्तस्राव पांच दिन पहले आने वाले मासिक धर्म से न तो अधिक था और न ही कम। यह पीठ दर्द से छुटकारा पाने से कम चिकित्सकीय नहीं था।

यह कोई बच्चा नहीं था। यह तो गर्भ भी नहीं था। यह हत्या नहीं थी। यह विज्ञान था।

और फिर भी वनिता यह बात कह नहीं सकती।
‘क्या मैंने गर्भपात नहीं करवाया था? बस बता दो कि क्या हुआ था,’ मैंने वनिता से चिढ़कर कहा।
'मैं-'
‘क्या आपको समझ नहीं आता कि मैं कितनी दुखी होती? दक्ष से शादी, एक रोती हुई दो साल की बच्ची जिससे मैं नफरत करती, और एक नौ साल की रब्बानी। मेरा करियर बर्बाद हो जाता। भला मैं ऐसी जिंदगी क्यों जीना चाहती?’

OceanofPDF.com

7.

Daksh Dey

'मैं यहीं रुक रही हूँ,' मैंने गौरव को बताया और उसके कमरे की खिड़की से मुँह फेर लिया।
‘क्या आप सच में ऐसा कह रहे हैं, भैया? क्या आपको यकीन है कि आप इसे संभाल पाएंगे?’
मैं उसे घूरता हूँ।
‘ठीक है, ठीक है, बात बस इतनी है कि वनिता की शादी और फिर मेरी सबसे अच्छी दोस्त और मेरी बहन की वजह से पहले से ही माहौल तनावपूर्ण है—’
‘मैं तुम्हारा सबसे अच्छा दोस्त नहीं हूँ, गौरव।’
‘अरे! जगत और ज़ीनत?’ वह बहस करता है। ‘शादीशुदा लोगों से दोस्ती कैसे हो सकती है! वे हमेशा एक ही कहानी सुनाते रहते हैं। वे हद से ज़्यादा उबाऊ होते हैं।’
‘वो कुर्ता उतार दो, मैं उसे संगीत समारोह में पहन रही हूँ। तुम कुछ और पहनो।’
मैंने गौरव के लिए वो काला कुर्ता-पायजामा चुना था जो उसने अभी पहना हुआ है। हम नहाते हैं, बालों में गर्म हवा डालते हैं, वैक्स लगाते हैं, शेव करते हैं और पंद्रह मिनट में तैयार हो जाते हैं। गौरव इस पूरे समय मुझसे पीने की गुज़ारिश करता रहता है।
'सिर्फ तीन ड्रिंक्स,' मैंने उसे चुप कराने के लिए कहा।
तीसरी एब्सोल्यूट-रेड बुल पीते ही वह बातूनी और चिड़चिड़ा हो जाता है, और मुझे उसे पीने की अनुमति देने के अपने फैसले पर पहले से ही पछतावा होने लगता है।
‘तुम यहाँ क्यों रुक रहे हो? रुकने का असली कारण क्या है?’ वह एक मूर्खतापूर्ण मुस्कान के साथ पूछता है जिसे देखकर मेरा मन करता है कि उसके चेहरे पर एक थप्पड़ मार दूं।
तभी घंटी बजती है। आदित्य के दोस्त नशे में धुत, शोर मचाते हुए और गले मिलकर

जोश से भरे हुए अंदर आते हैं। मुझे एहसास होता है कि मैं इस सब के लिए काफी नशे में नहीं हूँ। इस शादी के लिए, इस खुशी के लिए, आँचल का सामना करने के लिए। वे गौरव को बड़े उत्साह से बताते हैं कि वे उसके बहुत बड़े प्रशंसक हैं। गौरव, जो अब थोड़ा नशे में है, उन्हें गर्मजोशी से गले लगाता है और संगीत समारोह समाप्त होने के बाद फीफा खेलने का उनका निमंत्रण स्वीकार करता है। तभी एक लड़का पूछता है, 'अरे? क्या तुम नृत्य में शामिल होना चाहोगे?'
गौरव मेरी ओर मुड़कर पूछता है, 'क्या हमें ऐसा करना चाहिए?'
'क्या उसकी दोस्त नाच रही है? दिल्ली वाली, वो खूबसूरत लड़की?' मैंने आदित्य के दोस्तों से पूछा।
'आंचल!' उनमें से दो चीख पड़ीं। 'हाँ, वो है!'
मुझे लगता है कि पुरुषों पर उसका प्रभाव आज भी वैसा ही है जैसा पहले हुआ करता था।
'तो फिर हमें उन्हें हराना होगा, है ना?' मैं उनसे कहता हूँ। 'क्या हमारे पास पर्याप्त शराब है?'
एक घंटे बाद, हम उनके कमरे में डांस स्टेप्स की प्रैक्टिस कर रहे हैं। जैसे-जैसे वे नशे में धुत होते जाते हैं, उनका डांस उतना ही बढ़िया होता जाता है। मैंने उनकी कोरियोग्राफी में थोड़ा बदलाव किया है, पिछले साल जगत और ज़ीनत के परफॉर्मेंस से कुछ स्टेप्स लिए हैं। मैंने एक तिहाई जैगरमिस्टर, एक तिहाई चिवास और एक तिहाई टकीला मिलाकर एक जानलेवा शॉट बनाया और सबको पिलाया। मैं उनकी आँखों में उदासी छाते हुए देख सकता था। दो लड़कों ने मुझे अपना नया सबसे अच्छा दोस्त, 'जीवन भर का भाई' कह दिया है। उनमें से एक को उल्टी हो गई है, उसने नींबू पानी का सोडा पिया है और फिर से पी रहा है। ब्लैक लेबल, एब्सोल्यूट और बीयर की खाली बोतलें मेजों पर बिखरी पड़ी हैं। हर कोई उन लड़कियों को याद कर रहा है जिन्होंने उनका दिल तोड़ा है।
'और सोचो तो सही, तुम तो आ ही नहीं रहे थे!' आदित्य कहता है, जो अपने ही समारोह के लिए हद से ज्यादा नशे में होने की कगार पर है।
मैंने उसे आगाह किया कि आदित्य ने शाम का आखिरी ड्रिंक पी लिया है। आदित्य और गौरव को छोड़कर बाकी सभी के लिए जैगरमिस्टर का एक आखिरी शॉट पीने के बाद, हम कार्यक्रम स्थल की ओर चल पड़े।
पता नहीं ये मेरे शरीर में मौजूद अल्कोहल का असर है या सच में, लेकिन जगह की खूबसूरती देखकर मैं दंग रह गई। वैसे भी, वनिता का स्वाद हमेशा से ही लाजवाब रहा है। संगीत समारोह का स्थान—हम सब की तरह काले और सुनहरे रंग से सजा हुआ, जगमगाती परियों की बत्तियों से रोशन—छोटा है, लेकिन इसकी भव्यता बेमिसाल है। मैं आँचल को ढूंढने के लिए चारों ओर देखती हूँ। जब मैं उससे पहले मिली थी, तो उसके चेहरे पर दिख रही झुंझलाहट ने मुझे बहुत आनंद दिया था। उसमें मुझे सुकून मिला था।
मुझे वह दूर से दिखाई दी।

वह वनिता की सहेलियों के साथ बार में है, जहां बारटेंडर बोतलों को हवा में उछाल रहा है और अजीब दिखने वाले पेय बना रहा है, जिन्हें हर कोई चखता है और नाक सिकोड़ता है।
आंचल का काला लहंगा सोने की तरह चमक रहा है। जब मैंने इसे सूटकेस में पैक किया था, तब मैंने जितना सोचा था, उससे कहीं ज़्यादा खूबसूरत वह लग रही है। उसने बहुत कम या न के बराबर मेकअप किया है, या फिर ऐसा मेकअप किया है कि देखकर लगता ही नहीं कि मेकअप है। वह जानबूझकर ऐसा करती है क्योंकि वह हद से ज़्यादा आत्ममुग्ध है और अपनी स्वाभाविक सुंदरता को दूसरों के सजे-धजे, बोटॉक्स से भरे चेहरों के सामने दिखाना चाहती है। मेरी नज़र उसकी खुली पीठ और उसकी चमकती चोली को बांधने वाली छोटी सी गांठ पर टिक जाती है। मेरे अंदर गुस्से के साथ-साथ एक अजीब सी चाहत भी जाग उठती है। मैं क्या सोच रहा था? कि मैं उसके साथ हो सकता हूँ? अगर मैं उसे किसी और से ज़्यादा प्यार कर सकता हूँ, तो क्या हुआ? उसकी जैसी सुंदरता से कुछ भी अच्छा नहीं निकल सकता। सिर्फ़ दर्द। जब वह एक लड़की से बात करते हुए अपने होंठ हिलाती है, तो मेरा मन करता है कि उसे किसी नकली खंभे से सटाकर एक चुंबन से चुप करा दूँ और अतीत को मिटा दूँ।
हम बार की ओर चलते हैं।
कई सालों से मैं आँचल और अपनी शादी के दिवास्वप्नों में खोई रहती हूँ। मेरे मन में, हमने सब कुछ देख लिया है—अलग-अलग जगहों पर भव्य शादियाँ, छोटी-छोटी वरमाला की रस्में, खूबसूरत लहंगे, खुशी के आँसू, बेतहाशा नाच-गाना, शादी के बाद के वो पल और महंगे हनीमून होटलों के स्विमिंग पूल में नग्न अवस्था में बिताए गए पल। मैंने कल्पना की है कि मैं उसका हाथ थामकर उससे हमेशा साथ रहने का वादा करूँगी, बार-बार, इस जन्म में और अगले जन्म में भी।
लेकिन अब, उसे इस हालत में देखकर मेरा दिल टूट रहा है।
हमारी नज़रें मिलती हैं, और मेरा सारा गुस्सा पिघल जाता है, उसकी जगह प्यार की लहर दौड़ जाती है, जिसे मैं जानता हूँ कि कभी वापस नहीं मिलेगा। आँचल से प्यार करना ऐसा है जैसे बार-बार अपने दिल में छुरा घोंपना। यह खुद को लगातार दर्द पहुँचाने जैसा है। किसी सस्ती बॉलीवुड फिल्म की तरह, मैं उसका हाथ पकड़कर उसे मंडप तक ले जाना चाहता हूँ, हवनकुंड में जलता हुआ दीया डालना चाहता हूँ, सात फेरे लेना चाहता हूँ, फिर उसे शादी के कमरे में ले जाकर उसके साथ संबंध बनाना चाहता हूँ।
मेरे साथ आए लोग बारटेंडर को अपना ऑर्डर देते हैं।
'आखिरी ड्रिंक,' मैंने गौरव को चेतावनी दी, जो अपनी बहन और मुझसे दूर चला गया।
जब आँचल मुड़ी तो उसने मुझे देख लिया। हंसी रुक गई। 'तुम यहीं रुक गए?'
'क्या आपके लिए यह कल्पना करना मुश्किल है कि कोई व्यक्ति आपके साथ बना रहता है?'
'दक्ष, ये कोई समझदारी भरा जवाब नहीं है। शायद अच्छा ही हुआ कि हमारा रिश्ता

खत्म हो गया, क्योंकि तुम मुझे ज़िंदगी भर ऐसे ही कमज़ोर जवाब देते रहते।'
'तुम मेरे सबसे अच्छे रूप के लायक नहीं हो। वैसे, तुम बेहद खूबसूरत लग रही हो। ऐसा लग रहा है जैसे मुझे फिर से तुम पर पुराने दिनों की तरह क्रश हो गया है, लेकिन फर्क सिर्फ इतना है कि तुम एक बेहद बुरी इंसान भी हो।'
वह हंसती है। 'मैं तुम्हारी बात को गंभीरता से लेती, दक्ष, लेकिन अब मुझे पता चल गया है कि तुम्हारी किसी भी बात को गंभीरता से नहीं लेना चाहिए। तुम साफ तौर पर अपनी बात के पक्के नहीं हो।'
मैं चाट काउंटर पर खड़ी एक लड़की की ओर इशारा करती हूँ। 'वो वनिता की दोस्त तेजल है, है ना?' मैं आँचल से पूछती हूँ। 'हरे रंग की ड्रेस वाली? उसके बारे में तुम्हारा क्या ख्याल है?'
वह झुंझलाहट में अपना सिर पीछे की ओर झुका लेती है। 'दक्ष, हम सत्रह साल के नहीं हैं। चलो एक-दूसरे को जलन दिलाने का यह खेल न खेलें। हाँ, वह तेजल है, और अगर तुम दोनों के बीच कुछ होता है, तो मुझे बहुत खुशी होगी,' वह कहती है। 'लेकिन बस उसे इस मंडप में घसीटकर मत लाओ और कल सुबह उससे शादी करने के लिए मत कहो।'
आंचल से बात करना कुछ इस तरह है। हर पल ऐसा लगता है जैसे मेरा दिल चीरकर निकाला जा रहा हो।
और मैं यह भी कहना चाहूँगी कि मैं रजत और तुम्हारे बारे में बहुत खुश हूँ,' मैंने उससे कहा।
वह मुझे घृणा भरी नजरों से देखती है। 'हम दोस्त हैं।'
'दोस्तों की आपकी परिभाषा कुछ ज़्यादा ही व्यापक है। तो रजत, जिसके साथ आपने विक्की को धोखा दिया, वह तो वही लड़का है जिसने आपको गर्भपात की गोलियां दिलवाईं क्योंकि... मुझे लगता है... वह भी आपके साथ दोबारा सोना चाहता है?'
उसकी आँखों में घृणा का भाव क्रोध में बदल गया। 'तुम पाखंडी हो, दक्ष। रजत ने एक दोस्त के रूप में वह किया जो तुम नहीं कर सके, जबकि वह कहता था कि वह मुझसे प्यार करता है।'
'मुझे लगता है बस बहुत हो गया,' मैं हंसते हुए कहती हूं। 'बस तुम्हें थोड़ा सा चोट पहुंचाना चाहती थी। तुम्हारी आवाज में जो गुस्सा है, वो मुझे काफी पसंद आया। बढ़िया।'
मैं उससे दूर चला जाता हूँ।
बाद में, जब हमारे नाचने का समय आया, तो दूल्हे के पक्ष के लड़कों ने शानदार प्रदर्शन किया। जब हमने उनके औसत दर्जे के प्रदर्शन से ध्यान हटाकर आँचल का चेहरा बर्फ की तरह सफेद कर दिया, तो आँचल का चेहरा भी वैसा ही हो गया।

OceanofPDF.com

8.

Aanchal Madan

‘यह तो कमाल है!’ मैंने वनिता के कानों में चिल्लाकर कहा। वनिता के चेहरे पर बड़ी सी मुस्कान आ गई।
रात के 11 बज रहे हैं और हम रात 8 बजे से नाच रहे हैं। डीजे जानता है कि सब नशे में हैं, इसलिए वह सिर्फ़ लोकप्रिय पंजाबी गाने ही बजा रहा है, वो टेक्नो-ईडीएम गाने नहीं जिन्हें पसंद करने का सबको दिखावा करना पड़ता है। कुछ ढोलवाले ऐसे ढोल बजा रहे हैं जैसे उनकी जान उसी पर टिकी हो। और हमारी तरह वे भी पसीने से भीगे हुए हैं और वनिता के माता-पिता ने उन पर दिरहम के नोटों की बारिश कर दी है। उनकी ऊर्जा देखकर कुछ आंटियों ने तो उन पर डोरे भी डाले हैं, जो उनकी शादीशुदा ज़िंदगी की हालत बयां करता है।
कभी-कभी, दक्ष और मैं डांस फ्लोर पर एक-दूसरे से टकरा जाते हैं। लेकिन हम दोनों इतने नशे में होते हैं कि हमें इसकी परवाह ही नहीं होती। बल्कि मैं तो इसका स्वागत करती हूँ। जब उसका हाथ मेरे हाथ को छूता है, तो बिजली सी दौड़ जाती है। जब मैं घूमती हूँ और उसकी उंगलियाँ मेरी नंगी पीठ को छूती हैं, तो मेरी रीढ़ में झनझनाहट सी दौड़ जाती है। हर बार जब वह मुझे देखता है, तो मुझे वह भूख याद आ जाती है जिसके साथ वह मुझे अपने वश में करता था। ऐसा लगता है जैसे उसका स्पर्श मेरे शरीर को चूर-चूर कर पिघला देता था। हमने जितने भी पल साथ बिताए, किराए के कमरों में, होटलों में, कारों में, खाली सिनेमाघरों में, वह कभी भी शांत और सौम्य प्रेम प्रसंग जैसा नहीं लगा। वह हमेशा गंदा होता था, हम हमेशा चोटिल और थके-हारे निकलते थे, हमारी आत्माएँ एक-दूसरे से जुड़ जाती थीं, वह अनुभव हमारे दिमाग में हमेशा के लिए बस जाता था। यह एक द्वंद्व था जिसमें हम दोनों हमेशा विजेता होते थे। नहीं, हमने प्रेम प्रसंग नहीं किया, उसने मुझे शारीरिक रूप से उत्तेजित किया, और मैंने उसे। हमारे सब कुछ खत्म होने के काफी देर बाद भी, मैं इसके बारे में सोचकर अपने शरीर में हल्की सी सिहरन महसूस कर सकती हूँ। हमारे ब्रेकअप के काफी समय बाद भी, मैं उसके भेजे हुए सेक्स्ट मैसेज पढ़ती थी, जिनमें वो मेरे साथ क्या-क्या करता था, ये सब लिखा होता था। वो कभी बचकाने 'मैं तुम्हें इतनी ज़ोर से चोदूँगा, और ये तुम्हारे जीवन का सबसे बेहतरीन सेक्स होगा' जैसे मैसेज नहीं होते थे, बल्कि पैराग्राफों में हर एक स्पर्श का विस्तृत वर्णन होता था।
भले ही मैं उससे नफरत करती थी, फिर भी मैं चाहती थी कि उसका शरीर मुझे फिर से छुए और मैं फिर से उसी तरह से सेक्स करूँ।
जब हम साथ में नाचते हैं, तो एक आंटी हमारे सिर के ऊपर कुछ नोट उछालती हैं और फिर उन्हें ढोलवालों के लिए हवा में फेंक देती हैं ताकि वे उन्हें उठा लें। जो लड़के मुझे छेड़ रहे थे, अब वे ऐसा नहीं करते। मुझे लगभग उनकी फुसफुसाहट सुनाई देती

है, 'आज रात वो उसके कमरे में होगी।' और काश, बस आज रात के लिए, वो वो न होता, बल्कि वो वही लड़का होता जिससे मैं एक शादी में मिली थी, काले कुर्ते में, पसीने की बूँदें उसके बालों से टपक रही थीं, और वो ऐसे नाच रहा था जैसे कल हो ही न। जो लड़कियाँ दक्ष को छेड़ रही थीं, वे भी अब पीछे हट गई हैं।
जब भी हम—या डांस फ्लोर पर मौजूद कोई भी—होश में आने लगता है, दक्ष सबके लिए शॉट्स का एक नया बैच तैयार कर देता है। बाकी सबके साथ, वह उनका चेहरा अपने हाथ में पकड़कर सीधे उनके गले में ड्रिंक डाल देता है। सिवाय गौरव के, जिसे उसने अब और पीने से मना कर दिया है। और मेरे साथ, वह शॉट्स मुझे थमा देता है। उसके इस धोखे के बावजूद, मैं चाहती हूँ कि वह मेरा गला पकड़ ले।
'क्या तुम्हें कुछ चाहिए?' मैंने वनिता से पूछा।
'पानी!' वह चिल्लाई। 'मैं तुम्हारे साथ आऊंगी!'
हमने अपनी ऊँची एड़ी के जूते उतारे, उसने अपना हाथ मेरे हाथ में डाला और हम लड़खड़ाते हुए होटल में दाखिल हुए। लॉबी एकदम शांत और ठंडी थी, लेकिन संगीत की धुनें अभी भी हमारे कानों में गूंज रही थीं और हमारे पैर अपने आप ताल पर थिरकने लगे। हमें पानी की कुछ बोतलें और एक खाली सोफा मिला। जैसे ही हम उस पर बैठे, ऐसा लगा मानो हमारे जीवन की सारी थकान हम पर हावी हो गई हो। हम गद्दी पर धंस गए, ऐसा महसूस हुआ जैसे हमने पहले कभी आराम नहीं किया हो।
'कितनी बुरी बात है कि शादी सिर्फ एक बार ही हो सकती है... असल में कई बार शादी हो सकती है, लेकिन भव्य शादी सिर्फ एक बार ही हो सकती है... वरना पागल लगोगे,' वनिता बड़बड़ाती है। 'मैं तो हर साल ऐसा करना चाहूँगी!' उसका मेकअप पसीने से भीग चुका है। वह अपनी घड़ी देखती है। 'अंकल— आंटी आ गए होंगे, है ना?'
मैंने उससे कहा, 'वे रास्ते में हैं। मुझे लगता है मैंने अपनी आखिरी ड्रिंक पी ली है।'
वनिता की आँखों में शरारत भरी चमक है। 'जब तक कि, ज़ाहिर है, दक्ष आपसे एक और लेने के लिए न कहे।'
मैंने कहा, 'ऐसा नहीं है कि वह मेरा चेहरा पकड़कर मेरे गले में कुछ उंडेल रहा है।'
मुझे पहले से ही अपने अंदर पछतावा उमड़ता हुआ महसूस हो रहा है, यह जानते हुए कि मेरे मुंह से निकलने वाले शब्द वनिता को चिढ़ाने के लिए अंतहीन मसाला देने वाले हैं, लेकिन फिर भी मैं उन्हें कह देता हूं।
मैं उसे सचमुच चाहती हूँ।
वनिता हंसती है। 'क्या तुम्हें लगता है कि हम यह नहीं देख रहे? जिस तरह से तुम दोनों नाच रहे हो और एक-दूसरे को देख रहे हो... अगर मैं इसे वीडियो में रखूँगी, तो यह अश्लील हो जाएगा।'
'मैं । । ।'
'सब लोग नशे में हैं। किसी को कोई फर्क नहीं पड़ता। कम से कम तुम्हारे भाई से तो बेहतर है। मेरे प्यार करने का तुम्हारा सारा श्रेय धराशायी हो गया,' वनिता कहती है।
मुझे गौरव पर ध्यान देने की याद नहीं आ रही। मेरी नज़रें तो बस दक्ष पर ही टिकी हुई

थीं।
वनिता बताती हैं, 'वह तेजल को चूम रहा था, ऐसा लग रहा था मानो वह उसका पूरा मुंह ही खा जाएगा! आदित्य के दोस्त इस बात से काफी प्रभावित थे कि वह उसे अपनी ओर खींचने में कामयाब रहा।'
मैं गौरव को किसी लड़की के साथ अंतरंग होते देखने से बेहतर अपनी आंखों की रोशनी जलवाना पसंद करूंगी। 'यही तो दक्ष कर रहा था, गौरव को उस लड़की से मिलवा रहा था।'
वह मुझे कोहनी मारती है। 'वह अब भी तुमसे प्यार करता है।'
'उसे प्रेमी लड़के की भूमिका निभाना पसंद है। और यह एक शादी है। उस भूमिका को निभाने के लिए यह एकदम सही जगह है।'
वह अपना हाथ मेरे चारों ओर लपेट लेती है, यह जताते हुए कि वह मेरी बात समझती है। 'हम सब अपने-अपने तरीके से थोड़े अटपटे हैं। शायद हम ऐसे लोगों की तलाश में हैं जो हमें हमारी इसी अटपटीपन के साथ स्वीकार कर सकें।'
और आपको वह व्यक्ति मिल गया है।
वह एक गहरी सांस लेती है और मुझे कसकर गले लगा लेती है।
‘अब जब तुम्हारी शादी हो गई है, तो मेरे माता-पिता मेरी जान के पीछे पड़ जाएंगे,’ मैं उदास होकर शिकायत करती हूँ। ‘यह सब तुम्हारी गलती होगी। जब मेरे आस-पास के सभी लोग शादी कर रहे थे, तो मैं उनसे कहती रही कि मैं भी वनिता के साथ ही शादी करूँगी, और फिर तुमने मुझे धोखा दिया। अगर तुम रुकी रहतीं, तो मैं कह सकती थी, “देखो! उसकी भी शादी नहीं हुई है।”’
वह मेरा हाथ सहलाती है। 'तुम्हें कोई न कोई मिल ही जाएगा। कौन जाने, शायद तुम्हें अमेरिका में ही कोई मिल जाए। वैसे मैं उम्मीद करती हूँ कि तुम यहाँ वापस आओगे, ठीक है? अमेरिका के नागरिक मत बन जाना। स्वदेश की तरह कुछ करो, पैसे कमाओ और वापस आ जाओ।'
‘यही योजना है। मैं कुछ वर्षों तक वहीं रहूंगी,’ मैंने कहा। ‘साथ ही, मम्मी-पापा शादी के लिए दबाव नहीं डाल पाएंगे।’
‘अच्छा प्लान है।’
'मेरा शरीर अब फिर से नाचने के लिए बेताब है।'
मैंने उसे उठने के लिए कहा। उसने मेरा हाथ थाम लिया। 'मुझे खुशी है कि तुम यहाँ हो।'

OceanofPDF.com

9.

Aanchal Madan

जैसे ही टैक्सी अटलांटिस के सामने रुकती है, दक्ष और गौरव तैयार खड़े इंतज़ार कर रहे होते हैं। मैं समझ जाता हूँ कि क्या हुआ होगा। दक्ष ने गौरव को अपने कमरे में जाने के लिए कहा होगा, लेकिन नशे में धुत गौरव ने माँ-पापा से मिलने आने की ज़िद की होगी। और इसीलिए वो यहाँ है, आँखें घुमाते हुए, थोड़ा लड़खड़ाते हुए, बेवकूफी भरी मुस्कान के साथ। गौरव जल्दी से दरवाज़ा खोलता है जबकि दक्ष टैक्सी के ट्रंक की ओर बढ़ता है।

जब मैं माँ-पापा को गले लगाती हूँ, तो ऐसा नहीं लगता कि मैं कुछ ही घंटों के लिए उनसे दूर रही हूँ। गौरव का गले लगाना ज़्यादा देर तक चलता है। वह घर पर कम और अपने ऑफिस और अपने फ्लैट में ज़्यादा समय बिताता है। पिछले साल जब गौरव ने अपने ऑफिस के पास अपना दो कमरों वाला अपार्टमेंट खरीदा, तब से वह उन्हें—और मुझे भी—अपने साथ रहने के लिए कहता रहता है। मैं उसे समझाती रहती हूँ कि हमारे माता-पिता उस घर को नहीं छोड़ेंगे जिसके लिए मैंने पैसे दिए हैं। आख़िरकार, मैं बड़ी हूँ। लेकिन यह तो सिर्फ़ एक वजह है। दूसरी वजह यह है कि दक्ष गौरव की ही बिल्डिंग में रहता है और मैं उससे टकराना नहीं चाहती थी। इससे भी बुरा यह था कि मैं नहीं चाहती थी कि मेरे माता-पिता को उसे पसंद करने के और भी कारण मिलें। जैसे अभी, उसने उनके पैर छुए, उनकी फ़्लाइट के बारे में पूछा, उसकी आवाज़ में सहानुभूति झलक रही थी, उसने उन्हें अपने सामान की चिंता न करने को कहा, उसके पास पहले से ही उनके कमरे की चाबी है और कमरे में चाय तैयार रखी है।

बहुत जरूरतमंद।

'बेटा, तुम्हें यहाँ देखकर मुझे बहुत खुशी हुई,' माँ ने दक्ष के चेहरे को कोमल स्पर्श से सहलाते हुए कहा, मानो वह उनका अपना अनमोल खून हो। 'क्या हम सुबह मिलेंगे?'

'आंटी, आपके पास मेरा नंबर है। अगर आपको किसी चीज की जरूरत हो, तो मुझे बता देना,' वह ऐसे जवाब देता है जैसे वह शादी में बिन बुलाए मेहमान नहीं बल्कि शादी की योजना बनाने वाला हो। 'और आपको पता ही है कि मैं नाश्ता कभी नहीं छोड़ता। कौन जाने वहां मुझे कौन मिल जाए?'

माँ-पापा इस अक्सर सुनाई जाने वाली चुटकुला पर हँसते हैं। मुझे यह बिल्कुल पसंद नहीं जब वे ऐसा करते हैं। दक्ष को हममें से एक समझो।

'हम भी यहीं हैं,' मैंने माँ को याद दिलाते हुए अपना हाथ उनका हाथ में डाला और दक्ष और पापा से दूर चली गई।

गौरव दूसरी तरफ से मां के हाथ में अपना हाथ डाल लेता है।

जैसे ही हम कमरे की ओर बढ़े, मैंने दक्ष और पापा को मौसम, पाकिस्तान और भारत के बीच हुए पिछले टेस्ट मैच और पेट्रोल की कीमतों में हुई बढ़ोतरी के बारे में जोश से बातें करते सुना। पापा गौरव से ज़्यादा दक्ष से बात करते हैं। पापा का मानना है कि दक्ष के मार्गदर्शन के बिना गौरव भटकता रहता, खोया हुआ और संघर्ष करता रहता। बकवास! अगर दक्ष गौरव का इतना अच्छा ख्याल रखता है, तो वह उसे माँ-पापा से दूर क्यों नहीं ले जा रहा, जो गौरव से आती वोदका की बदबू से सचमुच सहम गए हैं

और उसके लड़खड़ाते कदमों को देखकर नाराज़ हैं?
दक्ष कमरे के दरवाजे पर हम सबको शुभ रात्रि कहकर चला जाता है। गौरव हमसे मुंह फेरकर दक्ष को गले लगा लेता है। मुझे लगता है कि दक्ष को इस बात से बहुत खुशी मिलती है कि मेरा परिवार मुझसे ज़्यादा उसे प्यार करता है।
'कमरे में मिलते हैं,' दक्ष गौरव से कहता है और चला जाता है।
'उतना ही पियो जितना तुम संभाल सको!' पापा गौरव को डांटते हैं।
हम सब में पापा ही इकलौते हैं जो गौरव की नई-नई सफलता और उससे जुड़ी सारी शान-शौकत से प्रभावित नहीं हुए हैं। मुझे पता है, पापा के मन में यही ख्वाहिश है कि वो सफेद कमीज, ब्लेज़र और टाई पहनकर किसी बैंक या FMCG कंपनी में छोटी-सी टीम का नेतृत्व करने चले जाएं। उन्हें गौरव पर गर्व तो है, पर वो इसे समझ नहीं पाते। ठीक वैसे ही जैसे वो यह नहीं समझ पाते कि उनकी पच्चीस साल की बेटी शादी के लिए लड़कों से मिलना भी क्यों नहीं चाहती। पापा ने कितनी बार दक्ष और मुझे मिलाने की कोशिश की है, इसकी गिनती ही भूल गई हूँ।
जैसे ही हम उन्हें कमरे में आराम से बिठाते हैं, सात साल पहले इस तरह के होटल में हमारे पहले प्रवास की यादें ताजा हो जाती हैं।
तभी घंटी बजती है और वनिता अंदर आती है। उसने पायजामा पहना हुआ है और उसका मेकअप फैला हुआ है। आम तौर पर, मम्मी-पापा मेरे किसी भी दोस्त की शादी में नहीं आते। लेकिन वनिता की बात अलग है। वे उसे बहुत प्यार करते हैं और मुझे भी उसके जैसा बनने के लिए कहते रहते हैं।
'आंटी! आपको पहले आना चाहिए था!' वनिता शिकायत करते हुए मां को गले लगा लेती है।
वह पापा के पैर छूती है।
पापा ने उसके सिर को हल्के से छुआ। 'आदित्य कहाँ है?'
'वह अभी भी कुछ आखिरी समय की व्यवस्था कर रहा है,' वनिता बिना माथे पर शिकन डाले कहती है, जबकि हम दोनों जानते हैं कि आदित्य शायद उन सभी महंगे कॉकटेलों के कारण उल्टी कर रहा होगा जो दक्ष उसके लिए बना रहा है।
मां वनिता को अपने बगल में बिस्तर पर बिठाती है। 'देखो तुम कितनी सुंदर हो! और तुम्हारी मेहंदी! कितना प्यारा रंग है!'
'हाँ, बिल्कुल,' कमरे के कोने से गौरव लड़खड़ाती आवाज़ में बोला। उसने वनिता की ओर इशारा करते हुए कहा, 'वो सबसे अच्छी है! उसे देखो! वो तो... हो सकती थी।'
मां गौरव को घूरती है। पापा कमरे के अपने हिस्से से बड़बड़ाते हैं।
'मुझे उससे कोई आपत्ति नहीं है,' वनिता हंसते हुए कहती है। 'मुझे बहुत खुशी है कि तुम यहां हो।'
'अपनी सबसे अच्छी दोस्त से भी शादी करने के लिए कह दो, ना,' माँ ने विनती की। 'वह तो पापा द्वारा भेजे गए प्रोफाइल भी नहीं देखती। मुझे नहीं पता कि वह क्या चाहती है।'
'आंटी, वह तब करेगी जब उसे लगेगा कि यह सही समय है। मेरे लिए तो अभी सही

समय है, शायद उसके लिए नहीं।'
माँ एक लंबी, उदास साँस छोड़ती है, मानो पूरे ब्रह्मांड का बोझ उसके कंधों पर आ गया हो। 'मुझे नहीं पता उसके लिए सही समय कब आएगा। वो हमेशा कहती रहती है कि करियर ज़रूरी है, ज़रूरी है, क्या हम नहीं जानते? तुम्हारी भी तो शादी हो रही है ना? तो क्या हुआ? इसमें बड़ी बात क्या है?'
गौरव की नशे में धुत्त हंसी पूरे कमरे में गूंज उठी। 'क्या... मैं... क्या... उसे भैया से तभी शादी कर लेनी चाहिए थी जब उन्होंने तुमसे पूछा था!' गौरव लड़खड़ाते शब्दों में शरारती अंदाज़ में बोला। 'ऐसा होता तो—'
'गौरव, चुप रहो!' मैंने उसे बीच में ही टोक दिया। 'माँ, कृपया उसे समझाओ कि अगर वो संभाल नहीं सकता तो इतनी शराब न पिए। गौरव, बस जाओ और होश में आकर वापस आना। कुछ भी बोलता है।'
गौरव अब भी उसी भोली सी मुस्कान के साथ मेरी तरफ देख रहा है।
माँ की निगाहें मुझ पर भारी पड़ रही थीं जब वह मेरी ओर मुड़ीं। 'क्या दक्ष ने तुम्हें शादी के लिए प्रपोज किया? तुमने तो हमें बताया था कि वह तुम्हें पसंद नहीं करता।'
इससे पहले कि मैं कुछ जवाब दे पाती, वनिता बीच में बोल पड़ी, 'मज़ाक में कह रही हूँ, आंटी, बस हल्के-फुल्के अंदाज़ में। गौरव, अब तुम्हें सो जाना चाहिए। चलो, मैं तुम्हें तुम्हारे कमरे में ले चलती हूँ।'
वनिता उठकर गौरव की ओर चलने लगती है।
माँ पापा की तरफ देखती है और फिर मेरी तरफ। 'तुमने दक्ष को मना क्यों किया? क्या तुम्हें शर्म आ रही थी?' वह बहुत ही कोमल स्वर में कहती है, 'क्या आप चाहते हैं कि हम दक्ष से बात करें? वह हमारी बात सुन लेगा।'
'माँ, यार!' मैंने उसे बीच में ही टोक दिया। 'क्या कह रही हो? गौरव नशे में है, वो कुछ भी बोल रहा है। कृपया किसी से बात मत करो। और जब सही समय आएगा—'
गौरव की बेवकूफी भरी हंसी से मेरी बात अधूरी रह गई। वनिता अब उसका हाथ खींचकर उसे खड़ा करने की कोशिश कर रही है।
'वो उससे कभी शादी नहीं करेगा!' गौरव लड़खड़ाते हुए खड़ा हुआ और उसकी आवाज़ लड़खड़ा गई। 'वो मेरा सगा भाई हो सकता था... असल में, साला... असल में साला... वाह... ओह नहीं... मैं साला होता—'
'गौरव! कृपया बाहर निकलो,' मैंने आदेश दिया।
जैसे ही वनिता गौरव को बांह से खींचकर दरवाजे की ओर ले जाती है और वह लड़खड़ाते हुए हमसे दूर चला जाता है, मुझे राहत की अनुभूति होती है। जैसे ही वे मेरी नजरों से ओझल होते हैं, मैं चैन की सांस लेती हूँ।
दरवाजा बंद होते-होते गौरव ने वनिता से पूछा, 'क्या... तुम मुझे बताओगी... क्या... नहीं, तुम मुझे बताओ... क्या... आदित्य तुमसे शादी करेगा अगर तुम उसे बिना बताए उसके बच्चे का गर्भपात करा दो? नहीं... नहीं... कोई संभावना नहीं, है ना?'
उनके पीछे दरवाजा बंद हो जाता है।

OceanofPDF.com

10.

Daksh Dey

अटलांटिस का समुद्र तट कभी शांत और निर्मल हुआ करता होगा, लेकिन पर्यटन के चरम मौसम में जब लोग स्विमसूट और फूलों वाली शर्ट पहने टिड्डियों की तरह उमड़ पड़ते हैं, तो ऐसी स्थिति की उम्मीद नहीं की जा सकती। लेकिन मुझे खुशी है कि आसपास लोग हैं, इसलिए मैं आँचल के पिता की उदास और हैरान आँखों में देखने के बजाय कहीं और देखने का नाटक कर सकती हूँ।
मैंने मन में ठान लिया कि मैं गौरव को फिर कभी शराब नहीं पीने दूंगी।
‘तुम बच्चे सोचते हो कि तुम्हें सब पता है,’ वो धीमी आवाज़ में बुदबुदाते हैं, उनकी आवाज़ भावनाओं से भरी हुई है। जब वो मेरी तरफ मुड़कर देखते हैं, तो ऐसा लगता है जैसे उनकी झुर्रियाँ और गहरी हो गई हों, मानो किसी ने उन पर चाकू चला दिया हो। ‘ये कैसा पेशा है कि वो कुछ महीनों की छुट्टी नहीं ले सकती थी? क्या हम बच्चे की परवरिश नहीं कर सकते थे? वो ऑफिस जा सकती थी! उसे कौन रोकता?!’
‘अंकल,’ मैंने यथासंभव शांत भाव से जवाब दिया। ‘यह तीन साल पहले की बात है।’ उनकी आवाज़ में निराशा साफ झलक रही है। मैं इसे अपने दिल से महसूस कर सकता हूँ। मैंने भी इसे महसूस किया है।
जब आँचल ने मुझे पहली बार फोन किया, तो वह एक क्लिनिक से था। उसने पहले ही अपना फैसला कर लिया था। वह जानती थी कि मैं कैसी प्रतिक्रिया दूंगा, इसलिए उसने मुझे बताना भी ज़रूरी नहीं समझा। अगले हफ्ते, वह दो गोलियां खाकर बारह घंटे में अपनी 'गलती' सुधार लेगी। उसने मुझे दिल्ली आने और उसके साथ रहने के लिए कहा, यह कहते हुए कि यह प्रक्रिया दर्दनाक नहीं होगी, बल्कि मेरे वहां होने से उसे सुकून मिलेगा। उसके शब्द मुझ पर किसी मालगाड़ी की तरह गिरे, मानो एक के बाद एक दो बम गिरे हों। एक पल में उसने मुझे बताया कि मैं पिता बनने वाला हूँ, और अगले ही पल उसने तय कर लिया कि इस उम्र में बच्चे को पालने से बुरा कुछ नहीं हो सकता। उसने अपना फैसला कर लिया था। और उसने समर्थन की मांग की। मैंने उससे गिड़गिड़ाया, गिड़गिड़ाया, उससे इस बारे में सोचने के लिए विनती की। वह मुझसे बार-बार कहती थी, 'मेरे लिए मां बनने का यह सही समय नहीं है।'
मैंने उससे गोलियां न लेने की विनती की। वह मुझे दिल्ली जाने के लिए फ्लाइट के विकल्प भेजती रही। मैंने वादा किया कि मैं घर पर रहकर बच्चे की देखभाल करूँगी और वह अपने सपनों को पूरा कर सकेगी।
मैंने उससे कहा, 'बच्चे की जिम्मेदारी मेरी होगी।'
‘विकी के जाने के बाद से मुश्किल से एक महीना ही बीता है,’ उसने मुझे ठंडे लहजे में

याद दिलाया।
एक हफ्ते तक हम चिल्लाते-चिल्लाते रहे और एक-दूसरे को निर्दयी, बेरहम और स्वार्थी कहते रहे। सातवें दिन उसने रजत की मौजूदगी में गोलियां खा लीं।
जब उसने मुझे बताया कि काम हो गया है, तो मैंने उससे कहा था, 'जाओ भाड़ में जाओ।'
'तुम मुझे रोकने क्यों नहीं आए? तुम तो बस मुंबई में बैठे रहे और फोन पर चिल्लाते रहे!' वह चीखी।
'तुम्हें पता है क्यों!' मैंने चिल्लाकर जवाब दिया। 'मुझे कितनी बार बताना पड़ेगा कि ये बाबा का कृत्रिम दांत था—'
उसने एक लंबी आह भरकर मेरी बात काट दी। उसने दृढ़ता से कहा, 'मैं नहीं चाहती थी कि तुम मुझे रोको।'
'अपना मन बना लो, आँचल।'
'यही बात आप समझ नहीं पा रहे हैं। और भी चीजें महत्वपूर्ण हैं। बाबा, रब्बानी, मेरा करियर! यह गर्भावस्था महत्वपूर्ण नहीं थी। क्या यही हमारे लिए शादी करने और परिवार बसाने का समय है? नहीं! और भी महत्वपूर्ण चीजें हैं!'
'सब कुछ होने में क्या बुराई है?!'
'तुम भी बस एक और... वो आदमी हो जिसे अपनी मनमानी करनी है। तुम्हें पता है तुम्हें क्या करना चाहिए था, दक्ष? तुम्हें मेरे फैसले का समर्थन करना चाहिए था। अगर तुम मुझसे सच में प्यार करते, तो यही करते!'
जब भी मैं इसके बारे में सोचती हूँ, मुझे दर्द का एक गड्ढा सा महसूस होता है। मेरे पेट में गर्मी सी दौड़ जाती है। मैं उन विचारों को अपने दिमाग से निकाल देती हूँ।
'चाचा जी, वो ऐसी माँ नहीं बनना चाहती थी जो बच्चे को जन्म देने के बाद काम पर चली जाए,' मैंने उन्हें शांत करने के लिए झूठ बोला। 'मुझे लगता है कि हमें उसके दृष्टिकोण पर भी विचार करना चाहिए।'
मेरे पेट के निचले हिस्से में दर्द बढ़ जाता है।
चाचा अपना सिर हिलाते हैं। 'शायद यह हमारी गलती है। हमने उस पर सफल होने के लिए बहुत ज्यादा दबाव डाला और अब उसे बस यही पता है।'
मैंने उससे कहा, 'इसमें किसी की गलती नहीं है। इसमें कुछ भी सही या गलत नहीं है। यह जैसा है वैसा ही है।'
'बेटा, एक दिन वो इस फैसले पर पछताएगी। मेरी बात याद रखना। उसे अपने परिवार की कमी खलेगी और तब उसकी सारी करियर तरक्की का कोई मतलब नहीं रह जाएगा।'
लेकिन उसके पास परिवार है, चाचा जी। आप, गौरव, चाची... उसे और क्या चाहिए?
'उसका अपना परिवार,' चाचा ने बीच में ही टोकते हुए कहा।
लेकिन अब हालात बदल गए हैं, अंकल। आप भी जानते हैं। उसने अपनी जिंदगी में बहुत मेहनत की है। सफलता की चाहत न रखे तो भला? है ना? और मैं तो बहुत पहले से जानती हूँ कि वो जो भी करती है, आपके लिए ही करती है। वो आपको

आराम देना चाहती है। लेकिन अगर आप उसे इसके लिए डांटना शुरू कर देंगे, उससे बात करना बंद कर देंगे, तो वो अपनी सारी ताकत खो देगी। कृपया ऐसा मत कीजिए। देखते हैं आगे क्या होता है। फिलहाल, उसकी उम्मीद मत तोड़िए।
उसके पिता ने गहरी सांस ली। 'और तुम उसके किए से सहमत थे?'
कुछ झूठ सच से बेहतर होते हैं। खुशी में आदर्शवाद की कोई जगह नहीं होती। अगर होती, तो आँचल ने अपनी खुशी के लिए वो सब न किया होता जो उसने किया। इसलिए मैं कहता हूं, 'यह उसका फैसला था।'
मेरा मन उन भविष्य की कल्पनाओं में खो जाता है जो शायद तब होता जब हालात अलग होते। मैं और आँचल एक मंज़िला मकान में रहते। नीचे हम दोनों होते, ऊपर रब्बानी और बाबा। हमारा एक छोटा सा बगीचा होता, जहाँ हमारा तीन साल का बच्चा फूल तोड़ता और गौरव बाबा के ब्लेड-रनर जैसे कृत्रिम दांतों से खेलता रहता। भविष्य की ये सुखद कल्पनाएँ और भी ज़्यादा दर्द देती हैं क्योंकि ये मेरे बस में थीं। गौरव मेरा भाई है, मैं उससे ज़रूरत से ज़्यादा प्यार करती हूँ। और आँचल के माता-पिता भी मुझसे उतना प्यार करते हैं जितना मैंने उन्हें करने का कोई कारण नहीं दिया। काश... मेरे पेट में होने वाला असहनीय दर्द और भी बढ़ जाता है।
‘दक्ष, तुम ठीक हो?’ चाचा ने पूछा। ‘तुम्हें पसीना आ रहा है।’
‘मैं ठीक हूँ...’ मेरी आवाज़ एक कराह से टूट जाती है। मेरे पेट के निचले हिस्से में तेज़ दर्द उठता है। ‘मैंने ज़रूर कुछ... खराब खा लिया होगा।’
‘आंटी के पास होम्योपैथिक दवा है—’
उसके बोलने से पहले ही मेरे घुटने लड़खड़ा गए। दर्द असहनीय था।
मेरे शब्द दर्द भरी फुसफुसाहट में फूट पड़ते हैं।
मुझे लगता है मुझे डॉक्टर से मिलने की जरूरत है।

OceanofPDF.com

11.

Aanchal Madan

'तुम्हें उसके साथ जाना चाहिए था,' मां ने पापा को डांटा, जो ड्राइवर के बगल में बैठे थे और उन्हें तेज गाड़ी चलाने और लेन के बीच से निकलने का आदेश दे रहे थे।
‘मुझे कैसे पता चलेगा कि उसे ऑपरेशन की जरूरत होगी?’ बाबा ने पलटकर जवाब दिया।
‘तुम्हें तो कुछ पता ही नहीं। वह इतनी तकलीफ में था और तुमने सोचा कि तुम्हें जाना नहीं चाहिए?’
पापा ने सिर हिलाया। 'मुझे लगा कि यह फूड पॉइज़निंग हो सकती है।'

‘और सिर्फ उसे ही मिला? किसी और को नहीं। तुम कुछ भी कहो। बेचारा दक्ष,’ मां कहती है। ‘यहां उसका कोई नहीं है।’
यह बात कुछ ज़्यादा ही हास्यास्पद है, क्योंकि न केवल हम, बल्कि संगीत समारोह में उसके साथ नाचने-गाने और शराब पीने वाले हर व्यक्ति को उसके बाद अस्पताल जाना पड़ा है। ऐसा लगता है मानो वह हवा में फेरोमोन्स फैला रहा हो।
मां की निगाहें मुझ पर टिक जाती हैं। ‘गौरव ने दक्ष के बारे में क्या कहा? क्या वह ठीक है?’
मैंने जवाब दिया, 'उन्होंने कहा कि वे एक घंटे में उनका ऑपरेशन करेंगे।'
देश ने सहमति में सिर हिलाया।
कार में कोई एक शब्द भी नहीं बोलता, जो राहत की बात है। गौरव के चौंकाने वाले खुलासे से मेरे माता-पिता को बहुत गुस्सा और आलोचना करनी चाहिए थी, लेकिन उन्होंने आश्चर्यजनक रूप से संयम बरता है। माँ ने मुझसे और पापा से बात करने से इनकार कर दिया, और मुझसे बात करने के बजाय, वह दक्ष से बात करना चाहती थीं।
लेकिन दक्ष ने बीच पर लोटपोट होकर सबको चौंका दिया। अचानक, शादी में आए लोग, जो इतने नशे में थे कि उन्हें अपने नाम तक याद नहीं थे, लॉबी में उतरे, एम्बुलेंस बुलाई और फिर टैक्सी लेकर अस्पताल के लिए निकल पड़े। इस समय पर की गई इस हरकत के लिए मैं उसका आभारी तो हूँ, लेकिन यह देखकर हैरान भी हूँ कि कुछ ही घंटे पहले मिले इन अजनबियों को उस लड़के से इतना लगाव कैसे हो गया। ऐसा पहली बार नहीं हुआ है। मैंने गौरव के कार्यक्रमों में कई बार देखा है—चाहे वो चतुर बाज़ारी हों या महत्वाकांक्षी ब्रांड अधिकारी—कि वे दक्ष के प्रति नरम पड़ जाते हैं और उसके साथ ऐसा व्यवहार करते हैं जैसे वो उन्हीं में से एक हो। पिछले साल, मैंने गौरव से कहा था कि फीनिक्स राइजिंग गेमिंग के राजस्व को दक्ष और उसके बीच बराबर बाँटना उसकी मूर्खता है, जबकि निर्विवाद रूप से स्टार गेमर तो वही है। गौरव ने मुझे ऐसे देखा जैसे मैं कोई बुढ़िया, बुरी चुड़ैल हूँ जो उसके कान भरने की कोशिश कर रही है।
'अगर वह वहां नहीं होता तो मैं कहां होता, यह तुम नहीं जानते,' गौरव ने मुझसे ठंडे लहजे में कहा था।
‘तुम कोई और रास्ता ढूंढ लेते।’
मैं तो रास्ता भटक जाता। तुम्हें कुछ नहीं पता।
अस्पताल—यहां तक कि आपातकालीन विभाग भी—शांत और विचित्र रूप से आकर्षक है। पास की कॉफी शॉप से कॉफी और ताज़ी बेक्ड मिठाइयों की खुशबू हवा में घुल रही है।
हम लिफ्ट से तीसरी मंजिल पर जाते हैं। आदित्य अपने कमरे के बाहर अपने कुछ दोस्तों के साथ इंतज़ार कर रहा है। उनमें से कुछ अभी भी पार्टी में पहने हुए सूट में हैं। वे सभी चिंतित, नशे में और हैंगओवर से ग्रस्त लग रहे हैं।
जब मैं दरवाजे पर रुका तो माँ ने पूछा, 'क्या तुम अंदर भी नहीं आओगे?'

पापा मेरा हाथ पकड़कर मुझे अपने पीछे कमरे में खींच ले जाते हैं। मुझे लगता है, उनके मन में यही है कि उन्होंने मेरी शादी दक्ष से इसलिए करवा दी है क्योंकि उसने मुझे गर्भवती किया है। उन्हें इसका सबक बहुत मुश्किल से मिलेगा। सिर्फ इसलिए कि विक्की ने मुझे नग्न देखा है, इसका मतलब यह नहीं कि वह मेरा मालिक है, और सिर्फ इसलिए कि दक्ष ने मुझे गर्भवती किया है, इसका मतलब यह नहीं कि मैं उसका एहसानमंद हूँ।
अपनी इस हालत के बावजूद, दक्ष को दर्द नहीं हो रहा है। उसका कुर्ता उतार दिया गया है और अब उसने एक पतला सा अस्पताल का गाउन पहना हुआ है, जो मुश्किल से डोरियों से बंधा हुआ है। जैसे ही हम कमरे में दाखिल हुए, दक्ष ने दर्द भरी मुस्कान के साथ हमारा अभिवादन किया। जैसे ही वह थोड़ा झुकता है, मेरी नज़र उसकी तनी हुई बाइसेप्स पर पड़ती है, जो उसके बारे में एक अजीब बात है। मैं खुद से अजीब तरह से सोचने लगता हूँ कि क्या इस समय उसने सिर्फ यही गाउन पहना हुआ है।
‘सर, इतने सारे लोगों को आने की अनुमति नहीं है,’ नर्स ने अपने गाढ़े मलयाली लहजे और स्कूली शिक्षिका जैसे व्यवहार में शिकायत की। ‘शादी के सभी लोग यहाँ नहीं आ सकते।’
‘मैं भी यही नहीं चाहता,’ दक्ष कहता है और फिर दर्द से कराहते हुए झुक जाता है। ‘सॉरी वनिता, तुम्हारी रात खराब करने के लिए।’
वनिता ने उसे नज़रअंदाज़ करते हुए हाथ हिलाया और उसकी एक तस्वीर खींच ली। 'शादी में बिना तोहफ़ा लाए आने पर यही होता है।'
‘नर्स,’ दक्ष कहता है। ‘मैं चाहता हूँ कि मेरे अपेंडिक्स को फॉर्मेल्डिहाइड में डुबोकर, उपहार के रूप में लपेटकर इस लड़की को दे दिया जाए।’
वनिता घृणा से नाक सिकोड़ती है। दक्ष पेट पकड़कर बिस्तर पर पीछे झुक जाता है। उसने मुझसे नज़रें मिलाने से बचने का पूरा ध्यान रखा है।
तभी गौरव का फोन बजता है और उसकी तीखी आवाज़ से पूरा कमरा गूंज उठता है। मैं देखती हूँ कि रब्बानी का वीडियो कॉल है। अब वो काफी बड़ी हो गई है, नौ या दस साल की। दक्ष अपने इंस्टाग्राम प्रोफाइल पर जो छोटे-छोटे पोस्ट शेयर करता है, उनसे मैंने देखा है कि वो बहुत होशियार है और अक्सर अपने तीखे कमेंट्स से अपने भाई को चुप करा देती है।
जब वह जवाब देता है तो वह चीखती है, 'दादा! देखो कौन समय पर शौचालय नहीं जाता!'
वह प्यारी सी हंसी हंसने लगती है।
वह अकेली नहीं है। मुझे स्पीकर पर दो लड़कों की आवाज़ भी सुनाई दे रही है। उनकी हंसी कमरे में गूंज रही है। नर्स समेत सभी लोग अब खिलखिला रहे हैं।
एक लड़के ने कहा, 'ये सब डाइट कोक की वजह से है!'
‘और भुजिया!’ दूसरा लड़का कहता है।
'ठीक है दोस्तों, बस करो!' एक महिला कहती है जिसकी आवाज मैं तुरंत पहचान लेता हूँ।

किड्स रेजिंग किड्स की अमृता।
वो देखने में तो एकदम परफेक्ट लगती हैं, लेकिन दो बच्चों, शिक्षा के क्षेत्र में करियर और पॉडकास्ट को बखूबी संभालते हुए हम सबको शर्मिंदा कर रही हैं। उनकी आवाज़ थोड़ी खुरदरी और चुलबुली है, जो रेडियो के लिए एकदम सही है, ऐसी आवाज़ जिससे लड़के फोन पर ही दीवाने हो जाते हैं। पहली बार जब मैंने उन्हें सुना, तब वो मुझे पसंद आईं, और फिर मुझे उनसे बेहद नफरत हो गई। दक्ष के साथ उनकी समझ और केमिस्ट्री लाजवाब थी। उनके पॉडकास्ट का आधा हिस्सा तो बस यही होता है कि उनमें से कोई एक कहता है, 'मुझे भी ऐसा ही लगता है!' या 'मुझे लगा था कि सिर्फ मैं ही ऐसा सोचती हूँ!' उनकी बातचीत अक्सर उन चीजों के बारे में होती है जिनके बारे में मैं सोचती भी नहीं या जिनकी मुझे परवाह नहीं होती—बच्चे, परिवार, घर के काम, शिक्षा। उनकी बातचीत स्वाभाविक और बेबाक होती है, और ऐसा लगता है जैसे ज़िंदगी ने उन्हें एक साथ ला दिया हो। मानो ये किस्मत हो! मैं सोचती हूँ कि अगर हम तीनों कहीं बाहर जाएँ, तो मैं उन्हें बिना बताए ही चली जाऊँ और उन्हें पता भी न चले और वो बातें करते रहें। उनके सोशल मीडिया प्रोफाइल पर लोग उनसे पूछते हैं कि क्या वे कपल हैं। उन्होंने कभी इसका जवाब नहीं दिया।
‘क्या तुम चाहते हो कि हम आएं, दक्ष?’ वह पूछती है। ‘फ्लाइट महंगी हैं, लेकिन मैं सोच रही हूं कि बच्चों को कार्गो से भेज दूंगी और खुद बिजनेस क्लास का टिकट ले लूंगी।’
‘मैं सौ जन्मों में भी नहीं आऊंगा,’ एक बुजुर्ग आवाज मजाक में कहती है, जो शायद दक्ष के पिता की है। ‘मुझे एक जन्म के लिए दुबई से काफी हो गया है।’
अंकल एक ऐसी रिकवरी यात्रा पर हैं जिसमें उन्होंने उम्मीद से कहीं ज़्यादा सुधार किया है। पुराने भारी-भरकम कृत्रिम अंगों से लेकर अब वे रोबोट जैसे दिखने वाले ब्लेड कृत्रिम अंग का इस्तेमाल कर रहे हैं और एक रनिंग ग्रुप का नेतृत्व करते हैं जो सुबह 4 बजे दौड़ के लिए उठते हैं। कुछ हफ़्ते पहले उन्होंने अपने रनिंग ग्रुप के अन्य सदस्यों के साथ बिना शर्ट के अपनी एक तस्वीर पोस्ट की थी, जिसमें वे अपनी उम्र से कहीं ज़्यादा फिट दिख रहे थे। लिंक्डइन पर उनकी दौड़ की तस्वीरों के बीच-बीच में उनके द्वारा किए जाने वाले कंसल्टेंसी प्रोजेक्ट्स की तस्वीरें भी हैं। कभी-कभी मुझे ऐसा लगता है जैसे मैंने यह सब सिर्फ़ कल्पना ही की थी: मुंबई, उनका दुबला-पतला शरीर और मृत्यु और अवसाद को गले लगाने की उनकी इच्छा।
‘मैं दो दिन में वापस आ जाऊंगा,’ दक्ष ने कहा।
‘क्या दर्द हो रहा है, दादा?’ रब्बानी ने पूछा।
‘मजाक कर रहे हो? मैं और दर्द? मैं तो दोपहर के भोजन में दर्द खाता हूँ।’
‘बेशक, तुम जानती हो,’ अमृता हंसते हुए कहती है। ‘सुनो, मैं सुबह आ रही हूँ। तुम्हारे बाबा उन्हें दिन भर के लिए बाहर ले जा रहे हैं।’
दक्ष ने सिर हिलाया। 'तुम उन्हें मेरे पिता के पास बिल्कुल नहीं छोड़ सकतीं। मुझे बच्चों के मामले में उन पर भरोसा नहीं है।'
‘ओये!’ उसके पिता कहते हैं। ‘मैंने तुम्हें पाला है!’

मेरे पिताजी हंसते हैं। 'अरे जी! आजकल के बच्चे ऐसे ही होते हैं!' वे बिस्तर की ओर चलते हैं और फिर दक्ष के पिता को हाथ हिलाकर अभिवादन करते हैं।
'अरे! 'मदन जी, बहुत दिन हो गए।'
अमृता ने बात काटते हुए कहा, 'क्या हम यह बातचीत बाद में कर सकते हैं? दक्ष, मैं सुबह आ जाऊंगी, ठीक है?'
'नहीं,' दक्ष ने जोर देकर कहा। 'मैं तुम्हारे पास आऊंगा।'
फिर दक्ष कुछ पल के लिए स्क्रीन की ओर देखता है। उसकी आँखों में कोमलता आ जाती है और चेहरे के सूक्ष्म भावों के ज़रिए बातचीत शुरू हो जाती है। यह मानो उनकी अपनी एक गुप्त भाषा हो। जैसे वे बिना शब्दों का प्रयोग किए एक-दूसरे के दिल की बात जानते हों।
'ठीक है,' अमृता कहती है। 'तो हम इंतजार करेंगे।'
फिर काफी देर तक सन्नाटा छा जाता है।
'मुझे तुम्हारी याद आती है, दक्ष।'
आपकी याद आ रही है।
अमृता के शब्द सुनकर मेरी दुनिया थम सी जाती है।
अचानक मुझे ऐसा लगा जैसे कमरे से हवा निकल गई हो, और मैं हांफने लगा। साधु की निष्ठा और मरणासन्न व्यक्ति की गंभीरता से कहे गए ये शब्द प्रेम से परिपूर्ण थे। मेरा दिल टूट गया।
ये शब्द मुझे छोटा, तुच्छ और दक्ष एवं अमृता की कहानी में एक धुंधली पृष्ठभूमि मात्र महसूस कराते हैं, मानो मैं एक ऐसा अंश हूँ जिसे भुला दिया जाना चाहिए। दक्ष की जीवन कहानी में मेरा कोई स्थान नहीं है, मैं तो बस अतीत की एक भूल हूँ।
सिर्फ मुझे ही नहीं, दूसरों को भी ऐसा ही महसूस होता है।
वनिता दया भरी निगाहों से मेरी ओर देखती है। माँ-पापा एक-दूसरे को दुख भरी नज़रों से देखते हैं। गौरव भी मेरी ओर देखता है, मानो मुझे यह कहना चाहता हो कि दक्ष और मैं एक खोया हुआ अवसर थे और मुझे भविष्य में इसका पछतावा होगा।
और जब मैं दक्ष की ओर मुड़कर देखती हूँ, उसकी आँखें स्क्रीन पर कोमल निगाहों से टिकी होती हैं, उसके होठों की हल्की सी मुस्कान, तो मेरे दिल में एक तीखा दर्द उठता है। एक सुई की चुभन जैसा दर्द जो गहराई तक उतरता है और मुझे एक असहनीय पीड़ा से भर देता है। मेरी पीड़ा के बीच एक चीखती हुई आवाज़ सुनाई देती है।
'ईडब्ल्यू!' बच्चे एक साथ कहते हैं। उन्हें भी दक्ष और अमृता के बीच चल रही बातों का आभास हो गया है।
दक्ष के चारों ओर पूरा तारामंडल घिरा हुआ है, और मैं अकेला हूँ, एक मरता हुआ ग्रह।

OceanofPDF.com

12.

प्रतीक्षा कक्ष में तब तक कोई नहीं हिलता जब तक डॉक्टर - जिनका बेटा गौरव का प्रशंसक निकला - ऑपरेशन थिएटर से बाहर नहीं आ जाते, अपने सर्जिकल दस्ताने उतारकर हमें यह नहीं बताते कि ऑपरेशन सफल रहा। वे आगे बताते हैं कि बेहोश किए जाने से पहले दक्ष के आखिरी शब्द थे कि उनकी अपेंडिक्स को उपहार में लपेटकर वनिता को दे दिया जाए, जिसे नर्स को विनम्रतापूर्वक मना करना पड़ा क्योंकि अस्पताल से बाहर चिकित्सा अपशिष्ट ले जाने की अनुमति नहीं है।
गौरव कहता है, 'उसका कोई भी हिस्सा बेकार नहीं है, आप चाहें तो उसे रख सकते हैं या फेंक सकते हैं। लेकिन मैं आपको बता दूं, मेरे दोस्त का हर एक हिस्सा अनमोल है।'
इसके बाद गौरव डॉक्टर को अपने बेटे के लिए एक हस्ताक्षरित निंटेंडो स्विच देता है, जिसे उसने होटल से किसी को भेजवाया था।
डॉक्टर ने हमें बताया कि दक्ष कुछ समय के लिए बेहोश रहेगा और उसे एक दिन तक निगरानी में रखना होगा।
यह तय हुआ कि गौरव को छोड़कर बाकी सब होटल वापस चले जाएंगे। गौरव दक्ष के साथ कमरे में रहेगा। पापा ने कुछ घंटों में दक्ष के साथ कमरा बदलने का प्रस्ताव रखा। गौरव ने बड़े नाटकीय अंदाज में कहा, 'मैं कहीं नहीं जा रहा।'
होटल वापस आकर, हल्दी की रस्म से पहले थोड़ी नींद लेने के लिए सभी अपने-अपने कमरों में चले जाते हैं, जिसे वनिता ने दो घंटे के लिए टाल दिया था।
मैं बिस्तर पर लेट जाती हूँ, लेकिन नींद नहीं आती। मैं करवटें बदलती रहती हूँ, बस दक्ष के बारे में सोचती रहती हूँ। माँ-पापा ने रास्ते में मुझसे बड़ी सहजता से बात की। मानो उनकी बेटी ने उनसे पोती होने का मौका छीन ही न लिया हो।
मैंने उनसे पूछा था, 'दक्ष ने तुम्हें क्या बताया?'
'मैं तुम्हारे सपनों के बीच नहीं आना चाहता,' पापा ने बिना किसी गुस्से के अपनी आवाज में जवाब दिया था।
यह अजीब है कि दक्ष उनसे वह करने को कह रहा है जो वह खुद नहीं कर सका। लेकिन मैं इस अटल सत्य से बच नहीं सकती: उसने जो कुछ भी कहा, वह मेरी रक्षा के लिए किया। मैं अपने इयरफ़ोन लगाती हूँ और उसके बारे में अपने विचारों को दबाने के लिए कुछ संगीत चलाती हूँ। इसका उल्टा असर होता है—हर गाना ऐसा लगता है जैसे हमारे लिए ही लिखा गया हो। चाहे वह प्रेम गीत हो, दिल टूटने का गीत हो, आइटम गीत हो— मैं बस यही सोचती हूँ कि यह हमारे बारे में है। कुछ भी काम नहीं आता। ऐसा लगता है जैसे अनंत काल बीत गया हो, मैं उठती हूँ और अपना फ़ोन उठाती हूँ। मैं रजत का नंबर डायल करती हूँ और उसे सारी घटनाएँ सुनाती हूँ।
‘आपको वही करना चाहिए जो आप करना चाहते हैं,’ वह कहते हैं।
'यह सबसे सामान्य उत्तर है जो आप दे सकते हैं, रजत।'
और ऐसा इसलिए है क्योंकि मैं तुम्हारे जीवन को बदलने वाले फैसलों में दखल देना

बंद कर चुका हूं, भाई।
मैंने तर्क दिया, 'तुम्हें पहले कभी कोई समस्या नहीं हुई थी।'
जब मैंने वो प्रेगनेंसी टेस्ट किट हाथ में पकड़ी और नतीजा मेरे सामने था, तब रजत ही एकमात्र ऐसा व्यक्ति था जिससे मैं मदद मांग सकती थी। मैं तेईस साल की थी और गर्भवती थी। मुझे इसे खत्म करना ही था।
मैं अपनी आजादी नहीं छोड़ सकता था।
मैं अभी-अभी विक्की के चंगुल से आज़ाद हुई थी। मेरी आज़ादी इतनी नई थी कि मैं आधी रात को डर के मारे जाग जाती थी, यह सोचकर कि विक्की किसी न किसी तरह मेरी ज़िंदगी में वापस आ गया है। मुझे पता था कि मेरे माता-पिता गर्भपात कराने के मेरे कारणों को नहीं समझेंगे। नौकरी मिलने के बाद, मुझे पता था कि उनके जीवन में एक खालीपन सा आ गया है। वे दादा-दादी बनने का मौका पाकर बहुत खुश होते। दक्ष की तरह, वे भी मुझे बच्चे के पालन-पोषण के बोझ से मुक्त करने के लिए हर संभव प्रयास करते।
लेकिन मैं खुद ऐसा नहीं कर सकता था।
मैं अपने लिए समय, एक सफल करियर, रोमांस और बच्चे से पहले एक खुशहाल वैवाहिक जीवन जैसी चीज़ों को क्यों छीनूँ? वनिता—परिवार के बारे में अपने खुद के नियमों और विचारों के साथ—मुझे समझाने की कोशिश करती। और चूंकि मैं उससे बेइंतहा प्यार करती हूँ, इसलिए मैं उसकी बात सुन लेती।
रजत बिना कुछ पूछे साथ आ गया। उसने तुरंत ज़िम्मेदारी संभाली और भ्रूण के ऊतक के निकलने और रक्तस्राव से उबरने के लिए एक होटल का कमरा बुक किया, कमरे को नाश्ते से भर दिया और उन शो की सूची बनाई जिन्हें हम देख सकते थे। वह दिन हमारी दोस्ती की सालगिरह का दिन था। हम दोनों का मानना है कि उसी दिन हमने एक-दूसरे को जीवन भर के दोस्त के रूप में देखा। यह दोस्ती आँसुओं, दुख और नई शुरुआत के बीच बनी थी।
'मेरे अपने जीवन को बदलने वाले फैसले ही काफी हैं, भाई,' वह शिकायत करता है। 'नंदिनी मेरे सिर पर नाच रही है और मुझे अगला कदम उठाने के लिए कह रही है, और मेरे लिए इतना ही काफी है।'
'ठीक है।' मैंने गहरी सांस ली। 'तुम उससे शादी क्यों नहीं कर रहे हो?'
उसे लगता है कि मेरे मन में अब भी तुम्हारे लिए भावनाएं हैं।
'जो आप नहीं करते।'
'मैं तो अपने गुप्तांग के बालों से छत से लटकना ज़्यादा पसंद करूँगी। अगर मैंने नंदिनी के बारे में अपने माता-पिता को बताया तो वे बहुत हंगामा करेंगे। वे उसके माता-पिता से डर जाएँगे। खैर...'
'तुम मुझे यह बताने के लिए बेताब हो कि मुझे क्या करना चाहिए।'
'भाई, उल्टी दिशा में भाग जाओ,' वह अपनी आवाज़ में दृढ़ता से कहता है। 'यह बस नई जगह का रोमांच है। उसके साथ तुम्हारा पूरा रिश्ता इसी रोमांच से भरा रहा है—अंडमान, मुंबई और अब यह। तुम्हें लगता है कि तुम नई जगह पर एक नए इंसान हो

और तुम ये सारे जोखिम उठाना चाहते हो। असल ज़िंदगी छुट्टी नहीं होती। और तुम यह भी जानते हो कि वह तुम्हारे लिए बहुत अच्छा है।'
'यह जानकर अच्छा लगा कि मेरा दोस्त उसके साथ है।'
'वह उस तरह से अच्छा है जिस तरह से पुरुषों को अच्छा होना चाहिए—परिवार, प्यार, रोमांस और ये सब। तुम वैसे नहीं हो। तुम उस तरह से अच्छे हो जिस तरह से तुम अपनी खुशी की रक्षा करते हो।'
मैंने गहरी सांस ली। 'तो, मुझे अपने दिल की इस छोटी सी आवाज़ को नज़रअंदाज़ कर देना चाहिए।'
इसे जड़ से खत्म कर दो। इसकी हत्या कर दो।
मैं अपनी आँखें बंद करके कल्पना करती हूँ कि अमेरिका में मेरा जीवन कैसा होगा। मेरी दूसरी अंतरराष्ट्रीय उड़ान, एक नए शहर में मेरा नया घर, देखने, आनंद लेने, चिंता करने और डरने के लिए कितनी सारी नई चीजें। भावनाओं के इस सैलाब में, मेरे दिल की यह हल्की सी धड़कन पल भर में शांत हो जाएगी।
'ठीक है,' मैंने कहा, 'और तुम्हें अपने माता-पिता को बता देना चाहिए। वे तुमसे इतना प्यार करते हैं कि मना कर ही नहीं सकते।'
हम कॉल काट देते हैं। अब वह झनझनाहट मात्र नहीं रह गई है। यह एक ढोल की थाप की तरह है जो हर गुजरते सेकंड के साथ तेज होती जा रही है।

OceanofPDF.com

13.

Daksh Dey

गौरव को शादी के लिए भेजने में मुझे लगभग एक घंटा लग जाता है। नींद से वंचित और थकी हुई नर्सें शुक्रगुजार हैं कि शादी में आए आखिरी व्यक्ति के जाने से उनकी परेशानी दूर हो गई है और अब उन्हें अपना काम करने का तरीका नहीं बताया जा रहा है। हेड नर्स मेरे आईपैड पर वाई-फाई कनेक्ट करती है और मैं गौरव द्वारा शादी के लिए शेयर किए गए ज़ूम लिंक पर क्लिक करती हूं।
'किसकी शादी है?' नर्स आईपैड में देखते हुए पूछती है। 'लहंगा पहनी लंबी लड़की की, है ना? वैसे वो बहुत खूबसूरत है।'
मैं मंजूरी।
नर्स हंसती है और फिर मेरी कैनुला में एक नई IV ड्रिप लगा देती है। 'अगर वे आ रहे हैं, तो उनसे कह देना कि वे कुछ मिठाई लेकर यहाँ आएं, ठीक है?'
ज़ूम स्क्रीन पर आखिरकार कुछ हलचल दिखाई देती है। पहले कुछ मेहमान मंडप तक पहुँचते हैं और सजावट को निहारने लगते हैं, सिर हिलाते हुए उसकी सुंदरता की

सराहना करते हैं। तभी आदित्य के दोस्त नशे में धुत होकर लड़खड़ाते हुए अंदर आते हैं, उनकी नज़रें खाने की तलाश में भटक रही होती हैं। वे तस्वीरें खींचते हैं, शांति का संकेत देते हैं, जिससे वहाँ मौजूद बुजुर्ग लोग अचंभित रह जाते हैं।
मुझे वहां रहना याद आता है।
कुछ मिनट बाद पंडित जी आते हैं और वनिता और आदित्य की शादी के लिए मिठाइयों और सामग्री का इंतजाम करने लगते हैं। आदित्य एक अच्छा लड़का है, मैंने यह महसूस किया। कुछ लोग ऐसे होते हैं जिन्हें देखकर लगता है, हाँ, ये दोनों एक-दूसरे के लिए बिल्कुल सही हैं। वनिता और आदित्य को देखकर मुझे यही एहसास होता है।
आँचल के साथ थोड़े समय के लिए जो मेरा रिश्ता रहा, उससे बिलकुल उलट। जिस पल हम मेज़ानाइन फ़्लोर पर बने वॉशरूम से बाहर निकले, उसी पल मुझे पता चल गया कि मेरा दिल, मेरी आत्मा, भगवान की दी हुई हर चीज़ अब मेरी नहीं रही। एयरपोर्ट जाते समय, जब उसने मुझे एक बार ठुकरा दिया, तो मैंने उसे अपने दिल की गहराई समझाने की कोशिश की। मैंने अपने दिल की हर धड़कन, हर रुकी हुई साँस, सालों से महसूस की हर सिसकी उसे सुनाई। बाद में उसने बताया कि मेरे इस इकरार से वह डर गई थी क्योंकि मैं 'बहुत ज़्यादा सच्चा' लग रहा था। भला प्यार में कोई कैसे बेईमान हो सकता है? प्यार ही सबसे सच्चा एहसास है।
जब वह टैक्सी से बाहर निकली, तो वह हमें एक मौका देने के लिए तैयार थी। एयरपोर्ट पर सुरक्षा जांच के लिए जाते ही मुझे उसकी याद सताने लगी। मेरा मन करता था कि मैं गुस्से से पागल हो जाऊं, एयरपोर्ट को तहस-नहस कर दूं, उसे मुझसे दूर न जाने दूं, उसके साथ एक ही हवा में सांस लूं। जब उसकी फ्लाइट ने उड़ान भरी, तो मेरे शरीर में असहनीय दर्द की लहर दौड़ गई। हमने वादा किया था कि हम फिर मिलेंगे, लेकिन फिर भी मेरा दिल टूट गया। दिल्ली दो घंटे की उड़ान की दूरी नहीं लग रही थी। बल्कि ऐसा लग रहा था जैसे सदियां और अलग-अलग दुनियाएं हमें अलग कर रही हों। उन तैंतालीस दिनों में जब हम साथ थे, मैं एक अजीब सी खुशी में डूबा हुआ था। जब मैं उससे बात करता था, तो ऐसा लगता था जैसे मैं न सिर्फ अपने जीवन के प्यार से बात कर रहा हूं, बल्कि अपने थेरेपिस्ट, अपने सबसे अच्छे दोस्त, एक प्यारे से पिल्ले, एक बूढ़े, समझदार इंसान, एक खिलखिलाते बच्चे, सभी से एक साथ बात कर रहा हूं। जब हम प्यार करते थे, या जैसा कि वह कहती थी, जब हम शारीरिक संबंध बनाते थे, तो दुनिया बिखरती और टुकड़े-टुकड़े होती हुई लगती थी, जैसे हम वो इकाई हों जिससे नई दुनिया बनती है। उसका नग्न शरीर दुनिया में मेरी सबसे प्यारी चीज थी। उसने मुझसे कहा कि यह मेरा है, मैं इसे ले जा सकती हूँ। दिन में कई बार मैं रुककर अपने दिल में उठ रही इस मीठी सी भावना को महसूस करता और सोचता कि आखिर ये यहाँ क्या कर रही है, जो मुझे दिन भर इतना सुकून और खुशी का एहसास करा रही है। फिर अचानक मुझे समझ आता: क्योंकि मैं आँचल के साथ था। लोग कहते हैं कि हनीमून पीरियड बहुत ही रोमांचक होता है, लेकिन मैं जानता था कि ये उससे कहीं बढ़कर था। मैं नएपन के रोमांच से उतना

आकर्षित नहीं था, जितना कि जीवन भर साथ बिताने की संभावना से। मैंने साथ में हज़ारों भविष्य जी लिए होंगे। मैं प्रेम कहानियों का डॉक्टर स्ट्रेंज था, हमारे लिए हर मुमकिन भविष्य की तलाश में, समय और इच्छाशक्ति को मोड़ता हुआ। हम साथ में अरबों रास्ते तय कर सकते थे; कुछ रास्ते हमें पूरी तरह से तोड़ देते, लेकिन फिर भी, वे रास्ते तो साथ में तय किए गए होते।

और फिर, सब कुछ धराशायी हो गया।

आँचल मुझे एक रूढ़िवादी और गर्भपात विरोधी व्यक्ति के रूप में पेश करना पसंद करती है, जो महिलाओं को उनकी इच्छा के विरुद्ध बच्चे पैदा करने के लिए मजबूर करता है। शायद इसी तरह उसे रात को चैन की नींद आती है। लेकिन वह यह नहीं समझ सकती कि मुझसे ज़्यादा कोई भी, यहाँ तक कि वह खुद भी, बच्चे को पालने-पोसने का अनुभव नहीं कर सकता। मैंने बीस साल की उम्र में दिन-रात यही अनुभव किया था। मैंने उससे बस नौ महीने मांगे थे। नौ महीने बच्चे को अपनी कोख में रखने के लिए, उसे जन्म देने के लिए, और फिर उसे मुझे सौंप देने के लिए। अगर वह बच्चे को जन्म देती, उस प्यारे से बच्चे को कपड़े में लपेटकर मेरे हाथों में देती और अस्पताल के गाउन में ही अपनी मर्ज़ी से ज़िंदगी जीने के लिए एयरपोर्ट चली जाती, तो भी मुझे ज़रा भी आपत्ति नहीं होती।

लेकिन वह उन नौ महीनों का त्याग नहीं कर सकती थी।

वह अक्सर यह तर्क देती है कि वह रिश्ते के लिए तैयार नहीं थी, लेकिन मैं जानता हूँ कि यह सब बकवास है। उन तैंतालीस दिनों में मैंने उसके लिए जो प्यार महसूस किया, वह मैंने खुद नहीं पैदा किया था। वह मुझसे प्यार करती थी। वह रातों को जागती, मुझे चिट्ठियाँ लिखती, वीडियो के ज़रिए अपने प्यार का इज़हार करती। मैं उसके प्यार को उसकी उंगलियों के स्पर्श में, उसकी आँखों की चमक में, जब हम मिलते थे तो उसके चेहरे पर आने वाली चमक में, उसकी आवाज़ की कंपकंपी में, उसकी चाल की फुर्ती में महसूस कर सकता था। उसने हमारे चारों ओर लाखों मील ऊँची दीवारें खड़ी कर दी होंगी, लेकिन मैं जानता हूँ कि उन दीवारों के भीतर एक ऐसा दिल था जो मेरे लिए धड़कता था। मैं उसकी धड़कन को उसके करियर, महत्वाकांक्षा और भविष्य की मज़बूत दीवारों के पार भी सुन सकता था।

तो क्या वह सब झूठ था? बिलकुल नहीं।

उसने स्वार्थी निर्णय लिया।

क्योंकि वो ऐसी ही है—एक ऐसी लड़की जिसमें त्याग की भावना नहीं है और जो गोलम की तरह चीखते हुए अपनी खुशी को थामे रहती है, 'मेरी प्यारी!' क्या उसे नहीं पता था कि मैं बच्चों के बारे में क्या सोचती हूँ? रब्बानी के साथ मेरे अतीत के बारे में और कैसे उसकी देखभाल ने मुझे बचाया और मुझे जीवन का उद्देश्य दिया?

उसे छोड़ने के बाद, मुझे लगा कि मैं अपना रास्ता भटक जाऊंगा। और मैं भटक भी गया, लेकिन अगर मेरी एक दोस्त न बनी होती तो हालात और भी बदतर हो सकते थे। वो भी एक अप्रत्याशित दोस्त।

गौरव और उसके माता-पिता सोचते हैं कि मैंने गौरव को गुमनामी से बचाया। लेकिन

ऐसा बिलकुल नहीं है, असल में गौरव ने मुझे बचाया है। उसे वीडियो गेम खेलते देखना हमेशा से मेरी सबसे बड़ी खुशी रही है। मैंने उसे बेजोड़ आक्रामकता, एकाग्रता और कुशलता के साथ खेलते देखा है। उसकी स्थानिक समझ और फुर्ती वाकई अद्भुत हैं। एक बार आँचल ने उससे पूछा था कि उसे अपनी कमाई मुझसे क्यों बाँटनी है? आखिर प्रतिभा तो उसी में है। वह अपने दम पर बड़ा नाम कमा सकता है। और वह सही थी। गौरव को मेरी ज़रूरत नहीं है। यह महज़ संयोग था कि मैं सही समय पर सही जगह पर मौजूद थी।

जब मैं अपने ख्यालों से बाहर आया, तो स्क्रीन पर देखा कि मंडप में भीड़ जमा हो गई है और पवित्र अग्नि की तेज रोशनी से जगमगा रहा है। भीड़ में मेरी नज़र उस पर पड़ी। उसने एक चमकीला गुलाबी लहंगा पहना है जो उसकी कमर से थोड़ा नीचे तक मोहक ढंग से लटक रहा है, उसके बाल कंधों पर लहराते हुए हैं और माथे पर एक झिलमिलाती टिकली लटक रही है। जब भी वह आदित्य और वनिता पर गुलाब की पंखुड़ियाँ बरसाने के लिए आगे बढ़ती है, मेरी नज़र उसकी नंगी कमर पर टिक जाती है और मैं सोचता हूँ कि उसे फिर से छूना कैसा होगा। पता नहीं ये मेरे शरीर में मौजूद ड्रग्स का असर है या कुछ और, लेकिन उसके बारे में सोचते ही मेरा पूरा शरीर जीवंत हो उठता है। हर बार जब मैं उसे देखता हूँ, तो मैं अपने सबसे बुनियादी विकासवादी जीव विज्ञान के स्तर पर पहुँच जाता हूँ। किसी चीज़ को सुंदरता कहना, क्योंकि हर सुंदरता किसी बनावट पर आधारित नहीं होती— आँचल हर मायने में खूबसूरत है। कैमरा घूमते ही मुझे वनिता और आदित्य मंडप की ओर चलते हुए दिखाई देते हैं। मेरे दिल में एक तीखी टीस उठती है। कैमरा उन दोनों का पीछा करता है—चलते-चलते वे एक-दूसरे को चोरी-छिपे देखते रहते हैं। उन पर फूलों की पंखुड़ियाँ बरसाई जाती हैं, आदित्य के दोस्त पीछे से हूटिंग कर रहे होते हैं, और आँचल की तीखी सीटी उन सभी शोरों के बीच गूंजती है। आंटियाँ उसे प्रोत्साहित करती हैं। वह दो उंगलियाँ कान में डालकर और ज़ोर से सीटी बजाती है।

जब वे बैठते हैं, तो रस्म की अग्नि की रोशनी उनके चेहरों को रोशन कर देती है। उनकी खुशी इतनी परिपूर्ण, इतनी पवित्र, इतनी स्पष्ट है कि इस ठंडे अस्पताल के कमरे में भी मैं उसकी गर्माहट महसूस कर सकती हूँ। पंडित जी मंत्रोच्चार शुरू करते हैं। संस्कृत के श्लोक समझ से परे हैं, लेकिन मैं उनकी शक्ति को अपने आस-पास की हवा में घुलते हुए महसूस कर सकती हूँ। दो आत्माएँ हमेशा के लिए एक हो रही हैं, उनका जीवन अब एक हो गया है। यह किसी जादुई चीज़ की शुरुआत है। किसी व्यक्ति के जीवन में, क्या किसी के साथ अपना जीवन साझा करने के निर्णय से अधिक शक्तिशाली, अधिक साहसी कोई निर्णय हो सकता है? अगर दुनिया एक रंगमंच है, जैसा कि लोग कहते हैं, तो आप एक अभिनेता हैं, और जिससे आपका विवाह हुआ है वह आपका दर्शक, आपका उत्साहवर्धन करने वाला, आपका निर्देशक, आपका सह-कलाकार, आपके अस्तित्व का कारण है। हम दिखावा करना पसंद करते हैं कि करियर और व्यक्तिगत उपलब्धियाँ महत्वपूर्ण हैं, लेकिन हम भूल जाते हैं कि यह सब बनावटी है। क्या दाल-खिचड़ी की बीस मिनट की डिलीवरी से दुनिया बेहतर

जगह बन जाएगी? या फिर क्या यह बेहतर नहीं होगा कि हम सभी को कोई ऐसा व्यक्ति मिल जाए जो हमसे प्यार करे और हमें सचमुच अपना मान ले?
वनिता और आदित्य की खुशी मुझे मिली-जुली सी लगती है। जब मैं उनसे नज़र हटाती हूँ, तो मुझे फिर से आँचल दिखती है। और एक पल के लिए ऐसा लगता है जैसे वो सीधे मेरी तरफ देख रही हो। बेशक, ऐसा नहीं है। कैमरे ने बस उसे ही कैद किया है। लेकिन वो नज़र नहीं हटाती। उसकी निगाहें ठहर जाती हैं मानो वो लेंस, रहस्यमयी इंटरनेट तरंगों और टैबलेट के पिक्सल के बीच से होते हुए सीधे मेरी तरफ देख रही हो।
उन तैंतालीस दिनों में जो मैंने उसके साथ कई साल पहले बिताए थे, मैं उसके हर भाव को पहचानना सीख गया था, और यह भाव तो बिल्कुल स्पष्ट था।
यह प्रेम, लालसा या पछतावे में से एक है।
या फिर तीनों।

OceanofPDF.com

14.

Aanchal Madan

मैं खुद को कुछ भी महसूस न करने के लिए तैयार कर रहा था।
वनिता की शादी, वनिता का विवाह, यह उसकी नई शुरुआत है। मुझे बस उसके लिए खुश होना चाहिए और भावनाओं के उफान में बह नहीं जाना चाहिए। जब वह मंडप से उठती है, तो वनिता एक नई स्त्री जैसी लगती है। उसकी उंगलियां आदित्य की उंगलियों से गुंथी हुई हैं, वह शक्तिशाली दिखती है—ठीक उसके विपरीत जैसा मैंने सोचा था। विवाह समर्पण है। और फिर भी वह इससे और भी मजबूत दिखती है। मानो अब, इस पवित्र अग्नि में तपकर, उसे आदित्य का साहस, शक्ति और बुद्धिमत्ता भी प्राप्त हो गई हो।
मेरी निगाह कैमरे पर टिक जाती है, जो आज शादी में शामिल न हो पाने वाले सभी मेहमानों के लिए शादी का सीधा प्रसारण कर रहा है। दक्ष भी उनमें से एक है। भले ही लिंक पर 54 दर्शक दिख रहे हों, लेकिन ऐसा लगता है जैसे दूसरी तरफ सिर्फ वही है। मुझे लगभग उसकी आवाज़ सुनाई दे रही है, प्यार और दर्द से भरी हुई। 'यह हम हो सकते थे,' वह फुसफुसाता है। उसके शब्दों से मेरा दिल दुखता है, लेकिन मेरे मन में एक छोटी सी आवाज़ वापस फुसफुसाती है, 'यह अभी भी हम हो सकते हैं।'
पलक झपकते ही मेरा दिल मेरे दिमाग से जंग छेड़ देता है। मेरा दिल दक्ष की छवि को उभार लेता है, काले कुर्ते में, हमेशा की तरह सलीके से संवारे हुए बाल, चमकती हुई नुकीली ठुड्डी, नम आँखों और चेहरे पर हल्की सी मुस्कान। यह गर्माहट, कामुकता

और सुकून का मिला-जुला एहसास है। मेरा दिल मुझे याद दिलाता है कि मैं उस पल कितनी जीवंत थी, खुशी कितनी गहरी थी, सुकून कितना कोमल था, और हमारे स्पर्श कितने भावुक थे।

दक्ष को लगता है कि मैंने उससे सारे रिश्ते एक सीरियल किलर की तरह बेरहमी से तोड़ दिए। वो मुझे इसी नज़र से देखता है। पहले मैंने गर्भपात करवाया, और फिर उससे ऐसे दूर चली गई जैसे कुछ हुआ ही न हो।

लेकिन उसने वो रातें नहीं देखीं जो मैंने उसके लिए रोते हुए बिताईं। उसे उस तीव्र तड़प का पता नहीं जो मैंने महीनों तक उसके लिए महसूस की। उसे उस असहनीय दर्द का कुछ भी पता नहीं जो मैंने सहा, घंटों तक फोन पर उसकी कॉल का इंतज़ार करते हुए घूरते रहना, दूसरे जोड़ों को देखकर मुझे होने वाली ईर्ष्या और हर बार जब वो गौरव से बात करता था तो मेरा दिल कैसे टूट जाता था, जबकि मैं बस इतना चाहती थी कि वो बस इतना कह दे, 'हाय आँचल'।

मुझे उसके प्यार की कमी खल रही थी।

ऐसा लगा जैसे उसने मुझे अपने नशे का आदी बना दिया हो और फिर मुझे उसके जाने के दर्द से जूझने के लिए अकेला छोड़ दिया हो। उसके इस तरह छोड़ जाने का गुस्सा शांत होने के बाद, मेरे अंदर सिर्फ़ दर्द ही दर्द रह गया। एक तीखा, चुभने वाला दर्द जो दूर नहीं हुआ और मेरे अस्तित्व का हिस्सा बन गया। बाकी सारी खुशियाँ उसके सामने फीकी पड़ गईं। कभी-कभी मुझे लगता है कि अगर दक्ष गौरव के साथ काम नहीं करता, तो उसे भूलना आसान होता। क्योंकि अब मैंने गौरव और दक्ष को सबसे अच्छे दोस्त और फिर भाई बनते देखा। मैं देख सकती थी कि दक्ष कितना प्यार कर सकता है, कितना प्यार मुझे उससे मिल सकता था लेकिन मैं उससे वंचित रह गई। अगर वह गौरव जैसे बेवकूफ इंसान को इतना प्यार कर सकता है, तो वह मुझे कितना प्यार करेगा? हर बार जब दक्ष रात भर जागकर गौरव को एक गेमिंग प्रतियोगिता से दूसरी प्रतियोगिता तक ले जाता, उसके लिए खाना बनाता ताकि गौरव सेशन के दौरान सुस्त न हो जाए, उसका बिस्तर लगाता, उसके कपड़े धोता, उसकी देखभाल करता—यह सब देखकर मुझे ईर्ष्या होती थी।

मैं देख सकती थी कि हम क्या बन सकते थे। वह एकदम सही होता।

अगर वो वापस आ जाता, तो क्या मैं उसे अपना लेती? तुरंत। कहते हैं कि प्यार के बारे में आपकी समझ आपके पहले प्रेम अनुभव से बनती है। मेरा पहला प्रेम अनुभव, जो मुझे पता है कि दक्ष के साथ था, विक्की के साथ नहीं, ने मुझे इंतज़ार करना सिखाया। समय को सारे घाव भरने और प्रेम कहानी शुरू होने का इंतज़ार करना सिखाया।

जैसे ही वनिता मंच से नीचे उतरकर मुझे गले लगाने आती है—एक विवाहित महिला के रूप में यह उसका पहला अनुभव है—उसे खुश देखकर मेरा दिल खुशी से भर जाता है।

'अब तुम भगवान की नजरों में गैर-गंदा, वैध यौन संबंध बना सकते हो,' मैं फुसफुसाती हूँ।

'यह अभी भी गंदा ही रहेगा,' वह हंसते हुए फुसफुसाती है।
बाकी रिश्तेदार उसके चारों ओर जमा हो जाते हैं और उसे आशीर्वाद और शुभकामनाएँ देते हैं। उसकी माँ—जो वैसे भी उससे अलग शहर में रहती है—फिर भी फूट-फूटकर रोने लगती है। सब जानते हैं कि वनिता किसी और के घर नहीं जा रही जहाँ वह शर्मीली बहू बनकर रहेगी, बल्कि वह उस घर पर अपना अधिकार जमाने और उसे अपना बनाने जा रही है।
मैंने देखा है कि आदित्य और वनिता जब अपने माता-पिता के पैर छूकर उनका आशीर्वाद लेते हैं, तो उनकी आँखों में भी आँसू आ जाते हैं। गौरव कोने में उदास बैठा रहता है, टूटे दिल वाले प्रेमी का नाटक करता है और उन्हें बड़ी हसरत से देखता हुआ उदास मुस्कान बिखेरता है। वह हास्यास्पद लगता है। तभी तेजल उसका हाथ थाम लेती है और गौरव अपना नाटक छोड़कर मुस्कुरा उठता है।
जब वे जयकारे लगाते हुए शादी के स्थल से होटल की लॉबी की ओर निकले, तो मुझे अचानक अपने अंदर एक खालीपन सा महसूस हुआ। माँ-पापा ने मुझे बताया कि वे कमरे में कपड़े बदलने, थोड़ा आराम करने और फिर रिसेप्शन डिनर के लिए नीचे आने वाले हैं। गौरव पहले ही तेजल से जोश से बातें करने लगा था। आदित्य और वनिता के दोस्त एक और ड्रिंक लेने के लिए जा रहे थे। उन्होंने मुझे भी साथ आने के लिए कहा, और मैंने थोड़ी देर में आने का वादा किया। मुझे पता था कि उनके साथ मुझे अकेलापन महसूस होगा। यह अजीब बात थी क्योंकि मैं कभी अकेले में भी अकेलापन महसूस नहीं करती थी।
इतने सालों बाद दक्ष को फिर से देखकर मेरा ज़ख्म फिर से हरा हो गया है। इस बार पट्टी लगाकर ठीक होने की उम्मीद नहीं की जा सकती। चाहे मैं कितना भी दूर भाग जाऊं, मेरे दिल में फिर से पनपी यह तड़प और भी बढ़ जाएगी। मैंने उसे एक बार अपने दिल से निकाल दिया था, लेकिन मुझे पता है कि मैं ऐसा दोबारा नहीं कर पाऊंगी। तब मेरे अंदर गुस्से का कुआँ था। मुझे लगा जैसे मेरे साथ अन्याय हुआ है, मुझे धोखा मिला है, लेकिन अब मेरे अंदर कुछ नहीं है। मेरे दिल में बस उसके लिए प्यार है।
उसके लिए मेरे मन में जो थोड़ी-बहुत नाराज़गी थी, वो उसे देखते ही, उसकी दयालु आँखों में चमकते ही और यह महसूस करते ही कि उसके दिल में अभी भी मेरे लिए थोड़ा प्यार है, मिट गई। मैं भावनाओं के सागर में डूब गई हूँ—उसके लिए मेरा प्यार और उसके लिए उसका प्यार। ये एक शक्तिशाली मिश्रण है, और मुझे नहीं पता कि मैं इसे संभाल पाऊँगी या नहीं। लेकिन एक बात पक्की है—उसे दोबारा देखकर सब कुछ बदल गया है।
दस मिनट बाद, मैं खुद को सऊदी जर्मन अस्पताल की ओर तेज़ी से जाती टैक्सी में पाती हूँ। अब मेरे पास खोने के लिए क्या बचा है जो मैंने पहले ही नहीं खोया है? मैं उसे बताना चाहती हूँ कि मैं हमें एक और मौका देना चाहती हूँ। मैं सुलह और एक प्रेम कहानी का प्रस्ताव रखना चाहती हूँ। एक मुश्किल, लंबी दूरी की प्रेम कहानी, लेकिन एक ऐसी प्रेम कहानी जिसे एक बार आज़माना चाहिए। मैं घुटनों पर बैठकर उससे

एक और मौका देने के लिए कहूँगी। मैं समझती हूँ कि इसके लिए माफ़ी मांगना ज़रूरी होगा, यह बेहद ज़रूरी है। और मैं उसे माफ़ी दूँगी। कौन कहता है कि रिश्ते सिर्फ़ सच और पूरे सच पर बनते हैं? अगर माफ़ी से सब ठीक हो सकता है, तो क्यों नहीं?
मैं अस्पताल के दरवाज़े से अंदर घुसी, ठंडी हवा मेरे चेहरे पर ज़ोर से लगी। गलियारा ऐसा लग रहा था मानो बर्फ़ में डूबा हो, जिससे मेरी रीढ़ की हड्डी में सिहरन दौड़ गई। और तभी मुझे एहसास हुआ, मेरा लहंगा मुर्दाघर जैसी ठंड के लिए बना ही नहीं है। मेरे चारों ओर सबकी निगाहें इस नज़ारे पर टिकी थीं। शादी के कपड़ों में सजी एक लड़की अस्पताल के गलियारों में दौड़ रही थी। मैं जानती थी कि वे क्या सोच रहे होंगे, मैं कितनी पागल लग रही होंगी। लेकिन मुझे परवाह नहीं। मुझे यह करना ही था। मैंने थोड़ी देर पहले वाली नर्स को उसके कमरे से निकलते हुए देखा। हर कदम के साथ, मेरे इस काम की बेतुकीपन और भी स्पष्ट होती जा रही थी। लेकिन मैं रुकी नहीं। मैं रुक नहीं सकती थी। और फिर मैं वहाँ पहुँच गई, नर्स के सामने खड़ी थी।
नर्स ने सिर हिलाया। 'एक और? अंदर पहले से ही एक आगंतुक है।'
कोई आगंतुक? मुझे आश्चर्य है कि गौरव मुझसे पहले उसके पास कैसे पहुँच गया। मेरा दिल ज़ोर से धड़क रहा था, मैंने धीरे से दरवाज़ा खोला और वहीं जम गई। उसे देखकर मेरी साँस अटक गई।
मेरी तरफ पीठ किए होने के बावजूद, मैं अच्छी तरह जानती हूँ कि दक्ष के बिस्तर पर कौन बैठी है: अमृता ठाकुर। उसकी जानी-पहचानी और घृणास्पद आवाज़ पूरे कमरे में गूँज रही है।
‘कोई रस्म नहीं... बस तुम और मैं...’ आवाज़ कहती है। ‘तुम्हें इस हालत में देखकर डर लग रहा है, दक्ष। हमें अकेले नहीं होना चाहिए, है ना? यह स्वाभाविक है, तुम और मैं, हमारे बच्चे... ऐसा लगता है जैसे हम एक-दूसरे के लिए ही बने हैं।’
उनके बीच की खामोशी अनंत काल तक कायम रहती है, मानो समय थम सा गया हो। मैं अपने शरीर को हिलने-डुलने का आदेश देने की कोशिश करती हूँ, उसकी ओर दौड़कर जाने और जो होने वाला है उसे रोकने की कोशिश करती हूँ। लेकिन मेरे अंग मेरा कहना नहीं मानते और मैं फँस जाती हूँ। मेरा दिल इतनी तेज़ी से धड़क रहा है कि मैं अपनी सोच भी मुश्किल से सुन पा रही हूँ। हर धड़कन के साथ, ऐसा लगता है जैसे दिल टूट रहा हो और फिर एक अंतहीन चक्र में जुड़ रहा हो। मैं दक्ष को अपने दिल की बात चीखकर कहना चाहती हूँ, लेकिन मेरी आवाज़ गले में अटक जाती है और मैं बस एक उथली साँस ही ले पाती हूँ। मेरे पैर ज़मीन से जकड़े हुए लगते हैं और मैं लाख कोशिश करने पर भी हिल नहीं पाती।
‘हम एक दूसरे के लिए ही बने हैं,’ दक्ष कहते हैं।
वह महिला झुककर मेरे दक्ष के होठों पर चुंबन करती है।

OceanofPDF.com

आज की दुनिया में जहां समय ही सब कुछ है, ऐसे में यह सवाल मन में उठता है कि क्या दक्ष और आंचल को कभी अपना सच्चा प्यार मिलेगा? वे हमेशा से एक संपूर्ण के दो हिस्से रहे हैं, दो ऐसे लोग जिनका रिश्ता गहरा है। अपने भावुक हृदय के साथ दक्ष हमेशा से प्यार में डूबा हुआ लड़का और फिर आदमी रहा है, अंडमान के रेतीले समुद्र तटों पर पहली मुलाकात के क्षण से ही आंचल के जादू में खोया हुआ।
उसकी सुंदरता से मोहित होकर, वह जैसी थी वैसी ही उसने उसे अपना मार्गदर्शक सितारा बना लिया।
दूसरी ओर, आंचल हमेशा दक्ष की संगति को बहुत महत्व देती थी। वह उसका एकमात्र श्रोता था।
हालांकि, जैसे-जैसे समय की रेत उसकी उंगलियों से फिसलती गई, उसने दक्ष की आंखों में हमेशा मौजूद रहने वाले प्यार को पहचानना शुरू कर दिया - एक ऐसा प्यार जो उसके भीतर भी था लेकिन उसने पहले कभी ध्यान नहीं दिया था, एक ऐसा प्यार जिसे वह गहराई से महसूस करती थी लेकिन जिसका वह जवाब नहीं दे सकती थी। लेकिन उनका समय कभी सही नहीं था।
अब, जब आंचल अपनी भावनाओं को साकार करने की कगार पर खड़ी है, तो वर्षों के एकतरफा प्यार से थक चुका दक्ष, स्थिरता और निश्चितता की तलाश में अमृता की ओर देखने लगा है।
अब तक मैंने आपको कहानी के बारे में साफ-साफ बताया है। और आपने सोचा होगा कि यहीं कहानी खत्म हो जाती है। मैंने भी यही सोचा था। अब मैं यह पूछे बिना नहीं रह सकता कि क्या वे समय के उतार-चढ़ाव को पार करके कभी एक-दूसरे को पा सकेंगे? या फिर उनके अलग-अलग रूप, जो एक-दूसरे से प्यार करते हैं, हमेशा के लिए बेमेल ही रहेंगे?
लेकिन अभी सही समय नहीं है। सोचिए कि आप कहानी का अंत कैसा चाहते हैं, और हम जल्द ही मिलकर इसका पता लगाएंगे...
जब मैं समापन भाग लिखना समाप्त कर लूंगा।

—दुर्जोय दत्ता

दूसरा भाग जल्द ही आ रहा है!

OceanofPDF.com

आप इसे भी पसंद कर सकते हैं

दुनिया का सबसे बुरा सबसे अच्छा बॉयफ्रेंड
दुर्जोय दत्ता

नफरत एक चार अक्षरों वाला शब्द है।
प्रेम भी ऐसा ही है।

और कभी-कभी लोग अंतर नहीं बता पाते...

ध्रुव और अरण्य अपने जीवन का एक बड़ा हिस्सा यह समझने की कोशिश में बिताते हैं कि वे एक-दूसरे को क्यों नष्ट करना चाहते हैं; वे एक-दूसरे को इतना गहरा दुख क्यों पहुंचाते हैं; और वे एक-दूसरे से दूर क्यों नहीं रह सकते।

हर बार इसका जवाब देना उतना ही मुश्किल होता है क्योंकि वे दोनों हमेशा एक-दूसरे के साथ सबसे बुरे और सबसे घिनौने काम करना चाहते हैं।

फिर भी, कुछ ऐसा है जो उन्हें बताता है: यह सही नहीं है। अगर आप इसका जवाब जानना चाहते हैं, तो किताब पढ़िए।

OceanofPDF.com

OceanofPDF.com

शुरुआत

चलिए बातचीत शुरू करते हैं...
Penguin को Twitter.com@penguinbooks पर फॉलो करें
हमारी सभी कहानियों से अपडेट रहने के लिए YouTube.com/penguinbooks पर जाएं।
अपने Pinterest पर 'Penguin Books' को पिन करें
Facebook.com/penguinbooks पर 'Penguin Books' को लाइक करें
लेखक के बारे में और अधिक जानकारी प्राप्त करें और
Penguin.co.in पर इस तरह की और भी कहानियां पढ़ें।

OceanofPDF.com

पेंगुइन मेट्रो रीड्स
अमेरिका | कनाडा | ब्रिटेन | आयरलैंड | ऑस्ट्रेलिया | न्यूजीलैंड | भारत | दक्षिण

अफ्रीका | चीन | सिंगापुर। पेंगुइन मेट्रो रीड्स, पेंगुइन रैंडम हाउस समूह की कंपनियों का हिस्सा है, जिनके पते यहां देखे जा सकते हैं।

इसे global.penguinrandomhouse.com पर पाया जा सकता है।

Penguin Random House India

यह संग्रह 2023 में प्रकाशित हुआ।
कॉपीराइट © दुर्जोय दत्ता 2023
लेखक के नैतिक अधिकार का दावा किया गया है।
जैकेट की तस्वीरें © अंतरा के
यह डिजिटल संस्करण 2023 में प्रकाशित हुआ।
ई-आईएसबीएन: 978-9-35708-218-1
यह पुस्तक इस शर्त के अधीन बेची जाती है कि प्रकाशक की पूर्व सहमति के बिना इसे व्यापारिक रूप से या किसी अन्य तरीके से उधार नहीं दिया जाएगा, पुनर्विक्रय नहीं किया जाएगा, किराए पर नहीं दिया जाएगा या किसी भी प्रकार से प्रसारित नहीं किया जाएगा।
या उस आवरण के अलावा किसी अन्य आवरण में प्रकाशित हो और जिसमें इस प्रकार की कोई समान शर्त न हो।
यह शर्त बाद के खरीदार पर लागू होगी।

OceanofPDF.com